Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस खुश नहीं

जागरण ब्यूरो

लखनऊ, 9 नवम्बर। कांग्रेस ने कल्याण सिंह सरकार द्वारा किये जा रहे ताबड़तोड़ तबादलों पर बेहद नाखुशी जाहिर करते हुए आरोप लगाया है कि इससे प्रदेश में जबर्दस्त अनिश्चितता और अराजकता फैली है। प्रदेश कांग्रेस मुख्य प्रवक्ता रामकुमार भार्गव ने आज यहां जारी बयान में कहा कि 15 दिन के भीतर एक सौ से ज्यादा आई. ए. एस. अधिकारियों के तबादले करके कल्याण सिंह ने आर्थिक रूप से चरमरा रहे प्रदेश की जनता पर और बोझ ही डाला है। उन्होंने कहा कि कोई भी मुख्यमंत्री इस्तीफा देने के उपरान्त तबादले नहीं करता। जब वह खुद ही यह कह रहे हैं कि 'मेरा सामान बंधा हुआ है। मैं जा रहा हूं।' तो ऐसे में उन्हें तबादले करने का कोई नैतिक हक नहीं है।

श्री भार्गव ने राज्यपाल से मांग की है कि वह मुख्यमंत्री द्वारा पिछले 15 दिन में किये गए सभी तबादलों को तुरन्त निरस्त करें क्योंकि इसके पीछे आर्थिक भ्रष्टाचार की बू आ रही है।

शबाना 98 की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री व मिथुन अभिनेता

नयी दिल्ली, 9 नवम्बर (एजेंसी)। आल इंडिया क्रिटिक्स एसोसियेशन ने शबाना आजमी को 1998 की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री तथा मिथुन चक्रवर्ती को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता घोषित किया गया है।

एसोसियेशन ने आज यहां अपने 24वें पुरस्कारों की घोषणा करते हुए एक विज्ञप्ति में बताया कि महेश भट्ट को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के पुरस्कार के लिए चुना गया है।शबाना आजमी को अंजन दासगुप्ता द्वारा निर्देशित हिन्दी फिल्म 'बड़ा दिन' में उनकी श्रेष्ठ भूमिका के लिए और मिथुन चक्रवर्ती को हिन्दी फिल्म 'स्वामी विवेकानन्द' में उनकी भूमिका के लिए यह सम्मान दिया गया है।महेश भट्ट को हिन्दी फिल्म 'डुप्लीकेट' में उनके कुशल निर्देशन के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म निर्देशक घोषित किया गया है।

स्वामी जपा अध्यक्ष पद से हटाये गये

नयी दिल्ली, 9 नवम्बर (एजेंसी)। जनता पार्टी के एक वर्ग ने डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से हटा दिया है और श्री ... भारतीय को पार्टी अध्यक्ष बना दिया गया

...नस्ट पार्टी ... नहीं है जबकि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट ... इसके दो सदस्य इस बार निर्वाचित ... विपक्षी पार्टी का दर्जा हासिल नहीं

...के कारण भारत ...प्रतिरोध: पंत

...ा हुआ करते हैं। उन्होंने कहा कि ...बीच ऊर्जा और संबद्ध पर्यावरणीय ...र में गहन वार्तालाप की संभावनाओं ...ए जाने की जरूरत है।

... कि परमाणु ऊर्जा भारत की कुल ...क्षमता का दो प्रतिशत से कुछ ही

...ि विश्व को ऊर्जा की बढ़ती मांग की ...ी चार होना पड़ रहा है। ऐसे में ...वरण और वातावरण के संरक्षण के ...र्भ से प्राप्त होने वाले ईंधन और जल ... प्राप्त करने के बारे में गंभीरता से ...ाहिए।

...कि विकसित देशों में ऊर्जा संरक्षण ...शक्ति का अभाव दिखाई देता है। ...प में आ रहे बदलाव के संबंध में ...ाष्ट्र समझौते का उल्लेख करते हुए

...15.00 हिन्दी फीचर फिल्म, 18.00 ... वारिस, 21.00 नया जमाना, 21.30 ... 1.30 न्यूज, 2.00 ...

STAR WORLD 5.30 एरोबिक आॅजेस्टाइल, 6... सारी, 8.00 हैपी डेज, 8.30 ... एन वाई.पी.डी.ब्लयू, 12.30 ... एनीमल एडवेंचर, 15.00 हैपी डेज, 15.3... रिपोर्ट, 17.00 होम इम्प्रूवमेंट, 17.30 बफी ... 21.00 होम इम्प्रूवमेंट, 21.30 बफी वैम्पा... वैम्पायर स्लेयर, 2.00 एली मैकबील; 3.00...

STAR SPORTS 5.30 इंटरनेशनल ट्रेवलान ... शो, 11.30 वर्ल्ड वैस्टलिंग ... 99, 20.00 मैक्स पावर, 21.0... अनलिमिटेड, 4.00 वाटर स्पोर्ट वर्ल्ड, 5...

BBC 5.00 बी.बी.सी. ... न्यूज, 10.00 यू.ए... हार्ड टाक, 16.30 टुमारोज वर्ल्ड, 21.15 ... सिटीज आफ फ्यूचर, 1.00 वर्ल्ड डे, 3...

SONY 7.00 आत्मा, 7.30 ... 10.00 कन्यादान, 10.30 ... शो, 13.00 म्यूजिक मंत्र, 13... 18.30 जुनून, 19.00 म्यूजिक मंत्र, 19.3... सी.आई.डी., 22.05 मूवर एण्ड शेकर, 2... 01.00 छोटी सी आशा, 1.30 चाट ...

ESPN 5.30 बिलियर्ड 99, 6... स्पोर्ट सेन्टर लाइव, 13... सीरीज, 19.30 एन.बी.ए. बास्केट बाल, ... चैम्पियन लीग हाईलाइट्स, 1.30 अमेरि...

Discovery Channel 7.00 ट्रेवलर्स, 8.00 ... आफ नेचर, 11.30 ... 14.00 डिस्कवर मैगजीन, 15.00 ट्रेवल... वाइल्ड डिस्कवरी, 20.00 हन्टर्स, 21.0... सीरीज, 00.00 हंटर्स, 1.00 ड्रामा, 2.00...

5.30 सीजलर्स, 7.00 अला... अदायें, 10.30 हिट मिक्स, 1... मधुर मूवमेन्ट, 12.30 झरोखा, 13.00 ... आल टाइम हिट्स, 15.00 मधुर मूवमेन्ट ... 19.00 सीजलर्स, 19.30 ... अदायें, 22.00 झरोखा, 22.30 ब्रेक ...

CNN 10.00 वर्ल्ड रिपोर्ट, 11.00 ... योर हेल्थ, 17.00 अमेरिकन ... एशिया, 19.30 लैरी किंग, 21.00 वर्ल्ड ... यूजुअल। प्रातः 10.30 से प्रत्येक एक ...

AXN 7.00 हाई लैंडर, 8.00 ... 11.00 सीरिज, 12.00 ... 16.00 ननकू, 17.00 एक्स्ट्रीमिस्ट, 1... 22.00 मूवी, 00.00 सिल्क स्टाकिंग, ...

[V] 10.00 जबरदस्त हिट, 11.30 ... डे फस्ट शो, 14.30 टर्न आन ... अरेस्ट, 20.00 किंग फिशर मांगता है, 2... 23.00 एम्पड, 23.00 बैण्ड एट बेड ... 4.00 टर्न आन टी.वी।

MTV 10.30 मोस्ट वान्टेड, 11.30 ... 13.30 हाउस फुल, 14.30 ... हिट्स, 17.30 ... नान स्टाप हिट, 21.30 ...

NATIONAL 7.00 ...

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म

वार्तालाप शैली में वैदिक धर्म के तत्वों का सरल भाषा में निरूपण
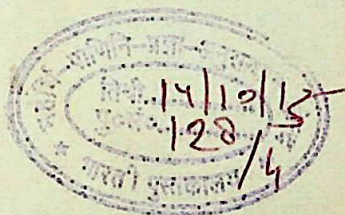
ओम्प्रकाश त्यागी

संसद सदस्य

मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आयसमाज स्थापना शताब्दि के उपलक्ष में प्रकाशित"

प्रकाशक :
चन्द्रपाल गुप्त
वार्ष्णेय प्रकाशन
२५०/२०, सन्त तुकाराम रोड,
बम्बई-४००००९
भारत

●

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

●

वितरक :
यशकाम डिस्ट्रीब्यूटस,
२८, लतीफ हाउस,
लोखन जत्था,
बम्बई-४००००९

●

मुद्रक :
राष्ट्रीय प्रिन्टिंग वर्क्स
शहादरा,
दिल्ली-११००३२

●

मूल्य : ६·०० रुपये (सजिल्द)
: १०.०० रुपये (कपड़े की जिल्द)
विदेशों में : $ २.०० (दो अमरीकी डौलर)

●

प्रथम संस्करण : १९७४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2449 128/4

प्रकाशकीय

धार्मिक तत्त्वों के विषय में जो पुस्तकें लिखी जाती हैं वे साधारणत: पाण्डित्यपूर्ण भाषा में होती हैं और केवल गम्भीर पाठक ही उनमें रुचि लेते हैं। गम्भीर तत्वों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने की आवश्यकता इस कारण और अधिक हो गई है कि आज पाठकों की रुचि हल्के पुल्के साहित्य की ओर विशेष रूप से आकर्षित रहती है। आज का युवा विद्यार्थी वर्ग धार्मिक सिद्धान्तों को सन्देह की दृष्टि से देखता है। इस स्थिति में सरल भाषा और रुचिकर शैली में लिखी हुई रचना की उपयोगिता और अधिक हो जाती है। श्री त्यागीजी ने प्रस्तुत पुस्तक अपने प्रथम विश्व-भ्रमण के बाद लिखी थी अत: वे न केवल भारतीय मानस की शंकाओं का उत्तर दे सके हैं अपितु वे अनेक विदेशी सन्देह भी स्पष्ट कर सके हैं।

आशा है कि युवा विद्यार्थी वर्ग इस रचना को पढ़कर अपने सन्देहों का स्पष्टीकरण प्राप्त कर सकेगा। वयोवृद्ध पाठकों की दृष्टि से भी प्रस्तुत पुस्तक सामान्य पाठन के अतिरिक्त उनके परिवार के बाल युवा वर्ग के लिए उत्तम भेंट सिद्ध होगी। इसी प्रकार स्कूलों, कालेजों व सामान्य पुस्तकालयों के लिए भी प्रस्तुत पुस्तक उत्तम पठन सामग्री सिद्ध होगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2449

दो शब्द

भारत के इतिहास में सब से बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटना यह है कि प्रत्येक दृष्टि से समृद्ध एवं विशालकाय होते हुए भी वह अपनी आन्तरिक दुर्बलताओं के कारण मुट्ठी भर विदेशियों की दासता में एक-दो वर्ष नहीं अपितु लगातार हजारों वर्षों तक जकड़ा रहा। परिणाम स्वरूप इसमें आत्महीनता की भावना का उदय हो गया और अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति, इतिहास, व साहित्य में इसकी आस्था हिल गई एवं इसने अपने सही स्वरूप को भुला दिया।

जनता में व्याप्त आत्महीनता की भावना का कुपरिणाम यह हुआ कि इसे प्रत्येक पराई व विदेशी वस्तु में विशेषता दिखलाई देने लगी। इसका अनुचित लाभ उठाते हुए विदेशियों ने इसे अपने जाल में फंसाना प्रारम्भ कर दिया। यदि १९ वीं शताब्दी में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द इसका उद्धार न करते या इसके सही स्वरूप का भान कराकर इसमें स्वाभिमान की जागृति न करते तो इसकी अवस्था बड़ी दयनीय हुई होती।

परन्तु आर्य समाज द्वारा सतत प्रयास करने के पश्चात् भी आज हमारे अनेक नवयुवक-नवयुवतियों में आत्महीनता की भावना व्याप्त है। उन्हें अपने धर्म व संस्कृति में कोई तथ्य प्रतीत नहीं होता। उनकी इसी आत्महीनता को दूर करने की दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गई है। इसका उद्देश्य अन्यों का दिल दुखाना नहीं अपितु अपनों की आँखें खोलना मात्र है।

आत्महीनता की भावना मानव के भविष्य को अन्धकारमय बना देती है। आत्महीनता का आधार अज्ञानता होती है। उसी अज्ञानता को दूर करने के निमित्त यह प्रयास किया गया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इस प्रयास को सफलता प्रदान करें।

—ओमप्रकाश त्यागी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म धर्म है—रिलीजन नहीं

महीनों के अवकाश के पश्चात श्रद्धेय महात्माजी अपने वचनानुसार स्कूल की प्रार्थना सभा में पधारे हैं। उनके आगमन की सारे नगर में कई दिनों से चर्चा थी। स्कूल के विद्यार्थियों के अतिरिक्त नगर के नर-नारी भी उनके प्रवचनों की बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। अत: उनके पधारने पर हजारों नर-नारियों की भीड़ का एकत्र होना स्वाभाविक ही था। सबने उनके पदार्पण पर महात्माजी की जय के नारों से आकाश को गुंजा दिया और महात्माजी को पुष्प मालाओं से लादकर उनका अभिनन्दन किया।

महात्माजी जनता व विद्यार्थियों द्वारा दिए गये प्रेम-पूर्ण स्वागत् पर आश्चर्य चकित रह गये। उन्हें यह आशा नहीं थी कि नगर की जनता उनके लिए इतना सम्मान व प्यार रखती है। उन्होंने इस अभिनन्दन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा, "मुझे यह जानकर हार्दिक हर्ष हुआ है कि इस नगर की जनता तथा विद्यार्थी धर्म के प्रति विशेष रुचि रखते हैं। यह स्वागत वास्तव में उनकी भावनाओं का प्रतीक है। मैं तो आपकी इच्छा पूर्ति में एक साधन मात्र हूं।"

महात्माजी ने विद्यार्थियों को विशेष रूप से सम्बोधन करते हुए कहा कि गत व्याख्यानमाला में धर्म के साधारण स्वरूप पर प्रकाश डाला गया था ताकि धर्म के प्रति प्रचलित गलत धारणाओं से उनके मन, मस्तिष्क मुक्त हो सकें। वर्तमान व्याख्यान-माला में वैदिक धर्म के स्वरूप से आपको परिचित कराने का प्रयत्न किया जायेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का निवेदन सुनते ही इंगलैण्ड से अवकाश पर लौटी एक भारतीय छात्रा खड़ी हो गई और उसने महात्माजी की सेवा में अपनी प्रार्थना रखते हुए कहा—"महात्माजी ! विदेशों में रहने वाले भारतीय बच्चों के सम्मुख एक बड़ी ही जटिल समस्या है। वहाँ के स्कूल-कालेजों में पढ़ने वाले ईसाई मुस्लिम छात्र-छात्राएँ जब वैदिक धर्म का मजाक उड़ाते हुए अपने धर्मों की विशेषताओं को प्रस्तुत करते हैं तो वैदिक धर्मावलम्बी वच्चे लज्जावश अपना सिर नीचा कर लेते हैं और उनसे कोई उत्तर नहीं वन पाता है।

छात्रा ने विदेशों में भारतीय छात्रों की इस दयनीय धार्मिक दशा का दिग्दर्शन कराते हुए आगे कहा—कि अनेक भारतीय छात्र-छात्राओं ने अपने धर्म को तिलान्जलि देकर अन्य धर्मों को ग्रहण कर लिया है या उन्होंने अपने को अधार्मिक व नास्तिक घोषित कर दिया है। यदि यह अवस्था अधिक समय तक चालू रही तो विदेशों में बसे भारतीय निश्चित रूप से किसी दिन ईसाई या मुसलमान हो जायेंगे। इसलिये आपसे प्रार्थना है कि इन विद्यार्थियों को वैदिक धर्म की विशेषता वतलाने की कृपा करें ताकि वह अपने धर्म के प्रति हीन-भावना का परित्याग कर उसके लिए अभिमान व सम्मान की भावना धारण कर सकें। मैं स्वयं भी आपके प्रवचनों से प्रकाश प्राप्त कर इंग्लैंड में रहने वाले अपने भारतीय छात्र-छात्राओं को उक्त विशेषताओं से परिचित कराने का प्रयत्न करूंगी।"

महात्माजी छात्रा की वात सुनकर स्तब्ध रह गये और बड़े ही मार्मिकता भरे शब्दों में बोले—"बच्चों ! वैदिक धर्मानुयायी वच्चों की अपने धर्म के प्रति इस हीनावस्था को जानकर मुझे बड़ी वेदना हुई है। परन्तु इसमें उनका दोष नहीं है। दोष तो हमारी धर्मनिरपेक्ष नीति का है, जिसके कारण स्कूल-कालेजों में धर्म चर्चा को अछूत समझ बहिष्कृत कर दिया है। आपकी प्रार्थना में सार है। इसलिए वर्तमान व्याख्यान माला वैदिक धर्म की विशेषताओं पर ही चलेगी। यदि समय मिला तो वैदिक धर्म का परिचय फिर कभी उपस्थित किया जायेगा।

महात्माजी ने अपने प्रवचन प्रारम्भ करने से पहले वेद मंत्रों का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गान किया और ज्ञान गंगा को प्रवाहित करते हुए कहा—बच्चों ! वैदिक धर्म विशेषताओं का आगार है अन्य धर्मों से इसकी तुलना करने का अर्थ होगा जैसे कि सूर्य और दीपक की तुलना, परन्तु परिस्थिति वश होकर आज हमें वही करना पड़ रहा है। वैदिक धर्म की सबसे पहली विशेषता यह है कि संसार के समस्त धर्मों में यदि किसी को धर्म की संज्ञा दी जा सकती है तो वह केवल वैदिक धर्म ही है। अन्य तथाकथित धर्म, धर्म न होकर मत या 'रिलीजन' हैं।

वैदिक धर्म किसी विशेष व्यक्ति के आदेश तथा पूजा पाठ का नाम न होकर एक जीवन धारा का नाम है जो मानव तथा मानव समाज को सुख, शान्ति व प्रगति प्रदान करता है किसी विशेष देश, काल, परिस्थिति की उपज न होकर सार्वव्यापक सत्य है। यही कारण है कि जहाँ संसार के अन्य तथाकथित धर्म मानव समाज में संघर्ष, संकीर्ण साम्प्रदायिकता तथा रक्त पात के साधन रहे हैं वहां वैदिक धर्म सुख शान्ति तथा प्रेम का श्रोत रहा है। इसलिए इसी की शरण में आना हम सबके लिए हितकर है।

छात्रा—महात्माजी ! वैदिक धर्म ही धर्म है अन्य नहीं, इस मान्यता के लिये आपके पास क्या युक्तियाँ हैं ?

महात्मा—बेटी, तुमने मेरे पिछले प्रवचन नहीं सुने अन्यथा तुम्हें यह प्रश्न करने की आवश्यकता ही न रहती। संसार के अन्य तथाकथित धर्म एक देश, काल तथा परिस्थिति की उपज हैं। वह एक व्यक्ति की घोषणा व आदेश मात्र हैं और एक विशेष पूजा-पद्धिति तथा अन्धविश्वास पर आधारित हैं परन्तु वैदिक धर्म किसी विशेष देश, काल, परिस्थिति, व्यक्ति तथा पूजा-पाठ पर निर्भर न रहकर उन मौलिक सिद्धान्तों का नाम है जो सार्वदेशिक तथा सर्वकालिक हैं।

जहां अन्य मत-मतान्तरों ने मोक्ष प्राप्ति के लिए पवित्र कार्यों के साथ विशेष पुस्तक, महापुरुष तथा पूजा-पाठ को मानना अनिवार्य बतलाया है वहां वैदिक धर्म ने केवल मनुष्य के पुण्य कार्यों को ही मोक्ष का आधार माना है। उदाहरणार्थ—ईसाई, इस्लाम आदि अन्य मत-मतान्तरों के अनुसार एक व्यक्ति चाहे कितना ही धार्मिक, ईमानदार व परोपकारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्यों न हो, परन्तु यदि वह हजरत ईसा, हजरत मुहम्मद, बाइबिल, कुरान आदि पर विश्वास नहीं रखता तो वह स्वर्ग की प्राप्ति कदापि नहीं कर सकता है परन्तु वैदिक धर्म ऐसा कभी नहीं मानता है।

जहां अन्य मत-मतान्तर अपने महापुरुषों के आदेशों व घोषणाओं से पूर्णत: बंधे हैं वहां वैदिक धर्म ऐसी घोषणाओं व आदेशों से पूर्णत: मुक्त है। कार्यक्षेत्र में इसने व्यक्ति को पूर्ण स्वतन्त्रता देते हुए सत्याचरण तथा सर्वहित पर बल दिया है। इसका दृष्टि में मानव का शारीरिक, मानसिक, आत्मिक तथा सामाजिक उत्थान करने वाले कार्य ही धर्म है।

अन्य मत-मतान्तरों ने जहां अपने पैगम्बरों की आवाज को धर्म माना है वहां वैदिक्र धर्म ने अपनी आत्मा की ही आवाज के अनुसार कार्य करने को धर्म तथा इसके विपरीत कार्य करने को अधर्म माना है। वैदिक धर्म ने आत्म हनन को पाप माना है।

छात्रा—क्या आप इसका प्रमाण दे सकते हैं कि वैदिक धर्म ने विशेष पुस्तक व महापुरुष की आवाज को न मानकर आत्मा की आवाज को ही धर्म माना है।

महात्मा—किसी भी ग्रन्थ तथा महापुरुष की सत्य बातों व उसके सदुपदेशों को वैदिक धर्म ने भी समुचित मान्यता दी है परन्तु साथ ही उसका अन्धानुकरण न कर अपने समस्त कार्यों को सत्य असत्य का बुद्धि पूर्वक विचारकर उनका अनुकरण करना कहा है। अन्य मत-मतान्तरों ने अपने महापुरुषों के वाक्यों को संदेह से ऊपर ईश्वर वाक्य माना है और उस पर संदेह करने को अधर्म माना है। परन्तु वैदिक धर्म ने अपनी आत्मा की आवाज को ही देवीय प्रेरणा मानकर उसके विरुद्ध आचरण करने को वर्जित किया है। इसका प्रमाण वेद में है—

असुर्य्यानाम ते लोक अन्धेन तमसा वृता:

तास्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनोजनाः॥ यजु० वेद ४०२३

अर्थात जो व्यक्ति अपनी आत्मा का हनन करते हैं अथवा अपनी आत्मा की धर्मयुक्त प्रेरणा के विरुद्ध आचरण करते हैं वे लोग मरने के बाद अन्धकारमय योनियों को प्राप्त होते हैं और इस जीवन में कष्टों को प्राप्त होते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रा—महात्माजी आपने कहा है कि मत-मतान्तर विशेष देश, काल, परिस्थिति व व्यक्ति की उपज हैं, सो कैसे ?

महात्मा—बेटी, संसार के लगभग सभी देशों में मत-मतान्तरों के जन्म की कहानी एक जैसी ही है। जब जब जिस देश में पहले से प्रचलित धर्म पतन को प्राप्त हो नाना प्रकार की सामाजिक कुरीतियों से ग्रसित हो गया और वह समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होने के बदले विनाशकारी बन गया तब तब उस देश में महापुरुषों ने उन सामाजिक कुरीतियों का विरोधकर अपने सुधारवादी विचारों को प्रस्तुत किया। अपनी बातों के प्रचार के लिए उन्होंने नाना प्रकार के कष्ट सहन किये, जहर के प्याले पिए तथा फांसी के तख्ते पर झूले।

इन क्रान्तिकारी महापुरुषों के जनकल्याण की भावना, त्याग, तप तथा उनके द्वारा बुराइयों से छुटकारा पाने की अभिलाषा ने जनता को उनके पीछे चलने को विवश कर दिया। उनकी आवाज में सत्यता होने से उन्हें सफलता मिलना स्वाभाविक था। सफलता प्राप्ति के पश्चात् कई महापुरुषों ने अपने सुधारवादी आन्दोलन को नये धर्म की संज्ञा न देकर मूलभूत प्राचीन धर्म को ही मान्यता दी। उनका आन्दोलन सामाजिक बुराइयों की समाप्ति के साथ ही समाप्त हो गया या उन्ही तक सीमित था परन्तु कई महापुरुषों ने अपने सुधारवादी आन्दोलन को नए धर्म का नाम देकर उसे प्रचलित करने का प्रयास किया।

अपने सुधारवादी आन्दोलन को धर्म का रूप देने हेतु उन्हें फिर उसी दलदल में फंसना पड़ा जिसमें फंसकर उनसे पूर्व वाले धर्मों ने अपनी पवित्रता को खोकर नाना प्रकार की सामाजिक कुरीतियों से ग्रसित हुए अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, व गुरुडम का वह दलदल था जिसकी उन्होंने शरण ली परन्तु वह इस बात को सर्वदा भूल गये कि जिस बुद्धिवाद के सहारे उन्होंने अपने से पहले धर्म की बुराइयों का खण्डन किया और जनता के मन मस्तिष्क को अपनी ओर आकर्षित किया उसी का बाद में खन्डन करना उनके लिए कहाँ तक उचित था।

बुद्धिवाद के सहारे सफलता प्राप्त करने वाले महापुरुषों ने बाद में अन्धविश्वास रूढ़िवाद व गुरुडम का सहारा लेते हुए अपने को ईश्वर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का इकलौता बेटा तथा ईश्वर का दूत अथवा पैगम्बर तक घोषित किया और अपने वाक्यों को ईश्वर वाक्य कहकर उनके विरुद्ध विचार लाने मात्र को अधर्म घोषित कर दिया।

सुधारवादी महापुरुषों की मृत्यु के पश्चात् उनके शिष्यों ने तो कमाल ही कर दिया उन्होंने अपने धर्मगुरु को ईश्वर पुत्र, ईश्वर अथवा ईश्वर दूत सिद्ध करने के लिए नाना प्रकार की बुद्धि विरोधी अलौकिक घट-नाओं को उनके जीवन के साथ जोड़ दिया और अन्धविश्वास के सहारे बची खुची कसर उन्होंने पूरी कर दी। अपने मत के प्रचार में उन्होंने आगे चलकर तलवार का सहारा लिया और दूसरों पर बलात् अपनी मान्यताओं को थोपना ही उन्होंने ईश्वर भक्ति मान लिया इस प्रकार अन्य धर्मावलंबियों को लूटना, कत्ल करना, उनके धर्म मंदिरों को नष्ट करना, उनके लिए धार्मिक कृत्य बन गए। संसार का इतिहास धर्म के नाम पर उक्त मत-मतान्तरों द्वारा किये गए युद्धों व नरसंहार के काले कारनामों से भरा पड़ा है। कई महापुरुषों ने तो स्वयं अपने जीवन काल में ही तल-वार के सहारे अन्य मतावलंबियों को कत्ल करने लूटने तथा उनका बलात् मत परिवर्तन का आदेश दिया। यह है इन मत-मतान्तरों के जन्म का काला इतिहास।

छात्रा—महात्माजी, जब बुद्धिवाद के सहारे महापुरुषों ने अपने से पूर्व सभी धर्मों की बुराइयों का खण्डन किया और सफलता प्राप्त की तो फिर बाद में वह अन्धविश्वास व रूढ़िवाद के दलदल में कैसे और क्यों फंस गए ?

महात्मा—जब महापुरुषों को अपने सुधारवादी आन्दोलन को नए मत का रूप देना था तो उन्हें अन्य धर्मों के समान ईश्वर, सृष्टि-रचना, स्वर्ग, नरक आदि विषयों पर भी अपना मत व्यक्त करना पड़ा। उनकी अनेक मान्यतायें ऐसी थीं जो बुद्धि की कसौटी पर सही उतरने वाली नहीं थीं या उन्हें युक्ति के सहारे सत्य सिद्ध करना कठिन था इसलिए उन्हें विवश होकर अन्धविश्वास का सहारा लेना पड़ा और उन्होंने अपनी बातों को ईश्वर वाक्य कहकर बलात् अन्यों पर थोपना ही ठीक समझा।

छात्रा—महात्माजी हिन्दू धर्मावलम्बी भी तो राम कृष्ण को भगवान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते हैं और उनके वाक्यों को ईश्वर वाक्य मानते हैं फिर वैदिक धर्म की विशेषता क्या रही ?

महात्मा—पुत्री ! मेरी बात को ध्यान से सुनने का कष्ट करो। मैंने कहा था कि धर्म की परिभाषा करते समय हमारे धर्म-शास्त्रों ने किसी महापुरुष की मान्यता को सत्य अनिवार्य नहीं माना। जबकि ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों में ऐसा अनिवार्य है। राम और कृष्ण की मान्यता इसलिए नहीं है कि वह साक्षात् भगवान थे अपितु इसलिए है कि इनका जीवन आदर्श रूप में धार्मिक था। आदर्श धार्मिक जीवन वाले महापुरुषों का अनुकरण करने का उपदेश वैदिक धर्म देता है। परन्तु राम और कृष्ण को न मानने वाला भी वेदादि शास्त्रों का अध्ययन कर धर्माचरण कर सकता है। राम और कृष्ण को मानने में लाभ यही है कि धर्म के दर्शन साक्षात् जीवन में हो जाते हैं फिर धर्म के समझने और उसका पालन करने में सरलता हो जाती है।

परन्तु अन्य धर्मों में महापुरुषों की मान्यता इस उद्देश्य से नहीं है क्योंकि उनका जीवन आदर्श रूप से धार्मिक था अपितु इस कारण है कि वे ईश्वर पुत्र या ईश्वर के संदेश वाहक थे, और उनकी ही सिफारिश पर खुदा न्याय के दिन लोगों के कार्यों का फैसला करेगा। इसलिए महापुरुषों की मान्यता और उनके प्रति श्रद्धा में वैदिक धर्म और मत-मतान्तरों के दृष्टिकोण में आकाश पाताल का अन्तर है।

छात्रा—महात्माजी, आपने अभी कहा है कि देश, काल एवं परिस्थिति हेतु कुछ सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने वाले सुधारवादी आन्दोलन ही बाद में मत-मतान्तर अथवा रिलीजन का रूप धारण कर गये तो क्या आप इसका कोई प्रमाण दे सकते हैं।

महात्मा—मत-मतान्तरों की जन्म गाथा से संसार का इतिहास भरा पड़ा है। दूर जाने की आवश्यकता नहीं। भारत में ही जब सत्य सनातन वैदिक धर्म पतन को प्राप्त हो गया और इसमें नाना प्रकार की सामाजिक कुरीतियां उत्पन्न हो गईं तो भारत में बौद्ध, जैन, कबीर पंथ, सिख पंथ, शक्ति आदि अनेकों मतों का उदय हो गया। आज भी आनन्द मार्ग, ब्रह्मकुमारी मत हैं, हंस मत आदि जन्म ले रहे हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशों में लगभग आज से दो हजार वर्ष पूर्व ज़ब मध्य एशिया में यहूदी मत में हिंसात्मक प्रवृत्तियां तथा अन्य सामाजिक कुरीतियाँ उत्पन्न हो गई तो ईसाई मत के जन्म दाता हजरत ईसामसीह ने हिंसा के विरोध में अहिंसा का प्रचार किया। उन्होंने अन्य सामाजिक कुरीतियों का भी विरोध किया। इसी प्रकार जब अरब देशों में भगवान के नाम पर मूर्तियों की पूजा हो रही थी, बहु विवाह के नाम पर एक-एक व्यक्ति मनमानी स्त्रियों से विवाह कर रहे थे, पानी के अभाव हेतु लोगों में साफ रहने की प्रवृत्ति समाप्त हो गई। तथा आपस में लोग लड़ते थे तो इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद ने इन सामाजिक कुरीतियों का विरोध कर मूर्ति पूजा का खण्डन किया, बहु विवाह के स्थान पर केवल चार स्त्रियां तक ही विवाह करने का निर्देश दिया, साफ रहने के लिए कम से कम सप्ताह में एक बार अवश्य स्नान करने का प्रचार किया। यही कहानी अन्य मत-मतान्तरों की है।

छात्रा—आपने अभी यह स्वीकार किया कि जब मूल कार्य का पतन होकर उसमें अनेक सामाजिक कुरीतियां उत्पन्न हो गई तो इन बुराइयों को दूर करने या उनका सुधार करने की दृष्टि से समय-समय पर भिन्न-भिन्न देशों में महापुरुषों ने जन्म लिया। क्या इसका यह अर्थ नहीं कि उनके द्वारा सुधार मुक्त पवित्र धर्म था। यदि हां तो फिर आपने उन सत्य धर्मों को मत या रिलीजन का नाम क्यों दिया?

महात्मा—आपकी शंका सर्वदा समुचित है। यदि सुधारवादी महापुरुष अपने से पूर्व प्रचलित धर्मों में उत्पन्न सामाजिक कुरीतियों को दूर करने तक ही सीमित रहते और अपने किसी निज मत की स्थापना न करते तो फिर निश्चित ही संसार में मत-मतान्तरों का जंगल खड़ा न होता। एक ही सत्य सनातन धर्म सर्वत्र होता। परन्तु दुर्भाग्यवश उन्होंने ऐसा न कर अपने सुधारशील विचारों को निजमत का रूप दे दिया। उन्होंने सृष्टि रचना, स्वर्ग, नरक, आदि के बारे में अपना दृष्टिकोण भी अपने आन्दोलन के साथ जोड़ दिया जिससे वे नये मत का रूप धारण कर सकें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रा—क्या आप कोई ऐसा प्रमाण दे सकते हैं कि किसी महान आत्मा ने अपने सुधारवादी आन्दोलन को अलग धर्म या मत का रूप नहीं दिया ?

महात्मा—भारत में ऐसी महान आत्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती थे जिन्होंने अपने को ईश्वर, ईश्वर-पुत्र व ईश्वर का दूत सिद्ध करने के विपरीत स्पष्ट शब्दों में कहा कि वह अपनी कोई नई बात का प्रचार नहीं कर रहे हैं अपितु उसी सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनः स्थापना कर रहे हैं जो ईश्वर द्वारा सृष्टि के आदि में मानव जाति के कल्याण के लिए दिया था। उनके प्रयत्नों में से एक प्रयत्न उन सामाजिक कुरीतियों का विरोध करना था जो देश, काल, परिस्थिति के कारण आर्य जाति के लिए इस समय घातक सिद्ध हो रही हैं और अज्ञानतावश जिन्होंने वैदिक धर्म का रूप धारण कर लिया है।

महर्षि दयानन्द समस्त वेद-शास्त्रों के अद्वितीय विद्वान थे। विरोधियों से शास्त्रार्थ करने में उनकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी। और आदित्य ब्रह्मचारी तथा योगी होने के कारण उनका व्यक्तित्व भी बड़ा प्रभावशाली था। उनकी विद्वता तथा गहन ज्ञान और अनुपम प्रतिभा की धाक विदेशी विद्वानों ने भी स्वीकार की थी। यदि वह स्वार्थवश ही अपना नया निज मत चला देते तो बड़ी सरलता और सफलता से ऐसा हो सकता था। परन्तु उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए सत्य की हत्या नहीं की और प्राचीन सत्य सनातन धर्म को ही स्वयं मान्यता दी और पुनः सबको भी ऐसा ही करने की प्रेरणा दी।

छात्रा—क्या मत-मतान्तरों में धर्म का कुछ भी अंश नहीं है ?

महात्मा—उनमें धर्म का अंश है। यदि उनमें धर्म का अंश न होता तो उनका अब तक टिका रहना असम्भव था। उनमें धर्म की कुछ अच्छी बातें हैं इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता।

छात्रा—जब मत-मतान्तरों में धर्म अथवा सत्य के अंश हैं तो आप उनका खंडन क्यों करते हैं? और उन्हें धर्म के रूप में ग्रहण क्यों नहीं करते ?

महात्मा—किसी वस्तु का एक अंश अच्छा हो जाने से वह पूर्ण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपेण अच्छी नहीं हो जाती। उदाहरणार्थ यदि अति स्वादिष्ट मधुर भोजन में एक बूंद जहर का पड़ा हो तो क्या उसे अच्छा भोजन कहा जाएगा या वह ग्रहण करने योग्य होगा ? इसी प्रकार मत-मतान्तरों में कुछ श्रेष्ठ अंश होते हुए भी असत्य व बुद्धि विरोधी अंशों के हेतु वे श्रेष्ठ अंश भी दूषित हो गये हैं क्योंकि उनके साथ अनेक असत्य जैसे विचारों को भी स्वीकार करना होगा। इसीलिए मत-मतान्तरों का विरोध किया जाता है। यदि संसार के सभी मत-मतान्तर पक्षपात छोड़ केवल अपने सत्य को ही लेकर चलें तो फिर उनके विरोध करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

मत-मतान्तरों में सत्य किस रूप में उपस्थित किया गया है इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—चोरी करना बुरा है, परन्तु विधर्मियों के घर में चोरी करना अच्छा है, दूसरों को धोखा देना या दूसरों से झूठ बोलना पाप है पर विधर्मियों को धोखा देना और उनसे झूठ बोलना पुण्य है। किसी का कत्ल करना पाप है परन्तु काफिरों की हत्या करना ईश्वर भक्ति है इत्यादि। इस प्रकार के अधूरे व लंगड़े सत्यों को कैसे स्वीकार किया जा सकता है? बस इसी प्रकार के प्रत्येक लंगड़े सत्यों और अर्ध सत्यों से मत-मतान्तर भरे पड़े हैं।

अन्य धर्मों ने गर्भाधान को कोई महत्त्व नहीं दिया और इसे एक प्रकार से स्वाभाविक क्रिया मानकर इसकी उपेक्षा करते हैं पर वैदिक धर्म ने इसे मानव जीवन की आधार शिला मानकर इसे बड़ा महत्त्व दिया है।

मत-मतान्तरों के विपरीत वास्तविक धर्म की मूलभूत मान्यता होती है, कि चोरी करना, झूठ बोलना, धोखा देना निरपराधों को मारना, लूटना आदि अधर्म है और पाप है। मनुष्य ही नहीं अपितु प्राणी मात्र के साथ अन्याय अत्याचार करना बुरा है।

छात्रा—महात्माजी, अनार्यों को मारने या दंडित करने का तो वैदिक धर्म ने ही आदेश दिया है। और फिर क्या वैदिक धर्म इस मान्यता के कारण मत-मतान्तर की कोटि में नहीं आ जाता है ?

महात्मा—बेटा, अनार्य का अर्थ है दुष्ट व्यक्ति। दुष्ट व्यक्तियों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दंड देना ही धर्म है, और दंड न देना अधर्म है। पर अन्य मत-मतान्तरों में विधर्मियों को काफिर मानकर उन्हें दंडित करने का विधान है। इस प्रकार वैदिक धर्म और अन्य मत-मतान्तरों के दृष्टिकोण में आकाश पाताल का अन्तर है।

छात्रा—क्या आप वतला सकेंगे कि धर्म और मत में अन्तर होने का मुख्य अंश क्या है ?

महात्मा—धर्म और मत-मतान्तरों के अन्तर की नीचे लिखी कुछ बातें हैं :—

(१) धर्म बुद्धिवादी होता है, मत अन्धविश्वासी होता है।

(२) धर्म उन गुणों का नाम है जिनके कारण किसी वस्तु का अस्तित्व स्थिर रहता है। और जिसके द्वारा इस लौकिक और पारलौकिक उन्नति होती है पर मत किसी व्यक्ति विशेष का अपना मत व आदेश मात्र होता है और विशेष व्यक्ति पुस्तक-पत्री तथा पूजा-पाठ पर विश्वास लाना उसमें आवश्यक होता है।

(३) धर्म सार्वभौम एवं सर्वकालिक होता है जबकि मत-मतान्तर विशेष देश, काल एवं परिस्थिति की उपज होते हैं।

(४) धर्म अपने प्रचार और प्रसार में सदैव अहिंसात्मक होता है जबकि मत-मतान्तर अपने प्रचार में लोभ, लालच, भय आदि का प्रभूत सहारा लेता है।

छात्रा—महात्माजी, क्या आप सिद्ध कर सकते हैं कि मत-मतान्तर अपने प्रचार व प्रसार के लिए लोभ, लालच, हिंसा का सहारा लेते हैं ?

महात्मा—संसार में ईसाई व इस्लाम आदि मतों के प्रचार व प्रसार का समूचा इतिहास ही इसका साक्षी है। इसके विपरीत वैदिक धर्म ने धर्म के प्रचार में लोभ, लालच व भय का सहारा लेना निन्दा माना है, और न ही वैदिक धर्मियों ने कभी ऐसा किया। विधर्मियों ने शक्ति पाते ही इनकी चोटियों को काटा, यज्ञोपवीतों को जलाया तथा इनके मन्दिरों को तोड़ा व लूटा, पर वैदिक धर्मी भूलकर कभी प्रतिक्रिया स्वरूप भी ऐसा नहीं किया। उदाहरणार्थ मुगल काल में बादशाह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
औरंगजेब ने जब यहाँ के मन्दिर गिरा उन्हें मस्जिदों के रूप में दिन दहाड़े बदला, तब उसके ऐसे आकस्मिक अत्याचारों का विरोध करने वाले वीर क्षत्रपति शिवाजी महाराज सदा मस्जिदों व कुरान शरीफ की इज्जत व सुरक्षा करते रहे।

छात्रा—महात्माजी, मत-मतान्तर भी किसी न किसी रूप में धर्म का झंडा ही तो संसार में फहरा रहे हैं फिर आपको इस रूप में बने रहने पर आपत्ति क्या है ?

महात्मा—बच्चे आपत्ति यह है कि जिस प्रकार नकली सिक्के के बाजार में आते ही लोग असली सिक्के को भी संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं वैसे ही धर्म के नाम पर चलने वाले मत-मतान्तरों के बुद्धि विरोधी कार्यों तथा धर्म के नाम पर उनके द्वारा अन्यों के प्रति किये जा रहे अत्याचारों को देखकर जनता में सच्चे धर्म के प्रति भी घृणा का भाव उत्पन्न हो जाता है। यही कारण है कि आज संसार में धर्म और ईश्वर का विरोध करना प्रगतिशीलता का प्रतीक बन गया है।

धर्म का संसार में विरोध मजहबी लोगों के कारण उस दिन हुआ जब इन मजहबी गुफाओं ने विज्ञान और वैज्ञानिक उन्नति को धर्म का शत्रु घोषित किया। और वैज्ञानिकों, विचारकों तथा दार्शनिकों को इसलिए कत्ल कर दिया गया अथवा उन्हें जहर के प्याले पिलाकर सदैव के लिए सुला दिया गया, क्योंकि उन्होंने मत-मतान्तरों की बुद्धि विरोधी बातों के विरुद्ध वैज्ञानिक खोज का और अपना मत व्यक्त करने का साहस किया।

अतः मत-मतान्तरों से धर्म के अस्तित्व को ही खतरा उत्पन्न हो गया है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में तो इनसे और भी अधिक संकट पैदा होने की संभावना है। लोगों ने अब खुले आम ऐसे प्रश्न करने आरम्भ कर दिये हैं कि वह चौथा या सातवाँ आसमान कहां है जहां खुदा बैठा है ? स्वर्ग नरक कहां पर हैं ? पृथ्वी चपटी कैसे है ? सृष्टि की रचना केवल सात दिनों में कैसे संभव हो सकी ? ईश्वर क्या है और कहां है ? इत्यादि यदि इन प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर न दिये गये तो फिर इन तथाकथित धर्मों की क्या स्थिति होगी। भय यह है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इनके साथ वैदिक धर्म के सम्मान को भी आघात पहुंचने की आशंका है।

छात्रा—महात्माजी, क्या मत-मतान्तरों के व्यक्ति उपयुक्त खतरे को अनुभव नहीं कर सकते।

महात्मा—अवश्य वह भी इस खतरे का अनुभव करते रहे हैं। उन्होंने अपनी बुद्धि विरोधी मान्यताओं के बुद्धिपरक अर्थ करने प्रारम्भ कर दिये हैं फिर भी उन्हें अपनी मौत साफ नजर आ रही है। उनमें इतना साहस नहीं कि महर्षि दयानन्द की भांति अपनी पराई सभी की असत्य बातों का खंडन और सत्य बातों का समर्थन करना प्रारम्भ कर दें। आज के युग में यही एक ऐसा उपाय है जिससे मत-मतान्तरों की जीवन रक्षा हो सकती है।

महात्माजी ने समय को समाप्त होते देख अपने प्रवचन को शान्ति पाठ के साथ विराम दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२
वैदिक धर्म जीवन धारा है

आज सभा-स्थल खचा-खच भरा है इसमें नगर की जनता देखने योग्य थी। सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि अनेक मुस्लिम व इसाई वन्धु भी पधारे थे। उनके आने से सभा में विचित्र वातावरण वन गया। कारण यह कि वैदिक धर्म को गया गुजरा, सड़ा-गला, पुराना आदि निन्दा बचन तो सुनने को मिलते हैं पर आज एक महापुरुष ऐसा आया है जो वैदिक धर्म को सर्वोपरि घोषित करने का दावा करता है। कल उसके इस दावे ने कि वैदिक धर्म ही एक धर्म है शेष सब मत हैं, अन्य मजहवियों में भी खलबली उत्पन्न कर दी। विधर्मियों की उपस्थिति से प्रधानाचार्य को कुछ भय-सा लगा कि कहीं रंग में भंग न हो जाय, पर महात्माजी का शैली को देखते हुए उन्हें निश्चिंतता भी है।

महात्माजी ने ठीक समय पर मंत्र पाठ कर अपना प्रवचन इन शब्दों से प्रारम्भ किया। मेरे वच्चो! कल मैंने आपको वताया था कि धर्म धर्म है रिलीजन नहीं। आज वैदिक धर्म की दूसरी विशेषता उपस्थित करने लगा हूं। वह है कि—वैदिक धर्म एक जीवन धारा है। वैदिक धर्म की यह एक अपनी निराली विशेषता है जो अन्य किसी मजहव में मिलनी कठिन है। अर्थात् धर्म के सिद्धान्त के साथ जीवन का प्रत्येक अंग दृढ़ता से बंधा है। खाना, पीना, उठना, बैठना, सोना, चलना, बोलना सभी पूजा पाठ के समान श्रंखलाबद्ध धार्मिक कृत्य है। अन्य मजहबी लोगों के मजहवी कृत्य, पूजा स्थान पर निर्धारित पूजा करने तथा विशेष विश्वास को अपना लेने तक ही सीमित रखते हैं, पर वैदिक धर्म जीवन के प्रत्येक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कार्य को पूजा पाठ के समान ही एक धार्मिक कृत्य मानता है। इनमें से किसी की अवहेलना या निर्धारित नियमों के विपरीत आचरण वह पाप और निन्दनीय मानता है।

इन मजहवों की परिभाषा करना वड़ा सरल है क्योंकि उनका मजहव विशेष प्रकार की पूजा, विशेष विश्वास तथा पैगम्बरों व पुरुषों के आदेशों तक सीमित है, पर वैदिक धर्म की परिभाषा करना कठिन है। कारण यह किसी पूजा पाठ का नाम न होकर जीवन की एक पद्धति का नाम है अर्थात् एक जीवन धारा का नाम है। जीवन धारा को धारण करना सरल नहीं है। माता, पिता, पुत्र, भाई, बहन, पत्नी आदि पारिवारिक- व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक इत्यादि विविध प्रकार के समस्त कर्तव्य इस जीवन धारा के अंग हैं।

छात्रा —महात्माजी वैदिक धर्म जीवनधारा है यह समझ में नहीं आया कृपया विस्तार से बतलाने का कष्ट करें।

महात्मा—इसे समझाने का सबसे सरल उपाय है कि आप गांव के किसी अपढ़ तथा भोले व्यक्ति को प्रातः नींद से उठने के पश्चात कुछ खाने को दो; तो वह आपको वह जो उत्तर देगा वह आपकी आंख खोलने के लिए यथेष्ट है वह यही कहेगा विना शौच किये और हाथ धोये तथा दातुन किये कुछ खाना पाप है अधर्म है। यदि कोई बलात् उसे खिला दे तो उसकी आत्मा बेचैन हो उठती है और वह अनुभव करता है कि आज उसका धर्म भ्रष्ट हो गया। उत्तरप्रदेश व बिहार के वह बन्धु जो भारत विभाजन से पूर्व पंजाब, सिन्धु, उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त में सेवक के रूप में कार्य करते रहे। वे बड़े गर्व से कहा करते थे कि उन्होंने विषम परिस्थितयों में रहते हुए भी अपना धर्म नहीं छोड़ा अर्थात् खाने, पीने, रहने के नियमों को नही तोड़ा। बस यह भावना वैदिक धर्म की उस जीवन धारा का संकेत करती है जो भारत की झोंपड़ी से लेकर महलों तक समान रूप से प्रवाहित है।

छात्रा—अन्य धर्मावलम्बी भी अपने मजहब द्वारा बतलाये मार्ग पर चलते हैं फिर वैदिक धर्म और अन्य मजहब समान ही हुए दोनों में अन्तर कहां है ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—अन्य मतावलम्बी यदि निश्चित पूजा पाठ करता है और अपने धर्म गुरू के प्रति विश्वास रखते हैं पर यदि उसका जीवन अपने मजहब के बतलाये उपदेशों के अनुसार नहीं तब भी उस मजहब की दृष्टि में धार्मिक है। इसके विपरित कोई व्यक्ति अपने धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार पुनीत जीवन व्यतीत करता है पर वह मजहब का निश्चित पूजा पाठ नहीं करता, नमाज नहीं पढ़ता, और ईसा और हजरत मौहम्मद में विश्वास नहीं लाता तो वह इन मजहबों का दृष्टि में धार्मिक नहीं है।

परं वैदिक धर्म पूजा पाठ की अपेक्षा जीवन पर अधिक बल देता हैं। यदि कोई व्यक्ति पूजा पाठ नियमित रूप से करता है, और भगवान के नाम की माला भी खूब फेरता है पर वह अपने जीवन को धार्मिक नियमों के अनुसार व्यतीत नहीं करता तव वह वैदिक धर्म की दृष्टि में धार्मिक नहीं है इसके विपरीत वह व्यक्ति जो जीवन में धर्माचरण करता है, पर पूजा पाठ नहीं करता और ना ही किसी व्यक्ति को भगवान-प्रभूं पुत्र या भगवान का दूत मानता है तब भी ऐसे व्यक्ति वैदिक धर्म की दृष्टि में निश्चितता धार्मिक है। इस प्रकार वैदिक धर्म एक विशेष प्रकार का पूजा पाठ का नाम न होकर धर्म के अनुसार क्रियात्मक जीवन का नाम है।

छात्रा—अन्य सम्प्रदाय वाले ही यदि कोई मजहब के विपरीत आचरण करता है तो बुरा मानते हैं।

महात्मा—बुरा तो मानते हैं पर उसे अधर्म या पाप नहीं मानते। किसी धर्म को बुरा मानने और अधार्मिक मानने इन दोनों में बड़ा अन्तर है। उदाहरण—यदि कोई मुसलमान नमाज नहीं पढ़ता, रोजे नहीं रखता और ना ही वह हजरत मौहम्मद में विश्वास लाता है तो फिर इस्लाम की दृष्टि में केवल बुरा व्यक्ति नहीं है अपितु अधार्मिक व काफिर है। पर यदि वह अपने दैनिक जीवन में इस्लाम को किन्हीं बातों के विपरीत भी आचरण करें तव इस्लाम की दृष्टि में वह व्यक्ति बुरा तो है पर अधार्मिक व काफिर नहीं है।

पर वैदिक धर्म में विपरीत आचरण करने पर उसे अधार्मिक ही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं मानते अपितु उसका जाति बहिष्कार तक हो जाता है। आर्य जाति में अनेक उपजातियों के जन्म का इतिहास ही यह है कि इनके पूर्वज ने अपने दैनिक जीवन में कोई भारी अधार्मिक कार्य किया जिसके फल स्वरूप उनका जाति बहिष्कार कर दिया। उनकी संतानों ने अपना नया नाम रख एक नई उपजाति का निर्माण कर लिया। भारत में अधिकांश मुसलमानों का इतिहास भी यही है। उनके पूर्वज किसी समय हिन्दू थे पर अपनी किन्हीं भूलों के कारण जब उनका जाति बहिष्कार हो गया तो उन्होंने अन्य उपजाति बनाने की अपेक्षा मुसलमान बन जाना अधिक अच्छा समझा क्योंकि मुस्लिम राज्यकाल में मुसलमान बन जाने से उन्हें अधिक लाभ व सम्मान मिलने की आशा थी।

दैनिक जीवन में अधार्मिक कार्य करने पर किसी व्यक्ति को धर्म-भ्रष्ट मान उसका सामाजिक बहिष्कार करने की प्रथा केवल वैदिक धर्मियों में ही है अन्य धर्मों में नहीं। उसका मुख्य कारण यही हैं कि अन्य धर्मों में जीवन और धर्म दो अलग-अलग वस्तु है पर वैदिक धर्म की दृष्टि में धर्म और जीवन एक ही वस्तु के दो अविभाज्य अंग हैं।

छात्रा—जातिबहिष्कार की प्रथा ने हमारे लाखों करोड़ों बन्धुओं को हमसे अलग कर दिया तो यह प्रथा अच्छी नहीं बुरी है। इससे भला वैदिक धर्म की क्या विशेषता सिद्ध होती है।

महात्मा—यहाँ प्रश्न जाति बहिष्कार का नहीं है अपितु इस तथ्य की सिद्धि का है कि वैदिक धर्म पूजा-पाठ की अपेक्षा दैनिक जीवन में धर्माचरण को अधिक प्राथमिकता देता है। जाति बहिष्कार का उदाहरण इसलिए दिया गया ताकि आप यह समझ सकें कि वैदिक धर्मावलम्बी दैनिक जीवन धारा को ही धार्मिक कृत्य मानते हैं। और उसके उल्लंघन को पाप एवं असह्य व्यवहार मानते हैं।

छात्रा—महात्माजी, जाति बहिष्कार की प्रथा भी इसी मान्यता की उपज है या अंग है आप इससे तो इन्कार नहीं कर सकते; तो क्या आप जाति बहिष्कार का समर्थन करते हैं?

महात्मा—मैं जाति बहिष्कार की प्रथा का कट्टर विरोधी हूं, और इसे आर्य जाति के विनाश का एक बड़ा कारण मानता हूं। किसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अधार्मिक कार्य के लिए अन्य प्रकार का दण्ड होना चाहिए पर जाति से बहिष्कृत करना दण्ड नहीं, अपितु अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारना है।

छात्रा—महात्माजी, अन्य मतावलम्बी भले ही पूजा-पाठ को ही धर्म मानते हों पर उनके धर्म और जीवन में समानता है। क्या आप इससे सहमत नहीं हैं ?

महात्मा—सर्वथा नहीं हूं। जब तक दैनिक जीवन को ही पूजा-पाठ के समान धार्मिक कृत्य नहीं माना जाएगा तब तक समानता आना कठिन है। जब व्यक्ति के मन में यह विश्वास हो जाता है कि विधि विशेष से पूजा-पाठ करने तथा किसी विशेष महापुरुष में विश्वास लाने मात्र से ही स्वर्ग मिल जाएगा तो फिर वह अपने दैनिक जीवन को पवित्र व धार्मिक बनाने की क्यों चिंता करेगा ?

छात्रा—महात्माजी, दैनिक जीवन के प्रत्येक अंग को धर्म कैसे माना जा सकता है ? यदि जीवन की साधारण छोटी-छोटी बातें भी धर्म मानी जायेगी तो फिर यह धर्म क्या हुआ एक मजाक हो गया।

महात्मा—बेटी, धर्म उन कर्तव्यों का ही तो नाम हैं जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक उन्नति कर उसे सुख शान्ति और प्रगति प्रदान करें। इन कार्यों में क्या छोटे कार्यों का महत्त्व नहीं है ? कार्य छोटा हो या बड़ा हो अपने अपने स्थान पर सभी बड़े हैं। उदाहरणार्थ—प्रातः काल शौच जाने के कार्य को तुच्छ मानकर यदि कोई सन्ध्या हवन को ही महत्त्वपूर्ण मान उसको ही करने बैठ जाय तो उसे उसी दिन इसका कुपरिणाम अस्वस्थता के रूप में प्राप्त हो जायेगा। इसलिए किसी कार्य को साधारण या तुच्छ समझना ही धर्म का अपमान है और अहितकर हैं।

छात्रा—यदि वकील, दुकानदार आदि दैनिक जीवन को ही धर्म मान असत्य का परित्याग और सत्य का मार्ग अपनाने लगें तो फिर उनका तो बेड़ा ही डूब जाये। इसलिए दैनिक जीवन को धार्मिक कृत्य मानना क्या भूल नहीं है ?

महात्मा—यदि वकील, व्यापारी असत्य को छोड़ सत्य को अपनाने लगें तो प्रारम्भ में भले ही उनके सम्मुख कठिनाई आए पर अन्त में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उन्हें इससे बड़ा लाभ होगा। पर यदि कोई बात अच्छी नहीं है तो फिर धर्म मानने से ही क्या लाभ है। धर्म कोई प्रदर्शनी की वस्तु तो नहीं कि उसके सिद्धान्तों को सुन्दर अक्षरों में लिखाकर नुमायश के लिए टाँग दिया जाये। धर्म का उपदेश जीवन के लिए होता है। यदि कोई सिद्धान्त जीवन में न आए या आने लायक न हो तो फिर वह धर्म का अंग कैसे बन सकता है? धर्म का लक्ष्य मानव और मानव समाज को सुखी बनाना है। यह तभी सम्भव है जब धर्म मानव या मानव समाज के जीवन में आकर अपने स्वभाव को प्रगट करे। प्रदर्शनियों की अलमारियों में पुस्तकाकार पड़ा धर्म या पूजा-पाठ के रूप में मन्दिर, मस्जिद, गिरजा की दीवारों में बन्द धर्म मानव समाज के लिए किस प्रकार हितकर हो सकता है? यही कारण है कि वैदिक धर्म ने जीवन में धर्माचरण को ही अधिक महत्त्व दिया है, और यह इसकी अपनी विशेषता है।

छात्रा—जीवन के प्रत्येक कार्य को धर्म मानने या धर्म के अनुसार जीवन के प्रत्येक कार्य करने से क्या व्यक्ति बन्धन में बंध नहीं जाता यदि हां तो क्या इससे जीवन ही एक जेल खाना नहीं बन जायेगा? क्या जेल खाने में कोई भी भला व्यक्ति रहना पसंद करेगा?

महात्मा—बेटी, नियमों के अनुसार अपने जीवन को चलाना जेल नहीं सही मार्ग है। नियमों में बंधे जीवन को जेल कहना अथवा ऐसा समझना भारी भूल है। जेल जीवन उस जीवन का नाम है जहाँ व्यक्ति को स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करने की छूट न हो। और उसकी इच्छा के विपरीत किन्हीं नियमों के अन्दर उसे चलने को बाध्य किया जाए; पर जब मनुष्य अपनी सुख, शान्ति और प्रगति के निमित्त सहर्ष स्वेच्छा से अपने दैनिक जीवन को धार्मिक जीवन कहते हैं। दोनों प्रकार के बन्धनों में आकाश पाताल का अन्तर है।

छात्रा—महात्माजी, मानव-स्वभाव स्वतन्त्रता प्रेमी है। उसे किसी प्रकार का बन्धन पसंद नहीं है चाहे वह बन्धन अच्छा हो या बुरा। ऐसी अवस्था में आप धार्मिक बन्धनों का समर्थन कैसे कर सकेंगे?

महात्मा—संसार का प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता के अतिरिक्त सुख-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति भी चाहता है। यदि उसे स्वतंत्रता और सुख शान्ति में चुनाव करने को कहा जाय तो वह सुख-शान्ति को ही अपनाना पसंद करेगा। सुख शान्ति कर्मों का ही फल है और संसार का अच्छा बुरा प्रत्येक कर्म किसी न किसी नियम के बन्धन में बंधा है। इस प्रकार नियमों का उल्लंघन करने से तो संसार का कोई भी कार्य होना असम्भव हो जाएगा। जब कर्म ही नहीं होगा तो फिर सुख शान्ति की प्राप्ति कैसी ?

अतः अपनी इच्छानुसार अपने जीवन को नियमों में बांधना बंधन नहीं अपितु स्वतंत्रता है और यही आदर्श सुखी जीवन है। नियमों से जो जीवन बंधा नहीं होता वह आकाश में उड़ते हुए पत्ते के समान है। जिसका पता नहीं कि हवा उसे उड़ाकर कहां ले जाए।

छात्रा—जब जीवनधारा का नाम ही वैदिक धर्म है तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को वैदिक धर्म कहने लगेगा इस प्रकार वैदिक धर्म भिन्न-भिन्न जीवनों का एक जंगल सदृश बन जायेगा। फिर एक जीवन धारा के स्थान पर अनेक जीवनधाराएँ बन जायेंगीं।

महात्मा—जीवनधारा वैदिक धर्म के मौलिक सिद्धान्तों के कगारों से बंधी रहने के कारण भिन्न नहीं हो सकती। अपितु झोंपड़ी से लेकर महलों तक वह एक सदृश ही रहेगी। उसका स्वरूप भले ही भिन्न हो पर उसका मूल तत्त्व आत्मा समान ही रहेगी।

छात्रा—महात्माजी, अन्य धर्मावलम्बियों की भी एक अपनी जीवन धारा होती है। आप इस सत्यता को स्वीकार क्यों नहीं करते ?

महात्मा—उनकी अपनी एक जीवनधारा होती है यह बात सत्य है परन्तु वह जीवनधारा देश, काल, परिस्थिति की उपज होती है न कि धर्म की। उदाहरण के लिए ईसाई धर्म का मूल सिद्धान्त अहिंसा है परन्तु ईसाई राष्ट्रों के जीवन इसके सर्वथा विपरीत हिंसा को धारण किये हुए हैं। इस प्रकार उनके धार्मिक सिद्धान्त और जीवनों में सर्वथा भिन्नता है पर इसके विपरीत वैदिक धर्म के सिद्धान्त और सामाजिक जीवन में भिन्नता नहीं है।

छात्रा—महात्माजी, आप जानते ही हैं कि सभी मनुष्यों के गुण, कर्म, स्वभाव व आयु में विभिन्नता होने से सबके जीवनों में असमानता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होना स्वाभाविक है । वैदिक धर्म के मौलिक सिद्धान्त निश्चित हैं । उन निश्चित सिद्धान्तों के आधार पर इन भिन्नता पूर्ण जीवनों का नियमन वैदिक धर्म ने किस प्रकार किया ?

महात्मा—आपका प्रश्न महत्वपूर्ण है । वैदिक धर्म ने मानव के विभिन्न गुण, कर्म, स्वभाव और आयु का ध्यान करके ही वैदिक समाज-व्यवस्था की रचना की है । वर्णाश्रम व्यवस्था और दैनिक पंच यज्ञों का करना यह इस व्यवस्था के आधार है ।

छात्रा—क्या आप इन पर प्रकाश डाल सकेंगे ?

महात्मा—यह आज का विषय नहीं है । समय आने पर इनके महत्त्व पर फिर कभी प्रकाश डाला जायेगा ।

समय समाप्त हो जाने से शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३
वैदिक धर्म—बुद्धिवादी है

इग्लैंड से आई केनिया वासिनी छात्रा के प्रश्नों की बौछार ने प्रार्थना-सभा में एक नया जीवन ला दिया। छात्रा के प्रश्नों से सबको यह अनुभव हो गया कि वह वैदिक धर्म के बारे में ज्ञान प्राप्ति के लिए कितनी उत्सुक है। हो भी क्यों न? कई वर्षों तक लगातार इग्लैंड में अपने धर्म का उपहास सुनते-सुनते वह तड़फड़ा उठी है, और इग्लैंड जाने से पूर्व वह अपने धर्म के बारे में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहती है। आज उसके साथ लन्दन में पढ़ने वाली कई दिल्ली निवासी छात्राऐं भी आई हैं। प्रतीत होता है कि अब प्रार्थना सभा का मोर्चा छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के साथ रहेगा। छात्र भी यही चाहते हैं कि विदेशों के अनुभव के आधार पर वही उनका नेतृत्व करें।

महात्माजी ने नियमानुसार मन्त्र-पाठ के पश्चात् इस प्रकार अपना प्रवचन प्रारम्भ किया—प्रिय छात्र-छात्राओं, वैदिक धर्म की विशेषताओं पर चर्चा में केनिया वासिनी छात्रा द्वारा किये प्रश्नों को सुनकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। आज वह अपनी अन्य सहेलियों को लेकर आयी है। प्रतीत होता है कि आज आक्रमण भयंकर होगा इसलिए आज अधिक भूमिका न बांधता हुआ मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि संसार में वैदिक धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो बुद्धिवाद अथवा युक्तियों में विश्वास रखता है। जबकि अन्य सब धर्म अन्धविश्वास पर आधारित हैं, उनका विश्वास है कि धर्म में अक्ल का दखल नहीं होता। खुदा के कार्यों में अक्ल का दखल देना ठीक नहीं। वैदिक धर्म, धर्म और बुद्धिवाद को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक मानकर चलता है।

छात्रा—महात्माजी, धर्म और अन्धश्रद्धा या धर्म और अन्धविश्वास इनका मेल तो सुनने में आया था पर धर्म और बुद्धिवाद का मेल आश्चर्यजनक है और आपके अपने मस्तिष्क की उपज ही प्रतीत होता है। क्या आप ऐसा प्रमाण दे सकते हैं कि वैदिक धर्म बुद्धिवाद को प्रोत्साहन देता है ?

महात्मा—वैदिक धर्म वेद पर आधारित है। वेद को आर्य आदि ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। वेद चार हैं। चारों ही वेदों में किसी मंत्र को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है तो वह गायत्री मंत्र है। वेदों के सब मंत्र एक सदृश व ईश्वरीय ज्ञान के संदेश वाहक हैं। इनमें एक गायत्री मंत्र अपना विशिष्ट स्थान इसलिए रखता है क्योंकि इसमें उस वस्तु की कामना की जाती है जिसकी मानव जीवन में सर्वाधिक आवश्यकता है। वैदिक संध्या में इसके ही जाप करने का विधान है। इसमें भगवान से यह प्रार्थना की गई है कि—हे सर्वव्यापक, दुःख नाशक, सुख स्वरूप, भगवन् तुम इस सृष्टि के उत्पादक और प्रकाशक हो। तुम ही स्वीकार किये जाने योग्य हो। हम तुम्हारा ही ध्यान करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हम सबकी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग पर चलने का प्रेरणा दें।

बुद्धि की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करने वाला धर्म भला अन्धश्रद्धा व अन्धविश्वास का कैसे पक्षपाती बन सकता है, क्योंकि दोनों ही विरोधी बातें हैं।

दूसरी छात्रा—यदि धर्म में अन्धविश्वास व अन्धश्रद्धा का समिश्रण किया जाये तो क्या हानि है ?

महात्मा—महान् हानि है। भगवान ने संसार में दो प्रकार के प्राणी उत्पन्न किए हैं। एक वे जो बुद्धिहीन हैं और सहज ज्ञान से उनका जीवन मशीन की भांति चलता रहता है, उन्हें क्या खाना है, कैसे रहना है, आदि सभी बातों का ज्ञान स्वाभाविक ज्ञान द्वारा होता है। दूसरा प्राणी मानव है जिसे ईश्वर ने बुद्धि दी है, वह क्या खाये, कैसे चले, क्या करे आदि सभी बातों की उसे अपनी बुद्धिनुसार स्वतन्त्रता है इसीलिए पशु, पक्षी आदि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योनियों को केवल भोग योनि और मानव योनि को भोग और कर्म योनि दोनों कहा गया है अर्थात् वह अपनी बुद्धि के सहारे, अपने कर्मों द्वारा अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है।

यदि धर्म के नाम पर मानव की बुद्धि को अन्धविश्वास व अन्धश्रद्धा द्वारा कुंठित बना दिया गया तो यह पहले ईश्वर की इच्छा के विपरीत होगा और दूसरे स्वयं मानव अपने में बुद्धि रखते हुए भी पशु-पक्षी की पंक्ति में खड़ा हो जाएगा। धर्म का लक्ष्य मानव कल्याण करना है न कि उसकी बुद्धि का हरण करके उसे मानव से पशु बना देना। दुर्भाग्यवश आज धर्म के नाम पर यही सब कुछ हो रहा है।

तीसरी छात्रा—अच्छी बातों के प्रति अन्धश्रद्धा और अन्धविश्वास का सहारा लिया जाये तो हानि क्या है ?

महात्मा—सबसे पहली हानि यह है कि जब एक वस्तु सत्य है और अच्छी है तो उसे फिर युक्तिपूर्वक समझाने की अपेक्षा अन्धविश्वास के द्वारा किसी पर थोपना कहां तक उचित है। दूसरा, मन व मस्तिष्क का स्वभाव है कि युक्ति-युक्त कही गई बात को वह हृदय से स्वीकार करता है पर लोभ, लालच, भय या धोखा देकर यदि उस पर कोई विचार थोप दिया जाए तो वह भले ही दिखावे के लिए मान ले पर अन्दर से वह उसे स्वीकार नहीं करता और उसके प्रति सदा संदेहास्प्रद रहता है। इसलिए अच्छी बातों के लिए भी किसी प्रकार के अन्धविश्वास और अन्धश्रद्धा का सहारा लेना उचित नहीं हैं।

चौथी छात्रा—प्रत्येक बात को समझाना भी तो कठिन है, इस कारण यदि अन्धविश्वास का सहारा लिया जाये तो इसमें आपको क्या आपत्ति है ?

महात्मा—सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि अंधविश्वास द्वारा जब युक्ति का द्वार ही बन्द कर दिया गया फिर बुद्धि के प्रयोग का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है। यहां तो बुद्धिमान व्यक्ति को भी धर्म के विषयों पर शंका करने से रोक दिया गया है। शंका करनेवालों को काफिर व नास्तिक की संज्ञा देकर उन्हें दण्डनीय माना गया है।

छात्रा—ईश्वर का ज्ञान और उसकी रचना असीमित है और मानव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बुद्धि व शक्ति सीमित है। ऐसी अवस्था में अन्धश्रद्धा और अन्धविश्वास के विना कैसे काम चलेगा ? मानव ईश्वर के ज्ञान और उसकी रचना को कैसे समझ सकेगा ?

महात्मा—आपकी बात सत्य है पर मनुष्य की जितनी बुद्धि है और उसकी जितनी सामर्थ्य है उतनी बातें तो उसे बुद्धिपूर्वक समझने का अधिकार है। शेष बातों को भी वह अनुमान व तर्क के सहारे जान सकता है। जैसे जंगल में मानव के पद-चिह्नों को देखकर यह अनुमान सरलता से लगाया जा सकता है कि इधर से कोई मनुष्य चलकर गया है। भले ही उसने मनुष्य को जाते हुए नहीं देखा पर यदि कोई मनुष्य के पद-चिह्नों को देखकर यह कहे कि इधर से हाथी गया है तो कौन बुद्धिमान व्यक्ति उसे स्वीकार कर लेगा ?

छात्रा—खुदा के कार्यों में आवाज का दखल नहीं होता, इस दलील का आप किस आधार पर खण्डन करते हैं ?

महात्मा—भगवान को सब धर्मावलम्बी, सच्चिदानन्द अर्थात् सत्, चित व आनन्द अर्थात् ज्ञानवान मानते हैं। जो जैसा होता है वैसी ही वह रचना करता है। जब भगवान बुद्धिमान है तो उसकी रचना भी बुद्धि-पूर्वक होनी चाहिए इसलिए उसकी रचना में बुद्धि को स्वीकार न करना खुदा और उसकी रचना दोनों का अपमान करना है।

प्रत्यक्ष प्रमाण के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। वर्तमान समय में संसार के वैज्ञानिकों ने बुद्धि के सहारे भगवान की रची सृष्टि की जो खोज की है क्या उसे झुठलाया जा सकता है। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि भगवान की रचना में बुद्धि का ही आधार है। अन्धविश्वास और अन्धश्रद्धा का नही।

छात्रा—महात्माजी क्या ईश्वर को भी बुद्धि द्वारा देखा व समझा जा सकता है।

महात्मा—बुद्धि के बिना ईश्वर के स्वरूप को जानना सर्वथा असम्भव है। वैदिक धर्म की यही विशेषता है कि इसने ईश्वर को कल्पना के आधार पर स्वीकार नहीं किया अपितु बुद्धि पूर्वक इसकी सत्ता को जाना और देखा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रा—क्या आप वेदों से अपनी बात के पक्ष में कोई प्रमाण दे सकते हैं ?

महात्मा—वेद में उपदेश दिया गया है कि—

यौ विद्यात सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः
सूत्रं सूत्रस्य यौ विद्यात् स विद्यात् ब्राह्मणम् महत् ।।

अर्थात् जो व्यक्ति इस भौतिक जगत में व्याप्त सूत्रों को अथवा जगत में व्याप्त वैज्ञानिक नियमों और उन नियमों के अन्दर व्याप्त सूत्र या नियमों को जानता है वही ब्रह्म को जान सकता है। इस प्रकार वैदिक धर्म प्रत्यक्ष रूप में ईश्वर रचित सृष्टि की खोज कर इसके निर्माता ईश्वर को जानने का निर्देश करता है।

छात्रा—अन्य धर्मों ने अन्धविश्वास तथा अन्धश्रद्धा का सहारा क्यों लिया ?

महात्मा—यह बात सर्वांश में सत्य भी नहीं है कि अन्य मतावलम्बियों ने युक्ति का सहारा ही नहीं लिया है। संसार के प्रत्येक मत संस्थापक ने अपने धर्म की स्थापनार्थ दूसरे धर्मों का युक्ति के सहारे खण्डन किया है। पर अपने धर्म के लिए बुद्धि का द्वार बन्द कर दिया है। उन्हें वाद के अन्धश्रद्धा का सहारा इसलिए लेना पड़ा क्योंकि उन्हें अपनी अनेक बातों को युक्ति पूर्वक समझाना कठिन था।

छात्रा—क्या आप अपनी मान्यता के लिए कोई प्रमाण दे सकते हैं ?

महात्मा—ईसाई तथा इस्लाम की धर्म पुस्तक में सृष्टि रचना, स्वर्ग नर्क आदि के सम्बन्ध में जो गप्पें लिखी हैं उन्हें आज के वैज्ञानिक युग में कौन स्वीकार कर सकता है ? ऐसी ही उनमें बुद्धि विरोधी कल्पनाऐं भरी पड़ी हैं। अब वैज्ञानिकों ने उनकी सत्यता पर संदेह प्रकट कर दिया है तो प्रत्येक अपने सिद्धान्तों को तोड़-मरोड़कर विज्ञान के अनुकूल सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा है। यह अच्छा चिह्न है। अभिप्राय यह है कि उन्होंने भी अब इस तथ्य को मान लिया है कि धर्म में बुद्धि का प्रवेश है।

छात्रा—क्या अन्धविश्वास और अंधश्रद्धा के सहारे धर्म को प्रचारित व प्रसारित नही किया जा सकता ? प्रत्यक्ष तो यह दीख रहा है कि अन्धविश्वास तथा अन्धश्रद्धा का सहारा लेकर ईसाई व इस्लाम धर्म

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के प्रत्येक कौने में पहुंच गये हैं पर बुद्धिवादी वैदिक धर्म केवल भारत की ही सीमा में सिमटा बैठा है।

महात्मा—अन्धश्रद्धा व अन्धविश्वास के सहारे अज्ञानी लोगों में धर्म का प्रचार व प्रसार तेजी से होना स्वाभाविक है पर ज्यों-ज्यों ज्ञान का विस्तार होता जाएगा त्यों-त्यों इन धर्मों को भी अपना विस्तरा गोल करना पड़ेगा। रूस, चीन में इनका विस्तरा गोल हो ही चुका है, और यूरोप, अमरीका में गिरजाघर खाली पड़े रहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वैज्ञानिक युग में अन्धविश्वास पर आधारिक मतों का ठहरना सर्वथा असम्भव है। इसका दुष्परिणाम यह होगा कि संसार धर्म को ही तिलां-जलि दे नास्तिकता और अधार्मिक के गर्त में जा गिरेगा।

छात्रा—कई मत चमत्कारों में भी विश्वास करते हैं क्या आप इनका भी विरोध करते हैं ?

महात्मा—चमत्कार अन्धविश्वास की ही उपज हैं। इसलिए उनका बुद्धि विरोधी होने के कारण स्वीकार करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। यों तो ज्ञान-दिज्ञान के क्षेत्र में नई खोजें चमत्कार सदृश होते हैं। ऐसे चमत्कारों का सभी प्रगतिशील बुद्धिमान स्वागत करते हैं, क्योंकि इन चमत्कारों का आधार बुद्धि होती है, और यह मानव जाति की ज्ञान व हित वृद्धि में सहायक होते हैं, पर मत-मतान्तरों ने जिन चमत्कारों का सहारा लिया है उनका बुद्धि से कोई सम्वन्ध नहीं है। ईश्वरीय नियम व सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य करने को ही इन मतवालों ने चमत्कार माना है। इन्हें स्वीकार करना ईश्वर और बुद्धि दोनों का ही अपमान है।

छात्रा—चमत्कारों को स्वीकार करने से ईश्वर का अपमान कैसे है ?

महात्मा—ईश्वर स्वयं अपने बनाये नियमों का उल्लंघन नहीं करता है। यदि वह ऐसा करे तो संसार की व्यवस्था लड़खड़ा जाये। पर जिस काम को ईश्वर नहीं करता, करना उचित नहीं समझता उसे अपने को ईश्वर भक्त ईश्वर पुत्र या ईश्वर दूत करने का साहस करे तो इसे ईश्वर का अपमान ही समझना चाहिए।

छात्रा—जव चमत्कार असत्य हैं और ईश्वरीय नियमों के विरोधी है तो फिर रिलीजन ने इनका सहारा क्यों लिया है ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—अपने धर्मगुरुओं की बुद्धि विरोधी तथा अवैज्ञानिक बातों को शिष्य लोगों के गले से नीचे उतारने के निमित्त उनका यह षड़यन्त्र है। चमत्कारों द्वारा वे अपने धर्म संस्थापक को अलौकिक व्यक्ति सिद्ध कर उसे ईश्वर-पुत्र या ईश्वर दूत कहने का दावा करते हैं ताकि उनके वचनों पर कोई संदेह ही न करे।

छात्रा—इन चमत्कारों का जन्म या प्रचार धर्म-गुरुओं के जीवन काल में उनकी सहमति से किया गया था या उनकी मृत्यु के पश्चात उनके शिष्यों ने किया ?

महात्मा—सभी धर्म-संस्थापक अपने युग के महापुरुष हुए हैं भले ही हमारा उनके साथ मतभेद हो, पर उन्होंने अपने समय में मानव जाति के हितार्थ ही प्रयत्न किया था। उनके जीवन काल में उनके साथ इन चमत्कारों का जोड़ा जाना सम्भव प्रतीत नहीं होता। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके शिष्यों का ही यह षड़यन्त्र है।

छात्रा—इन चमत्कारों से यदि प्रचार में सहायता मिलती है तो इनको अपनाने में हानि क्या हैं।

महात्मा—हानि यह है कि इनके कारण समूचे धार्मिक ढांचे के प्रति ही लोगों में अश्रद्धा व अविश्वास उत्पन्न हो जाएगा। अज्ञानियों के मध्य तो चमत्कार जादू का काम करते हैं और इन्होंने किया भी है परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में यही चमत्कार इन मत-मतान्तर की मौत सिद्ध हो रहे हैं। इनके कारण आज सर्वत्र धर्म के विरुद्ध घृणा और उपहास का वातावरण बन गया है, और धर्म एक पिछड़े लोगों की वस्तु बनता जा रहा है।

छात्रा—जहां तक मेरा ज्ञान है—पुराणों में तो एक से एक बढ़कर चमत्कार भरे पड़े हैं। फिर आप यह कैसे कहते हैं कि वैदिक धर्म चमत्कारों का विरोधी है।

महात्मा—वेद ही समस्त आर्य जाति के मूल सर्वसमस्त धर्म ग्रन्थ हैं। वेद चमत्कार विरोधी हैं। पुराणों का निर्माण मध्य काल में, जब भारत में इन चमत्कारों का सहारा लेकर अनेक मत- मतान्तरों ने प्रसार करना प्रारम्भ किया और वैदिक धर्म को संकट उत्पन्न हो गया तो, विष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मारने के लिए विष का प्रयोग करने के समान कुछ लोगों ने इन पुराणों की रचना कर डाली। इसीलिए उन्हें वैदिक धर्म का अंग कदापि नहीं माना जा सकता। इसके अतिरिक्त कई विद्वानों का ऐसा मत भी है कि पुराणों के चमत्कार, चमत्कार नहीं अपितु दार्शनिक सिद्धान्तों को समझाने की एक शैली है। इस पर कई ग्रन्थ भी प्रकाशित हो चुके हैं।

छात्रा—वैदिक धर्म ही बुद्धिवादी तथा वैज्ञानिक है इसका आपके पास प्रमाण क्या है?

महात्मा—आप संसार के समस्त तथाकथित धर्म ग्रन्थों में तथा वेदों में ईश्वर, स्वर्ग, नर्क तथा सृष्टि रचना के वर्णन को पढ़ जायें। आपको यह भेद स्पष्ट प्रकट हो जाएगा। अन्य ग्रन्थों में आपको मिलेगा कि ईश्वर ने इच्छा की और सात दिन में समस्त सृष्टि रचना कर डाली। ईश्वर अमुक स्थान पर बैठा है, स्वर्ग, नर्क कहीं अन्यत्र स्थित हैं, पृथ्वी चटाई की भांति चपटी है। यदि प्रश्न कर दिया जाए कि ईश्वर ने क्यों सृष्टि रचना की इच्छा की? किस वस्तु से किस प्रकार दुनिया को बनाया? पृथ्वी चपटी कैसे है? चौथा या सातवां आसमान जहां ईश्वर बैठा है कहाँ है? तो आपको कोई उत्तर नहीं मिलेगा। परन्तु वैदिक धर्म उपर्युक्त सब प्रश्नों पर शुद्ध बुद्धिवादी वैज्ञानिक दृष्टिकोण उपस्थित करता है। जैसे सृष्टि रचना के बारे में सांख्य दर्शन के रचियता आचार्य कपिल ने सृष्टि रचना का वर्णन इस प्रकार किया है—

प्रकृते महान महतोअहंकारः। अहंकारात् पंचत्मात्राणि उभयमिन्दियम्
तन्मात्रेभ्यः स्थूल भूतानि पुरुष इति पंचविंशतार्पणः।

(सांख्या करिका) नं० २२

अर्थात् सृष्टि रचना से पूर्व प्रकृति सत, रज, तम, नामक परमाणुओं की साम्यावस्था में थी और अदृश्य थी, परन्तु ईश्वर ने जब इसे गति प्रदान कर इसमें विषमावस्था उत्पन्न की तो सर्वप्रथम यह दृश्यमान रूप मदद के रूप में प्रकट हुआ। मदद अर्थात् सामा रहित दृश्यमान वस्तु। मदद से अहंकार अर्थात् विभिन्न वस्तुओं का अस्तित्व प्रकाश में आना प्रारम्भ हुआ। अहंकार के पश्चात् पंचतन्मात्राओं का प्रादुर्भाव हुआ, पाँच तन्मात्राओं के पश्चात् स्थूलभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आकाश का निर्माण हुआ। तद्नुसार पाँचों ज्ञानेन्द्रियां और पाँचों कर्मेन्द्रियां, मन तथा पुरुष हुए। इस प्रकार प्रारम्भ में पच्चास तत्व क्रमश: प्रकाश में आए, और इस क्रम ने सात दिन नहीं अपितु लाखों वर्ष लिए। सत्, रज और तम के विभिन्न अनुपात के कारण किस प्रकार लगातार प्रकृति में परिवर्तन और विकास हुआ। यह वैज्ञानिकों के ही समझने की वस्तु है कुछ समय पूर्व सत, रज व तम परमाणु की वात मजाक थी, परन्तु अब जबकि परमाणुओं के विस्फोट के पश्चात् इलक्ट्रोन, प्रोटोन व न्यूट्रोन का ज्ञान हुआ तो उनका रहस्य समझ में आया। इस प्रकार वैदिक धर्म सभ्यता व संस्कृति का प्रत्येक सिद्धान्त और चिन्तन पद्धति बुद्धिवाद व विज्ञान पर आधारित है।

वैदिक धर्म ही संसार में ऐसा है जो विज्ञान के पुजारी नास्तिकों की युक्तियों का तर्क सम्मत उत्तर देता हुआ ईश्वर और धर्म की मान्यता को सत्य और मानव के लिए कल्याणभूत सिद्ध कर सकता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४
विचार स्वातन्त्र्य

महात्माजी ने ठीक समय पर पधारकर बिना किसी भूमिका के इस प्रकार अपनी ज्ञान-धारा को प्रसारित करना प्रारम्भ किया······

भारत की भावी आशाओं ! मैंने अपको अपने पिछले प्रवचनों में वैदिक धर्म की विशेषताओं को बतलाते हुए कहा है कि वैदिक धर्म रिलीजन नहीं, धर्म है। वैदिक धर्म विशेष पूजा-पाठ न होकर एक जीवन धारा का नाम है और वैदिक धर्म बुद्धिवादी है। आज वैदिक धर्म की एक नई विशेषता पर प्रकाश डालना है कि वैदिक धर्म विचार स्वातंत्र्य प्रेमी है। यह भी धार्मिक क्षेत्र में इसकी अपनी निराली विशेषता है।

बहुधा तथाकथित धर्म विचार स्वातंत्रय के कट्टर विरोधी है। धर्म मान्यताओं पर संदेह करना नास्तिकता, अधार्मिकता तथा अक्षम्य अपराध माना जाता है। ऐसे लोगों को काफिर की संज्ञा देकर ये लोग मृत्यु दंड का विधान करते हैं। "महर्षि दयानन्द को विष देना" ईसामसीह को फांसी देना, सुकरा त को जहर पिलाकर मार देना, मंसूर की पत्थरों से हत्या करना केवल इसलिए हुआ कि इन्होंने प्रचलित धर्मों पर शंका कर उनका विरोध किया था। इसी प्रकार अनेक महान आत्माएँ धर्मांन्ध लोगों के हाथों केवल मत-भेद के कारण संसार से विदा कर दी गई।

परन्तु वैदिक धर्म विचार स्वातंत्र्य को धर्म का प्रधान अंग मानता है। इसकी दृष्टि में विचार स्वातंत्र्य मानवता का प्रतीक है, और मानव समाज की प्रगति का मूल आधार है। धर्म द्वारा या किसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अन्य प्रकार से विचार स्वातंत्र्य पर प्रतिबन्ध लगाना मानव समाज की सेवा नहीं अपितु कुसेवा है। वैदिक धर्म पाप से सर्वथा मुक्त है और सच्चे अर्थों में मानव समाज के सुख, शान्ति व प्रगति में सहायता करता है। इसीलिए इसने धार्मिक क्षेत्र में विचारों को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है।

छात्रा—महात्माजी, धर्म में विचारों को स्वतंत्रता देने से तो धर्म का स्वरूप व अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा फिर ऐसे विचार स्वातंत्र्य को अपनाने से क्या लाभ।

महात्मा—विचार स्वातंत्र्य से झूठे धर्मों के स्वरूप व अस्तित्व को ही खतरा हो सकता है। सच्चे धर्मों को नहीं । विचार स्वातंत्र्य से उल्टा धर्म के ज्ञान का प्रचार व प्रसार ही होता है । वैदिक धर्म इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

छात्रा—यदि आपकी बात सत्य है तो अन्य धर्मावलम्बियों ने अपने यहाँ विचार स्वातंत्र्य पर प्रतिबन्ध क्यों लगाया है।

महात्मा—उन्हें भय है कि विचार स्वातंत्र्य के कारण उनका बुद्धिविरोधी बातों पर शंकाएं उठेंगी और उनका धर्म ही इस प्रकार संकट में पड़ जाएगा ?

छात्रा—महात्माजी आपने अभी प्रवचन प्रारम्भ करते हुए कहा है कि ईसामसीह को विचार स्वातंत्र्य के कारण फांसी पर लटका दिया गया था तो क्या ईसाई धर्म भी विचार स्वातंत्र्य में विश्वास रखता है ?

महात्मा—खेद व आश्चर्य इस बात का है कि अपने धर्म की स्थापना से पूर्व जिस विचार स्वातंत्र्य का लाभ उठाकर उन्होंने उस समय प्रचलित मतों का खण्डन कर अपने मत की स्थापना की उसी विचार स्वातंत्र्य को इसाई मत नें अपने मतावलम्बियों के लिए निर्मित कर दिया।

विचार स्वातंत्र्य का ईसाई मत कितना विरोधी है इसका काला इतिहास आपको कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के संघर्ष मालूम हो जाएगा"। इंग्लैंड, आयरलैंड जर्मनी, आदि देश इन संघर्षों के अखाड़े रहे हैं। कारण था कि प्रोटेस्टों ने रोम की गद्दी का अन्धानुकरण न कर ईसाई मत में समयानुकुल संशोधन कर दिया था। वस इन्हें ईसाई मत का शत्रु मानकर इनका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कत्ले आम करना आरम्भ कर दिया ।

छात्रा —ईसाई मत के समान इस्लाम मत भी विचार स्वातंत्र्य का शत्रु है ।

महात्मा—विचार स्वातंत्र्य का इस्लाम मत संसार भर में सबसे कट्टर शत्रु है। विचार स्वातंत्र्य रखने वाला व्यक्ति इस्लाम की दृष्टि में काफिर और अक्षम्य हैं ?

छात्रा—क्या ईश्वरीय ज्ञान पर शंका करना उचित है ?

महात्मा—ईश्वरीय ज्ञान या कोई भी ज्ञान हो उसकी सत्यता का बुद्धि पूर्वक परख करने का मानव का जन्म सिद्ध अधिकार है। बुद्धि होने के कारण ईश्वर स्वयं यह चाहता है कि मनुष्य प्रत्येक बात को बुद्धि पूर्वक सोच विचार कर ही ग्रहण करे। इसके अतिरिक्त जब ईश्वर का ज्ञान सत्य है तो फिर उस पर शंका होने से भयभीत होने की क्या आवश्यकता है ?

छात्रा— क्या आप वेदों पर शंका करना उचित समझते हैं ?

महात्मा—आर्य जाति ने वेदों के ज्ञान पर शास्त्रार्थ का सदैव आदर किया है । इसका इतिहास साक्षी है। बड़े-बड़े ऋषि मुनियों के यहां बहुधा शंका समाधान चलते थे, प्राचीन काल में शिक्षा की यही पद्धति थी। सबसे प्रबल व प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि जहां संसार के अन्य धर्मावलम्बी आज तक केवल एक ही पुस्तक के चारों ओर चक्कर काट रहे हैं, वहाँ वैदिक धर्म में वेद के पोषक धर्म ग्रन्थों का अथाह ज्ञान भण्डार भरा पड़ा है।

छात्रा—विचार स्वातंत्रय से यह भी तो सम्भव है कि धर्म की एकता समाप्त होकर भिन्नता उत्पन्न हो जाये ?

महात्मा—जब संसार में सत्य का स्वरूप एक है तो बुद्धिवाद तथा विचार स्वातंत्र्य के कारण भले ही कुछ समय के लिए विभिन्नता उत्पन्न हो जाय, पर वह अधिक समय तक टिक नहीं सकती है। बुद्धिवाद अथवा विचार स्वातंत्रय भिन्नता से एकता की ओर आने में सहायक होता है न कि एकता से भिन्नता की ओर। यदि आज संसार के समस्त धर्मावलम्बी विचार स्वातंत्र्य के आधार पर सत्य के ग्रहण करने तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
असत्य के त्यागने तथा सब काम सत्य असत्य का विचार कर करने लगें तो फिर सभी धर्मावलम्वी एक सत्यता पर आकर एक हो जाएं और परिणाम स्वरूप संसार में सच्चे मानव धर्म का उदय हो जाय। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का यही दृढ़ मत था, और इसी दृष्टि से उन्होंने अपने ग्रंथ (सत्यार्थ प्रकाश) को लिखा।

छात्रा—क्या आप ऐसा कोई प्रमाण दे सकते हैं जिससे सिद्ध हो सके कि वैदिक धर्म विचार स्वातंत्र्य का स्वागत करता है ?

महात्मा—वैदिक वाण्गमय के षड्दर्शन विचार स्वातंत्र्य का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

छात्रा—क्या आप यह अनुभव नहीं करते हैं कि वैदिक धर्मा-वलम्वियों में एक धर्म पुस्तक, एक पूजा विधि व एक विचार न होने से इसकी एकता समाप्त प्रायः हो गई है ? यदि ऐसा है तो फिर विचार स्वातंत्रय को अपनाने से क्या लाभ ?

महात्मा—वैदिक धर्मावलम्वियों की वर्तमान भिन्नता का कारण विचार स्वातन्त्र्य नहीं अपितु जबसे वैदिक धर्मियों ने बुद्धिवाद व विचार स्वातन्त्रय को समाप्त कर अन्धविश्वास, रूढ़िवाद व गुरुडम का सहारा लिया तभी से इसमें नाना प्रकार के मत-मतान्तरों ने जन्म लेकर इसकी एकता को समाप्त कर दिया है।

छात्रा—महात्माजी, क्या आप ऐसा प्रमाण दे सकते हैं कि वैदिक धर्मावलम्बियों ने वेद विरोधियों को भी सहन किया हो ?

महात्मा—सभी जानते हैं कि वेद तो दृढ़ता से एक ईश्वर की उपासना का उपदेश देते हैं पर इस देश में आचार्य चारवाक जैसे विचारक हुए जो घोर नास्तिक तथा भोगवादी थे। इसके अतिरिक्त बौद्ध, जैन आदि सब भारत में ही उत्पन्न हुए परन्तु वैदिक धर्मियों ने इन्हें सहन किया, और विचार स्वातन्त्र्य के कारण ही भारत में उनका पुनः वैदिक धर्म में ही विलीनीकरण हो गया।

छात्रा—क्या वैदिक धर्म ने पूजा-पाठ की अनिवार्यता को मान्यता नहीं दी है ?

महात्मा—पंच महायज्ञों को वैदिक धर्म ने प्रत्येक के लिए अनिवार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माना है। ये पंच महायज्ञ आर्यों के दैनिक जीवन का अंग हैं। परन्तु इनको न करने वाले को काफिर नहीं अपितु शूद्र की संज्ञा देकर आर्यों की कोटि में ही रखा गया है।

छात्रा—विचारों की स्वतन्त्रता से उत्पन्न भिन्नताओं के कारण क्या वैदिक धर्म एक धार्मिक जंगल के समान नहीं है ?

महात्मा—हां, अज्ञानी, अन्धविश्वासियों के लिए वैदिक धर्म अवश्य एक जंगल सदृश है परन्तु यही इसके दीर्घ जीवन का आधार और स्रोत है। यदि ज्ञान एवं तर्क की दृष्टि से वैदिक धर्म को देखा जाये तो यह उस सुन्दर वाटिका के समान प्रतीत होगा जो विभिन्न प्रकार के फल-फूल वृक्षों से लहलहा रही है।

छात्रा—आपका विचार उस कविता की याद दिला रहा है कि, मन वहलाने के लिए गालिव ख्याल यह अच्छा है, अर्थात् अपनी बुराई को अच्छाई के रूप में देखने से कुछ समय के लिए आप अपने मन को वहला सकते हैं, परन्तु बुराई आखिर बुराई ही तो है। भिन्नता से भरे धर्म को भला कौन सुन्दर और अच्छा कहेगा ?

महात्मा—वेटी, भिन्नता ही वास्तव में सौन्दर्य है। भगवान के वनाये इस संसार की विशेषता यह है कि इसकी कोई दो वस्तु एक-दूसरे से नहीं मिलती हैं यदि ऐसा न होकर सर्वत्र समानता होती तो यह जगत अपना आकर्षण खोकर नर्क-तुल्य वन जाता।

छात्रा—राष्ट्रीय एकता के सभी प्रेमी एक विचार का समर्थन करते हैं, परन्तु आप इसके सर्वथा विपरीत विचार स्वातंत्र्य के नाम पर विचारों की भिन्नता का समर्थन करते हैं, यह कैसे ?

महात्मा—विचार स्वातन्त्र्य विचारों की एकता का आधार है। ऐसा हम पहले बतला चुके हैं। डंडे के बल पर या किसी प्रकार भय व धोखा देकर विचारों की एकता स्थापित करना एकता का प्रतीक नहीं अपितु दासता का प्रतीक है। वह एकता तभी तक रह पाती है जब तक डंडा, भय, धोखा या अज्ञान रहता है। इसके हटते ही एकता हवा हो जाती है। वैदिक धर्म हवाई एकता का पक्षपाती न होकर विचार स्वातन्त्र्य द्वारा विचार एकता की स्थापना का पक्षपाती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्भाग्यवश आज संसार में शान्ति के नाम पर बम वर्षा और एकता के नाम पर विचार स्वातन्त्र्य का गला घोटा जा रहा है।

महात्माजी ने समय का ध्यान करते हुए शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित कर दी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५

उदारता

वेद पाठ के पश्चात् महात्माजी ने उपस्थित जनता वे विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैदिक धर्म अपने आचरण में उदार है, अर्थात उदारता वैदिक धर्म की अपनी विशेषता है। इस उदारता ने ही वैदिक धर्म में सुगन्धि उत्पन्न कर दी है, जिससे इसके संपर्क में आने वाला इसका प्रसंशक हुए विना नहीं रह सकता। इस उदारता के कारण वैदिक धर्म अपने को सार्वभौम धर्म कहने का दावा करता है।

छात्रा—महात्माजी, आपने अभी कहा कि उदारता के कारण वैदिक धर्म अपने को सार्वभौम धर्म कहलाने का दावा करता है, सो कैसे ?

महात्मा—वेटी, दया, क्षमा, उदारता आदि धर्म के अंग हैं। इनके विना धर्म का क्या मूल्य है। संसार विविधता से पूर्ण है। दो मनुष्यों के गुण, कर्म व स्वभाव पूर्णतः मेल नहीं खाते। कोई व्यक्ति संसार में ऐसा नहीं जो पूर्ण हो अर्थात् जिसमें अच्छाई तथा बुराई दोनों न हों। इसलिए मतभेद तथा भिन्नता के लिए यदि उदारता न अपनाई जाये तो संसार में कभी संघर्ष समाप्त ही नहीं होगा। धर्म संघर्ष के लिए नहीं अपितु शान्ति की स्थापनार्थ होता है। इसीलिए उदारता धर्म का प्रमुख गुण है और विभिन्नता से भरे ईश्वर के इस जगत में शान्ति पूर्वक रहने का एक मात्र साधन है।

छात्रा—महात्माजी, मतभेद के प्रति उदार होने से क्या मतभेद को प्रोत्साहन नहीं मिलता है ?

महात्मा—उदारता मतभेद की तीव्रता को समाप्त कर उसे लंगड़ा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना देती है। और विरोध उसे तीव्रता एवं जीवन प्रदान करता है।

छात्रा—उदारता से क्या आपका तात्पर्य है कि मत-भेद तथा विरोध का विरोध न कर उसका स्वागत किया जाये ? इसका तो यह अर्थ हुआ कि असत्य, अन्याय अत्याचार के सम्मुख सिर झुका दिया जाए।

महात्मा—असत्य, अन्याय, अत्याचार के सम्मुख सिर झुकाना या उनके साथ किसी प्रकार का समझौता करना पाप और अधर्म है। उदारता का यह अर्थ कदापि नहीं है कि असत्य, अन्याय, अत्याचार के साथ समझौता किया जाए। उदारता का अर्थ यह है कि मतभेद को पाप न मानकर उसे सृष्टि का स्वाभाविक गुण मान तर्क युक्ति एवं अहिंसात्मक उपायों द्वारा प्रेम पूर्वक विरोधी के मन मस्तिष्क के परिवर्तिन करने का प्रयत्न किया जाय। अर्थात् राग-द्वेष को छोड़ प्रेम पूर्वक विधर्मियों के साथ व्यवहार किया जाए।

छात्रा—महात्माजी, असत्य का विरोध भी किया जाए और प्यार व उदारता भी प्रकट की जाये। भला ये दोनों बातें साथ-साथ कैसे चल सकतीं है ?

महात्मा—जैसे डाक्टर बीमारी का विरोधी करता हुआ रोगी के साथ प्रेम व उदारता से व्यवहार करता है वैसे ही धार्मिक क्षेत्र में मनुष्यों को बर्तना चाहिए। वैदिक धर्म लाखों करोड़ों वर्षों से ऐसा ही करता आ रहा है। इसलिए प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता है ?

छात्रा—आपके पास इस बात का क्या प्रमाण है कि वैदिक धर्म उदारता अपनाता चला आ रहा है ?

महात्मा—बेटी, वैदिक धर्म का इतिहास साक्षी है कि इसके मानने वालों ने सदैव दूसरे धर्मों के प्रति उनके पूजा पाठ के मंदिर, मस्जिद व गिरजा तथा धर्म-पुस्तकों का सदैव आदर किया है और भूलकर भी इसने कभी दूसरे धर्म-गुरुओं का अनादर नहीं किया। इसकी उदारता का इससे अधिक प्रमाण अन्य क्या होगा कि इसमें बौद्धादि वेद विरोधी मतों के धर्म-गुरुओं को अपने महा पुरुषों की सूची में रख उनका आदर किया। युद्ध क्षेत्र में भी इसके अनुयायियों ने कभी भूलकर भी विरोधी के पूजा-स्थान तथा धर्म पुस्तक का अपमान नहीं किया। उदाहरणार्थ क्षत्रपति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवाजी महाराज ने मुसलमानों के धर्म ग्रन्थ कुरान व मस्जिद का सदैव आदर किया जबकि उसी काल में औरंगजेब बादशाह द्वारा हिन्दुओं के मन्दिरों को तोड़ उन्हें मस्जिदों में परिणित किया जा रहा था और हिन्दुओं पर केवल अन्य धर्मी होने के कारण जज़िया कर लगाया गया था।

छात्रा—औरंगजेब का आचरण व्यक्तिगत था या वह इस्लाम धर्म की अनुदारता का प्रतीक था ?

महात्मा—औरंगजेब का आचरण व्यक्तिगत तो कुछ अंश तक था। पर वह वस्तुतः इस्लाम मत की अनुदार नीति का अनिवार्य अंग था। अपने जन्म काल से ही इस्लाम धर्म अन्य धर्मों के प्रति अनुदार रहा है। इतिहास इसका साक्षी है।

छात्रा—क्या ईसाई धर्म भी अनुदार है ? वह तो अहिंसा को अपने धर्म का प्रधान अंग मानता है।

महात्मा—ईसाई मत सिद्धान्ततः उदार है। ईसा मसीह के उपदेशानुसार अपने शत्रु को प्यार करना चाहिए। परन्तु ईसा के पश्चात् उसके शिष्यों ने उनकी अहिंसा और उदारता को ताक पर रख जो हिंसा व अनुदारता का परिचय दिया है उसे देख आश्चर्य होता है। यूरोप, अफ्रीका आदि देशों में ईसाई धर्म ने अन्य धर्मियों के साथ जैसा क्रूर व्यवहार किया वह इतिहास से स्पष्ट हो जाता है। इसलिए ईसाई मत सिद्धान्तों में तो उदार है, पर आचरण में एकदम विपरीत है।

छात्रा—क्या यह सच नहीं है कि उदारता के कारण ही वैदिक धर्म अपने घर में ही अपनी रक्षा न कर सका और इसके करोड़ों अनुयायी उदारता के कारण ही ईसाई-मुसलमान बन गये।

महात्मा—उदारता के कारण वैदिक धर्म का ह्रास नहीं हुआ अपितु इसके अन्य अनेक कारण है। सामाजिक कुरीतियों तथा अनुदारिता के कारण ही इसके अनेक लाल विधर्मी बने। वैदिक धर्म ने अपने स्वाभाविक गुण उदारता को छोड़कर अपने लोगों की साधारण सामाजिक भूलों के लिए उनका सामाजिक बहिष्कार करना प्रारम्भ किया। जब से जन्म के कारण समाज के कुछ वर्गों को नीच व अछूत मानना प्रारम्भ किया गया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी से इसका ह्रास होना प्रारम्भ हुआ। दुर्भाग्यवश वैदिक धर्मी दूसरे मत-मतान्तरों के प्रति सीमा से भी अधिक उदार बने रहे परन्तु अपनों के प्रति सीमा से अधिक अनुदार बन गए जिससे अपने ही पैरों पर अपनी ही कुल्हाड़ी मारते रहे अर्थात् (इस घर को आग लग गई इस घर के चिराग से)। अतः उदारता से नहीं अपितु अनुदारता के हेतु ही यह विनाश लीला हुई और आज भी हो रही है।

छात्रा—क्या यह सत्य नहीं है कि अपनी अनुदार नीति के कारण ही ईसाई मत व इस्लाम मत आज संसार के प्रत्येक कोने में फैले हुए हैं, और वैदिक धर्म अपनी उदार नीति को लेकर भारत में भी सिकुड़ता चला जा रहा है ?

महात्मा—ईसाई व इस्लाम मत अपनी अनुदारता के कारण नहीं फैले अपितु अपने अन्य गुणों व नीति के कारण फैले हैं। ईसाई तथा इस्लाम सदैव राजसत्ता के साथ मिलकर उसके सहारे आगे बढ़े हैं। वैदिक धर्म और संस्कृति भी किसी दिन संसार भर के देशों में प्रसारित थी। क्या अनुदार होने से इसका देश-देशान्तरों में उस समय प्रसार हुआ था ? इसके विपरीत अहिंसा, सत्य, त्याग, प्रेम, उदारता आदि की शक्ति के वल पर ही वैदिक धर्म और बाद में वौद्ध धर्म संसार भर में अपना प्रभुत्व स्थापित कर सके थे। वैदिक धर्म के ह्रास का कारण उदारता नहीं अपितु दूसरों को अपने में विलीन की क्षमता को खो देना है। जव आर्य जाति में दूसरों को अपने अन्दर मिलाने की विशाल क्षमता थी तो शक, हूँण, मंगोल आदि विशाल जातियां इसके पेट में समा गई, पर जव से इसका हाजमा खराव हुआ तव से यह अपनों को भी हज़म करने में असमर्थ हो गई है।

छात्रा—क्या सह अस्तित्व, धर्म निर्पेक्षता और उदारता अलग-अलग गुण हैं या एक ही हैं।

महात्मा—तीनों ही एक ही गुण के विभिन्न-विभिन्न नाम हैं।

छात्रा—क्या धर्म के अतिरिक्त राजनीतिक क्षेत्र में भी आप उदारता का समर्थन करते हैं ?

महात्मा—वर्तमान समय में राजनीतिक क्षेत्र में उदारता अथवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहअस्तित्व के सिद्धान्त के बिना विश्व शान्ति को स्थापित करना असम्भव है। दुर्भाग्यवश धर्मान्ध मत-मतान्तरों की भाँति साम्यवाद आदि राजनीतिक विचारधाराएं अपने आचरण में अन्यों के प्रति अनुदार हैं। वे बन्दूक के सहारे अपने विरोधियों को समाप्त कर अपना झंडा लहराना चाहती हैं। यह बात सत्य है कि वर्तमान समय में अनुदारता धर्म का नहीं, अपितु राजनीति का चोला पहनकर नए रूप में आई है। परन्तु उसके आचरण में कोई अन्तर नहीं है इसके विपरीत पहले की अपेक्षा उसके हाथ में विनाश की शक्ति अधिक आ गई है अर्थात् तलवार के स्थान पर परमाणु बम आ गया है।

छात्रा—अनुदारता उत्पन्न होने का क्या कारण है ?

महात्मा—जब अपनी बात को युक्ति के सहारे समझाने में व्यक्ति अपने को असमर्थ पाता है तो वह हिंसा का सहारा ले अनुदार बन जाता है।

छात्रा—तो आपकी दृष्टि में धर्म और राजनीति दोनों के मध्य उदारता अथवा सह अस्तित्व की आवश्यकता है ?

महात्मा—जब तक संसार उदारता को नहीं अपनाता है तब तक सच्ची शान्ति के दर्शन होना सम्भव नहीं है।

महात्मा जी ने समय को समाप्त हुआ जान शान्ति-पाठ के साथ अपने प्रवचन को विराम दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६

विकासवादी व आशावादी

महात्माजी के प्रवचनों की नई दिशा ने नगर में बड़ी ही हलचल उत्पन्न कर दी है। कुछ तथाकथित देश भक्तों की दृष्टि में उनके प्रवचन साम्प्रदायिक बन गए हैं। वे महात्माजी के प्रवचनों को देश की एकता के लिए खतरा अनुभव कर रहे हैं। इस कारण आज सभा में विरोधियों का जमघट जमा है। वे महात्माजी के इन प्रवचनों को बंद कराने की दृष्टि से आए हैं। स्कूल के अधिकारियों ने उन्हें साफ कह दिया है कि वह महात्माजी के प्रवचनों में कोई आपत्ति जनक बात नहीं देख रहे हैं। अतः वे उन्हें बन्द कराने या उनकी दिशा बदलने की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं करते हैं। यही कारण है कि वे सीधे महात्माजी से अपील करने आए हैं।

महात्माजी ने नियमानुसार अपने प्रवचन को उपस्थित करते हुए इस प्रकार अपनी वाणी को गति प्रदान की—विद्यार्थियों संसार में वैदिक धर्म को छोड़ लगभग सभी धर्मावलम्बी यह मानते हैं कि मानव का यह वर्तमान जीवन ही प्रथम व अन्तिम है अर्थात इस जीवन की समाप्ति के पश्चात सब कब्र में ईश्वरीय न्याय के दिन तक प्रतीक्षा करें गे, और न्याय के पश्चात स्थाई रूप से स्वर्ग या नर्क में रहेंगे, परन्तु वैदिक धर्म इस मान्यता को अवैज्ञानिक तथा ईश्वरीय नियम के सर्वथा विरुद्ध मानता है। इसकी दृष्टि में मानव का यह वर्तमान जीवन पहला नहीं अपितु जीवन की एक अनन्त शृंखला की एक कड़ी मात्र है अर्थात यह भूतकाल से जन्म लेता चला आ रहा है और भविष्य में तब तक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेता चला जाएगा जब तक कि यह मोक्ष की प्राप्ति न कर ले।

तथाकथित देश भक्त—महात्माजी, क्या आप यह अनुभव नहीं करते कि भारत की उन्नति के लिए देश की एकता परमावश्यक है और आपके वर्तमान प्रवचन एकता के विपरीत वर्ग विद्वेष उत्पन्न कर रहे हैं।

महात्मा—उच्च स्वर से हंसते हुए बोले—मेरे वचन मानव समाज की एकता व प्रगति के विरोधी नहीं अपितु सहायक हैं। क्या सत्यता की खोज करना तथा सत्यता का प्रचार करना, किसी भी काल में मानव समाज की एकता व प्रगति में बाधक हो सकते हैं। ज्ञान विज्ञान की प्रगति का मूल आधार ही भौतिक जगत का तुलनात्मक अध्ययन है। इसी प्रकार जब तक अन्धविश्वास रूढ़िवाद व गुरुडम का परित्याग कर धार्मिक क्षेत्र में समस्त धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया जाएगा तब तक धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त संकीर्ण साम्प्रदायिकता की समाप्ति नहीं हो सकेगी। संकीर्ण साम्प्रदायिकता के रहते हुए क्या कभी देश की एकता की कल्पना करना सम्भव है?

दूसरा देश भक्त—महात्माजी, आपने वैदिक धर्म की विशेषताएँ ही बतलाना क्यों प्रारम्भ किया है, अन्य धर्मों की विशेषता क्यों नहीं बतलाते?

महात्मा—वैदिक धर्म की विशेषता इसलिए बतलाने की आवश्यकता है कि भारत में आर्य जाति ही बहु-संख्यक है। इसी पर देश का प्रजातांत्रिक ढांचा निर्भर करता है। आर्य जाति के उत्थान-पतन पर ही वास्तव में देश का उत्थान-पतन निर्भर करता है। दुर्भाग्यवश शताब्दियों तक विदेशियों की दासता ने इसके अन्दर हीनता की भावना उत्पन्न कर दी है। इसे अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, साहित्य किसी में महत्त्व दिखलाई न देकर अन्यों की भाषा, धर्म आदि में महत्त्व दिखाई देता है। इस प्रकार इसकी आत्महीनता की भावना ने समूचे देश की एकता व प्रगति को लड़खड़ा दिया है। आत्महीनता की भावना रहते भारत ही क्या कोई भी राष्ट्र कदापि प्रगति नहीं कर सकता है।

दूसरे धर्मावलम्बी तो प्रत्येक दिन अपने धर्मों की श्रेष्ठता का ढोल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटते ही रहते हैं। दुर्भाग्यवश देश के तथाकथित देश भक्तों के कानों में उनके ढोलों की आवाज सुनने की या तो शक्ति ही नहीं है या उनमें इतना साहस नहीं है कि उनके सम्बन्ध में अपना मुंह खोल सकें। भारत में वैदिक धर्म अनाथ की भांति चल रहा है इसलिए इसकी विशेषताओं को प्रगट करने की आवश्यकता अनुभव की गई है। इन प्रवचनों का मुख्य उद्देश्य किसी धर्म की आलोचना न होकर वैदिक धर्म की विशेषता बतलाना मात्र है ताकि वैदिक धर्मी दासता युग में उत्पन्न अपनी हीनावस्था का परित्याग कर स्वाभिमान व आत्मविश्वास के साथ अन्य जातियों की भांति संसार में प्रगति कर सकें।

छात्रा—संसार के सभी धर्मावलम्बी अपने-अपने धर्मों की विशेषताऐं बतलाते हैं, इसलिए वैदिक धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डालना किस प्रकार अनुचित कहा जा सकता है? दुर्भाग्यवश भारत में सेक्यूलरिज्म, के नाम पर अपने को हिन्दू कहना, अपने धर्म भाषा आदि पर गर्व प्रकट करना साम्प्रदायिकता का प्रतीक बन गया है। प्रश्नकर्ता के प्रश्न के पीछे वही हीनावस्था प्रकट हो रही है। इसलिए इस प्रकार के प्रश्नोत्तर में समय नष्ट करने की बजाय आप व्यक्तियों को अन्य प्रश्न करने की अनुमति दीजिए।

महात्मा—बच्चो, किसी की शंका का उत्तर देने के स्थान पर उसे दबाना उचित नहीं है। यह हमारा सौभाग्य है कि बन्धु ने इस शंका को यहाँ उपस्थित कर दिया है। अन्यथा यह शंका भीतर ही भीतर सड़न उत्पन्न कर सारे राष्ट्र के शरीर को कोढ़ी बना देती। इसलिए प्रश्नोत्तर की अपनी स्वस्थ परम्परा को बदलना उचित नहीं। शंका समाधान ही तो ज्ञान वृद्धि व प्रगति के आधार हैं। इसे समय नष्ट करना समझना उचित नहीं है। हां, अब आप अपना प्रश्न उपस्थित कर सकती हैं।

छात्रा—महात्माजी, आपने कहा है कि वर्तमान जीवन को प्रथम व अन्तिम मानना वैदिक धर्म की दृष्टि में अवैज्ञानिक व ईश्वरीय नियम के विपरीत है—सो कैसे?

महात्मा—विज्ञान का नियम है कि जो वस्तु उत्पन्न होती है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसका अन्त भी सुनिश्चित होता है। यह बात असम्भव है कि वस्तु उत्पन्न तो हो परन्तु उत्पन्न होने के पश्चात उसका अंत न हो। अन्य धर्मावलम्बियों की मान्यता है कि ईश्वर ने इस जीवन में जीवात्मा अथवा मनुष्य को उत्पन्न किया है, परन्तु उत्पन्न होने के पश्चात यह अमर रहेगा अर्थात् न्याय के अनुसार स्वर्ग या नर्क में सदैव के लिए रहेगा। अतः उनकी यह मान्यता अवैज्ञानिक है। जन्म लेने वाला प्राणी किसी भी अवस्था में अमर नहीं हो सकता है।

विज्ञान इस बात को स्वीकार करता है कि जीवात्मा विभिन्न शरीरों को धारण करती हुई लगातार उन्ननि की ओर प्रगति कर रही है। डारबिन के विकासवादी सिद्धान्त के अनुसार ही मानव का एक जीवन में पूर्ण विकसित होना सर्वथा असम्भव है। जीवात्मा अपने जिन गुण, कर्म व स्वभाव को जन्म लेने के तुरन्त पश्चात प्रकट करता है, उनका विकास कैसे और कहाँ हुआ ? इसका उत्तर तब तक प्राप्त होना सम्भव नहीं जब तक कि वर्तमान जीवन के अतिरिक्त पूर्व के जन्मों की सत्ता को भी स्वीकार न किया जाये। न्याय के अन्तिम दिन कब्र से जीवात्मा सशरीर किस प्रकार खड़े हो जायेंगे। यह मान्यता को किसी भी प्रकार वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध करना असम्भव है। इसलिए जीवात्माओं के कब्र में पड़े रहने तथा न्याय के अन्तिम दिन सशरीर उपस्थित होने की कल्पना कोरी कल्पना मात्र है।

ईश्वर को सभी धर्मावलम्वी न्यायकारी मानते हैं, परन्तु हम देखते है कि जन्म लेने वाली आत्माऐं विभिन्न शरीर, परिवार व परिस्थिति में उत्पन्न होती हैं। शरीर धारण करने वाली आत्माओं की जाति आयु एवं भोगों की इस विभिन्नता को ईश्वर ने उन्हें उनके पूर्व कर्मों के फल स्वरूप दिया है। यदि हम यह कहें कि ईश्वर ने अपनी इच्छानुसार जीवात्माओं को अमीर, गरीब, काला, गोरा, स्वस्थ, सुन्दर, कुरूप व अपंग शरीर देकर भेज दिया है, तो वह इस प्रकार अन्यायी सिद्ध हो जायेगा क्योंकि विना कर्म किये जीवात्मा को सुख या दुख देना ईश्वर के न्याय के विरुद्ध है। इसलिए यह मान्यता कि मानव का यह पहला जन्म है, ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ईश्वर ने जीवात्मा को इस संसार में अपने कर्मानुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए भेजा है । इस सिद्धान्त को सभी धर्मावलम्बी स्वीकार करते हैं, परन्तु अपनी उन्नति व विकास करने के लिए उसने उसे एक ही जीवन दिया, यह ईश्वर के लिए उचित प्रतीत नहीं होता । उदाहरण के लिए, यदि एक विद्यार्थी पहली परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाय और उसका प्रधानाचार्य फिर उसे परीक्षा में बैठने का या आगे प्रयत्न करने का अवसर ही न दे तो क्या उसका यह कार्य न्यायोचित कहा जा सकता है ? इस प्रकार यदि ईश्वर ने जीवात्मा को मोक्ष प्राप्ति के लिए संसार में अवसर व साधन प्रदान किये हैं, तो फिर उसे प्रयत्न व पुरुषार्थ करने के लिए एक ही जीवन नहीं अपितु लक्ष्य प्राप्ति तक अनेक जीवन प्रदान करते रहना होगा । इस आधार पर ही अन्य धर्मों की मान्यता युक्तिहीन है और ईश्वर की न्याय व्यवस्था के सर्वथा विपरीत है ।

छात्रा—इन मान्यताओं की भिन्नता का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

महात्मा—इस जीवन को ही आदि और अंत मानने से मानव जीवन में निराशा, भय व उत्साह-हीनता का जन्म होता है अर्थात् जब मनुष्य बुढ़ापे में मृत्यु को समीप आते देखता है, अपने कर्मों पर दृष्टिपात करता है और न्याय के दिन की प्रतीक्षा करने की कल्पना करता है तो उसका निराश, भयभीत व उत्साह शून्य होना स्वाभाविक है । परन्तु जो व्यक्ति विश्वास करता है कि मरने के पश्चात उसे तुरन्त दूसरा जन्म मिलेगा तो उसके जीवन में आशा उत्साह व निर्भयता उत्पन्न होती है । इस जीवन में सफलता न मिली तो अगले जीवन में मिलेगी । इस भाव से वह सदैव विश्वासी बना रहता है । मृत्यु फिर उसे भयावह न होकर प्यारी लगने लगती है क्योंकि वह उसे अपने वर्तमान बन्धन व जर्जरित शरीर का परित्याग कर नया स्वस्थ शरीर और आनन्द अनुभव करने का सुअवसर प्राप्ति कराता है ।

छात्रा—क्या वैदिक धर्म डरविन के विकासवाद को स्वीकार करता है ?

महात्मा—डारविन का सिद्धांत आज के युग में अपने महत्त्व को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खो चुका है। हम यह मानते हैं कि जीवात्मा सदा प्रगतिशील है, और विभिन्न योनियों में से अपने कर्मानुसार गुजरता हुआ अन्त में मोक्ष धाम को प्राप्त करता है। विकास के जिस क्रम को डरविन ने उपस्थित किया है उससे वैदिक धर्म सहमत नहीं है।

छात्रा—जबकि वैदिक धर्म डरविन के विकासवाद को पूर्णतः स्वीकार नहीं करता है तो फिर इसकी मान्यता भी अवैज्ञानिक क्यों नहीं ?

महात्मा—डरविन का सिद्धान्त अभी तक अपने में पूर्ण नहीं है। वैज्ञानिकों में उसके सम्बन्ध में अत्यधिक मतभेद उत्पन्न हो गया है। वैदिक धर्म मोक्ष प्राप्ति के चरम लक्ष्य को मौलिक सिद्धान्त मानता है। और इस क्रम को वैज्ञानिक आधार पर ही उपस्थित करता है। इसीलिए हमारा सिद्धान्त वैज्ञानिक है।

छात्रा—डरविन के अनुसार जीवात्मा लगातार विकास कर रहा है। क्या वैदिक धर्म इस सिद्धान्त को स्वीकार करता है ?

महात्मा—नहीं, जीवात्मा कर्म करने में स्वतंत्र है उसकी यात्रा में सफलता-असफलता, उन्नति, अवनति तथा विकास और ह्रास आदि सभी सम्मिलित हैं वह जब सत्य ज्ञान के सहारे सत्याचरण करता हुआ आगे बढ़ता है तो लगातार प्रगति व विकास को प्राप्त होता है। जब वह अज्ञान को प्राप्त होकर असत्याचरण करने लगता हैं तो उसकी प्रगति व विकास रुक जाता है।

छात्रा—एक बार सत्य ज्ञान को प्राप्त करने के पश्चात् उससे पीछें हटने का प्रश्न कैसे उत्पन्न हो सकता है ?

महात्मा—सत्य ज्ञान के प्राप्त होने पर भी जब साधना के अभाव में काम, क्रोध, लोभ, मोह, स्वार्थ, अभिमान व असंतोष के आवेग उठकर मानव की बुद्धि को भ्रष्ट कर देते हैं तो विवेक बुद्धि के मलिन होने पर मानव मार्ग-भ्रष्ट हो जाता है। फलतः मानव की उन्नति व विकास में केवल बाधा ही उत्पन्न नहीं होती अपितु दंड स्वरूप उसे पीछे भी हटना पड़ता है। जिस प्रकार किसी उच्च सरकारी कर्मचारी को उसकी भूल के कारण पदच्युत कर दिया जाता है, उसी प्रकार मानव को दण्ड स्वरूप हीन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यौनियों में जाना पड़ता है।

छात्रा—मानव की उन्नति को दण्ड द्वारा रोकना या उसे उन्नति की सीमासे पीछे हटाना किन्हीं भी कारणों से क्या उचित कहा जा सकता है?

महात्मा—दंड मानव की उन्नति में आई त्रुटियों को दूर करने का सबसे अधिक प्रभावशाली साधन है। दंड को उन्नति के मार्ग में बाधक समझना भारी भूल है। हां, यदि ईश्वर मानव की भूल व असत्याचरण के लिए उसे दंडित न करे तो फिर उसका कार्य अवश्य अहित होगा।

छात्रा—क्या दंड के रूप में ईश्वर मानव को उसकी मृत्यु के पश्चात् पशु पक्षी आदि योनियों में भी भेज सकता है?

महात्मा—हां, अवश्य भेज सकता है।

छात्रा—पशु पक्षी का जन्म लेने से मानव को उन्नति की दिशा में क्या सहायता मिल सकती है।

महात्मा—जब मनुष्य अपने खाने, पीने, रहने, विषय वासना और उनके भोग विलास में सब सीमाओं का उल्लंघन करने लग जाता है और फिर उसकी आदतें उच्छृंखल हो जाती हैं तो फिर ईश्वर उसे पशु पक्षी की योनि में भेज उसका सुधार करता है। उस अवस्था में उसका खाना, पीना, विषय-भोग आदि सब नियम बद्ध हो जाते हैं। उसके पश्चात् फिर जीवात्मा को उन्नति के मार्ग पर बढ़ने के लिए ईश्वर द्वारा अवसर दिए गए हैं। इसलिए पशु पक्षी आदि की योनियां भी सुधार की दृष्टि से आवश्यक होती हैं।

छात्रा—यदि पशु पक्षियों का जीवन ही सुधरा हुआ है, तब मानव जीवन को श्रेष्ट क्यों माना गया है।

महात्मा—पशु पक्षियों को ईश्वर ने बुद्धि तथा कर्म करने की स्वतंत्रता प्रदान नहीं की है। अतः पशु पक्षी मोक्ष को प्राप्त करने में असमर्थ है। मोक्ष के लिए मुख्य द्वार मानव जीवन ही है। इसी कारण मानव जीवन को श्रेष्ठ माना गया है।

छात्रा — क्या अगला जीवन मिलना मनुष्य के हाथ में है?

महात्मा—अगला जीवन तो मृत्यु के पश्चात मिलेगा ही, परन्तु आपका यह तात्पर्य यह है कि पशु पक्षी कीट, मनुष्यादि योनियों में से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किसी एक में जाना क्या मनुष्य के हाथ में है तो इसका उत्तर यही है कि मनुष्य के कर्मानुसार ही जीवात्मा को अगले जीवन में जाति, आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं।

छात्रा—क्या वेद ने भावी जीवन की प्राप्ति की दिशा में उपदेश या संकेत दिया है ?

महात्मा—वेद में भावी जीवन की प्राप्ति की दिशा में उपदेश देते हुए कहा है कि……

असुर्यानाम् ते लोका: अन्धेन तमसावृता:।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनोजना: ।।

अर्थात्—जो व्यक्ति अपनी आत्मा को मारते हैं अर्थात जो अपनी आत्मा की आवाज के विरुद्ध आचरण करते हैं वे मरने के पश्चात् अगले जीवन में अन्धकारमय योनियों में अथवा लोकों को प्राप्त होते हैं। अन्धकारमय योनियों से वेद का तात्पर्य पशु, पक्षी, कट-कीट, आदि से है। जिनमें आत्मा को बुद्धि का प्रकाश प्राप्त नहीं होता। मानव जीवन में बुद्धि प्राप्त होने से यह प्रकाशमय योनि है।

छात्रा—महात्माजी, आत्मा की आवाज से क्या तात्पर्य है ?

महात्मा—आत्मा की आवाज ही दूसरे रूप में भगवान की आवाज है क्योंकि आत्मा में विराजमान प्रभु मानव को सत्य की प्रेरणा देता रहता है। परन्तु दुर्भाग्यवश मनुष्य आत्मा की आवाज की उपेक्षा कर देता है और स्वार्थ में अन्धा हुआ पाप के प्रलोभन में फंस जाता है।

छात्रा—मन और आत्मा की आवाज में भेद किस प्रकार किया जा सकता है ?

महात्मा—जिन कर्मों को करने में आत्मा आनन्द, निर्भयता व उत्साह अनुभव करे वे सब कार्य आत्मा की वाणी के अनुकूल समझने चाहिए। और जिन कर्मों को करने में भय, शंका, और लज्जा का अनुभव हो वे सब पाप भावना के परिणाम होते है।

छात्रा—अगला जीवन मनुष्य का ही प्राप्त हो क्या आप इसके लिए कुछ निश्चित कर्मों की ओर संकेत कर सकते हैं ?

महात्मा—संयमित और प्रभु अर्पित जीवन जिसके अनुसार परमार्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परोपकार, विद्या, दान आदि ऐसे कर्म हैं जिनके करने से अगला जीवन मानव का मिलना सुनिश्चित है।

छात्रा—क्या आप अपनी इस मान्यता को सत्य सिद्ध कर सकते हैं?

महात्मा—जो जैसा करता है उसे वैसा फल अपने जीवन में मिलता है ऐसा लगभग सभी धर्मावलम्वी मानते हैं। भोगवादी शरीर पशु-पक्षी आदि योनियों में भी प्राप्त हो जाएगा, परन्तु आध्यात्मिक जीवन के प्रेमी व्यक्ति को पशु-पक्षी जीवन में आध्यात्मवाद व ज्ञान वृद्धि का अवसर कैसे प्राप्त होगा? जैसे एक व्यक्ति ने इस जीवन में दूसरों के हितार्थ धर्मशाला बनवायीं हैं, प्याऊ लगा दिया है, कपड़े बाँटे हैं तो अगले जीवन में किसी धनी व्यक्ति का कुत्ता या घोड़ा बनकर भी वह इन समस्त पदार्थों को प्राप्त कर सकता है, परन्तु उसने यदि विद्या का दूसरों को दान दिया है तो अगले जीवन में फलस्वरूप विद्या प्राप्त करने के लिए उसे मानव जीवन मिलेगा ही क्योंकि मानव जीवन में ही विद्या प्राप्ति संभव है।

छात्रा—महात्माजी, पुनर्जन्म का सिद्धान्त वैदिक धर्म की बड़ी भारी विशेषता है, इस पर हम सब वास्तव में गर्व कर सकते हैं।

महात्मा—महात्मा जी ने घड़ी की ओर देखते हुए सभा अगले दिन के लिए स्थागित कर दी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७

धर्म और दर्शन की एकता

महात्माजी आज कई साधु-सन्तों के साथ सभा स्थल पर पधारे हैं जिससे सभा मंच की शोभा चौगनी हो गई। महात्माजी को आज कहीं अन्य कार्य क्रम पर जाना है इसी कारण उन्होंने भूमिका में अधिक समय न लेते हुए कहा—

प्यारे बच्चो, इस जगत के आदि-काल से ही संसार के विद्वान इस जगत का पूर्ण परिचय प्राप्त करने में लगे हैं : इनमें से कुछ भौतिक जगत की खोज करने में लगे हैं। जिन्हें वैज्ञानिक के नाम से पुकारा जाता है; और कुछ भौतिक जगत की रचना के पीछे छिपे कारण, इसके वनने के कारण, इसके बनाने वाली शक्ति, जीवात्मा, मृत्यु आदि की खोज करते जा रहे हैं—इन्हें दार्शनिक अथवा फिलोसफर्स के नाम से पुकारा जाता है। तीसरे विचारकों की श्रेणी में वे धर्म गुरू हैं जो मानव समाज को उनके धर्म का ज्ञान कराते हैं।

ऊपर लिखित तीनों विद्वानों का रूप व कार्य करने की दिशा भले ही भिन्न है पर वास्तव में तीनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। दुर्भाग्यवश भारत और वैदिक धर्म को छोड़ एक भी देश और धर्म ऐसा नही जिसमें इन तीनों महान् शक्तियों का समन्वय हो। इन तीनीं के विरोध से ही संसार में अशान्ति बढ़ रही है। वैदिक धर्म ने इस रहस्य को आदि काल से ही पहचाना है और तभी से ये तीनों शक्तियां एक ही धर्म—धारा अथवा त्रिवेणी के पुनीत संगम के रूप में प्रसिद्ध हैं।संसार जब तक वैदिक धर्म के इस महान समन्वयवादी सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करेगा तब तक वह अन्धकार, अशान्ति के गर्त में पड़ा रहेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी—वैदिक धर्म ने इन तीनों शक्तियों को किस आधार पर एक माना है ?

महात्मा—वेद अथवा वैदिक धर्म और कुछ नहीं है केवल सृष्टि के आदि में ईश्वर द्वारा मानव समाज को संक्षेप में इस जगत् तथा मानव के सम्वन्ध में उपदेश देने वाला पूर्ण ज्ञान है। वैज्ञानिक एवं दार्शनिक स्वतंत्र रूप से अन्वेषण व विचार कर अन्त में इस सिद्धान्त पर पहुंचते हैं कि इन तीनों में विरोध आता ही नहीं है। यह जगत् क्या है, इसे किसने और क्यों बनाया है ? मैं कौन हूं ? कहां से आया हूं ? मेरा क्या ध्येय है ? जब तक मानव इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त न करले उसे अपने धर्म का ज्ञान होना सम्भव ही नहीं है। विज्ञान और दर्शन इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजते हैं; और इनके प्रकाश में मानव अपना धर्म निर्धारित करता है। धर्म को न मानने वाले वैज्ञानिक व दार्शनिक भी जब अपनी खोजों के आधार पर मानव के कर्तव्य अथवा धर्म का निर्धारण करेंगे तो निश्चित रूप से वह भी मानव-धर्म, वैदिक धर्म ही होगा।

ज्ञान, गमन और प्राप्ति यह सिद्धान्त प्रत्येक क्षेत्र में फल प्राप्ति के लिए परम-आवश्यक है, अर्थात् विषय का ज्ञान हुए बिना उसमें प्रवेश होना सर्वथा असम्भव है। विज्ञान और दर्शन दोनों का प्रतीक ज्ञान है, और गमन धर्म का प्रतीक है। इस प्रकार ज्ञान और गमन अर्थात् विज्ञान दर्शन व धर्म का समन्वय ही सही मार्ग है। इसी सत्य मार्ग को वैदिक धर्म ने अपनाया है।

छात्रा—क्या आप इस बात का प्रमाण दे सकते हैं कि विज्ञान, दर्शन का वैदिक धर्म में कभी विरोध नहीं रहा है ?

महात्मा—भारत में महर्षि ब्रह्मा से लगाकर जैमनी मुनि पर्यन्त समस्त दार्शनिक धर्म गुरुओं के नाम से ही पुकारे गये हैं इस तथ्य की पुष्टि होती है।

छात्रा—लोगों का कहना है कि वैदिक धर्म के षड़दर्शन एक दूसरे के विरोधी हैं जब उनमें ही विरोध है तो फिर वैदिक धर्म का उनके साथ समन्वय कैसे सम्भव है।

महात्मा—षड़दर्शन एक दूसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक हैं। सृष्टि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना के छह: कारणों पर अलग-अलग छ: दर्शनों की रचना हुई है। वास्तव में वे सब एक ही मूल सिद्धान्त के विभिन्न दृष्टि से पोषण करने वाले छ: अंग हैं।

विद्यार्थी—क्या चारवाक जैसे भौतिकवादी व नास्तिक दार्शनिक को भी वैदिक धर्म मानता है ?

महात्मा—वैदिक धर्म ने विचार स्वातंत्र्ये को प्रधानता दी है। इसीलिए विचारक के रूप में उसे माना गया है।

छात्रा—वैदिक धर्म ने दर्शन को किस सीमा तक स्वीकार किया है ?

महात्मा—वैदिक धर्म और दर्शन एक ही तथ्य के दो नाम हैं। इनके मध्य रेखा खींचना असम्भव है।

विद्यार्थी—संसार के अन्य देशों व धर्मों में दार्शनिकों की क्या स्थिति है ?

महात्मा—भारत में जहां दर्शन धर्म एक होकर मानव जीवन का अंग बन गया है वहां दूसरे देशों व धर्मों में दार्शनिकों को धर्म से अलग माना गया है, और उनके अनुसंधान पुस्तकों तक ही सीमित रह गए। यहाँ तक कि धर्म की ओर से उनका कड़ा विरोध किया गया। सुकरात, मंसूर आदि अनेक दार्शनिक मौत के घाट उतार दिए गए क्योंकि उनके अनुसंधान उन तथाकथित धर्मों की मान्यता के विरोधी थे। प्रारम्भ में वैज्ञानिकों का भी कड़ा विरोध किया गया। परन्तु इसमें उन्हें सफलता प्राप्त न हो सकी।

छात्रा—यदि दर्शन और दार्शनिकों को धर्म मान्यता न दें तो इससे क्या हानि होगी ?

महात्मा—अपनी आत्मा को मान्यता न देने से मनुष्य की जो हानि संभव है वही दर्शन को स्वीकार न करने से धर्म की होगी।

विद्यार्थी—यदि आपका कथन सत्य है तो अन्य धर्मों ने इसे क्यों नहीं स्वीकार किया ?

महात्मा—इन्होंने इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि उन दार्शनिकों व वैज्ञानिकों के अनुसंधान उन धर्मों की मान्यताओं के विरोधी थे।

छात्रा—दर्शन और विज्ञान को न मानने से अन्य धर्मों को हानि के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदले उल्टा लाभ ही हुआ है, और आज वे समूचे संसार में फैले हुए हैं जबकि वैदिक धर्म भारत की सीमाओं में भी सुरक्षित नहीं है।

महात्मा—अज्ञान, अन्धविश्वास और राजसत्ता के सहारे इन धर्मों का संसार व्यापी विस्तार हुआ है, परन्तु ज्यों-ज्यों संसार में ज्ञान विज्ञान का विस्तार होगा और शासकों की तानाशाही समाप्त हो प्रजातंत्र की स्थापना होगी त्यों-त्यों इन धर्मों की समाप्ति सुनिश्चित है। वैदिक धर्म के भारत का सीमाओं में जकड़े रहने के अन्य अनेक कारण हैं जिनका यहां वर्णन उचित नहीं है परन्तु अन्त में विज्ञान और दर्शन के सामने यही धर्म टिक सकेगा।

विद्यार्थी—यदि धर्म और दर्शन में विरोध हो तो किसको मान्यता देनी चाहिए ?

महात्मा—सच्चे धर्म और दर्शन में कभी विरोध सम्भव ही नहीं है। फिर जो विरोध हो तो बुद्धि पूर्वक सत्यासत्य का विचार कर जो सत्य हो उसे ही स्वीकार करना चाहिए।

छात्रा—भारत में धर्म और दर्शन एक साथ चले हैं इसका क्या प्रमाण है ?

महात्मा—स्वास्थ्य विज्ञान आयुर्वेद को वैदिक धर्म ने वेद के अंग के रूप में ही आदर किया है। इससे बड़ा प्रमाण क्या चाहिए। विज्ञान ही नहीं अपितु भारत की अन्य कलाऐं भी धर्म की माध्यम बनकर चली है। भारत में गान, संगीत, नाट्य, चित्र, मूर्ति आदि सभी कलाओं का धर्म के माध्यम से अविर्भाव हुआ है जबकि अन्य देशों में इनका प्रयोग केवल मनोरंजन के लिए हुआ है। वास्तव में देखा जाये तो भारत का समूचा सांस्कृतिक ढांचा विज्ञान, दर्शन, धर्म के समन्वय का प्रतीक है।

महात्माजी ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कहा—मुझे आज अन्यत्र पुरोग्राम पर जाना है। साधु सन्त मुझे लेने आये हुये हैं। इसलिए मैं आज अपने प्रवचन को यहीं विराम देता हूं।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८

प्राणी मात्र का कल्याण और विश्व बन्धुत्व

महात्माजी आज बड़ी ही प्रसन्न मुद्रा में थे। आज उनके साथ एक पादरी और मौलवी साहब भी आये थे। दोनों प्रातः महात्माजी से मिलने गये थे। महात्माजी के निमन्त्रण पर सभा में चले आये। महात्माजी ने भी आज बड़ी मस्ती के साथ वेद मन्त्रों का पाठ कर अपने विषय को प्रस्तुत करते हुए कहा—

बच्चों, आज वैदिक धर्म की उस विशेषता की ओर आपका ध्यान आकर्षित किया जा रहा है जिसकी संसार को आज सबसे अधिक आवश्यकता है। संसार क्या भारत ही उसके बिना आज विघटन की ओर बढ़ रहा है। वह विशेषता है विश्वबन्धुत्व, अथवा प्राणीमात्र का कल्याण। संसार के अन्य धर्मों में सीमित रूप में मानव जाति के लिए बन्धुत्व की भावना है। पर प्राणी मात्र के कल्याण की भावना वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य किसी धर्म में नहीं हैं। यही कारण है कि संसार राष्ट्र, जाति, भाषा, धर्म व देश के नाम पर एक दूसरे के शत्रु बने हैं महान आश्चर्य तो इस बात का है कि अपने को धार्मिक कहने वाले व्यक्ति भी दूसरों को लूटने, आग लगाने व कत्ल करने में अपने धर्म का प्रचार अनुभव कर रहे हैं। धर्म के लिए इससे अधिक लज्जा की बात क्या हो सकती है कि उसके नाम पर नारियों का अपहरण व अपमान हो और बच्चों को भाले की नोंक पर उछाला जाये।

विद्यार्थी—महात्माजी वैदिक धर्म विश्वबन्धुत्व का प्रचार करता है इसका आपके पास प्रमाण क्या है ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—वेद में इसके अनेकों प्रमाण भरे हैं। वेद कहता है कि—

भूमें मातनिधेहि मा द्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदानादिवकवे श्रियां मा धैहि ॥ भूयाय ॥ अथर्व १२।१।६३

अर्थात् हम सबकी पृथ्वी माता है और ईश्वर पिता है। इस प्रकार हम सब भाई हैं।

छात्रा—महात्माजी इस सिद्धान्त को तो अन्य धर्म मानते हैं। सबकी मान्यता है कि ईश्वर ने इस दुनिया को बनाया है आदम और ईव को उसने बनाकर अदन-के-बाग में भेजा है। हम सब उन दोनों की ही संतान होने से भाई बहन ही तो हुए।

महात्मा—आपकी यह बात सत्य है कि उनकी इस मान्यता के अनुसार सभी भाई सिद्ध होते हैं। परन्तु साथ ही उन्होंने इस बन्धुत्व को यह मानकर दूषित कर दिया है कि आदम की संतानों में भी वही धर्मात्मा और अपने भाई है जो किसी विशिष्ट व्यक्ति को ईश्वर पुत्र व पैगम्बर माने और विशिष्ट पुस्तक पर ईमान लायें। अन्य व्यक्ति उनकी दृष्टि में पापी व काफिर के समान हैं और कत्ल करने योग्य हैं। ऐसा भाव रहते विश्वबन्धुत्व कहां रह जाता है ? यदि उनके अन्दर विश्वबन्धुत्व का भाव होता तो फिर धर्म के नाम पर वे अन्यों को क्यों मारते, लूटते व बलात् उनका धर्म परिवर्तन क्यों करते ?

विद्यार्थी—महात्माजी क्या वैदिक धर्म ने इतर लोगों को असुर व दस्यु मानकर उन्हें घृणित नहीं माना है।

माहात्मा—वैदिक धर्म ने किसी धर्म गुरु तथा किसी धर्म पुस्तक को मानने या न मानने पर किसी व्यक्ति को अनार्य, असुर व दस्यु नहीं माना है अपितु अच्छे व बुरे कर्मों के आधार पर समूची मानव जाति को ही दो भागों में अर्थात् आर्य, अनार्य, देव, असुर आदि नाम से बांटा है। अच्छे कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को वेद ने आर्य और इसके विपरीत चोरी, डाका, आदि बुरा कार्य करने वाले असंयमी व स्वार्थी लोगों को असुर, अनार्य दस्यु नाम से पुकारा है।

छात्रा—ईसा प्रभु ने अपने शत्रुओं से भी प्यार करने को कहा है। इससे अधिक विश्वबन्धुत्व भाव क्या को होगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—ईसा का यह आदेश सचमुच अच्छा है पर ईसा के अनुयाइयों ने आचरण में, इसे कभी नहीं माना है। विश्व युद्ध करने वाले ईसा के अनुयायी ही रहे हैं इसके अतिरिक्त ईसा तथा ईसाई धर्म में किसी को मित्र तथा शत्रु समझने का आधार क्या है। क्या ईसा और बाइबिल को मानने वालों को मित्र और शेष सबको पापी और शत्रु मानना उचित है ? उसमें पशु-पक्षियों के कल्याण का भाव है ही नहीं।

विद्यार्थी—क्या ईसा के इस उपदेश से अधिक अच्छा उपदेश वेद ने दिया है।

महात्मा—वेद ने सभी को मित्र की दृष्टि से देखने का उपदेश दिया है। वेद का मंत्र है :—

दृते दृहं मा मित्रस्यमाचक्षुषा, सर्वाणिभूतानि समीक्षन्ताम्
सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे ।। मजु० ३६।१८

अर्थात् मुझे सब लोग मित्र के रूप में देखें और मैं भी प्राणी मात्र को मित्र के रूप में देखूँ,

सहृदयं सांमनस्यम् अविद्वेषम् कृणोमिवः ।
अन्यौन्य मभिवहर्यतवत्सं जातामिवधन्या।। अथर्व० ३०।३०।१

अर्थात् (ईश्वर कहता है) तुम अच्छे हृदय वाले, अच्चे मन वाले किसीसे द्वेष न करने वाले बनो, और एक दूसरे से इस प्रकार प्रेम पूर्वक व्यवहार करो जैसे एक गाय अपने नवजात शिशु से करती है।

इस उपदेश से बढ़कर विश्वबन्धुत्व की भावना और क्या हो सकती है।

छात्रा—आपने कहा है कि वैदिक धर्म प्राणी मात्र का कल्याण चाहता है और अन्य धर्म ऐसा नहीं चाहते है तो क्या आप इसका स्पष्टीकरण करने का कष्ट करेंगे ?

महात्मा—वैदिक धर्म की मान्यता है कि जीवात्मा अपने कर्मानुसार जाति, आयु तथा भोग को प्राप्त होता है अर्थात वह अपने कर्मानुसार पशु, पक्षी, कीट, पतंग, मानव आदि योनियों को प्राप्त होता है। इस प्रकार जीवात्मा की विद्यमानता से पशु पक्षी आदि प्राणियों में भी एक समानता है। और जीओ और जीने दो के आधार पर सभी प्राणियों की उन्नति का अवसर वैदिक धर्म देता है। प्राणियों में श्रेष्ठ योनि प्राप्त करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण मनुष्य का यह कर्तव्य है कि मूक प्राणियों का सभी प्रकार से कल्याण करे। पर अन्य धर्म अर्थात ईसाई, इस्लाम आदि मजहब मानव के समान अन्य प्राणियों में जीवात्मा का अस्तित्व ही नहीं मानते। उनकी दृष्टि में वह चलती फिरती साग सब्जियां हैं जिन्हें मानव समाज के उपभोग के लिए खुदा ने उत्पन्न किया है।

छात्र—वैदिक धर्म प्राणीमात्र को समान मानता है, और अपने समान ही उनका कल्याण चाहता है क्या इसका आप वेदों से कोई प्रमाण दे सकते हैं?

महात्मा—वेदों में इसके लिए एक नहीं अपितु अनेकों प्रमाण भरे पड़े हैं। उन सभी का यहां देना सम्भव नहीं है। फिर भी कुछ वेद मंत्र आपके सन्तोष के लिए दिये जाते हैं, अर्थात्

यतौयतः समीहसे, ततौ नो अभयं कुरू।
शं नः कुरू प्रजाभ्यो, अभयं न पशुभ्यः ॥ यजु० अध्याय ३६।२२

हे परमात्मन् जहां-जहां तू संरक्षण करता है वहां-वहां हमको अभय बना। हमारी प्रजाओं (संतानों) तथा हमारे पशुओं को भी सूखी तथा अभय बना।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वं भूतेषु चात्मनं ततो न विजु गुप्सते ॥
यस्मिन सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः ॥ (यजु० वेद ४०।६७)

जो व्यक्ति सम्पूर्ण चराचर जगत को परमेश्वर में देखता है, और चराचर जगत में परमेश्वर के दर्शन करता है वह निन्दित नहीं होता है अर्थात् सबका मित्र बन जाता है। जिस व्यक्ति की दृष्टि में सम्पूर्ण चराचर जगत परमात्मा सदृश हो जाता है उस एकत्व को देखने वाले मनुष्य के लिए कोई मोह तथा कोई शोक नही रहता है।

उपर्युक्त उपदेश वेदों तक ही सीमित नहीं रहा अपितु आज तक यह उपदेश वैदिक धर्मियों के जीवन का संग बना रहा है। पशु-पक्षियों को भोजन कराना वैदिक धर्म ने दैनिक पंच महायज्ञ में एक अंग माना है। जिसके अनुसार प्रत्येक वैदिक धर्मी पशु-पक्षियों की सेवा करना अपना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धर्म मानता है। प्रातः मैदान में आपको अनेक ऐसे व्यक्ति मिल जायेंगे। जो चींटियों, कबूतरों को अन्न खिलाते हैं। उनकी दृष्टि में पशु-पक्षियों की सेवा ही ईश्वर पूजा है।

छात्रा—दूसरे धर्मावलम्बी जो पशु-पक्षिओं को पालते है इसमें वैदिक धर्म की कौन-सी विशेषता है ?

महात्मा—अपने मनोरंजन तथा स्वार्थपूर्ति के लिए पशु-पक्षियों को पालना और बात है, और निःस्वार्थ भाव से पशु-पक्षियों की सेवा करना अन्य बात है। पर सबसे बड़ा अन्तर तो यह है कि अन्य धर्म पशु-पक्षियों में अपने समान जीवात्मा स्वीकार नहीं करते। जबकि वैदिक धर्म सबके अन्दर समान रूप से जीवात्मा को स्वीकार करता है। वास्तव में यही भाव विशेष अन्तर का कारण है।

छात्रा—महात्माजी क्या बौद्ध, जैन धर्मादि भी पशु-पक्षियों का कल्याण नहीं चाहते हैं।

महात्मा—हां चाहते हैं, परन्तु मेरे भाई यह सब धर्म वैदिक धर्म की ही शाखायें हैं। कुछ सिद्धान्त भेद होने से वे अलग हो गये हैं। सो उनमें अधिकांश बातें वैदिक धर्म की ही देन हैं। समीपता के कारण ही आज उनके अनुयायियों का वैदिक धर्मियों में विलीनीकरण हो गया है।

छात्रा—महात्माजी जब वेदों के अनुसार यज्ञों में गाय, घोड़ा व बकरे की बलि देने का विधान है, तब आप प्राणीमात्र के कल्याण का दावा कैसे करते हैं ?

महात्मा—वेदों के अनुसार यज्ञों में पशु-बलि का कहीं विधान नहीं है। अज्ञानी लोगों ने जान-बूझकर इन बातों को वेद के नाम पर मंढ़ने का प्रयास किया है। संसार भर के विदेशी विद्वान इस बात को स्वीकार करते हैं कि वेदों के अनुसार आर्य लोगों का भोजन दूध, दही, मक्खन, मधु, फल, अन्न आदि हैं। मांस, मच्छी नहीं। ऐसी अवस्था में वेदों में बलि देने की बात को सिद्ध कर आर्यों को मांसाहारी सिद्ध करना अपनी अज्ञानता प्रकट करना है।

विद्यार्थी—जब आर्यों का भोजन मांस, मछली नहीं है तो वर्तमान समय में इसका प्रचलन क्यों है ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—आर्यों में विदेशियों व विधर्मियों के सम्पर्क से अनेकों कुरीतियों का समावेश हो गया है। भोजन में मांसाहार भी विदेशियों की देन है।

छात्रा—महात्माजी पशु-पक्षियों में भी हमारे समान जीवात्मा है इसका आपके पास क्या प्रमाण है ?

महात्मा—बच्चो, यदि तुम ध्यानपूर्वक पशु-पक्षियों को देखो तो उनमें भी मनुष्यों की भांति पति-पत्नी का प्यार, माता-पिता की भावना अर्थात् अपने बच्चों के लिए प्यार आदि मिलेगा। चींटियों में तो मनुष्यों से अधिक सुदृढ़ संगठन अर्थात् रानी, प्रजा, सेना, सिपाही, सन्देशवाहक, मालगोदाम आदि सब कुछ मिलेगा। इन सबको देखते हुए भी जो जीवात्मा को नहीं मानता तो इसके लिए उसकी अज्ञानता का दोष ही कहा जा सकता है।

सुख, दुःख अनुभव करना और प्रयत्नशीलता जीवात्मा के प्रमुख गुण हैं जो प्राणीमात्र में समान रूप से पाये जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि पशु-पक्षी आदि प्राणियों में भी जीवात्मा विद्यमान है।

छात्रा—महात्मा जी !

महात्मा—बच्चों, अब समय समाप्त हो गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९

ईश्वर का स्वरूप

महात्माजी द्वारा वैदिक धर्म की विशेषताओं के वर्णन ने समूचे नगर में वैदिक धार्मियों में एक विशेष हर्ष की लहर उत्पन्न कर दी है। जगह-जगह उन विशेषताओं की चर्चा होने लगी है। इससे विधर्मियों के हृदयों को ठेस पहुंचना स्वाभाविक था। उन्होंने उनसे अपनी शंकाओं का समाधान करना चाहा। अन्त में निश्चय हुआ कि नगर के विद्वान मौलवी, पादरी सभा में उपस्थित हो अपनी शंकाओं को महात्माजी के सम्मुख उपस्थित करें। अतः आज की सभा एक शास्त्रार्थ का रूप लेने जा रही थी। इससे जनता की उपस्थिति चौगुनी हो गई।

स्कूल के प्रधानाचार्य ने बड़े आदर के साथ अन्य सम्प्रदायों के वन्धुओं को अपने यहां विशेष स्थान पर बिठाया। और उनकी उपस्थिति से महात्माजी को भी परिचित करा दिया। महात्माजी ने सभा स्थल पर पहुंचते ही सबका अभिवादन स्वीकार कर अपने आसन पर विराजमान हो गए और ईश प्रार्थना के पश्चात अपनी ज्ञान गंगा इस प्रकार प्रवाहित करने लगे—

उपस्थित विद्यार्थी एवं विद्वत जनों, संसार में वे लोग सौभाग्यशाली हैं जो इस जगत के उत्पादन, पालन व संहार करने वाले परम पिता परमात्मा पर विश्वास व अविचल आस्था रखते हैं। उनसे भी अधिक सौभाग्यशाली वे हैं जो ईश्वर के विशुद्ध स्वरूप के दर्शन करते हैं। ईश्वर में इस प्रकार की श्रद्धा व आस्था रखने वाला व्यक्ति व समाज कभी दुःखी नहीं रह सकता। दुर्भाग्यवश संसार में बहुत ही कम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोग ऐसे हैं जिन्हें ईश्वर के सही स्वरूप का ज्ञान है। यही कारण हैं कि ईश्वर विश्वासी तथा ईश्वर भक्त बहुधा दुःखी, अन्यायी, शोषक आदि के रूप में देखे जाते हैं। उन्हीं के आचरण को देख अनेकों पढ़े लिखे लोग नास्तिक बन गये हैं। और वे अब ईश्वर को एक काल्पनिक वस्तु मानते हैं, यह उनकी अज्ञानता ही है। वे ईश्वर को अपना पिता नहीं अपितु अपने को ईश्वर का पिता कहते हैं।

संसार में ईश्वर के स्वरूप की यदि किसी धर्म ने विशुद्ध कल्पना की है तो वह वैदिक धर्म ही हैं। ईश्वर की सत्य कल्पना के ही कारण वैदिक धर्म व वैदिक सभ्यता संसार में श्रद्धा व आदर के पात्र बने, और अपनी उदारता, विशालता, परोपकारिता, सत्यता मानवीयता तथा प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी के रूप में प्रसिद्ध हुए। जब से इसने विदेशी धर्मों के प्रभाव में आकर ईश्वर के इस सत्य स्वरूप से मुख मोड़ा है तभी से यह पतन के गर्त में चला गया, और इसके अनुयायी मुट्ठी भर विदेशियों द्वारा शताब्दियों तक अपमानित व अनुशासित होते रहे। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने १६ वीं शताब्दी में जब देशवासियों का ध्यान इस भूल की ओर आर्कषित किया और वेदों में वर्णित ईश्वरीय स्वरूप उपस्थित किया तब से वैदिक धर्मियों में एक नवीन जीवन व स्फूर्ति आ गई है।

छात्रा—महात्माजी क्षमा कीजिएगा बीच में टोकने के लिए आपने व्यक्ति अथवा समाज के सुखी व दुःखी होने को ईश्वर के स्वरूप की मान्यता पर आधारित कर दिया है। यह कैसे ? क्या नास्तिक लोग सुखी व प्रगतिशील नहीं बन सकते। रूसादि देश तो ईश्वर की सत्ता को ही नहीं मानते तब भी सुखी हैं, यह क्यों ?

महात्मा—आपने बड़ा ही अच्छा व महत्त्वपूर्ण प्रश्न किया है। बच्चों, संसार में समस्त सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। इसलिए ईश्वर को जाने बिना पूर्ण सत्य को नहीं जाना जा सकता। जब पूर्ण सत्य को नहीं जाना जायेगा तो नास्तिक व्यक्ति व कोई भी समाज पूर्ण व स्थायी सुख कभी प्राप्त नहीं कर सकता। यों तो चोर और डाकुओं को भी क्षणिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख होता है, पर उनके क्षणिक सुख को देख चोरी व डाके को सुखी होने का मार्ग नहीं कहा जा सकता।

यह बात सही है कि रूस आदि नास्तिक देश सुखी तथा प्रगतिशील है। उनके इस सुख तथा प्रगति का कारण उनका वह आचरण है जो ईश्वर भक्तों का होना चाहिए। ईश्वर भक्त शोषण व अन्याय को कभी सहन नहीं करता और अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति अनुभव करता है। यही भाव आज रूस आदि देशों के कम्यूनिस्ट साथियों में है। पर उनके अन्दर इस भाव की जागृति ईश्वर विश्वास से नहीं है। पूँजीपतियों द्वारा किये जा रहे निर्धनों व असहायों के साथ शोषण व अन्याय की प्रतिक्रिया के रूप में या प्रतिशोध के रूप में है अर्थात् उनके अन्दर प्रतिक्रया व प्रतिशोध के कारण इस भावना का प्रादुर्भाव हुआ है लेकिन यह भवना स्थाई रूप में रह सकेगी इसमें संदेह है।

यदि इन नास्तिक साम्यवादी साथियों से कोई यह प्रश्न पूछे कि हम अन्यों का शोषण कर अपने को धनी व सम्पन्न क्यों न बनावें तो उनका केवल यही उत्तर होगा कि इससे समाज में आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी। आर्थिक विषमता से वर्ग संघर्ष उत्पन्न, होगा और वर्ग संघर्ष से समाज दुःखी होगा। परन्तु मानव स्वभाव से स्वार्थी होता है। वह अपने स्वार्थ को समाज से सर्वोपरि मानने का आदी है। वह अपने स्वार्थ को सरलता से नहीं छोड़ पाता है। इसीलिये रूस आदि देशों में कानून व डण्डे के वल पर ही सबको शोषण व अन्याय करने से रोका गया है। जिस दिन वहाँ कानून व डण्डे का भय नहीं होगा मानव स्वभावतः अपनी स्वार्थ सिद्धि के निमित्त अन्याय, अत्याचार करने लगेगा।

कानून व डण्डे पर स्थापित समाज व्यवस्था को अच्छा नहीं कहा जा सकता। समाज व्यवस्था वह उत्तम होती है जहां कानून व डण्डे के भय के न रहने पर भी व्यक्ति स्वतः प्रेरणा से दूसरों के साथ अन्याय अत्याचार करने की रुचि नहीं रखता। ऐसा करने में वह अपनी स्वार्थ सिद्धि नहीं अपितु अपना आत्म हनन व विनाश देखता है। ऐसी समाज व्यवस्था को सच्चा ईश्वर विश्वास ही जन्म दे सकता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रा—महात्माजी, मध्य एशिया, यूरोप, इग्लैंड, अमरीका, आदि देशों में रहने वाले मुसलमान ईसाई कट्टर ईश्वर विश्वासी है, परन्तु फिर भी उन देशों में अन्यों के साथ कितना अन्याय अत्याचार होता है। ऐसा क्यों होता है ?

महात्मा—वेटी मैंने केवल ईश्वर विश्वास नहीं कहा। मैंने कहा है सच्चा ईश्वर विश्वास ही व्यक्ति को अन्याय अत्याचार करने से रोकता है। सच्चे ईश्वर विश्वास से मेरा तात्पर्य ईश्वर के सच्चे स्वरूप की मान्यता तथा उसमें सच्ची आस्था से है। यूरोप आदि देशों के ईसाई व मुसलमान ईश्वर को मानते अवश्य हैं, परन्तु उनके ईश्वर की कल्पना ऐसी है जो उन्हें सीमित मात्रा में ही दूसरों के प्रति अन्याय, अत्याचार से रोक पाती है, सर्वथा नहीं।

ईश्वर विश्वासी होने मात्र से कोई पवित्र या धर्मात्मा नहीं बन जाता है अपितु, उसका आचरण उसके द्वारा मान्य ईश्वर के स्वरूप पर ही आधारित है। ईश्वर के गलत स्वरूप व धारणा के कारण ही एक व्यक्ति व समाज एक-दूसरों पर अत्याचार व अन्याय करता हुआ यह अनुभव करता है कि वह बड़ा धार्मिक व पुनीत कार्य कर रहा है, और उनके उन कुकृत्यों से ईश्वर प्रसन्न होकर उसे स्वर्ग का प्राप्ति करा देगा।

छात्रा—महात्माजी, कृपया बताएँ कि ईसाई व मुसलमान वन्धुओं द्वारा मान्य ईश्वर के स्वरूप में क्या दोष है कि वह शोषण, पाप, अन्याय अत्याचार को नहीं रोक पाता है।

महात्मा—ईसाई धर्म की मान्यता है कि ईश्वर चौथे आसमान पर विशेष तख्त पर बैठा है। उसके इकलौते वेटे ईसामसीह ने संसार में आकर दूसरों के पापों को अपने ऊपर लेकर वह उनके कल्याण के लिए-फांसी पर चढ़ाया गया। ईसाई धर्म के मतानुसार जो व्यक्ति प्रभु ईसा मसीह पर विश्वास लावेगा उसके पापों को ईसामसीह अपनेऊपर ले लेंगे और न्याय के दिन ईसामसीह की सिफारिश पर उनका पिता उसे स्वर्ग में भेज देगा। यही कारण है कि प्रति सप्ताह गिरजा में जाकर अपने द्वारा किये गये पापों को वहां के पादरी द्वारा ईसा प्रभु को सौंप आते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब आप स्वयं सोचें कि जब पापों से इस प्रकार सरलता से मुक्ति मिल जाती है तो ऐसे ईश्वर की मान्यता से जो अपने पुत्र की सिफारिश पर पापियों को क्षमा कर उन्हें स्वर्ग भेज देता है मानव पाप करने से कैसे रुकेगा ? ईश्वर की मान्यता के नाम पर यह तो पाप करने का लायसेंस वितरण हुआ।

मुस्लिम बन्धुओं की भी ईश्वर के बारे में लगभग यही मान्यता है कि वह उन सभी लोगों को कयामत के दिन स्वर्ग भेज देगा जिनकी हजरत मुहम्मद सिफारिश कर देंगे। ऐसी अवस्था में ईश्वर-विश्वास एक ढोंग बन जाता है और मानव पाप करने से अपने को रोक नहीं पाता।

ईश्वर के स्वरूप की विभिन्न कल्पनाओं के कारण ही विभिन्न मत-मतान्तरों की उत्पत्ति होकर ही विभिन्न प्रकार के आचरणों, पूजा-पाठों व समाज व्यवस्था का जन्म हुआ। धर्म के नाम पर दूसरों के प्रति अनाचार व अत्याचार का कारण भी ईश्वर के स्वरूप की दोष-पूर्ण कल्पना है। यदि संसार के सभी धर्मावलम्बी पक्षपात छोड़ बुद्धिपूर्वक ईश्वर के सही स्वरूप को जान लें तो मत-मतान्तरों का यह भेद तथा धर्म के नाम पर दूसरों के प्रति अन्याय, अत्याचार तथा धर्मों के वर्तमान स्वरूप बदल जाएँ।

छात्रा—महात्माजी, कृपया बताइये कि ईश्वर के स्वरूप की विभिन्न कल्पनाओं ने संसार में विभिन्न धर्मों व उनके स्वरूप को कैसे जन्म दिया ?

महात्मा—कुछ धर्मावलम्बियों ने ईश्वर के बारे में कल्पना की है कि वह शरीर वाला है, और आकाश में कहीं बैठा है। ईश्वर को साकार दूर आकाश में बैठा हुआ मानते ही उन्हें बहुत सी बातों को विवश होकर मानना पड़ा, जैसे उन्हें यह मानना पड़ा, शरीर वाला ईश्वर मनुष्य की भाँति खाता, पीता व सोता होगा। इसीलिए उसको प्रसन्न करने के लिए उसको भोजन स्वरूप बकरों, दुम्बों, भैंसों, गायों आदि की बलि दी जाने लगी। मंदिरों में उसके सोने, खाने, उठने, पीने की व्यवस्था करनी पड़ी। आश्चर्य तो इस बात का है कि ईश्वर को भोग भोजन कुर्बानी देने वाले साथ-साथ यह भी मानते हैं कि ईश्वर ही समस्त संसार को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भोजन खिला रहा है, फिर भी अपनी गलत धारणा के कारण उसे खिलाने का ढोंग रच रहे हैं।

ईश्वर को सशरीर मानने पर दूसरा दोष यह आया कि मनुष्यों के कल्याण के लिए उन्हें उपदेश देने को मतावलम्बियों की दृष्टि में ईश्वर ने स्वयं मनुष्य के रूप में अवतार लिया और समय-समय पर वह अवतार लेता रहा है। कुछ की दृष्टि में उसने इस पुनीत कार्य के लिए अपने इकलौते बेटे ईसा प्रभु को दुनियाँ में भेजा और कुछ की दृष्टि में उसने अपने संदेश वाहक हजरत मुहम्मद को अरब में भेजा। साकार मानने के साथ जब यह कल्पना की कि ईश्वर सिफारिश सुनता है और पापों को क्षमा कर देता है तो इस कल्पना ने पापों के प्रचार में बड़ी मदद की है। विभिन्न मत-मतान्तरों ने अपने अनुयायियों को पापों से मुक्त कराने के लिए सरल मार्गों व उपायों का अपने धर्म में वर्णन किया है। यहां तक कि बहुत से धर्म-गुरु तो यहां से स्वर्ग के टिकट वितरण करने लगे। धर्म क्या स्वर्ग दिलाने वाली दुकान बन गई।

इस प्रकार ईश्वर के स्वरूप सम्बन्धी विभिन्न कल्पनाओं ने विभिन्न मत-मतान्तरों को ही जन्म नहीं दिया अपितु पाखण्ड, अनाचार व अत्याचार को भी बढ़ावा दिया है। उनकी दृष्टि में भिन्न मत रखने वाले ईश्वर के शत्रु या काफिर सिद्ध हो गये। काफिरों को लूटना, मारना, तथा उनकी स्त्रियों को अपमानित करना उन्होंने अपना धर्म बना लिया। इसलिए जब तक संसार में ईश्वर की सत्ता तथा उसके सही स्वरूप को स्वीकार नहीं किया जायेगा तब तक संसार का कल्याण नहीं होगा।

छात्रा—महात्माजी, क्या संसार में किसी धर्म ने ईश्वर के सही स्वरूप की कल्पना की है? यदि हाँ तो वह कौन-सा धर्म है और उसकी कल्पना का ईश्वर क्या है?

महात्मा—संसार में ईश्वर के सही स्वरूप को जानने वाला एक मात्र वैदिक धर्म है। उसकी मान्यता के अनुसार ईश्वर का स्वरूप इस प्रकार है······

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।

मौलवी—महात्माजी आपने मुसलमान व ईसाईयों द्वारा ईश्वर की कल्पना को गलत बताया है और वैदिक धर्म की ईश्वर सम्बन्धी कल्पना को सत्य व सर्वोत्तम बताया है। क्या आप बतला सकते हैं कि जब ईश्वर निराकार है तो वह मनुष्यों तक अपना उपदेश व संदेश कैसे भेजेगा ?

महात्मा—मौलवी साहब अपने ज्ञान को मनुष्यों तक भेजने का प्रश्न तभी उत्पन्न हो सकता है जब ज्ञान देने वाले और ज्ञान लेने वाले के मध्य स्थान की दूरी हो। जब दोनों के मध्य स्थान की दूरी नहीं होती तो प्रेरणा मात्र से मानव की आत्मा में ज्ञानोदय हो जाता है। जब ईश्वर आत्मा के अन्दर ही विराजमान है तो फिर अपने ज्ञान को आत्मा तक भेजने के लिए ईश्वर को स्वयं अवतार लेने या अपने बेटे को भेजने या अपने संदेश-वाहक को भेजने की आवश्यकता ही नहीं है।

पादरी—आपने अभी कहा कि ईश्वर दयालु है। यदि वह दयालु है तो फिर वह हमारे पापों को क्षमा क्यों नही कर सकता ?

महात्मा—पापों को क्षमा करना दया नहीं शत्रुता है। इससे पाप करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। पापों का दण्ड देना ही वास्तव में दया है। इसी से मानव पाप करने से रुकता है। इसलिये ईश्वर की दयालुता इसी से प्रकट होती है कि वह पापों को क्षमा नहीं करता अपितु पापों का दण्ड देता है। जैसे वह माता बच्चे की शत्रु होती है जो बच्चे द्वारा चोरी किये जाने पर उसे क्षमा कर देती है और वह मां बच्चे पर दयालु होती है जो चोरी करने पर उसे तुरन्त दण्ड देती है।

मौलवी—ईश्वर को सर्वव्यापक मानने से तो ईश्वर को टट्टी व गन्दी नाली में भी मानना पड़ेगा। ऐसा करने से क्या ईश्वर का अपमान नहीं है।

महात्मा—आपके समझने की भूल है, मौलवी साहब ईश्वर के गर्भ में संसार की वस्तुएँ इसी प्रकार हैं जैसे मानव के शरीर में मल-मूत्र आदि आपके शरीर में भी प्रत्येक समय मल-मूत्र आदि रहते हैं क्या यह आपका अपमान है या आपको इनसे घृणा है ?

छात्रा—क्या आप कोई ऐसी युक्ति दे सकते हैं कि ईश्वर शरीरधारी नहीं अपितु निराकार तथा सर्वव्यापक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—ईश्वर निराकार व सर्वव्यापक है इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि यदि वह साकार तथा शरीर वाला बन जाय तो फिर वह संसार की रचना, पालन व विनाश करने में असमर्थ बन जाये। ईश्वर सृष्टिकर्त्ता ही नहीं अपितु उसका पालक भी है। जैसे एक घड़ीसाज घड़ी बनाता है और घड़ी को बनाकर बाजार में भेज देता है, परन्तु इस जगत् में बनी प्रत्येक वस्तु का प्रत्येक क्षण निर्माण, पालन व विनाश हो रहा है। ऐसी अवस्था में क्या इसके बनाने वाला इससे दूर रह सकता है। अतः संसार के प्रत्येक चेतन व जड़ पदार्थ का जन्म, उसकी प्रत्येक क्षण वृद्धि और प्रत्येक क्षण ह्रास और विनाश सिद्ध कर रहे हैं कि इसके बनाने वाला, पालन करने वाला तथा संहार करने वाला ईश्वर सदैव भीतर और बाहर एक समान विद्यमान है।

यह धारणा गलत है कि ईश्वर ने जगत् को घड़ी बनाने वाले की भाँति बनाकर छोड़ दिया अपितु वह प्रत्येक क्षण बनाने, पालन करने तथा विनाश का कार्य कर रहा है। जगत् स्वयं इस बात का प्रमाण है। यह कार्य साकार तथा एकदेशीय ईश्वर नहीं कर सकता है। अपितु सर्व-व्यापक ईश्वर ही कर सकता है।

छात्रा—महात्माजी, अभी आपने कहा कि ईश्वर प्रत्येक क्षण उत्पत्ति, पालन व विनाश का कार्य करता है परन्तु ईसाई व इस्लाम धर्म कहते हैं कि ईश्वर ने संसार को सात दिन में बनाकर आराम किया अर्थात् निश्चित हो गया—सो कौन सी बात सत्य है?

महात्मा—भाई प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। हम प्रत्येक क्षण संसार में चेतन प्राणियों और जड़ वस्तुओं की उत्पत्ति, पालन और विनाश देख रहे हैं यह ईश्वर के बिना कौन कर सकता है। यदि कहें कि प्रकृति कर रही है तो प्रकृति बुद्धिहीन जड़ होने से इस प्रकार के बुद्धिमता पूर्ण कार्य कदापि नहीं कर सकती। अतः ईश्वर द्वारा बनाये नियम ही प्रकृति में व्याप्त हो उसी के निर्देशानुसार कार्य कर रहे हैं।

छात्रा—महात्माजी, यदि ईश्वर के बनाये नियमों से प्रकृति द्वारा उत्पत्ति, विनाश व पालन कार्य हो रहे हैं तो ईश्वर की इसमें कहां आवश्यकता होती है?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—बेटी, प्रकृति में व्याप्त नियम साधारण भौतिक रचना तो कर सकते हैं, परन्तु इनमें किसी के अच्छे-बुरे कर्मों का फल देने की सामर्थ्य नहीं होती है अर्थात् जीवात्माओं को उनके कर्मानुसार जाति आयु, भोग आदि देने की शक्ति जड़ प्राकृतिक नियमों में नहीं है।

छात्र—महात्माजी, ईसाई व इस्लाम धर्म तो कहते हैं कि ईश्वर के न्याय के अनुसार कयामत के दिन ही सबके कर्मों का फैसला होगा अर्थात् उन्हें नर्क या स्वर्ग मिलेगा। पर आप कहते हैं कि ईश्वर प्रत्येक क्षण न्याय करता है। सो आपकी मान्यता कहाँ तक सत्य है ?

महात्मा—बच्चे, यही तो वैदिक धर्म द्वारा मान्य ईश्वरीय स्वरूप की विशेषता है। वैदिक धर्म ने ईश्वर की कोरी कल्पना नहीं की अपितु वह जैसा है वैसा ही बुद्धि पूर्वक उसे जाना व माना है। यदि ईश्वर कयामत के दिन ही सबके कर्मों का फैसला करेगा तो फिर नित्य जीवात्मा अपने कर्मों का फल किसके निर्देश से प्राप्त कर रहे हैं। प्रतिक्षण हम देख रहे हैं कि जीवात्मा गरीब, धनी, राजा के यहाँ स्वस्थ, सुंदर, लंगड़ा, लूला व अंधा इत्यादि विभिन्न अवस्थाओं में जन्म ले रहे है। अपनी इच्छा से भला कोई जीवात्मा निर्धन व भिखारी के घर काला, कुरूप, अंधा, लूला व लंगड़ा शरीर लेकर क्यों जन्म लेगी।

छात्र—महात्माजी, यदि ईश्वर का स्वरूप निराकार ही है तो फिर उसने सृष्टि की रचना कैसे की ? बिना शरीर व साधन के क्या कोई रचना करना सम्भव है ?

महात्मा—प्रतीत होता है आपने मेरे पहले प्रवचन नहीं सुने अन्यथा ऐसा प्रश्न कदापि नहीं करते। भाई ईश्वर निराकार तथा सर्वव्यापक है इसीलिये वह सृष्टि की रचना कर सका अन्यथा यदि वह शरीरवान, सीमित तथा एकदेशीय होता तो फिर वह इस महान् ब्रह्माण्ड की रचना कदापि नहीं कर सकता था। याद रखो रचना करने वाले को बाह्य साधन की आवश्यकता तभी पड़ती है जब बनने वाली वस्तु और बनाने वाले के मध्य स्थान की दूरी होती है। परन्तु जब बनाने वाला और बनने वाली दोनों एक दूसरे से मिले हों तो फिर उसे बनाने के लिए बाह्य साधनों की आवश्यकता नहीं होती अपितु इच्छा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्र की आवश्यकता होती है। जैसे जीवात्मा शरीर में रहता है तो फिर शरीर को चलाने व हिलाने के लिए उसे अन्य साधनों की आवश्यकता न होकर इच्छा मात्र से ही वह यह सब कर लेता है। वैसे ही ईश्वर इच्छा मात्र से सृष्टि रचना, पालन व विनाश तीनों कार्य करता है।

छात्रा—महात्माजी, अन्य धर्मावलम्बियों के मतानुसार ईश्वर प्रार्थना करने पर जहां उनके पापों को क्षमा कर देता है वहाँ वह उनकी प्रार्थना पर भौतिक भोग सामग्री, धन-धान्य भी दे देता है। तो क्या वैदिक ईश्वर प्रार्थना पर रोटी, कपड़ा, मकान, और धन-धान्य दे देता है ?

महात्मा—बच्चा, वैदिक ईश्वर ऐसा नहीं है। वह भीख मांगने पर धन-धान्य देकर लोगों को आलसी व निकम्मा नहीं बनाता। दूसरे वह कर्म के बिना व्यक्ति को फल नहीं देता। वैदिक ईश्वर प्रार्थना करने पर भक्तों को इच्छित पदार्थों को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा व शक्ति प्रदान करता है। फल की प्राप्ति अपने कर्मानुसार जीवात्मा के अपने ही हाथ में है।

ईश्वर सूर्य की भाँति प्रेरणा शक्ति है। जिस प्रकार सूर्य वनस्पतियों में छिपी शक्तियों को जाग्रत कर उन्हें पल्लवित, पुष्पित व फलयुक्त करता है उसी प्रकार परमात्मा भक्त के प्रार्थना करने पर उसके अन्दर छिपी शक्ति को जाग्रत कर देता है। जैसी प्रार्थना होती है उसी प्रकार की शक्ति वह जाग्ररत कर देता है। इस प्रकार वैदिक ईश्वर प्रेरक शक्ति है न कि जो मनुष्य को निकम्मा बना देने वाली।

छात्रा—महात्माजी, अन्य धर्मावलम्बियों का विश्वास है कि मरने के पश्चात् कयामत के दिन ही ईश्वर के दर्शन होंगे तो क्या वैदिक ईश्वर के दर्शन भी मरने के पश्चात् ही होना सम्भव है ?

महात्मा—बिटिया, वैदिक ईश्वर के दर्शन मरने के पश्चात् नहीं अपितु इसी जीवन में मानव कर सकता है। महर्षि पतंजलि ने अपने योग-दर्शन में इसी रहस्य को अति सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। योग द्वारा भारत में एक नहीं अनेक व्यक्तियों ने ईश्वर के दर्शन किये हैं और कर रहे हैं। वास्तव में अन्य धर्मावलम्बियों ने ईश्वर के स्वरूप की जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना की है वह सही नहीं है, और उसे मरने के पश्चात् ही प्राप्त किया जा सकेगा यह भी युक्ति युक्त नहीं है।

छात्रा—महात्माजी, हिन्दू धर्म में भी तो विष्णु भगवान के बारे में लिखा है कि वे क्षीर सागर में शेष नाग की शय्या पर लेटे हैं, लक्ष्मी जी उनके चरण दबा रही हैं और नारद पास में खड़े वीणा बजा रहे हैं। ऐसे विष्णु को तो अन्य धर्मावलम्बियों की भांति मरने के पश्चात् ही प्राप्त किया जा सकता है। क्या आप इसे वैदिक ईश्वर नहीं मानते ?

महात्मा—हिन्दू धर्म में वैदिक ईश्वर के विभिन्न गुणों को लेकर पौराणिक बन्धुओं ने आलंकारिक रूप में उन गुणों का वर्णन किया है और उनकी मूर्तियाँ बना डाली हैं। सो वह वर्णन व मूर्तियां काल्पनिक ही हैं वास्तविक नहीं।

छात्रा—यदि अन्य धर्मावलम्बी भी यह कहें कि चौथे या सातवें आसमान में रहने की बात आलंकारिक है तब तो आप उनसे सहमत होंगे।

महात्मा—बच्चा, यदि वह ऐसा कहें तो बड़ा अच्छा है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में उन्हें ऐसा कहना ही पड़ेगा अन्यथा वह अपने ईश्वर की सत्ता को सिद्ध न कर सकेंगे। परन्तु इतना कहने भर से ही काम नहीं चलेगा। उन्हें अपने ईश्वर की वर्तमान कल्पना को सर्वथा बदल कर ईश्वर के वैदिक स्वरूप को ही स्वीकार करना पड़ेगा। अन्यथा वे भौतिकवादियों के प्रश्नों का समाधान नहीं कर सकेंगे।

छात्रा—महात्माजी, क्या आप बताने की कृपा करेंगें कि ईश्वर के वैदिक स्वरूप को स्वीकार कर लेने पर मानव या मानव जाति को विशेष लाभ क्या होता है जो अन्य धर्मावलम्बियों को नहीं होता है ?

महात्मा—आपने बड़ा अच्छा प्रश्न किया है आर्य जाति या हिंदू धर्म की उदारता, विशालता, अन्य धर्मों के लिए आदर, प्रेम, सेवा आदि गुण और प्राणी मात्र के कल्याण की भावना वास्तव में ईश्वर के इसी स्वरूप की देन है। ईश्वर के वैदिक स्वरूप को हृदय में धारण करते ही मानव के हृदय में सभी प्राणियों में समान रूप से परमात्मा के स्वरूप के दर्शन होने लगते हैं। इसीलिए सच्चे ईश्वर के विश्वास से ऊँच-नीच, छोटे-बड़े की भावना समाप्त हो सभी प्राणी एक समान दिखाई देने लगने हैं और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव शरीर ही उसके लिए ईश्वर का साक्षात मंदिर प्रतीत होने लगता है अर्थात् विश्व-बन्धुत्व, प्रेम, सेवा की भावना जाग्रत हो जाती है।

दूसरा भाव यह होता है कि ईश्वर को सर्वव्यापक मानने वाला पाप करने से भयभीत होने लगता है। अपने परम पिता परमात्मा को सर्वत्र उपस्थित देख उसे पाप करने का साहस ही नहीं होता।

तीसरा लाभ यह होता है कि वह यह विश्वास करता है कि ईश्वर न्यायकारी है और किसी राजा व प्रशासक के डण्डे से कोई भले ही बच जाय पर ईश्वर के न्याय से कदापि नहीं बच सकता। उसका न्याय मरने के पश्चात् अगले जन्म में भी पीछा नहीं छोड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वतः पाप करने से डरने लगता है।

इस प्रकार वैदिक धर्म की ईश्वर की मान्यता हीं सत्य और मानव-कल्याणकारी है अन्य मान्यताएँ दोषपूर्ण हैं, और मानव को भटकाने वाली हैं।

छात्रा—महात्माजी, वैदिक धर्म द्वारा ईश्वर की यह कल्पना अपनी बनाई हुई है या ईश्वर का वास्तविक स्वरूप यही है।

महात्मा—ईश्वर क [illegible]ास्तविक स्वरूप यही [illegible] विपरीत समस्त स्वरूप मानव [illegible]पने मन की कल्पना मात्र हैं। आज बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी ईश्वर [illegible]स स्वरूप को मानने पर विवश हो गये हैं। भले ही वह इस श[illegible] को ईश्वर का नाम न देकर नेचर व प्रकृति का नाम देते हैं, परन्तु उनकी प्रकृति सम्बन्धी कल्पना कुछ सीमा तक यही है। मेरा विश्वास है जब वह प्रकृति के पीछे झाँक कर किसी दिन देखेंगे तो उन्हें वैदिक धर्म द्वारा मान्य ईश्वर के दर्शन अवश्य होंगे।

अपनी घड़ी की ओर आश्चर्य से देखते हुए महात्माजी ने अपने प्रवचन को विराम देते हुए श्रोतागणों से अवकाश ग्रहण किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०

ईश्वरोपासना

ठीक निश्चित समय पर महात्माजी को लेकर गाड़ी पहुंची, और करतलध्वनि के मध्य उन्होंने अपना आसन ग्रहण किया। महात्माजी ने जन-समूह को देख स्कूल के आचार्य महोदय से कहा कि स्कूल की प्रार्थना सभा क्या आपने तो इसे सार्वजनिक सभा का रूप दे डाला। आचार्य महोदय ने उत्तर देते हुए कहा महाराज आपके प्रवचनों ने पर्दा करने वाली महिलाओं तक को यहां खींच लिया है।

महात्माजी ने मुस्कराहट के साथ जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा—संसार में जिस प्रकार ईश्वर के स्वरूप की विभिन्न कल्पनाऐं धर्मावलम्बियों ने कीं और उन कल्पनाओं के कारण ही उनके धार्मिक सिद्धान्त, आचरण तथा अन्य प्राणियों के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर आ गया और आस्तिक होते हुए भी सभी ईश्वर-भक्तों में वर्ग-संघर्ष उत्पन्न हो गया उसी प्रकार ईश्वर भक्ति के प्रकारों का भी जंगल इन भक्तों ने खड़ा कर दिया है।

पूजा-पाठ धर्म का प्रधान अंग है। संसार का कोई धर्म ऐसा नहीं जिसकी अपनी कोई विशेष पूजा-पाठ विधि न हो। संसार में ऐसे भी मतमतान्तर हैं जिनका ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं, परन्तु पूजा पाठ की विधिउनके यहां भी है। इस प्रकार पूजा-पाठ और धर्म दोनों को एक दूसरे से अलग करना कठिन है। संसार में पूजा-पाठ ही धर्म की परिभाषा बन गई है अर्थात् पूजा-पाठ को धर्म और पूजा-पाठ करने वाले क ो धार्मिक समझा जाने लगा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा-पाठ वैदिक धर्म का भी अंग है। परन्तु इसके पूजा-पाठ के स्वरूप तथा लक्ष्य की अपनी विशेषता है। जो अन्य धर्मों में नहीं पाई जाती है। यों तो सभी धर्मों में मान्य पूजा-पाठ विधि भिन्न-भिन्न हैं और अपनी-अपनी विशेषताऐं रखती हैं। परन्तु भिन्नता रहते हुए भी उन सबका लक्ष्य एक ही है। वैदिक धर्म को छोड़ लगभग संसार के सभी धर्मावलम्बी पूजा-पाठ को ही धर्म मानते हैं। इसके बिना धर्म की कल्पना करना उनकी दृष्टि में असम्भव है। इसलिए अन्य धर्मों में प्रचलित पूजा-पाठ विधियां देखने में भिन्न रहते हुए भी उद्देश्य में एक है।

परन्तु वैदिक धर्म द्वारा मान्य पूजा-पाठ विधि स्वरूप में ही भिन्न नहीं अपितु उसके पीछे स्थापित भावना भी भिन्न है।

छात्रा—महात्माजी, कृपया स्पष्ट शब्दों में बतलाने का कष्ट करें कि वैदिक धर्म में मान्य पूजा-पाठ विधि में अन्य धर्मो की पूजा-पाठ विधियों से क्या विशेषता है?

महात्मा—वैदिक धर्म में मान्य पूजा-पाठ विधि की विशेषतायें जो अन्य धर्मों में नहीं हैं इस प्रकार हैं—

१—वैदिक धर्म पूजा-पाठ को धर्म नहीं अपितु धर्म पालने के लिए एक साधन मानता है जबकि अन्य धर्मों में यही धर्म है।

२—वैदिक धर्म में मान्य पूजा-पाठ विधियां बुद्धिवाद तथा वैज्ञानिकता पर आधारित हैं जबकि अन्य धर्मों में इसका आधार अन्ध-विश्वास है।

३-वैदिक धर्म में पूजा-पाठ विधि को मनुष्य के आश्रम भेदानुसार निश्चित किया गया है।

४—इसी जीवन में ईश्वर के साक्षात्कार कराने की सामर्थ्य केवल वैदिक पद्धति में है अन्यों में नहीं।

५—वैदिक धर्म में पूजा पद्धति के साथ-साथ धर्माचरण पर भी विशेष बल दिया गया है।

छात्रा—महात्माजी, आपने अभी कहा है कि वैदिक धर्म पूजा-पाठ विधि को धर्म नहीं धर्म्म का साधन मानता है—यह कैसे? क्या अन्य धर्मावलम्बी ऐसा नहीं मानते?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—बिटिया, अन्य धर्मावलम्बी पूजा-पाठ को ही धर्म मानते हैं इसके बिना स्वर्ग की कल्पना करना उनके लिए कठिन है, उनके लिए पूजा-पाठ लक्ष्य है, परन्तु वैदिक धर्म पूजा-पाठ को धर्माचरण के लिए एक साधन मानता है। अर्थात् पूजा-पाठ द्वारा व्यक्ति धर्माचरण के लिए ज्ञान, शक्ति, प्रेरणा, साहस, श्रद्धा व विश्वास प्राप्त करता है इस प्रकार जहां अन्य धर्मों का धर्म पूजा-पाठ के साथ ही प्रारम्भ होता है और उसी के साथ समाप्त हो जाता है वहां वैदिक धर्म पूजा-पाठ से प्रारम्भ होकर जीवन के प्रत्येक कार्य और आचरण में विद्यमान रहता है।

छात्रा—आपके पास क्या प्रमाण है कि वैदिक धर्म पूजा-पाठ को धर्म का अंग नहीं अपितु धर्म का साधन मानता है ?

महात्मा—इसका प्रमाण वेदादि धर्म-शास्त्र ही हैं। वेदादि धर्म-ग्रन्थों में जहां धर्म की परिभाषा की गई है वहां कहीं भी पूजा पाठ को ही धर्म के रूप में मान्यता नहीं दी गई।

छात्रा—महात्माजी, क्या संध्या व यज्ञादि को मनु ने आर्यों के लिए अनिवार्य नहीं बताया है ?

महात्मा—हां बताया है, वहां इनकी अनिवार्यता लक्ष्य के रूप में नहीं साधन के रूप में ही है। वैदिक धर्म की यह विशेषता है कि जो भी आचरण मानव को धर्म मार्ग पर ले जाने में सहायक है उसे दैनिक जीवन में अनिवार्य बना दिया गया है।

छात्रा—महात्माजी, सभी पूजा-पद्धतियां ईश्वर के दरबार में पापों से मुक्ति पाने, इस जीवन में सुख-साधनों की प्राप्ति तथा मरने के पश्चात् मोक्ष तथा स्वर्ग की प्रार्थना करती हैं क्या वैदिक-पद्धति इससे भिन्न है।

महात्मा—हां, सर्वथा भिन्न है। वैदिक पूजा-पद्धति में एक भक्त का भाव सर्वथा अन्यों से भिन्न होता है। अन्य धर्मावलम्बियों का विश्वास है कि ईश्वर प्रार्थना करने पर पापी को क्षमा कर देता है और मांगने पर सुख सामग्री प्रदान कर देता है। परन्तु वैदिक धर्मी ईश्वर को उस दाता की भांति नहीं मानता जो भीख मांगने पर भिखारियों को बिना परिश्रम किये दान देकर उन्हें आलसी, निकम्मा तथा पुरुषार्थहीन बना देता है। वैदिक धर्म के अनुसार ईश्वर हमारे कर्मों का ही फल देता है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
केवल प्रार्थना का नहीं। इसलिए वैदिक पूजा-पद्धति में एक भक्त धर्माचरण के लिए ज्ञान-गमन तथा प्राप्ति के लिए प्रार्थना करता है। जिस प्रकार सूर्य पेड़, पोधों को फल-फूल आदि भिक्षा में न दे उनके अन्दर छिपी शक्ति को जाग्रत कर उन्हीं के प्रयत्न द्वारा उत्पन्नकर देता है उसी प्रकार वैदिक-पूजा करने वाले भक्त की छिपी आन्तरिक शक्तियों को ईश्वर जाग्रत कर उनके द्वारा पुरुषार्थ करा भक्त को इच्छित फल उसी के कर्मानुसार देता है।

सारांश यह कि वैदिक पूजा-पद्धति के द्वारा एक व्यक्ति ईश्वरीय गुणों का चिन्तन कर उन गुणों को अपने अन्दर धारण कर अपने को ईश्वर के समीप ले जाने का प्रयास करता है। ईश्वर के कर्म-फल सिद्धान्त को जान पापों से मुक्त होने का प्रयास करता है, सृष्टि में व्याप्त ईश्वर के नियमों का अध्ययन कर वह अपने कर्त्तव्य का पालन करता है तथा ईश्वर, जीव, प्रकृति के सही स्वरूप तथा सम्वन्ध को जान अपने लक्ष्य व मार्ग की ओर बढ़ने का प्रयत्न करता है।

छात्रा—महात्माजी, आपने कहा कि वैदिक पूजा-पद्धति का आधार बुद्धिवाद तया अन्यों का आधार अन्धविश्वास है यह कैसे ?

महात्मा—बिना पुरुषार्थ किये केवल प्रार्थना के आधार पर फल की प्राप्ति की आशा करना, ईश्वर के प्रसन्न करने के लिए पशु-पक्षियों की वलि देना आदि बातें बुद्धिहीन नहीं तो और क्या हैं ? परन्तु वैदिक धर्म की पूजा-पद्धति का आधार ज्ञान गमन व प्राप्ति होता है, अर्थात् किसी भी क्षेत्र में सफलता व फल की प्राप्ति के निमित्त भक्त को पहले उस क्षेत्र का ज्ञान, ज्ञान के अनुसार कर्म व पुरुषार्थ तथा कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति होती है। यह मानकर ही भक्त पूजा-पाठ करता है। यही मान्यता विज्ञान तथा बुद्धिवाद की है। इसलिए वैदिक पूजा-पद्धति बुद्धिवादी है।

छात्रा—आपने कहा कि पूजा पाठ विधि मनुष्य के आश्रम भेदानुसार निश्चित की है वह कैसे ?

महात्मा—वैदिक-धर्म में मानव आयु को साधारणतया चार भागों-आश्रमों में बांटा गया है। तदनुसार प्रथम २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य, २५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से ५० वर्ष तक गृहस्थ, ५० से ७५ वर्ष तक वानप्रस्थ एवं ७५ से १०० तक सन्यास आश्रम में रहकर जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना है।

पूजा-पाठ-विधि के नाम पर वैदिक-धर्म में 'यज्ञ-' शब्द रखा गया है। यज्ञ अनेकों हैं, जिन्हें ज्ञान, कर्म तथा उपासना नाम से तीन भागों में बांटा गया है तथापि जो यज्ञ नित्यपालनीय हैं उन्हें महायज्ञ की संज्ञा दी गई है और वे विभिन्न आश्रम की दृष्टि से निम्न प्रकार पालनीय हैं :—(महर्षि स्वामी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ४ थे समुल्लास में विस्तृत वर्णन किया है। वहां उनकी विधि देख लें यहाँ सूक्ष्म रूप से लिखते हैं।)

ब्रह्मचर्य आश्रम में

ब्रह्मज्ञान १. जिसमें वेदों का पढ़ना-पढ़ाना, संध्योपासना तथा योगाभ्यास द्वारा परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना होता है?

२. **देवयज्ञ**—अग्निहोत्र जिससे वायु की शुद्धि द्वारा बल, बुद्धि और आरोग्य बढ़ता है ये दोनों यज्ञ प्रात-सायं करने आवश्यक होते हैं।

गृहस्थाश्रम में...१ **ब्रह्मयज्ञ**—जैसा कि ब्रह्मचर्याश्रम में बताया है। २. **देवयज्ञ** ३. **पितृयज्ञ**—इसमें देव-विद्वानों, ऋषि-शिक्षकों, पितर—माता-पिता आदि वृद्ध, ज्ञानी तथा परम योगियों की श्रद्धा से सेवा करके उन्हें तृप्त प्रसन्न किया जाता है।

४. **बलि वैश्व देवयज्ञ**—पाकशाला में भोजनार्थ जो भोजन बना हो उसमें से नमकीन तथा खट्टे पदार्थों को छोड़कर घृत-मिष्टान्न को चूल्हे की अग्नि में से दुःखी, भूखे, पापी, रोगी, चाण्डाल, कौवे, कुत्ते तथा चींटो आदि कृमि को भोजन देना।

५—**अतिथियज्ञ**—इसके द्वारा धार्मिक सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला पूर्ण-विद्वान परमयोगी संन्यासी के घर पर अकस्मात् आने पर आसन, जल, भोजनादि से उसका सत्कार कर उसे प्रसन्न करना और उससे उपदेश ग्रहण कर अपने चाल-चलन को उसके अनुकूल करना होता है।

वानप्रस्थाश्रम. इस आश्रम में भी गृहस्थाश्रम में पालनीय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पांचो यज्ञों का पालन करना होता है।

सन्यासाश्रम में. इसमें केवल ब्रह्म यज्ञ का पालन करना है।

छात्रा—महात्मा जी, आपने वैदिक धर्म द्वारा मांन्य पूजा-पद्धति द्वारा इसी जीवन में ईश्वर के साक्षात्कार का दावा किया है—यह कहां तक सत्य है ?

महात्मा—वैदिक धर्म द्वारा मान्य पूजा-पद्धति की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वह इसी जीवन में ईश्वर का साक्षात्कार कराकर मानव को ब्रह्म के समीप तक ले जाती है, अन्य धर्म मरने के पश्चात् ही न्याय के दिन ईश्वर के दरबार में अपने पाप-पुण्य का फैसला सुनने के हेतु मानव की उपस्थिति का दावा करते हैं। यह एक लम्बा विषय है, परन्तु इस सम्बन्ध में इतना ही कह देना यथेष्ट है कि ईश्वर ही नहीं अपितु अपनी आत्मा, जगत् तथा सृष्टि कर्ता परमपिता परमात्मा के प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए महर्षि पतन्जलि ने जिस योग-पद्धति का आविष्कार किया वह वैज्ञानिक आधार पर मानव को ईश्वर के समीप ले जाती है। इस पद्धति ने आज अमरीका, रूस, यूरोप आदि सभी प्रगतिशील देशों का ध्यान आकर्षित किया है। सभी इसका अपने-अपने ढंग से अध्ययन कर रहे हैं।

छात्रा—आपने कहा है कि अन्य धर्मों की पूजा-पद्धतियां मानव को मरने के पश्चात् ही स्वर्ग दिलाने का आश्वासन देती हैं, पर वैदिक-पूजा-पद्धति मानव को इसी जीवन में सुख-शान्ति प्रदान करती हुई आगे मोक्ष प्राप्ति में सहायक होती है सो कहां तक सत्य है ?

महात्मा—वैदिक धर्म का यह दृढ़ विश्वास है कि जो पूजा-पद्धति मानव समाज का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक उत्थान कर उसे इस जीवन में सुख-शान्ति तथा मरने के पश्चात् भी समय आने पर मोक्ष प्रदान नहीं कराती है वह पूजा-पद्धति ढोंग मात्र है। भला जो पूजा-पद्धति यहां मानव को सुखी बनाने में असमर्थ है वह मरने के पश्चात् स्वर्ग की प्राप्ति कैसे करा सकेगी ?

वैदिक धर्म द्वारा मान्य पूजा-पद्धतियों का लक्ष्य मानव की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति करना है। आत्म-चिन्तन और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आत्म-शुद्धि कर ज्ञान गमन व प्राप्ति के मार्ग पर चलने का नाम ही सच्ची पूजा-पद्धति है। पांच यज्ञों द्वारा मानव, परिवार तथा समाज तीनों का कल्याण होता है। इस प्रकार वैदिक पूजा-पद्धति ही मानव तथा मानव समाज को सुखी और प्रगतिशील बनाने में समर्थ है अन्य नहीं।

छात्र—महात्मा जी वैदिक धर्म में 'यज्ञ' को प्रधानता दी गई है, और यह पूजा-पद्धति का प्रधान अंग माना गया है; परन्तु क्या कारण है कि संन्यासियों के लिये यज्ञ करना अनिवार्य नहीं माना ?

महात्मा-बेटा: यज्ञ का भाव है—देव-पूजा दान व संगति करण अर्थात इन तीनों पुनीत कर्मों के करने की यज्ञ प्रेरणा देता है। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थाश्रम और वानप्रस्थआश्रम में व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक उन्नति करता हुआ परहित की बात सोचता है। अत: स्वार्थ से परमार्थ की ओर ले जाने के लिये 'यज्ञ' उन्हें सहायक होता है; परन्तु संन्यासआश्रम में जब व्यक्ति काषाय वस्त्र धारण कर अपने जीवन को ही यज्ञमय बना लेता है अर्थात उसका जीवन परहित में लग जाता है तब उसे 'यज्ञ' द्वारा प्रेरणा लेने की आवश्यकता नहीं रहती है।

छात्र—महात्मा जी ! संन्यासी काषाय वस्त्र क्यों धारण करते हैं।

महात्मा—एक संन्यासी के काषाय वस्त्र 'यज्ञाग्नि का प्रतीक हैं; और उसके समस्त कर्म यज्ञ में आहुति के समान होते है। अर्थात जिस प्रकार यज्ञ में पड़ी आहुति सूक्ष्माकार होकर वायु में मिल सब के लिये कल्याणकारी होती है उसी प्रकार एक संन्यासी का कर्म प्राणी मात्र के लिये कल्याणकारी होता है। उसका समस्त जीवन व कर्म ईश्वरार्पण होता है। इसलिये उसे यज्ञ करने की आवश्यकता नहीं है ?

छात्र—महात्मा जी ! अन्य धर्मों में पूजा-पाठ न करने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती है तो क्या वैदिक धर्म में भी आश्रमानुसार यज्ञ न करने पर मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है ?

महात्मा—बच्चा ! हमने पहिले ही बतला दिया है कि वैदिक धर्म पूजा-पाठ को साधन मानता है साध्य नहीं। वैदिक धर्म कर्म को प्रधानता देता हैं। मोक्ष की प्राप्ति कर्मों के आधार पर होती है न कि पूजा-पाठ के आधार पर।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के 11 वें समुल्लास पृष्ठ 200 पर वेदोक्त भूर्तिपूजा का वर्णन किया है जो इस प्रकार है :—

प्रथम माता—मूर्तिमती पूजनीय देवता अर्थात् सन्तानों को तन-मन-धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। **दूसरा पिता** सत्कर्त्तव्य देव उसकी भी माता के समान सेवा करना। **तीसरा आचार्य** जो विद्या का देने वाला है। उसकी तन-मन-धन से सेवा करनी। **चौथा अतिथि** जो विद्वान, धार्मिक, निष्कपटी सबकी उन्नति चाहने वाला जगत में भ्रमण करता हुआ सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है उसकी सेवा करें। पांचवां स्त्री के लिये पति व पुरुष के लिये पत्नी पूजनीय है। ये पाँच भूर्तिमान देव जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर को प्राप्त होने की सीढ़ियाँ हैं।

"जिनको तुम बुतपरस्त समझते हो वे भी उन मूर्तियों को ईश्वर नहीं समझते किन्तु उनके सामने परमेश्वर की भक्ति करते हैं।"

छात्रा—महात्माजी, क्या आप इस पर विस्मत प्रकाश डालने का कष्ट करेंगे ?

महात्मा—वेटी, समय समाप्त हो गया है। हिन्दू धर्म की प्रत्येक मूर्ति के स्वरूप का वर्णन करने के हेतु बड़ा समय चाहिये। अतः जब हमवैदिक धर्म के स्वरूप का वर्णन करेंगे तो इस विषय को भी आपके सम्मुख उपस्थित कर सकेंगे।

महात्माजी ने शान्ति-पाठ के साथ सभा विसर्जित कर दी।

छात्र—महात्मा जी, माफ कीजिए, आपने अन्य धर्मों की पूजा पद्धतियों को अधूरा या निकम्मा सिद्ध कर दिया पर आपने हिन्दू धर्म से सर्वत्र प्रचलित मूर्ति पूजा का उल्लेख तक नहीं किया ?

महात्मा—वंधुवर ! मैंने इस सम्बन्ध में इसलिए कुछ नहीं कहा था क्योंकि यह पद्धति वैदिक ही नहीं है।

2449

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११
कर्म दर्शन

महात्माजी आज बड़ी प्रसन्न मुद्रा में हैं। उनके साथ कई साधु संत भी आये हैं, सम्भवतः प्रवचन के पश्चात् उन्हें उनके साथ किसी अन्य सभा में जाना है। इसलिए महात्माजी बार-बार अपनी घड़ी को देख रहे हैं। समय होते ही उन्होंने अपना वेद पाठ प्रारम्भ कर तत्काल अपना प्रवचन उपस्थित किया—

देश की भावी आशाओं, आज वैदिक धर्म की उस विशेषता को उपस्थित किया जा रहा है जो संसार भर में अद्वितीय है। वैदिक धर्म कर्म प्रधान है। कर्म के रूप में ही यह धर्म के दर्शन करता है। कर्म सिद्धान्त पर ही इसका समूचा भवन खड़ा हुआ है। अन्य धर्मावलम्बी भी कर्म के सिद्धान्त को किसी सीमा तक मानते हैं, पर कर्म को ही धर्म मानना यह वैदिक धर्म की अपनी विशेषता हैं।

कर्म—सिद्धांत वैदिक धर्म की संसार को अलौकिक देन है। धर्म में विश्वास न रखने वाले भौतिकवादी वैदिक धर्म की इस विशेषता के सम्मुख सिर झुकाते हुए धर्म के महत्त्व एवं आवश्यकता को अनुभव करने लगते हैं। वैदिक धर्म की यही विशेषता एक दिन संसार के अधार्मिकों को धार्मिक बनाने में समर्थ हो सकेगी।

छात्रा—महात्माजी, जैसा आपने अभी कहा कि अन्य धर्म भी कर्म को महत्त्व देते हैं तब फिर इसमें वैदिक धर्म की अपनी विशेषता क्या हुई?

महात्मा—कर्म के प्रति वैदिक धर्म तथा अन्य मतों के दृष्टिकोण में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आकाश-पाताल का अन्तर है । अन्य धर्मों मे व्यवहारिक रूप से कर्म की अच्छाई बुराई का ध्यान करते हुए अच्छे कर्मो के ग्रहण और बुरे कर्मों को त्यागने का उपदेश दिया है । सामाजिक दृष्टि से लाभ-हानि के आधार पर उन्होंने कर्म को तोला हैं। परन्तु वैदिक धर्म ने लाभ-हानि के रूप में कर्म को न देख इसे जीवात्मा के जीवन मरण तथा मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में देखा हैं ।

वैदिक धर्म की दृष्टि में कर्म जहाँ मानव की भौतिक उन्नति व सुख शान्ति का साधन होता है वहां वह जीवात्मा को जीवन मरण के वन्धन में बांधने वाला है और विशेष अवस्था में जीवात्मा को जीवन-मरण से मुक्ति दिलाने का भी साधन होता है । कर्म का जीवात्ना पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इसी रहस्य को वैज्ञानिक आधार पर वैदिक धर्म ने प्रकट किया है जो इसकी अपनी ही निराली विशेषता है ?

छात्रा—अन्य धर्म भी तो अच्छे बुरे कर्मों को स्वर्ग नरक की प्राप्ति का साधन मानते हैं सो इसमें वैदिक धर्म की क्या विशेषता है।

महात्मा—सम्भवतः आपने अन्य धर्मों का अध्ययन नहीं किया । ईसाई, इस्लाम मतावलम्वी स्वर्ग की प्राप्ति का साधन केवल कर्म नहीं मानते हैं । कर्म के साथ प्रभु ईसा तथा उनका उपदेश, हजरत मुहम्मद कुरान शरीफ को भी मानना आवश्यक है। उनकी दृष्टि में केवल अच्छा कर्म करने वाला वह व्यक्ति जो हजरत मुहम्मद तथा प्रभु ईसा पर विश्वास नहीं रखता है स्वर्ग की प्राप्ति नहीं कर सकता है । परन्तु वैदिक धर्म शुद्ध रूप से कर्म को ही मोक्ष का साधन मानता है । चाहे फिर उस कर्म के करने वाले किसी भी जाति, धर्म व देश का क्यों न हो ।

अन्य धर्म इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ हैं कि अच्छे कर्म के करने से स्वर्ग की प्राप्ति कैसे होगी ? और क्यों होगी ? परन्तु वैदिक धर्म वैज्ञानिक आधार पर इन सभी प्रश्नों का सविस्तार उत्तर देता है कि कर्म किस प्रकार जीवात्मा के जीवन मरण के बन्धन का कारण हैं । और विशेष कर्मों के करने से किस प्रकार और क्यों जीवात्मा जीवन मरण के बन्धन से मुक्त हो मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म के अनुसार अच्छे कर्मों से स्वर्ग या नर्क मिल सकता है, परन्तु मोक्ष की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती है। वैदिक धर्म की दृष्टि में अच्छे कर्मों से इस जीवन तथा मरने के पश्चात् अगले जीवन में मानव को स्वर्ग अथवा सुखी जीवन और बुरे कर्मों से नरक अर्थात् दुःखी जीवन की प्राप्ति होती है। परन्तु केवल अच्छे कर्मों से मोक्ष अर्थात् जीवन मरण के अन्धन से मुक्त होकर परमानन्द की प्राप्ति होना असम्भव हैं।

छावा—महात्माजी, आज आपने ऐसी बात कह दी है जो किसी भी धर्मावलम्बी ने आज तक नहीं कही। सभी धर्मों का विश्वास है कि अच्छे कर्मों से स्वर्ग और बुरे कर्मों से नरक मिलता है। स्वर्ग से उनका तात्पर्य आपके मोक्ष से है। वैदिक धर्म ऐसा नहीं मानता। यह पहली बार आपके मुख से सुना है। सो कृपया बतायें कि यह आपका अपना मत है या वैदिक धर्म का ?

महात्मा—भाई मैं यहां जो कुछ कहता हूं वह वेद व वैदिक धर्म द्वारा मान्य सिद्धान्त ही कहता हूं अपना कुछ नहीं। सो यह मत वैदिक धर्म का ही है। इसमें आपको आश्चर्यचकित होने की आवश्यकता नहीं है।

छात्रा—कृपया समझाइए कि केवल अच्छे कर्मों से मोक्ष प्राप्त न होने की मान्यता के पीछे वैदिक धर्म क्या युक्तियां देता है ?

महात्मा—वैदिक धर्म का मत है। कि कर्म चाहे अच्छा हो या बुरा उसका संस्कार रूप में वन्धन आत्मा पर पड़ता ही है। यह कर्म संस्कार ही वास्तव में जीवात्मा को जीवन-मरण के बन्धन से मुक्त नहीं होने देते हैं। वैदिक धर्म ने कर्मों के इस बन्धन को संसारचक्र के नाम से पुकारा है। अर्थात् इस चक्र के छः अंग हैं। पहला अच्छे कर्म का फल सुख, सुख से उत्पन्न पुनः उसी सुख को प्राप्ति की इच्छा, इच्छा की पूर्ति के लिए पुनः प्रयत्न अथवा कर्म, कर्म से उत्पन्न पुनः सुख और सुख प्राप्ति की पुनः इच्छा इत्यादि। इसी प्रकार बुरा कर्म, बुरे कर्म से उत्पन्न दुःख, दुःख से छुटकारा लेने की इच्छा, इच्छा की पूर्ति के लिए निमित्त अपने शत्रु से बदला लेने का प्रयत्न इत्यादि। इस प्रकार राग व द्वेष पर आधारित अच्छे बुरे कर्मों का यह चक्र ऐसा है कि कभी समाप्त नहीं होता। इसी चक्र में पड़कर मानव जीवन मरण के चक्र से निकल नहीं पाता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार चक्र से यह सिद्ध होता है कि अच्छे कर्म भी मानव को अपने संस्कारों के चंगुल में ऐसा फांसते हैं कि व्यक्ति उससे निकल नहीं पाता। सो अन्य धर्मों की यह मान्यता सर्वथा गलत है कि अच्छे कर्मों से मानव को जीवन-मरण से मुक्ति मिल मोक्ष को प्राप्ति हो जाती है।

छात्रा—क्या यह संसारचक्र जीवित रहने पर कार्य करता है या मरने के पश्चात् भी यह चलता रहता है ?

महात्मा—यह चक्र मरने के पश्चात् भी पीछा नहीं छोड़ता। कर्म संस्कार के रूप में जीवात्मा के साथ मरने के पश्चात् सूक्ष्म शरीर के साथ जाता है। और जीवात्मा को पुनः जन्म लेने को विवश करता है। ऐसे कर्म भी जीवात्मा के साथ संस्कार रूप में जाते हैं जिनका फल भुगतना शेष रहता है सो जीवात्मा को जन्म लेना ही पड़ता है। अगले जन्म में राग द्वेष का खाद पानी पाकर गत जीवन के कर्मों के संस्कार पुनः कर्म-रूप धारण कर प्रकट होने लगते हैं। इस प्रकार जीवन मृत्यु के पश्चात् भी चलता रहता है ?

छात्रा—महात्माजी, क्या आपकी बात का यह अर्थ नहीं है कि वैदिक धर्म के अनुसार मानव सदैव संसार चक्र में पड़ा रहता है और उसे कभी मोक्ष नहीं प्राप्त होता है ?

महात्मा—वैदिक धर्म की यही विशेषता है कि उसने इस कर्मों के संसार चक्र से निकलने का मार्ग बताया है। कर्मों के संस्कारों से मुक्ति पाने के लिए वैदिक धर्म ने निष्काम कर्म करने का उपदेश दिया है। अर्थात राग द्वेष को छोड़कर कर्तव्य पालन की भावना से कर्म करने को श्रेष्ठ माना है। निष्काम कर्म ही व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त कराने की क्षमता रखता है।

छात्रा—क्या राग-द्वेष को छोड़कर कर्म करना कभी सम्भव हैं ?

महात्मा—हां, चिकित्सालय में एक डाक्टर या वैद्य राग-द्वेष को छोड़कर कर्तव्य पालन की दृष्टि से सेवा करता है इसलिए उसके कर्म उसके बन्धन का कारण नहीं होते। इसी प्रकार मानव जीवन के अन्य क्षेत्रों में कर्म करने का अभ्यास कर सकता है। इसी का नाम वैदिक धर्म में कर्म योग है।

विधर्मी—महात्माजी, यदि कोई व्यक्ति अपना जीवन दूसरों की सेवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लगा दे, असहायों को दान दे, और दलितों को ऊपर उठाने में लगा रहे तो क्या उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी ?

महात्मा—आपने बड़ा ही अच्छा प्रश्न किया है। भाई यदि दूसरों की सेवा व सहायता के कार्य के पीछे व्यक्ति के हृदय में राग-द्वेष काम करता है अर्थात वह उन कार्यों को इस दृष्टि से करता है कि जनता में उसका मान व सम्मान हो तब तो उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी अपितु स्वर्ग अर्थात सुखी जीवन की प्राप्ति अवश्य हो सकेगी। यदि उस व्यक्ति ने निष्काम भावना से कर्तव्य पालन की भावना से उक्त कार्यों को किया है तब उसे निश्चित रूप से मोक्ष की प्राप्ति होगी।

प्रिन्सीपल महोदय ने घड़ी दिखलाते हुये महात्मा जी को अन्य परोगम का ध्यान दिलाया। महात्माजी ने तुरन्त अपने प्रवचन को विराम दे दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२
स्वर्ग–नरक–मोक्ष

महात्माजी को आज फिर कहीं अन्यत्र जाना था। इसलिए बिना किसी भूमिका के उन्होंने क्षण भर के लिए आँखें वन्द कर ईश्वर का स्मरण किया और अपनी विचारधारा को इस प्रकार प्रारम्भ किया।

प्यारे अध्यापकगण तथा छात्र छात्राओं, संसार के सभी धर्म समान रूप से स्वर्ग नर्क की कल्पना को मान्यता देते हैं। व्यक्तियों को धर्म मार्ग पर लाने के निमित्त उनके पास स्वर्ग का प्रलोभन तथा नरक का भय है। कई सम्प्रदाय तो इसी के सहारे अपनी दुकान खोले बैठे हैं। यदि उनके यहां से स्वर्ग नरक के सौदे को हटा दिया जाय तो फिर उनकी दुकान में कुछ नहीं रह जाता। अपने सम्प्रदाय को जनता में अधिक आकर्षक बनाने के लिए प्रत्येक ने अन्यों की अपेक्षा अधिक सस्ता, सरल तथा लुभावना मार्ग बतलाने का प्रयत्न किया है।

वैदिक धर्म को छोड़ लगभग सभी मतावलम्बी इस बात को मानते हैं कि उनके सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य सभी सम्प्रदाय वाले नरक जायेंगे। अपनी मान्यता की पुष्टि के लिए उन्होंने कोई युक्ति न देकर केवल यही कहा है कि यही मार्ग ईश्वर पुत्र अथवा ईवश्र के पैगम्बर द्वारा बतलाया गया है। अन्य सभी मार्ग मय्नुयक्त है अथवा मानव की अपनी कल्पना मात्र है। उनके इस वाक्य को सुनकर बेचारे अज्ञानी तथा भोले व्यक्ति उनके पीछे भेड़ों की भाँति चलने लगते हैं। अज्ञानता भोलेपन और स्वर्ग की ठेकेदारी का इससे अधिक प्रबल प्रमाण क्या हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सकता है कि रोम के पोप किसी दिन स्वर्ग के टिकिट प्रसारित करते थे और इस टिकिट को देने के लिए वह अच्छी धन राशि लेते थे। उक्त धन राशि वह अपने लिए नहीं लेते थे अपितु ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में इस आश्वासन के साथ स्वीकारते थे कि स्वर्ग में वह दाता को सुरक्षित मिल जायेगी।

स्वर्ग के ठेकेदारों से यदि पूछा जाये कि स्वर्ग कहाँ है ? उसकी प्रमाणिकता क्या है ? उसे किसने देखा है, तो उनके पास इन प्रश्नों का एक मात्र यही उत्तर है कि उनकी धर्म पुस्तक में लिखा है या ईश्वर का ही वतलाया मार्ग है जो उसने अपने पुत्र या पैगम्बर द्वारा भेजा है। रूस के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री खुरुश्चेव ने स्वर्ग के ठेकेदारों का मजाक उड़ाते हुए कहा था कि उनके राकेटों ने समस्त आकाश को छान मारा है परन्तु कहीं भी स्वर्ग नरक नहीं मिला।

परन्तु वैदिक धर्म जिस स्वर्ग, नरक तथा मोक्ष को मान्यता देता है उनका स्वरूप अस्तित्व तथा प्राप्ति की युक्तियुक्त एवं वैज्ञानिक व्याख्या ही नहीं करता अपितु स्वर्ग नरक तथा मोक्ष का प्रत्यक्ष दर्शन इसी जीवन में करा देता है। इनकी प्राप्ति पर ग्रन्थ पर ग्रन्थ लिखे पड़े हैं, यदि आज इस वर्तमान वैज्ञानिक युग मेंकोई स्वर्ग नरक तथा मोक्ष की मान्यता को युक्तियों से सिद्ध कर सकता है तो वह एक मात्र वैदिक धर्म ही है। अन्य मतावलम्बियों की मान्यताऐं धर्म के प्रति अनास्था उत्पन्न करने में ही सहायक सिद्ध हो रही हैं। धर्म विरोधी नास्तिक व्यक्ति उनकी इन्हीं अविवेक पूर्ण मान्यताओं का अनुचित लाभ उठा धर्म को उखाड़ फेंकने का प्रयत्न कर रहे हैं।

छात्रा—क्या आप बतलाने की कृपा करेंगे किवैदिक धर्म की दृष्टि में स्वर्ग नरक व मोक्ष का क्या स्वरूप है ? और अन्यों की कल्पना से इसमें क्या विशेषता है ?

महात्मा—अन्य सभी मतावलम्बी स्वर्ग नरक का अस्तित्व इस मानवीय जगत से दूर कहीं आकाशीय जगत में मानते हैं। उनकी दृष्टि में स्वर्ग में साँसरिक भोग विलास की सभी वस्तुऐं विद्यमान रहती है। किसी भी वस्तु का वहां अभाव नहीं हाता, और इसके सर्वथा विपरीत नरक में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सर्वत्र दुःख एवं यातनाएं ही होती हैं। परन्तु वैदिक धर्म की दृष्टि में सुखी जीवन का नाम स्वर्ग और दुःखी जीवन का नाम नरक होता है। स्वर्ग, नरक कहीं आकाशीय दुनियां में नहीं अपितु मानव के इसी जीवन में उसे अपने कर्मानुसार प्राप्त होते है अर्थात मनुष्य अपने अच्छे बुरे कर्मों के अनुसार इसी जीवन में स्वर्ग या नरक की प्राप्ति करता है।

शरीर धारण करने के हेतु प्रत्येक मानव को स्वर्ग तथा नरक दोनों के ही दर्शन विभिन्न मात्राओं और रूपों में होते है। स्वस्थ शरीर तथा शुभ इच्छाओं की निरन्तर पूर्ति का नाम स्वर्ग है। और अस्वस्थ शरीर तथा इच्छाओं की अपूर्ति का नाम दुःख है। स्वर्ग नरक दोनों का इस जीवन में मूल आधार शरीर है। शरीर वृद्धावस्था में प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी अंश में नरक के दर्शन करा देता है। जब इन्द्रियों में भोग की शक्ति नहीं रहती पर इच्छाऐं बनी रहती हैं तो मानव की अवस्था पंख कटे पक्षी की भांति हो जाती है।

मोक्ष अवस्था मरने वाद की एक विशेष स्थिति का नाम है। इसमें जीवात्मा अपने सूक्ष्म शरीर के साथ ईश्वर के सन्निध्य में निवास कर परमानन्द का अनुभव करता है। इच्छा मात्र से वह अपनी सभी इच्छाओं की अनुभूति उस अवस्था में कर लेता है, पर उस समय उसकी इच्छाओं का स्तर ही दूसरा होता है। भौतिक इच्छायें उसके लिए नगण्य होती है। इन्हीं का परित्याग कर वह मोक्षावस्था को प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है। फिर इन्हीं इच्छाओं का पूर्ति की कल्पना तर्क संगत नहीं है।

कुछ अज्ञानी लोगों को भ्रम है कि परमानन्द की प्राप्ति भौतिक भोग सामग्रियों के उपभोग में ही हैं। इसी कारण उन्होंने स्वर्ग में भी इनकी प्राप्ति की कल्पना कर डाली. परंतु उ हें ज्ञान नहीं कि भौतिक भोग सामग्रियों से व्यक्ति को सुख तथा किसी अंश में इन्द्रियों की अनुकूल अनुभूति मिल सकती है। पर इस मार्ग से परमानंद मिलना सर्वथा असम्भव है। भौतिक भोग सामग्रियों की इच्छा भौतिक शरीर की उपज होती हैं। परंतु मोक्षावस्था में भौतिक शरीर नहीं अपितु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्ष्म शरीर रहता है। भौतिक शरीर से हटकर सूक्ष्म शरीर के साथ जीवात्मा परमानंद को किस प्रकार अनुभव करता है इसका उदाहरण सुषुप्ति अवस्था से दिया जा सकता है। सुषुप्ति निद्रा में जीवात्मा शारीरिक कोषों से अलग हो आनंद विभोर हो जाता है। बस इसी से मोक्षावस्था की कल्पना की जा सकती है।

छात्र—अन्य मतावलम्वी मोक्ष को ही स्वर्ग के नाम से पुकारते हैं इसमें आपको क्या आपत्ति है ?

महात्मा—ऐसा नहीं। उनकी मान्यता है कि मानव सशरीर स्वर्ग की प्राप्ति करता है। और स्वर्ग में इस जगत की भांति शरीर सम्वन्धी सभी सुख उसे प्राप्त होते हैं पर भौतिक शरीर के रहते परमानन्द की प्राप्ति कदापि सम्भव नहीं। उनकी मान्यता है कि स्वर्ग में व्यक्ति सदैव युवा अवस्था में रहेगा और यह शरीर भी सदैव स्वस्थ रहेगा सो यह कल्पना सर्वथा निराधार और भ्रान्त है। वैज्ञानिक युक्तियों से इसकी सिद्धि होना सर्वथा असम्भव है। शरीर मरण धर्मा है। बचपन, युवा तथा वृद्धावस्था को प्राप्त होना शरीर का धर्म है वृद्धावस्था में शरीर स्वर्ग नहीं नरक का अनुभव करता है पर सूक्ष्म शरीर सदैव एक समान रहता है इसी कारण मोक्षावस्था में निरन्तर आनन्द का अनुभव करना युक्ति युक्त हैं।

छात्रा—महात्माजी, सूक्ष्म शरीर को वालत्व योवन, और वार्धक्य प्राप्त नहीं होते इसके क्या प्रयाण हैं ?

महात्मा—सूक्ष्म शरीर तथा भौतिक शरीर में वही अन्तर है जैसे पानी तथा इसे बनाने वाले हाइड्रोजन तत्त्व तथा आक्सीजन तत्त्व (HO_2)। पानी में तरलावस्था, भाप तथा ठोस अवस्थाऐं होती हैं पर हाइड्रोजन तथा आक्सीजन में नहीं।

छात्र—महात्माजी, स्वर्ग तथा मोक्ष की प्राप्ति में अन्य मतों की अपेक्षा वैदिक धर्म में क्या विभिन्नता है ?

महात्मा—अन्य धर्म केवलविश्वास के आधार पर स्वर्ग की प्राप्ति की कल्पना करते हैं अर्थात यदि कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट महापुरुष तथा उसके संदेश या उपदेश पर विश्वास करता है तो फिर उनका आचरण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसा ही क्यों न हो उसे स्वर्ग की प्राप्ति निश्चित होगी और कोई व्यक्ति ऐसा विश्वास नहीं करता तो वह निश्चित ही नरक में जाएगा । चाहे उसका आचरण कितना ही पवित्र क्यों न हो। उसकी दृष्टि में अन्य सभी धर्मावलम्बी ईश्वर के शत्रु और नरकगामी हैं। पर वैदिक धर्मानुसार स्वर्ग नरक की प्राप्ति किसी महापुरुष पर आस्था लाने से नहीं अपितु पूर्णतः उसके अपने अच्छे बुरे कर्म पर आधारित है। अच्छे काम करने वाला व्यक्ति चाहे किसी धर्म का मानने वाला क्यों न हो उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है ऐसी वैदिक धर्म की मानता है।

वैदिक धर्मानुसार अच्छे कर्मों से स्वर्ग अर्थात् सुखी जीवन की प्राप्ति हो सकती है पर मोक्षकी प्राप्ति के लिए अच्छे कर्म ही नहीं बल्कि साथ ही निष्काम कर्म अर्थात् राग द्वेष छोड़ कर्म करने आवश्यक होते हैं ताकि कर्मों के संस्कार जीवात्मा को पुनः जीवन-मरण के बन्धन में बांधने वालेन वनसकें।अन्य सभी मतावलम्वी अच्छे कर्मों द्वारा ही स्वर्ग की प्राप्ति की कल्पना करते हैं, पर वैदिक धर्म ऐसा नहीं मानता।

छात्रा—महात्माजी, अच्छे कर्मों से मोक्ष नहीं मिलता यह बात आप कैसे सिद्ध करते हैं ?

महात्मा—जीवन-मरण से मुक्ति पाने का ही दूसरा नाम मोक्ष है। जीवन-मरण का कारण कर्मों से उत्पन्न संस्कार है। अच्छे-बुरे सभी कर्म संस्कारों को जन्म देते हैं। इसलिए दोनों ही जीवन-मरण का कारण होते हैं पर जब राग-द्वेष को छोड़ अच्छे कर्म अर्थात निष्काम भाव से कर्म किये जाते हैं फिर उनसे संस्कारों का जन्म नहीं होता, वास्तव में संस्कार को जन्म देने वाले राग-द्वेष है। इन्हीं का परित्याग करके कर्म करने वाला व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी बनता है, अन्यथा नहीं। इसीलिए अन्य धर्मों की मान्यताओं के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति केवल कल्पना मात्र है।

इस सिद्धान्त को यदि योगदर्शन की भाषा में कहें तो यह कहा जा सकता है कि वृत्ति और संस्कार—जब तक इसका चक्र रहता है तब तक जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। योगदर्शन के पहले सूत्र में योगश्चित्तवृत्ति निरोधः की व्याख्या करते हुए व्यास मुनि कहते हैं कि—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृतिभ्यः संस्कारः संस्कारेश्च वृतय इति।
एवं वृति संस्कार चक्रं अह निशं प्रवन्तति ।।

वृत्तियों से संस्कार और संस्कारों से वृत्ति— यह चक्र दिन-रात मनुष्य जीवन में चलता रहता है जैसे जल में लहर और लहर में जल—इनका सम्बन्ध है। वैसे ही वृत्ति और संस्कार का। तब इस चक्र का अन्त कैसे हो? योगदर्शन में पातन्जलि ऋषि कहते हैं कि अभ्यास और वैराग्य के मार्ग का अवलम्बन करने से ही इस चक्र की समाप्ति हो सकती है। अभ्यास का अभिप्राय दृढ़ता पूर्वक अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यत्न शील रहना है और वैराग्य का अर्थ संसार-त्याग नहीं बल्कि इन्द्रियों से प्राप्त होने वाले ज्ञान व अनुभूतियों में आसक्त न होना है। अभ्यास और समुच्च का नाम ही ज्ञान है। जैसे किसी वृक्ष व पौधे के को यदि अग्नि दग्ध कर दिया जाय तो उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार ज्ञान का संस्कार जिस समय वृति चक्र की ज्ञानाग्नि से दग्ध हो जाता है तब मोक्ष प्राप्ति होती है। निष्काम कर्म का यही रूप है। गीता में इसी सिद्धान्त को विशेष रूप से व्याख्या की गयी है।

छात्रा—महात्माजी, राग-द्वेष का परित्याग करने का क्या मार्ग है?

महात्मा—राग-द्वेष का आधार अज्ञान होता है। तत्व-ज्ञान के द्वारा ही इन्हें समाप्त किया जा सकता है। अर्थात जीवात्मा क्या है? इसका लक्ष्य क्या है? जीवात्मा और शरीर का सम्बन्ध क्या है? यह संसार क्या है? भोग सामग्रियों का क्या स्वरूप है? जीवात्मा का इस जगत में क्या स्थान है? इन प्रश्नों को समझ लेने के पश्चात ही जीवात्मा में राग-द्वेष से मुक्ति पाने में समर्थ होता है इन्हीं प्रश्नों का उत्तर वैदिक धर्म में विशेष रूप से दिया गया है।

छात्रा—महात्माजी, आपने प्रारम्भ में कहा था कि वैदिक धर्म स्वर्ग नरक को इसी जीवन का अंग मानता है। तो इस स्वर्ग प्राप्ति का वैदिक धर्म ने क्या उपाय बतलाया है?

महात्मा—यम-नियम अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरिग्रह, शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणिधान आदि स्वर्ग प्राप्ति के साधन हैं। यज्ञमय जीवन अर्थात परोपकारमय जीवन स्वर्ग प्राप्ति की प्रमुख साद्य हैं।

छात्रा—क्या नरक से बचने का उपाय वैदिक धर्म ने वतलाया है ?

महात्मा—शुभ कर्मों के द्वारा नरक से मानव का उद्धार होता है।

छात्रा—आपने वृद्धावस्था को भी नरक माना है सो उससे कैसे उद्धार हो ?

महात्मा—वृद्धावस्था से उद्धार मृत्यु ही करती है। परन्तु वृद्धावस्था में नरक के प्रभाव को कम करने के लिए मानव को सन्यास मार्ग ही अपनाना चाहिए। यदि वृद्धावस्था में शरीर निरोग और स्वस्थ हो तो यह समय एकान्तवास और आत्मचिन्तन के लिए सर्वोत्तम है। इस आयु में मानव यदि परोपकार वृत्ति से जीवन यापन करे और अपना अधिकांश समय, गृह कार्यों से अपने को विरक्त रखते हुए स्वाध्याय, सत्संग और साधना अभ्यास में लगाये तो यही वृद्धावस्था अत्यन्त सुखद और शान्तिप्रद बन सकती है। यही स्वर्ग का रूप है। इसी को सन्यास मार्ग कह सकते हैं। संन्यास केवल स्वेत के वदले गेरुए कपड़े पहिनने का नाम नहीं है किन्तु अपने दृष्टिकोण को विरक्त और दूसरों के प्रति उदार और करुणामय दृष्टिकोण बनाने का नाम है।

छात्रा—महात्माजी, आपने कहा है कि वैदिक धर्म इसी जीवन में मोक्षावस्था के दर्शन कराने की क्षमता रखता है जबकि अन्य धर्म नहीं सो कैसे ?

महात्मा—महर्षि पातंजतिने अपने योग दर्शन में इसकासविस्तार वर्णन किया है उसके अनुसार योग साधन और अभ्यास से जीवात्मा ईश्वर के समीप पहुंचकर परमानन्द का अनुभव करने में समर्थ हो सकता है। यह कला वैदिक धर्म की अपनी ही निराली है। आज अमरीका, रूस आदि प्रगतिशील देश भी योग की इस अद्‌भुत प्राप्ति की महानता तथा विशिष्टता का अनुभव कर रहे हैं, और इस बारे में खोज कर रहे हैं।

छात्रा—महात्माजी, क्या योग के विषय पर प्रकाश डालने का कष्ट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करेंगे ?

महात्मा—यह विषय वर्तमान विषय से सम्बन्ध नहीं रखता अतः इस पर प्रकाश डालना कठिन है। जब वैदिक धर्म के स्वरूप का वर्णन किया जाएगा तब इस पर प्रकाश डालना सम्भव होगा।

समय समाप्त हो जाने के कारण सत्संग को विराम दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३
सार्वभौमिकता

महात्माजी आज बड़ी ही प्रसन्न मुद्रा में हैं। आज उनके साथ उनके मित्र मौलवी साहब और पादरी साहब भी आये हैं। दोनों के साथ निकट बैठे बात कर रहे हैं। सभी जानते हैं कि महात्माजी कट्टर पंथी व्यक्ति नहीं हैं और मानवता उनमें कूट-कूट कर भरी है यही कारण है कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि समान रूप से उनका आदर करते हैं। दूसरों को प्रसन्न करने के लिए अपने सत्य मार्ग को छोड़ने की आदत महात्माजी की नहीं है। महर्षि दयानन्द की भांति समूचा मानव जाति का हित ही उनके सम्मुख सदा रहता है। आलोचना करते समय वह अपने पराये का पक्ष-पात नही करते। देखें, आज वह मौलवी और पादरी की उपस्थिति में क्या विषय लेते हैं ?

महात्माजी ने ठीक समय पर वेद उचारण कर अपने विषय का इस प्रकार उच्चारण किया—माननीय मौलवी साहब व पादरी साहब एवं छात्र-छात्राओं, आज की चर्चा का विषय वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता का है अर्थात् अन्य तथाकथित धर्मों की अपेक्षा वैदिक धर्म ही ऐसा धर्म है जिसे सार्वभौम कहा जा सकता है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि अन्य धर्म तुच्छ है। उनका भी अपना स्थान, महत्त्व व उपयोगिता है। ऐसा न होता तो उनका अस्तित्व रहता ही नहीं।

जैसा पूर्व बतलाया जा चुका है कि धर्म और रिलीजन अर्थात् मज-हब में अन्तर होता है। धर्म अर्थात् सत्य किसी एक व्यक्ति, देश तथा काल की उपज न हो कर ऐसे मौलिक सिद्धान्त का नाम है जो सर्वत्र एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समान रहता हैं। उनसे पीछा छुड़ाने का अर्थ है अपनी उन्नति प्रगति व हित को आघात पहुंचाना। जैसे अग्नि का धर्म जलाना है। यह धर्म संसार के प्रत्येक स्थान पर समान ही है इसके विना अग्नि का अस्तित्व रह ही नहीं सकता। अग्नि के इसी धर्म को सार्वभौम कहा जा सकता है। इसी प्रकार वैदिक धर्म ही ऐसा धर्म है जो संसार के समस्त मानवों को समान रूप से उन्नति, प्रगति व शान्ति प्रदान करता है। इसके विना मानव समाज प्रगति कर ही नहीं सकता है। यहां तक कि अन्य धर्मों के मानने वाले व्यक्ति भी इसकी शरण लिए विना वास्तविक प्रगति व शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

जिस प्रकार गेहूं के पौधे का पूर्ण विश्लेषण कर कृषि विशेषज्ञ ने इसकी प्रगति के लिए जो मौलिक सिद्धान्त निश्चित किये है अर्थात् इसके लिए विशेष मिट्टी, खाद, पानी व मौसम निर्धारित किया है और वे सिद्धान्त संसार के प्रत्येक देश में गेहूं की फसल के लिए हितकारक हैं, ठीक उसी प्रकार वैदिक धर्म ने मानव एवं मानव समाज का विश्लेषण कर ऐसे मानवीय धार्मिक सिद्धान्तों को उपस्थित किया है कि जो मानव जाति पर सर्वत्र ही समान रूप से लागूँ होते है। तथा समान रूप से हीं ग्राह्य और हितकारी हैं।

धर्म के सर्वथा विपरीत रिलीजन अथवा मत-मतान्तर एक व्यक्ति, देश, काल, तथा परिस्थिति की उपज होते हैं, इसलिए उनकी उपादेयता एक विशेष देश काल तथा परिस्थिति तक ही सामित रहती है। मजहब सब देशों में मानव जाति के लिए समान रूप से हितकारी नहीं हो सकता है। इसलिए उसे सब पर बलात् लादना मानव हित में नहीं है।

छात्र—महात्माजी, वैदिक धर्म के कौन से सिद्धान्त ऐसे हैं जो सभी देशों में सभी लोगों के लिए समान रूप से ग्राह्य तथा हितकारी हैं ?

महात्मा—धृति (धैर्य) क्षमा, दम अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह अभिमान आदि आंतरिक शत्रुओं का दमन अस्तेय अर्थात् अन्यों के अधिकारों तथा सम्पत्ति का अपहरण न करना, शौच अर्थात् शरीर, मन, वचन तथा कर्म में शुद्ध पवित्र रहना, इन्द्रिय-निग्रह अर्थात् अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना, धी अर्थात् समस्त कार्य सत्य असत्य का विचार कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेक पूर्वक करना, अर्थाथ् भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के निमित्त ज्ञान विज्ञान की प्राप्ति करना, सत्यं अर्थात् जीवन के प्रत्येक कार्य में सत्य को धारण करना, अक्रोध या क्रोध न करना अर्थात् विपरीत अवस्था में क्रोधावेश के वशीभूत हो अपनी बुद्धि व विवेक को न खोना आदि दस धर्म के लक्षण ऐसे हैं जो सर्वत्र ही समान रूप से हितकारी हैं।

छात्र—यह नियम तो अन्य धर्मों में भी हैं फिर वैदिक धर्म में भी कौन सी विशेषता है ?

महात्मा—अन्य धर्मों में इनमें से कुछ नियम हैं सब नहीं इसीलिए वे अपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त अन्य धर्मों में इन नियमों को अन्य मान्यताओं से ऐसा बांध दिया गया है कि इनकी उपयोगिता-कुंठित हो गई है। इसीलिए उन्हें सार्वभौम सिद्धान्त नहीं कहा जा सकता। जैसे ईसाई तथा इस्लाम धर्म में क्षमा, दया, अस्तेय आदि का उपदेश दिया गया है। परन्तु इनका उपयोग अपने मतावलम्बियों तक ही सीमित कर दिया है। अन्य मतावलम्बियों को पापी तथा ईश्वर का शत्रु मानकर उन पर अत्याचारों को बुरा नहीं माना है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण दोनों मतों द्वारा विश्व में धर्म प्रचार के लिए अपनाई गई शैली से मिल जाता है।

संसार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि हजारों लाखों व्यक्ति इसलिए मौत के घाट उतार दिये गए, लूट लिए गए, गुलाम बना लिए गए, उनकी स्त्रियों को अपमानित किया गया क्योंकि उन्होंने उनके विशेष मत व मजहब को स्वीकार नहीं किया था। ऐसा करने वाले मतों में दया, क्षमा का निर्देश रहते हुए भी इस प्रकार क्यों हुआ। इसका कारण यही है कि उनकी मान्यताओं के उक्त सिद्धान्त उनके मजहब के अनुयायियों के लिए ही हैं अन्यों के लिए नहीं। इसीलिए ऐसे मजहब व मत कदापि सार्वभौमिक कहलाने लायक नहीं हैं।

छात्रा—वैदिक धर्म में भी तो अनार्यों के साथ दूसरे प्रकार का व्यवहार करने का उपदेश है फिर वैदिक धर्म सार्वभौमिक कैसे हो सकता है ?

महात्मा—यदि आपने आर्य तथा अनार्य की परिभाषा पढ़ी होती तो ऐसा नहीं कहते आर्य भले व्यक्ति और अनार्य दुष्ट व्यक्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को कहा गया है । दुष्ट व्यक्तियों को दंड देना धर्म है और न देना अधर्म है परन्तु अन्य सभी धर्मों ने उन सभी लोगों को दंड देने योग्य माना है जो उनके मजहब को स्वीकार नहीं करते । इसलिए अनार्य को दंड देने का विधान सार्वभौम है और संसार के सभी विधानों में आज मान्य है । अन्य मजहबों में एक ही पाप के लिए स्वधर्मी तथा विधर्मी के लिए अलग-अलग दंड विधान हैं ।

छात्रा—क्या आप इसका कोई प्रमाण उपस्थित कर सकते हैं ?

महात्मा—इस्लाम तथा ईसाई धर्म के प्रचार व प्रसार के साधनों तथा शासनों में प्रमाण ही प्रमाण भरे पड़े हैं जिन पर उन्हें आज भी गर्व है । उनका यहाँ उल्लेख करना इसलिए उचित नहीं है क्योंकि हम विभिन्न वर्गों में विद्वेष की भावना को जागृत करना ठीक नहीं मानते । भारत की सरकार भी ऐसा करने को देश की एकता तथा सेक्यूलर भाव की सुरक्षा के लिए ठीक नहीं मानती है परन्तु इस कथन का ईसाई व इस्लाम धर्म के अनुयायी खण्डन नहीं कर सकते हैं ।

छात्रा—आपने कहा है कि रिलीजन अर्थात् अन्य मजहब देश, काल तथा परिस्थिति की उपज हैं और उनकी उपादेयता एक देश, काल तथा परिस्थिति तक ही सीमित है—सो क्या आप अपनी मान्यता के लिए प्रमाण दे सकते हैं ?

महात्मा—इस्लाम धर्म में सप्ताह में एक दिन अर्थात् शुक्रवार को स्नान करना, शौच के पश्चात् लोटे के पानी का उपयोग तथा हाथों का साफ न करना, चार बीवियाँ रखना आदि बातें अरब में विशेष काल के लिए उपयोगी थीं, परन्तु उक्त बातों को सभी देशों में लागू करना कैसे उचित होगा ?

छात्रा—इस्लाम धर्म में चार बीबियाँ रखना अनीवार्य नहीं अपितु ऐच्छिक है ।

महात्मा—यहां इच्छा-अनिच्छा का प्रश्न नहीं । एक से अधिक स्त्रियां रखना ही अधर्म है । एक पत्नी या पति के रहते हुए दूसरा विवाह पुरुष एवं स्त्री दोनों के लिए हितकारक नहीं है । इसलिए इसे किसी भी अवस्था में सार्वभौम सिद्धांत नहीं माना जा सकता । हां, जब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अरब देश में पत्नियों की संख्या अनियमित थी उसे चार तक सीमित कर हजरत मोहम्मद साहब ने बड़ा ही पवित्र कार्य किया, परन्तु इस सिद्धांत को सभी देशों पर सभी काल के लिए लादना ठीक नहीं। स्वयं अरब देशों में अब इसकी आवश्यकता नहीं रही है, और टर्की, मिश्र आदि देशों ने इसे कुप्रथा मानकर समाप्त कर दिया है।

छात्रा—महात्माजी, हिंदू धर्म के इतिहास में भी राजे महाराजों की अनेक रानियों का उल्लेख है। स्वयं महाराज दशरथ के चार पत्नियां थीं तो फिर वैदिक धर्म सार्वभौम कैसे हो सकता है?

महात्मा—अंतर केवल इतना है कि जहाँ इस्लाम धर्म ने धार्मिक दृष्टि से चार पत्नियों के सिद्धांत को स्वीकार किया है वहाँ वैदिक धर्म ने कहीं भी इस सिद्धांत का समर्थन नहीं किया है। उल्टे इसे सामाजिक बुराई माना है। यह प्रथा धर्माचरण नहीं अपितु अधर्माचरण है। वैदिक धर्म ने सर्वत्र एक पत्नीव्रत तथा एक पतिव्रता के सिद्धांत की मान्यता दी है और इसकी प्रसंशा में कई ग्रंथ लिखे गए हैं।

छात्रा—वैदिक धर्म की भांति ईसाई मत भी जब एक पत्नीव्रत के सिद्धांत को मानता है तो फिर वह सार्वभौम क्यों नहीं कहलाया जा सकता है?

महात्मा—भाई यों तो सभी मत-मतान्तरों में कुछ बातें समान रूप से सार्वभौम हैं परंतु उन कुछ बातों के आधार पर ही उन्हें सार्वभौम कैसे स्वीकार किया जा सकता है। सार्वभौमिकता को किसी धर्म के सभी धार्मिक सिद्धांतों के आधार पर आंका जाना उचित है। सो वैदिक धर्म को छोड़ अन्य धर्म इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते हैं। जैसे ईसाई मत एक पत्नीव्रत के सिद्धांत को तो मान्यता देता है, परंतु नारी को पुरुष के समान आत्मा वाला नहीं मानता। इसकी दृष्टि में स्त्री आत्मा-हीन तथा पुरुष को बहकाने वाली है। इसी कारण ईसाई देशों में स्त्रियों को पुरुषों के समान समाज में अधिकार नहीं दिये। पश्चिमी देशों में तो आज भी महिलाएें पुरुषों के समान अधिकारों की प्राप्ति के लिए आंदोलन कर रही हैं।

छात्रा—महात्माजी, ईसाई मत में वैदिक धर्म के समान अहिंसा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आदि सिद्धांत हैं। फिर आप इसे सार्वभौमिक क्यों नहीं स्वीकार करते ?

महात्मा—जैसे अच्छे भोजन में एक बूंद जहर की उसे त्याज्य बना देती है इसी प्रकार ईसाई मत में कुछ अच्छे सिद्धांत होते हुए भी अन्य बुद्धिहीन एवं अव्यवहारिक सिद्धांतों के कारण वह अपने सार्वभौमिकता के अधिकार को खो बैठा है।

छात्रा—महात्माजी, आप अपने घर में बैठकर भले ही वैदिक धर्म को सार्वभौम या इससे भी अधिक ब्रह्माण्ड का धर्म घोषित कर लें, परंतु व्यवहार में तो यही सत्यसिद्ध हो रहा है कि ईसाई तथा इस्लाम मत ही सार्वभौमिक हैं। आज संसार का कोई भी देश ऐसा नहीं है जहाँ ईसाई तथा इस्लाम धर्म न हों परन्तु भारत की सीमा के बाहर एक भी देश में आपका सार्वभौम धर्म नहीं है। इस तथ्य का आपके पास क्या उत्तर है ?

महात्मा—आपकी बात वर्तमान को देखते हुए सत्य है, परन्तु एक दिन ऐसा भी था कि संसार के प्रत्येक देश में वैदिक धर्म तथा संस्कृति का बोलबाला था। इसी धर्म की एक शाखा बौद्ध धर्म ने बाद में पुनः संसार के अधिक भाग पर अपना साम्राज्य स्थापित किया था। इसके इतिहास से तो सभी परिचित हैं। परंतु दुर्भाग्यवश समय की गति से वैदिक धर्म में अनेक सामाजिक बुराइयों ने प्रवेश कर इसे वर्तमान दयनीय अवस्था में लाकर खड़ा कर दिया है। महर्षि दयानंद ने इसकी इन्हीं बुराइयों को दूर करके इसे प्राचीन गौरव तक पहुंचाने का प्रयत्न किया था, परंतु दुर्भाग्यवश देश की जनता ने उनके भाव को नहीं समझा, और उन्हें सत्य सनातन वैदिक धर्म का शत्रु समझा। परंतु वह दिन दूर नहीं जब वैदिक धर्म पुनः अपने प्राचीन सार्वभौम स्थान और गौरव को प्राप्त होगा।

जहां तक इस्लाम तथा ईसाई धर्म के संसार व्यापी प्रचार व प्रसार का सम्बंध है इसका कारण इन धर्मों की सार्वभौमिकता नहीं अपितु कुछ अन्य कारण हैं, दोनों ही मजहबों ने अपने-अपने जन्म-काल से अच्छे-बुरे सभी उपायों से अन्य मतावलम्बियों को अपने धर्म में लाना स्वर्ग की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति का साधन माना है। अतः इनके अनुयायी अपने जीवन में सच्चाई, पवित्रता व धार्मिकता लाने की अपेक्षा स्वर्ग प्राप्ति के लिए अन्यों का धर्म-परिवर्तन करना अच्छा समझते हैं। दूसरे दोनों मजहबों ने राज-शक्ति को अपने प्रचार का साधन बनाया है अर्थात् ईसाई तथा इस्लाम सरकारों ने खुलकर अपने मजहबों के प्रचार व प्रसार में सहयोग दिया। दोनों ही मतों ने मजहबी प्रचार के लिए तलवार का सहारा लिया है।

इस्लाम तथा ईसाई मतों ने अपने प्रचार व प्रसार के लिए बंधुत्व की भावना तथा सेवा को भी क्रमशः अपना साधन बनाया। जिसका प्रभाव इन धर्मों के प्रसार में सहायक हुआ।

जैसे इस्लाम धर्म के छोटे-बड़े की भावना को समाप्त कर सभी मुसलमानों को मस्जिद में एक पंक्ति में खड़ा कर दिया एवं खान-पान एक रखा। ईसाइयों ने स्कूल तथा अस्पतालों के माध्यय से गरीबों की सहायता कर उन्हें अपने मजहब में घसीट लिया। परन्तु इससे इनका धर्म सार्वभौमिक सिद्ध नहीं होता है। सार्वभौमिकता के लिए इनके सभी सिद्धान्तों का सार्वभौम होना अनिवार्य है। सो ऐसा इन दोनों में नहीं है।

छात्रा—आपके इस विश्वास के पीछे कि एक दिन वैदिक धर्म पुनः विश्वव्यापी बनेगा क्या युक्ति है?

महात्मा—हमारे विश्वास का आधार है कि ज्यों-ज्यों संसार में वैज्ञानिक उन्नति होगी और तर्क तथा युक्ति को मान्यता मिलेगी त्यों त्यों अंधविश्वास पर आधारित बुद्धिविरोधी मजहबों का लोप होता जाएगा। और बुद्धिवादी वैदिक धर्म का मान बढ़ता चला जाएगा। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि आज शान्ति की खोज में पाश्चात्य भौतिक एवं भोगवादी जगत भारत की आध्यात्मवादी विचारधारा की ओर बड़ी तेजी से झुकता चला जा रहा है। अमरीका, जर्मनी, इग्लैंड, रूस आदि देशों में वैदिक धर्म के प्रति आस्था व विश्वास बढ़ रहा है परन्तु दुर्भाग्यवश अपनी सामाजिक कुरीतियों में फंसे होने के हेतु वैदिक धर्मी इस वर्तमान परिस्थिति का उतना लाभ नहीं उठा रहा है जितना उसे उठाना चाहिए था। जन्मगत् जाति-पांति इसके गले में ऐसी अटकी है कि यह अन्यों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने धर्म में प्रवेश देने को असमर्थ है इसलिए दोष वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता का नहीं है अपितु इसकी सामाजिक कुरीतियों का है। जो धर्म के नाम पर इसमें प्रवेश कर गयी हैं। इन्हीं के विरुद्ध आज विद्यार्थियों का क्रान्ति करना आवश्यक है।

छात्रा—महात्माजी, आपके कथन का आपके मित्र मौलवी साहब तथा पादरी कहां तक समर्थन करते हैं—क्या आप उन्हें अपनी सम्मति प्रकट करने का अवसर देंगे ताकि हमें तुलनात्मक विचार सुनकर आपकी बातों को तोलने का अवसर मिल जाये ?

महात्मा—मुझे बड़ा हर्ष होगा यदि मेरे मित्र मौलवी साहब तथा पादरी महोदय मेरे कथन के सम्बन्ध में अपनी सम्मति प्रकट कर सकें।

मौलवी—महात्माजी, आपने इस्लाम धर्म के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे पूर्णतः सन्तुष्ट न होकर इस बात से सहमत हूं कि इस्लाम धर्म में कुछ बातें अरब देश की परिस्थिति को देखते हुए कही गई हैं, परन्तु इसमें बहुत सी बातें सार्वभौम हैं। आज आवश्यकता इसी बात की है कि हम सभी मिलकर सभी धर्मों के सार्वभौम सिद्धान्तों का संग्रह कर एक सार्वभौम धर्म की स्थापना करें जिससे समस्त संसार एक धर्मावलम्बी हो जाये। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने संवत् १९१४ के दिल्ली दरबार के समय इसका प्रयास भी किया था। दुर्भाग्यवश उस समय उनका यह प्रयास सफल न हो सका। इसकी आज बड़ी आवश्यकता है क्योंकि आज नास्तिक भौतिकवादियों से ईश्वर और धर्म दोनों ही खतरे में पड़ गये हैं। अतः महात्माजी से मेरी प्रार्थना है कि वे पूर्ण शक्ति इस दिशा में लगाएं।

पादरी—मैं भी मौलवी साहब की बातों से सहमत हूं। महात्माजी ने इसाई धर्म की आलोचना जिस भावना से की उसका मैं आदर करता हूं। सभी धर्मों का इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन होना अच्छा है। महात्माजी ने अपने ही धर्म को सार्वभौम सिद्ध करने का प्रयास किया है। यह उनके लिए स्वाभाविक ही है। मैंने उनके प्रवचन से बड़ा लाभ प्राप्त किया है।

महात्मा—मैं अपने दोनों ही मित्रों की उदारता तथा विचारों के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए आभारी हूं। मेरी आलोचना किसी का दिल दुखाने के लिए नहीं अपितु धार्मिक अध्ययन के लिए है। क्या अच्छा हो कि सभी धर्मावलम्बी एक जगह बैठकर समाज कल्याणार्थं चर्चा करें, और सार्वभौम सत्य सिद्धातों की खोजकर उनका प्रचार एवं प्रसार करें। यदि संसार के सभी धार्मिक गुरू व प्रचारक अपने स्वार्थ एवं पक्षपात को छोड़कर सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में उद्यत हो जाएं तो फिर संसार में एक ही सत्य धर्म का उदय हो जाए। और संसार में सर्वत्र धार्मिक वातावरण उत्पन्न हो सुख, शान्ति एवं विश्वबन्धुत्व का उदय हो जाय। दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हो रहा है। परिणाम स्वरूप नास्तिकता तथा अधार्मिकता का सर्वत्र तेजी से प्रचार एवं प्रसार हो रहा है।

महात्माजी ने अपने प्रवचन को विराम देते हुए अपने दोनों ही मित्रों के प्रति पुनः आभार प्रदर्शन कर सत्संग को विसर्जित कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४

सार्वकालिक

पिछले दिन के सत्संग में मौलवी साहब तथा पादरी महोदय के विचारों ने महात्माजी के प्रवचन में एक नवीन जीवन उत्पन्न कर दिया। समूचे नगर में कल की घटना की चर्चा ने सत्संग के प्रति सैकड़ों नये व्यक्तियों को आकर्षित कर दिया। महात्माजी भी बड़े प्रफुल्लित थे। सबसे अधिक चैन की सांस तो नगर के पुलिस अधिकारी तथा कलक्टर ने ली थी। जो महात्माजी के प्रवचनों से नगर में साम्प्रदायिक तनाव फैलने की आशंका कर रहे थे, पर स्वामी जी के प्रवचनों ने जिन ढंग से तुलनात्मक धार्मिक अध्ययन का रूप लिया वह सभी धर्मों के हित में है, यह कल सभी को अनुभव हुआ।

महात्माजी ने ठीक समय पर वेद मन्त्र पढ़कर अपना प्रवचन प्रारम्भ किया। कल की भांति आज का भी उनका विषय जटिल रहा अर्थात् वैदिक धर्म की सार्वकालिकता। महात्माजी ने अपने विषय में प्रवेश करते हुए कहा कि प्यारे विद्यार्थियों कल हमने बताया था कि संसार में वैदिक धर्म ही सर्वभौम धर्म कहलाने योग्य है। आज यह सिद्ध करना है कि वैदिक धर्म ही सार्वकालिक धर्म है अर्थात् सभी काल में समान रूप से मानव तथा मानव समाज के लिए कल्याणकारी है।

सभी धर्मों का लक्ष्य मानव समाज का कल्याण कर उसे सुख, शान्ति तथा प्रगति प्रदान करना है। संसार की प्रत्येक वस्तु का अपना धर्म है, और वह हैं उसका शाश्वत धर्म। सत्य का ही दूसरा नाम धर्म है और सत्य सनातन होता है और होना भी चाहिए। यही असली धर्म की पहचान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी है कि वह सार्वकालिक है या नहीं।

वैदिक धर्म को छोड़ संसार के लगभग सभी धर्म देश, काल एवं परिस्थिति की उपज हैं। समय-समय पर महापुरुषों ने अपने काल में व्याप्त अधार्मिक वातावरण को धार्मिक बनाने तथा समाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया। सो उनके प्रयास से धर्म व भौतिक सिद्धान्तों के साथ स्थानीय समस्याओं का भी समाधान हो जाता है। वह समाधान धर्म बन जाता है। बहुधा लोग उन परिस्थितियों तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों के समाधान व संशोधन को ही धर्म मान बैठते हैं। इसके अतिरिक्त बहुधा धर्म-गुरू अपनी अन्ध भक्ति द्वारा जनता पर अपनी ओर से ऐसी बातें भी ठोस देते हैं जिनका बुद्धि से कोई सम्बन्ध नहीं होता। स्वर्ग, नरक, सृष्टि-रचना तथा ईश्वर के सम्बन्ध में बहुधा धर्म-गुरुओं ने ऐसा ही किया है। इसके अतिरिक्त धर्म-गुरुओं के देहावसान के पश्चात् अपने गुरू को भगवान, भगवान का पुत्र या भगवान का भक्त सिद्ध करने के लिए उसके जीवन के सम्बन्ध में ऐसी अनेक अलौकिक व बुद्धिहीन बातें जोड़ दी जाती हैं कि इन सबके समुच्चय से उसके असली सार्वकालिक सिद्धान्तों का भी महत्त्व क्षीण हो गया है।

संसार में केवल वैदिक धर्म ही ऐसा है जो सार्वकालिक है अर्थात् यह प्रत्येक देश, काल तथा परिस्थिति में मानव तथा मानव समाज का सही मार्ग प्रदर्शन कर उसे सुख, शान्ति तथा प्रगति प्रदान करता है। वैदिक धर्म के सिद्धान्त वास्तव में काल के प्रभाव से परे हैं। इसका मूल कारण यह है कि वह परिस्थिति की उपज न होकर मानव का वास्तविक धर्म है। वैदिक धर्म से मेरा तात्पर्य शुद्ध, सत्य सनातन वैदिक धर्म से है। पौराणिक धर्म से नहीं। कारण यह है कि पतन काल में अन्य मत-मतान्तरों से रक्षार्थ वैदिक धर्मियों ने अनेक ऐसी कुप्रथाओं को धर्म के नाम पर स्वीकार कर लिया जिनका वैदिक धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। आलंकारिक भाषा में पुराण आदि अनेक ऐसे ग्रंथ लिखे गए जिनका सिर पैर ही दिखाई नहीं देता है और उनमें बुद्धि के विपरीत बातें प्रतीत होती हैं। वैदिक धर्म से हमारा तात्पर्य वेद पर आधारित मान्यताओं से है। वास्तव में वेद आर्य जाति का सार्वमान्य ग्रन्थ है। और वैदिक धर्म

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मूल आधार है।

छात्रा—महात्माजी, आपके पास इसका क्या प्रमाण है कि वैदिक धर्म सार्वकालिक है?

महात्मा—वेटी, प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। संसार में वैदिक धर्म ही सबसे प्राचीन धर्म है। अपने जीवन काल में इसने अच्छे बुरे सभी कालों को देखा है। चक्रवर्ती साम्राज्य से लेकर शताब्दियों के दासता काल में होकर इसे गुजारना पड़ा है। वास्तव में धर्म की सार्वकालिकता वैभव काल में नहीं अपितु दासता काल में सिद्ध होती है। संसार का इतिहास साक्षी है कि दासता काल आते ही अनेक धर्म संसार के पटल से विलीन हो गए, और अब वे पुस्तकालय की शोभा या विद्वानों की खोज की वस्तु मात्र रह गये हैं परंतु वैदिक धर्म इन सभी परीक्षाओं में सफल ही नहीं अपितु संसार के इतिहासकारों के लिए आश्चर्य की वस्तु बन गया है।

वैदिक धर्म की सार्वकालिकता को सिद्ध करने के लिए दूसरा प्रमाण यह है कि अपने जीवन के लाखों करोड़ों वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् भी इसके सिद्धांत तथा दर्शन आज भी ज्यों के त्यों आधुनिक तथा आकर्षक हैं, और वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी यह अपनी उपादेयता सिद्ध कर रहे हैं। परमाणु बमों से उत्पन्न विश्व-विनाश से रक्षा की शक्ति अथवा मानव समाज को सद्‌बुद्धि तथा शांति प्रदान करने की क्षमता आज इसी में है ऐसा अमरीका, यूरोप आदि के लोगों ने अनुभव करना प्रारम्भ कर दिया है। जैसे वैदिक धर्म के दस मौलिक सिद्धांतों में से केवल सत्य अहिंसा को लेकर पूज्य गाँधीजी ने संसार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों को चकाचौंध कर दिया। और भटका हुआ संसार महात्माजी के विचारों में संसार की शांति के लिए एक विश्वास की किरण देखने लगा था। मौलिक रूप से सभी ने गाँधीजी के रूप में वैदिक धर्म के १० सिद्धांतों की सार्वकालिकता को स्वीकार कर लिया है।

छात्र—महात्माजी, आपने अभी स्वीकार किया है कि अन्य धर्मों में भी कुछ सार्वकालिक धार्मिक सिद्धांत हैं तो फिर उनके आधार पर वे धर्म सार्वकालिक क्यों नहीं हो सकते, अकेला वैदिक धर्म ही क्यों सार्वकालिक है?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—आपका प्रश्न सर्वथा समुचित है । वैदिक धर्म तथा अन्य धर्मों में एक मौलिक भेद है। अन्य धर्मों में सार्वकालिक धार्मिक सिद्धांतों को धर्म-गुरुओं ने अपने अन्य निजी मतों से ऐसा सीमित एवं कुंठित कर दिया है कि वे शक्ति रखते हुए भी प्रत्येक काल में मानव का मार्ग प्रदर्शन करने में असमर्थ हैं। जैसे ईसाई मत में अहिंसा को परम धर्म माना गया है। परंतु इसे इस रूप में उपस्थित कर दिया गया है कि वह मानव समाज की प्रत्येक देश, काल तथा परिस्थिति में सहायता नहीं कर सकता है । यही कारण है कि आज अमरीका, इंग्लैंड जर्मनी आदि पाश्चात्य देश ईसाई मत के अनुयायी होते हुए भी अहिंसा के विपरीत युद्धों में रत हैं । दो विश्व युद्ध हो चुके हैं और तीसरे की वहाँ तैयारी की जा रही है सो इसमें दोष अहिंसा के सिद्धांत का नहीं अपितु इसके मानने वालों का है । वास्तव में हिंसा-अहिंसा दोनों ही जगत में अनिवार्य हैं, वैदिक धर्म दोनों का समुचित समंवय और संतुलन करता है।

ईसाई तथा इस्लाम धर्म दोनों ने ही अपने धर्म के सार्वकालिक सिद्धांतों को अपने जन्म काल के समय देश, काल परिस्थिति से उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने के लिए उपस्थित किये समाधानों से ऐसा बांध दिया है कि उनमें सार्वकालिकता की शक्ति समाप्त हो गई है। दुर्भाग्यवश उन्हीं अल्पकालिक समाधानों पर प्रत्येक धर्म अधिक बल दे रहा है। और धर्म के सार्वकालिक सिद्धांत आँखों से ओझल हो गये हैं। उन्हें समाप्त करने या उनके विरुद्ध आवाज उठते ही ईसाई तथा इस्लाम दोनों के ही अनुयायी अपने धर्मों को खतरे में अनुभव करने लगते हैं । स्थिति यह है ईसा-मत और इस्लाम मत में धर्म के सार्वकालिक सिद्धांत तथा धर्म के अल्पकालिक सिद्धांत एक रूप बन गए हैं। यही कारण है कि उनकी सार्वकालिकता समाप्त हो गई है।

संसार में वही धर्म सार्वकालिकता रखने की क्षमता रखता है जिसका आधार बुद्धि अर्थात् युक्ति और तर्क पर हो, परन्तु जिस धर्म का आधार ही अंधविश्वास है, और बुद्धि तथा युक्ति के प्रयोग को जहाँ अन्धार्मिक चिन्ह माना जाता है वे धर्म कदापि सार्वकालिक नहीं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकते। यही कारण है कि अंधविश्वास पर आधारित अधिकाँश धर्म विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ ही लुप्त होते जा रहे हैं। बुद्धि विरोधी बातों को लेकर चलने वाला मत अथवा धर्म इस बीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिक युग की टक्कर ले सकेगा, इसमें मुझे संदेह है।

वैदिक धर्म की विशेषता यह है कि इसने अपने सार्वकालिक धार्मिक सिद्धांतों को पूर्ण स्वतंत्र रखा है, और प्रत्येक व्यक्ति को देश, काल, परिस्थिति के अनुकूल उन सिद्धांतों के प्रकाश में अपना मार्ग चुनने की छूट है जिस प्रकार गणित के मौलिक सिद्धांत सनातन होते हैं, और उनके सहारे देश, काल, परिस्थिति से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का समाधान मानव खोजता रहता है, ठीक उसी प्रकार वैदिक धर्म ने अपने मौलिक सिद्धांतों की मान्यताओं को प्रमुखता दी है। समाज की परम्पराओं को विभिन्न परिस्थितियों में बदलने की अनुमति दी है परम्पराओं को वैदिक धर्म का सनातन अंग नहीं माना गया अपितु परिवर्तनशील अंग माना है। यही कारण है कि विभिन्न कालों में विभिन्न स्मृतियों का निर्माण होता रहा है। इस्लाम धर्म की भाँति समाज को शरियत के कानून से सदैव नहीं बाँधा। यही कारण था कि दासता काल में वैदिक धर्म ने तुरन्त बदली परिस्थिति में अपनी नई परम्पराओं को जन्म देकर संकट का सामना कर लिया, और संकट के टलने पर पुनः असली रूप में खड़ा हो गया। जैसे बाल विवाह, पर्दा-प्रथा, छूत-छात जन्मगत जाति-पाँति वैदिक धर्म का अंग नहीं अपितु दासता काल में रक्षार्थ उत्पन्न सामाजिक व्यवस्थाएँ हैं। दुर्भाग्यवश अज्ञान के हेतु बहुत से वैदिक धर्मी भी इन्हें वैदिक धर्म का अंग मान बैठे हैं। इसी अज्ञान को समाप्त करने के लिए महर्षि दयानन्द ने प्रयत्न किया था।

छात्रा—महात्माजी, क्या स्वतंत्रता और परतंत्रता में से सफलता पूर्वक निकलना या प्राचीनता ही किसी धर्म की सार्वकालिकता को सिद्ध करने के लिए यथेष्ठ हैं?

महात्मा—कदापि नहीं, यह तो किसी धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए प्रमाण मात्र हैं। धर्म की सार्वकालिकता मुख्यतः इस बात पर आधारित है कि वह देश, काल तथा परिस्थिति के परिवर्तन से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न अवस्था में मानव का मार्ग-दर्शन करने की क्षमता रखता है या नहीं। संसार परिवर्तनशील है, प्रत्येक क्षण यह बदल रहा है। अतः प्रत्येक क्षण परिवर्तनशील जगत में धर्म मानव की सहायता कर उसे सतत् शक्ति, बुद्धि, प्रगति, सुख एवं शांति प्रदान करता है या नहीं इसी एक कसौटी पर किसी धर्म की सार्वकालिकता को तोला जा सकता है। इस कसौटी पर वैदिक धर्म ही खरा उतर सकता है अन्य नहीं, ऐसी हमारी मान्यता है।

छात्र—प्रत्येक क्षण परिवर्तनशील जगत में वैदिक धर्म के केवल दस सिद्धान्त मानव की सभी समस्याओं का समाधान कर सकेंगे इसे आप कैसे सिद्ध करेंगे ?

महात्मा—इसकी सिद्धि केवल इस पर निर्भर करती है कि मानव के शरीर, मन तथा आत्मा के धर्म सनातन हैं, भौतिक जगत साधन है। अतः शरीर, मन, आत्मा से उत्पन्न जितनी भी सस्मयाएँ सम्भव हो सकती हैं उनका मूलाधार पूर्वोक्त दस बातें ही हैं। इन्हीं का विभिन्न रूप विभिन्नताओं को जन्म देता है। इसलिए इन दस सिद्धान्तों के आधार पर मानव की समस्त समस्याओं का समाधान करना सम्भव है, यदि आपके मस्तिष्क में कोई ऐसी समस्या है जिसका समाधान इन दस सिद्धान्तों की परिधि से बाहर है तो आप बतला सकते हैं। जब कुछ मुट्ठी भर गणित के सिद्धान्तों के आधार पर मानव अपने सभी भौतिक प्रश्नों का उत्तर ढूंढ सकता है तो फिर धर्म के इन दस सिद्धान्तों द्वारा ही मानव समस्याओं का समाधान क्यों नहीं प्राप्त कर सकता है ?

छात्रा—महात्माजी, क्या आप मोटे रूप में बतला सकते हैं कि किसी धर्म की सार्वकालिकता के लिए कौन से गुण होने अनिवार्य हैं ?

महात्मा—किसी धर्म की सार्वकालिकता के लिए धर्म में बुद्धिवाद, उदारता, विशालता, लचीलापन ही उसकी रक्षा कर सकता है अन्यथा उसका जीवन संकट में पड़ जाता है जैसे नित्य व्यायाम करना, स्नान करना, भोजन करना, संध्या आदि प्रत्येक मानव के सनातन धर्म हैं, परन्तु जब मलेरिया ज्वर उसे पकड़ लेता है तो डाक्टर उसे उसके सनातन धर्म का परित्याग कर स्नान न करने, भोजन न करने, व्यायाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
न करने, चारपाई पर लेटे रहने तथा कुनैन मिक्चर के पान की सम्मति देता है। सो यदि वह अपने नित्य सनातन धर्म में परिवर्तन कर डाक्टर द्वारा बतलाये आपत्कालीन धर्म को नहीं अपनाता तो उसका जीवन खतरे में पड़ना स्वाभाविक है। इसी प्रकार जातियों के जीवन में भी आपत्काल आते रहते हैं, तब अपने जीवन के रक्षार्थ जातियों को अपनी धार्मिक परम्पराओं को ढीला कर आपत्ति का सामना करना होता है। जो जाति ऐसा कर पाती हैं वे आपत्ति से बच निकलती हैं और जो नहीं कर पातीं वह समाप्त हो जाती हैं।

वैदिक धर्म में आपत्काल का सामना करने की अद्वितीय क्षमता रही है। इस क्षमता की यह पराकाष्ठा ही है कि जब भारत में बौद्ध एवं जैन मत का सर्वत्र प्रभाव स्थापित हो गया तो इसने तुरन्त बुद्ध और महावीर स्वामी को अपने महापुरुषों में घोषित कर अपने को बचा ही नहीं लिया अपितु उक्त दोनों धर्मों को अपने में आत्मसात् कर लिया।

वास्तव में वैदिक धर्म वह अजगर है कि इसके सामने कैसी भी परिस्थिति क्यों न आ जाये यह उनका सामना करता हुआ आगे बढ़ जाता है। भारत में न जाने कितनी बाह्य जातियों शक, हूंण, मंगोल, तातार आदि को इसने निगल लिया। आज उनका भारत में चिन्ह तक नहीं है ऐसा यह अपनी शक्ति के बल पर ही कर सका है। इसकी इस शक्ति का इससे भी अनुमान लगाया जा सकता है कि आस्तिक, नास्तिक, शाकाहारी मांसाहारी सभी इसकी दृष्टि में हिन्दू हैं, परन्तु आन्तरिक दृष्टि में उन्हें सदैव वैदिक धर्म पर लाने का प्रयत्न किया जाता रहा।

छात्रा—महात्माजी, आज तो उल्टा ही हो रहा है अर्थात् ईसाई-मत तथा इस्लाम मत ही वैदिक धर्म को निगलते चले जा रहे हैं सो क्या इसका वह गुण समाप्त हो गया या इसकी सार्वकालिकता अब समाप्त हो गई ?

महात्मा—वैदिक धर्म की सार्वकालिकता तो समाप्त नहीं हुई, परन्तु इसकी पाचन शक्ति अवश्य समाप्त हो गई है या बिगड़ गई है। उसका कारण इसकी जन्मगत जाति-पाँति है जो अवैदिक कुप्रथा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
परन्तु अपनी सार्वकालिकता के कारण ही तो महर्षि दयानन्द ने यहां क्रान्ति की और अब सौभाग्यवश इसका गुण पुनः जाग्रत हो रहा है। वास्तव में मुस्लिम शासन काल में मुस्लिम बादशाहों ने कानून द्वारा इसके इस गुण को दबा दिया था जो अब पुनः जाग्रत होता जा रहा है।

छात्रा—क्या अन्य धर्म अब इस गुण को अर्थात् सार्वकालिकता को धारण नहीं कर सकते हैं ?

महात्मा—क्यों नहीं कर सकते हैं परन्तु क्या वे अपने धर्मगुरुओं के आदेशों, घोषणाओं तथा मान्यताओं की उपेक्षा कर अपने सार्वकालिक सिद्धान्तों को प्रमुखता दे सकेंगे । इसमें मुझे संदेह है। अन्य धर्मों के प्रति उदारता, विशालता, बुद्धिवाद आदि गुण उनके मूलतत्व के विरुद्ध हैं। अतः वे सार्वकालिक धर्म बन ही नहीं सकते।

छात्रा—महात्माजी, वर्तमान समय तो हिंदू धर्म की अवस्था अन्य धर्मों की भाँति है। आपका वैदिक धर्म तो काल्पनिक है। क्या आपका वैदिक धर्म अपने स्वरूप में पुनः आ सकेगा ?

महात्मा—बेटी, सत्यमेव जयते अर्थात् सत्य की सदैव विजय होती है। सत्य को कभी कोई नहीं मार सकता है। प्राचीनकाल में व्यक्ति अपने प्रभाव के अनुसार निश्चित रूप से सार्वकालिक वैदिक धर्म भारत में ही नहीं अपितु समूचे जगत में अपना प्रभाव स्थापित करेगा।

महात्माजी ने इस विषय पर अधिक चर्चा के लिए क्षमा मांगते हुए इस प्रसंग को यहीं समाप्त किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५
पूर्णता

महात्माजी आज कुछ गम्भीर मुद्रा में हैं। न जाने क्या विचार उनके मस्तिष्क में चल रहा है। कारण कि प्रवचन का समय हो जाने पर भी उन्होंने अपनी गम्भीर मुद्रा नहीं छोड़ी और प्रिन्सीपल महोदय का ध्यान दिलाने पर ही उन्होंने अपनी चर्चा को प्रारम्भ किया—

क्षमा कीजिएगा मेरा ध्यान कहीं दूर था। मैं अन्य कामों में व्यस्त रहने के कारण आज का विषय भी नहीं सोच सका। अतः आप लोग जो विषय चाहें उसी पर चर्चा हो जाएगी। इस पर एक छात्र ने खड़े हो कहा कि यदि वैदिक धर्म की पूर्णता पर आप प्रकाश डालने की कृपा करें तो सब विद्यार्थी आभारी होंगे। विषय की गम्भीरता और विशालता को अनुभव करते हुए महात्माजी ने छात्र के सुझाव की प्रशंसा करते हुए कहा—

बच्चों, संसार में धर्म के नाम पर जंगल खड़ा हो गया है। नित्य नई दुकानें धर्म के नाम पर खुल रही हैं, परन्तु ज्यों-ज्यों धर्म की दुकानें बढ़ती जाती हैं त्यों-त्यों जगत में राग, द्वेष, कलह बढ़ते जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि धर्मों में कहीं न कहीं त्रुटि या अभाव है अन्यथा जहाँ धर्म हो वहाँ शांति न ह और जो धार्मिक व्यक्ति हो वह राग, द्वेष से भरा हो यह कदापि नहीं हो सकता है।

स्वर्ग का प्रलोभन अथवा नरक का भय दिखलाकर जनता को अपनी ओर आकर्षित करना मात्र ही अधिकाँश मत-मतान्तरों का मुख्य लक्ष्य बन गया है। परन्तु वास्तविक धर्म वह है जो मानव तथा मानव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समाज की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उन्नति करता हुआ उसे अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि कराये । मानव समाज की भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि कोई समस्या ऐसी न हो जिसपर धर्म मानव का मार्ग-दर्शन न करता हो। ऐसा धर्म संसार में केवल वैदिक धर्म ही है अन्य नहीं ।

यों तो संसार के प्रत्येक धर्म में कोई न कोई अच्छाई है तभी तो वह चल रहा है अन्यथा वह बंद हो जाता, पर किसी वस्तु का चलते रहना मात्र उसकी पूर्ण उपयोगिता का द्योतक नहीं है। वास्तविकता यह है कि थोड़ी-थोड़ी अच्छाइयों के बल पर अन्य धर्म खड़े हैं । उनके पास मानव की सभी समस्याओं का समाधान नहीं है। यही कारण है कि उनके अनुयायी राग, द्वेष, कलह आदि में पड़ समाज की शाँति को भंग करते हैं । जैसे यदि किसी नगर में चोरी, भ्रष्टाचार, गुण्डागर्दी, आदि होते हैं तो उसका सीधा कारण यह है कि वहाँ के थानेदार आदि प्रशासक अयोग्य हैं ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार किसी धार्मिक समाज में संघर्ष, कलह, राग, द्वेष आदि अधिक हों तो निश्चित रूप से यह दोष उस धर्म का है या उस धर्म में कोई त्रुटि या अभाव है ।

छात्रा—महात्माजी, आपके पास क्या प्रमाण है कि वैदिक धर्म ही पूर्ण है अन्य नहीं ?

महात्मा—मैंने जैसे अभी कहा है कि किसी धर्म की अच्छाई-बुराई तथा पूर्णता-अपूर्णता उसके धर्म-ग्रन्थों की विशालता या उसके अनुयायियों की अधिक संख्या से नहीं अपितु उसके मानने वालों के आचरण से ही जानी जा सकती है। जो धर्म अच्छा है, पूर्ण है उसके मानने वालों में प्रेम, सेवा और भ्रातृत्व की भावना होती है और वह भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टि से प्रगतिशील होता है। इस कसौटी पर यदि आप सभी धर्मों को कसेंगी तो निश्चित रूप से वैदिक धर्म ही संसार में पूर्ण धर्म सिद्ध होगा ।

संसार का इतिहास साक्षी है कि वैदिक धर्म को छोड़ अन्य सभी धर्मों ने संसार में अनुदारता, असहनशीलता, राग, द्वेष एवं कलह को जन्म दिया है। अपने विरुद्ध धर्मों और विचारों को उनमें सहन करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की शक्ति व भावना ही नहीं है । वैदिक धर्म को मानने वाली आर्य जाति अपने जन्म काल से सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण करने वाली, शांति प्रिय, समस्त धर्मों का समान रूप से आदर करने वाली उदार, विशाल तथा शांति का दूत रही है। आज निर्धन होते हुए भी संसार में भारत ही एक ऐसा देश है जो शान्ति, सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि की चर्चा कर रहा है अन्यथा सभी देश संघर्ष की भाषा बोल रहे हैं। भारत की यह शांति प्रियता किसी राजनीतिज्ञ की देन नहीं अपितु वैदिक धर्म की ही देन है । इसलिए ऐतिहासिक तथ्य से बढ़कर क्या प्रमाण होगा जो वैदिक धर्म की पूर्णता को सिद्ध करता हो।

छात्रा—महात्माजी, भौतिक उन्नति तो आज पाश्चात्य जगत ने अधिक की है तो क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि ईसाई धर्म ही पूर्ण है ?

महात्मा—पाश्चात्य जगत में ईसाई धर्म ने जिस भोगवादी तथा भौतिकवादी संस्कृति को जन्म दिया है उससे वहाँ की भौतिक उन्नति सचमुच आश्चर्य जनक हुई है, परन्तु धर्म वहाँ के समाज की आध्यात्मिक उन्नति न कर सका जिसके परिणाम स्वरुप वह भौतिक उन्नति अब वहाँ के विनाश का कारण सिद्ध हो रही है। पूर्ण धर्म वही होता है जो मानव समाज की भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही उन्नति समान रूप से करे। अतः ईसाई मत को पूर्ण कदापि नहीं माना जा सकता ।

छात्रा—वैदिक धर्म ने भी तो भारत में केवल आध्यात्मिक जागृति ही की है, भौतिक दृष्टि से तो यह देश भिखारी तथा निर्धन है। इस दृष्टि से क्या वैदिक धर्म भी अपूर्ण सिद्ध नहीं हो जाता है ?

महात्मा—बेटी, आज तुम जिस भारत को देख रही हो वह वास्तविक भारत नहीं है यह भारत वह है जो सदियों तक दासता काल में जकड़ा रहा, इसकी वाणी पर प्रतिबन्ध था तथा इसके धर्म को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं थी। दास लोगों का क्या कोई धर्म होता है ? आज अपनी दासता की बेड़ियों को काटकर इसने स्वतंत्रता की स्वांस ली है। यह बड़ी तेजी से प्रगति कर रहा है। वह दिन दूर नहीं जब भारत संसार के देशों की पंक्ति में सबसे आगे खड़ा होगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म की पूर्णता या चमत्कार को ही देखना है तो इतिहास को उठाकर पढ़ जाइये । एक दिन था जब वैदिक धर्मियों का संसार भर में चक्रवर्ती साम्राज्य था। यूरोप, अमरीका, चीन, जापान तक इसका व्यापार था।

विज्ञान की कोई शाखा ऐसी नहीं जिसने भारत में उस समय जन्म न लिया हो। कहने का तात्पर्य यह है कि भौतिक तथा आध्यात्मिक कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें भारत में वैदिक धर्म ने पूर्ण उन्नति न की हो। उस उन्नति को देख आज भी संसार के उन्नत देश अवाक् रह जाते हैं। अतः वैदिक धर्म की पूर्णता को भारत के वर्तमान स्वरूप से आँकना वैदिक धर्म के साथ अन्याय करना है।

छात्रा—महात्माजी, इतिहास के अतिरिक्त क्या आपके पास अन्य कोई प्रमाण है जो वैदिक धर्म की पूर्णता को सिद्ध कर सके ?

महात्मा—वैदिक धर्म की पूर्णता का सबसे अधिक प्रबल प्रमाण यह है कि ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाओं का ध्यान करते हुए ही वैदिक धर्म के मूल ग्रंथ वेद चार भागों में विभक्त हैं। भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का ध्यान करते हुए पृथक-पृथक सविस्तार उपदेश देने वाला धर्म-ग्रंथ संसार में केवल वेद है। संसार में मानव समाज की भौतिक एवं आध्यात्मिक या शरीरिक, मानसिक और सामाजिक उन्नति करने वाला प्रत्येक ज्ञान वेद में उपस्थित है। अतः वेद की पूर्णता का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है। अन्य धर्मों के धर्म-ग्रंथ ही उनकी अपूर्णता के द्योतक हैं, अर्थात् उनमें पूर्ण ज्ञान नहीं है। जब पूर्ण ज्ञान ही नहीं है तब अपने अनुयायियों में पूर्ण आचरण वह कैसे उत्पन्न कर सकते हैं।

छात्रा—क्या आप हमारी ज्ञान वृद्धि के लिए कोई अन्य ऐसा तथ्य बतला सकते हैं जिससे हमें जीवन में प्रत्यक्ष रूप से वैदिक धर्म की पूर्णता का अनुभव हो सके।

महात्मा—अन्य धर्म केवल युवा जनों को प्रेम, सेवा, सच्चाई आदि का उपदेश देकर रह जाते हैं, पर वैदिक धर्म ने अन्य धर्मों की भाँति अपना उपदेश युवा व्यक्तियों से प्रारम्भ कर युवा व्यक्तियों पर ही सीमित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया है अपितु व्यक्ति के जन्म काल के बहुत समय पूर्व से ही भूमिका स्वरूप उपदेश देता रहा है। व्यक्ति को जन्म देने वाले माता-पिता के विवाह के समय ही वैदिक धर्म पति-पत्नी के चुनाव में सहायता करता है। विवाह के पश्चात् सन्तानोत्पत्ति की तैयारी में सहायता करता है कि विशिष्ट गुण युक्त सन्तान उत्पन्न करने के लिए कैसा भोजन व आचरण करना चाहिए। गर्भाधान के पश्चात् माता का क्या कर्तव्य है, बच्चे के जन्म के पश्चात माँ क्या करे अर्थात् जन्म से लेकर मृत्यु-पर्यन्त जीवन के प्रत्येक भाग में मानव का क्या कर्तव्य है वैदिक धर्म सविस्तार बतलाता है। युवा होने पर धर्म अर्थ, काम, मोक्ष का लक्ष्य निर्धारित कर ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य एवं शुद्र चारों ही वर्णों के व्यक्तियों को उपदेश देता है। राजा और राज-पद्धति पर इसने पूर्ण प्रकाश डाला है।

संसार के यदि अन्य धर्मों से बाल, युवा, अधेड़ एवं वृद्ध अपनी आयु तथा रुचि के अनुसार अपने कर्तव्य को जानना चाहें तो वे मौन हो जाते हैं, परन्तु वैदिक धर्म जन्म से मृत्यु-पर्यन्त मानव का मार्ग प्रदर्शन करता रहता है। संसार के रूसी महान विद्वान टालस्टाय जब वृद्ध हो गये तो कार्य शून्य होने से उन्हें अपना जीवन शुष्क लगने लगा तब अचानक उन्हें वैदिक धर्म की समाज व्यवस्था पर सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को मिला, तो वह हर्षित हो उठे, और वृद्धावस्था में सन्यास मार्ग के उपदेश को पा उन्होंने अपना जीवन सक्रिय व सरस बना डाला। सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद ग्रंथ महात्मा टालस्टाय को गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी के तत्कालीन प्राचार्य प्रो० श्री रामदेवजी से प्राप्त हुआ था।

छात्रा—वैदिक धर्म गर्भाधान से मृत्यु-पर्यन्त प्रत्येक आयु के मानव को उपदेश व कार्य प्रदान करता है, परंतु उनके गुण, कर्म, स्वभाव का तो ध्यान नहीं करता इसलिए वह भी अपूर्ण है ?

महात्मा—बेटी, संसार में वैदिक धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो आयु के साथ-साथ मानव के गुण, कर्म, स्वभाव का ध्यान करते हुए अलग-अलगं उपदेश व कार्य देता है। अन्यथा अन्य धर्म तो सभी मनुष्यों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को भेड़ों की भांति समान रूप में एक ही डंडे से हांकते हैं। वैदिक धर्म की समाज व्यवस्था ही मानव के गुण, कर्म और स्वभाव पर आधारित है। इसके अतिरिक्त पूजा-पाठ में मानव के गुण, कर्म, स्वभाव का ध्यान करते हुए ज्ञान-योग, कर्म योग, भक्ति योग या उपासना योग के मार्ग स्थापित किये हैं जब कि अन्य धर्मों में सब व्यक्तियों के ऊपर बलात् एक ही पूजा-पद्धति लाद दी गई है। इस दृष्टि से भी वैदिक धर्म पूर्ण है।

छात्रा—क्या कला के क्षेत्र में भी वैदिक धर्म ने मानव समाज का मार्ग-प्रदर्शन किया है ?

महात्मा—कला के क्षेत्र में वैदिक धर्म ने चरम सीमा का उपदेश दिया है। वैदिक धर्म से प्रेरित हो आर्य जाति ने नाच, गान, चित्रकारी, शिल्पकारी में जो उन्नति की वह अद्वितीय है। वैदिक धर्म प्रतिपादित कला की सबसे अधिक विशेषता यह है कि यह मानव को भोगवाद की ओर न ले जाकर आध्यात्मवाद की ओर ले जाती है, अर्थात् मानव को उसके परम लक्ष्य मोक्ष की ओर ले जाने वाली होती है।

छात्रा—वैदिक धर्म पाश्चात्य धर्म संस्कृति की अपेक्षा एक बात में अपूर्ण है। पाश्चात्य संस्कृति ने भोगवाद को चरम सीमा पर पहुँचा दिया है। इस भोगवाद के क्षेत्र में वैदिक धर्म अपूर्ण है। यह तो आपको स्वीकार करना ही पड़ेगा ?

महात्मा—हँसते हुए बोले, इस क्षेत्र में भी वैदिक धर्म ने अपनी पूर्णता स्थापित कर दी है। महर्षि वात्सायन ने काम वासना या भोग वाद पर जो काम सूत्र ग्रंथ लिखा है वह पाश्चात्य जगत के लिए आज भी अद्वितीय है। काम विषय पर भी वैदिक धर्मियों ने अपनी खोज को चरम सीमा पर पहुँचा कर वैदिक धर्म की पूर्णता को सिद्ध कर दिया है। इस क्षेत्र में भी पाश्चात्य जगत बहुत पीछे है।

छात्रा—महात्माजी, आप की बात पर सचमुच आश्चर्य हो रहा है क्योंकि वैदिक धर्म के बारे में सर्वत्र ख्याति है कि यह केवल आध्यात्मवादी धर्म है, भौतिक उन्नति को यह सर्वदा गौण मानता है। त्याग, वैराग्य, संसार को मिथ्या मानना, रूखी-सूखी खाकर संतोष कर लेना, वर्तमान की अपेक्षा इसे मोक्ष की अधिक चिंता रहती है, इत्यादि बातें इसकी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारधारा के प्रमुख अंग हैं, परंतु आज आप सर्वथा विपरीत बातें कह रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आप वैदिक धर्म को सर्वोपरि सिद्ध करने की ही दृष्टि से इसे पूर्ण सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं। आप पहले महात्मा हैं जो इस प्रकार का दावा कर रहे हैं। अन्यथा काशी, हरिद्वार, ऋषिकेश कहीं भी चले जायें वहाँ पर साधु संन्यासी वैदिक धर्म के नाम पर त्याग एवं वैराग्य का ही उपदेश देते हैं। आपकी बात में सत्यता है तो क्या आप अपने मनगढ़ंत इतिहासों एवं इतिहास कारों के अतिरिक्त विदेशी इतिहासकारों की भी साक्षी अपने पक्ष की सिद्धि के लिए दे सकते हैं?

महात्मा—बेटी, तेरी बात में किसी अंश तक सत्यता है। आज वैदिक धर्म के नाम पर जो कुछ प्रचारित किया जा रहा है वह वही है जो तुमने ऊपर व्यक्त किया हैं, परंतु उनका यह उपदेश या प्रचार एकांगी है। भारत में आचार्य शंकर के अद्वैतवाद की स्थापना के पश्चात् इस विचारधारा का प्रारम्भ हुआ। उन्हें भी जैन धर्म की नास्तिक विचारधारा का खण्डन करने के निमित्त ही इस शैली को अपनाना पड़ा अन्यथा शंकर से पूर्व आपको कहाँ ऐसा नहीं मिलेगा।

वैदिक धर्म में भोग-त्याग, भौतिकवाद-आध्यात्मवाद, परिग्रह-अपरिग्रह दोनों का अद्वितीय समन्वय है। जीवन में कहाँ किसका क्षेत्र प्रारम्भ होता है अर्थात् भोग तथा त्याग आयु के किस भाग में अनिवार्य हैं इसका सुंदर विवेचन वैदिक धर्म ने किया है। जीवन में भोग जितना अनिवार्य है उतना ही त्याग तथा वैराग्य प्रत्येक मानव को करना पड़ता है इससे बचना असम्भव ही है। भोग का अंत ही त्याग में होता हैं। अंतर केवल इतना ही है कि अन्य धर्मों ने इस तथ्य को स्वीकार न कर अपनी अपूर्णता प्रकट की है जबकि वैदिक धर्म ने सुखी जीवन तथा परमानंद की प्राप्ति के लिए भोग तथा त्याग दोनों को ही अनिवार्य माना है। मनुष्य चाहे अथवा न चाहे उसकी आयु की वृद्धावस्था में ऐसा समय निश्चित रूप से आता है जब उसकी समस्त इन्द्रियों में भोग करने की सामर्थ्य नहीं रहती और उसे विवश हो त्याग करना ही पड़ता है। अंत में मृत्यु उसका सब कुछ छीन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जब धक्के मार उसकी आत्मा को भी शरीर से बाहर निकाल देती है तब उसे वैदिक धर्म के त्यागवाद व वैराग्यवाद का महत्त्व प्रतीत होता है। वैदिक धर्म केवल इतना ही कहता है कि बजाय इसके कि प्रकृति या मृत्यु ही मानव से बलात् त्याग व वैराग्य धारण कराये उसे सहर्ष ही समय पर स्वत: भोगवाद का परित्याग कर देना चाहिए ताकि उसे संसार से विदा होते समय रोना न पड़े।

वैदिक धम आध्यात्मिकता की भांति भौतिकता को भी महत्त्व देता है। वर्तमान में पाश्चात्य विद्वानों की भांति वैदिक धर्म से प्रेरित हो वैदिक विद्वानों ने आध्यात्मिक क्षेत्र की भाँति भौतिक क्षेत्र में भी महान आविष्कार किए हैं। विज्ञान की कोई ऐसी शाखा नहीं जिस पर इन्होंने चिंतन व गवेषणा न की हो। इस गवेषणा को प्रेरणा मिली वेदों से जो ज्ञान-विज्ञान के आगार हैं। आपने इसके लिए विदेशी इतिहासकारों व लेखकों की साक्षी प्रमाण स्वरूप माँगी सो आज के प्रवचन में इस प्रश्न के साथ पूर्ण न्याय करना सम्भव नहीं है। यदि आप वास्तव में इस तथ्य को जानना चाहते हैं कि वैदिक धर्म भौतिक क्षेत्र में ज्ञान विज्ञान को कहाँ तक मान्यता देता है, और इसने ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति भी की है तो कल का प्रवचन इसी विषय पर रखा जा सकता है। अगर आप सब सहमत हों तो कल इस विषय पर प्रकाश डाला जाये।

सभी विद्यार्थियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से अपनी स्वीकृति देते हुए एक विचित्र उत्साह व हर्ष प्रकट किया। स्कूल के अध्यापगण भी इस पर हर्षित हुए क्योंकि उनके लिए यह एक आश्चर्य बात थी कि वैदिक धर्म ने समस्त ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं में अन्वेषण किया है। अब तक वह महात्मजी की मान्यता को केवल वैदिक धर्म के सम्बन्ध में गर्वोक्ति ही समझ रहे थे और समझते थे कि महात्माजी प्रमाण देने में असमर्थ होने के कारण प्रश्नोत्तर को टालने का प्रयत्न कर रहे हैं परंतु जब उन्होंने कल का प्रवचन पूर्णत: इसी विषय पर रखने की घोषणा कर दी तब तो यथार्थ उत्तर से बच निकलने का प्रश्न ही नहीं उठता।

शांति पाठ के बाद सभा विसर्जित हो गई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६
ज्ञान-विज्ञान

आज महात्माजी की सभा देखने योग्य थी। विद्यार्थियों के अतिरिक्त नगर के अन्य स्कूलों के अध्यापक तथा विद्वान भी उपस्थित थे। अध्यापकों में भी विज्ञान के अध्यापकों के चेहरों पर विशेष मुस्कराहट थी। नास्तिक अध्यापक की भाँति उनका भी दृढ़ विश्वास था कि महात्माजी अपने पक्ष की सिद्धि किसी भी अवस्था में नहीं कर सकेंगे। उनकी दृष्टि में विज्ञान की खोज पाश्चात्य जगत के विद्वानों की है, और इस सत्यता के विपरीत कहना और बोलना अपनी अज्ञानता व व धृष्टता प्रकट करना है। वास्तव में वह आज महात्माजी के दुःसाहस पर मन ही मन मुस्करा रहे थे। अन्य अध्यापकों को उनकी उस मुस्कराहट में महात्माजी के प्रति अपमान की भावना प्रकट हो रही थी। अतः वे लोग उनके इस आचरण पर प्रसन्न नहीं थे।

महात्माजी आज पहले दिन अपने साथ कई बड़े ग्रन्थ लेकर आये थे। उनके चेहरे पर विशेष तेज, हर्ष तथा आत्म-विश्वास की भावना झलक रही थी। उन्होंने समय होते ही अपना प्रवचन इस प्रकार प्रारम्भ किया—

प्रिय अध्यापकगण तथा विद्यार्थियों, आज का विषय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि आज कुछ वैदिक विद्वानों को छोड़ कोई भी विद्वान अथवा देश का नेता स्वप्न में भी इस बात को स्वीकार करने को तैयार नहीं कि वैदिक धर्म या वैदिक धर्मियों ने कभी ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी उन्नति व खोज की है। उनकी दृष्टि में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वैदिक धर्म केवल त्यागियों व वैरागियों का धर्म है। पूजा-पाठ, भजन-योग तथा हरि कीर्तन करना ही इसका एक मात्र अंग है। वैदिक धर्म ने प्राचीन काल में आध्यात्मिक तथा भौतिक क्षेत्र में कितना महती उन्नति की इस पर अनेकों ग्रंथ भरे पड़े हैं परन्तु देश में दासता काल में विदेशियों ने आर्य जाति के इस गौरवमय इतिहास को इसलिए न पढ़ाया कि इससे भारत के नवयुवकों में आत्म-गौरव, आत्म-विश्वास व स्वाभिमान जाग्रत हो विदेशी दासता के विरुद्ध उनके हृदयों में विद्रोह की भावना प्रदीप्त हो जाएगी। विदेशियों ने हमारे बच्चों को सदैव यही पढ़ाने व समझाने का प्रयास किया कि यह देश सदैव ही जंगलियों असभ्य व पिछड़े लोगों का रहा है। और उन्हें लिखना, पढ़ना, रहना, राज्य करना पश्चिम ने ही सिखाया है। उनकी शिक्षा का यह प्रभाव हुआ कि आज अधिकांश अंग्रेजी के विद्वान यह मानने को उद्यत नहीं कि भारत में वैदिक धर्मियों ने कभी ज्ञान-विज्ञान की उन्नति की थी।

दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के नेताओं ने भी इस प्राचीन गौरवमय में इतिहास से अपने छात्र छात्राओं को परिचित कराने की आवश्यकता अनुभव नहीं की इसमें उनका दोष नहीं अपितु दोष उनकी आंखों पर लगे विदेशी चश्मे का है जिससे उन्हें भारत दिखाई ही नहीं देता। उन्हें वही भारत दिखाई देता है जो दासता काल में विदेशियों ने हमारे सन्मुख उपस्थित किया। भारत ने प्राचीन काल में विज्ञान के क्षेत्र में भी उन्नति की यह मान्यता उनके लिए काल्पनिक है। अवस्था इतनी दयनीय है कि आज देश के विद्वानों तथा नेताओं को यहाँ की भाषा, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, साहित्य में कोई रुचि व संपर्क अनुभव नहीं होता। उन्हें हर विदेशी वस्तु महत्त्वपूर्ण और प्रत्येक स्वदेशी वस्तु तथ्य ही प्रतीत होती है। इस सभा में बैठे कितने विद्वान अध्यापक हैं जो इस बात में विश्वास रखते हैं कि भारत ने प्राचीनकाल में विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में खोज की थी।

वैदिक धर्म ही संसार में ऐसा धर्म है जिसने विज्ञान को भी धर्म का अंग माना है और इसे अन्य धर्मों की भांति धर्म का शत्रु न मानकर धर्म का सहायक माना है। वैदिक धर्म ने विज्ञान को इस दृष्टि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से देखा है इसका प्रमाण इस प्रकार है—

यो विद्यात् सूत्रम् विततं यस्मिन्नोताः प्रजा ईमाः ।
सूत्रं सूत्रस्य यो विद्यात् स विद्यात् ब्राह्मणं महत् ॥

अथर्व वेद १०।८।३७

अर्थात् वेद कहता है कि जो व्यक्ति इस भौतिक जगत में व्याप्त वैज्ञानिक नियमों तथा इन नियमों के अन्दर व्याप्त शक्ति के सूत्र को जानता है वही ब्रह्म को जान सकता है, अर्थात् परमात्मा को जानने के लिए उसकी बनाई भौतिक दुनिया के नियमों तथा नियमों का नियन्त्रण करने वाली शक्ति को जानना आवश्यक है।

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥

ऋग वेद १।२२।१९

अर्थात् यदि व्यक्ति अपने धर्म को जानना चाहता है तो उसे विष्णु अर्थात् सर्वव्यापक ईश्वर के कर्म को अर्थात् उसके बनाए इस समस्त ब्रह्माण्ड का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि वही परमात्मा हमारा परम मित्र होने से हमारा मार्ग-दर्शक हो सकता है।

उपर्युक्त वेद मंत्र प्रकट करते हैं कि वेद ने धर्म और ईश्वर को जानने के निमित्त भौतिक जगत को जानने व समझने का निर्देश दिया है। इसके सर्वथा विपरीत ईसाई इस्लाम आदि अन्य मतों ने विज्ञान की शिक्षा को धर्म एवं ईश्वर का शत्रु माना। सुकरात, गैलीलियों आदि अनेक विद्वानों को इसीलिए मार दिया गया क्योंकि उन्होंने वैज्ञानिक अन्वेषण कर प्रचलित धर्मों की मान्यता के विपरीत तथ्य उपस्थित किए। उन्हें विज्ञान की उन्नति से अपने अस्तित्व के लिए ही खतरा दिखाई दिया। इसी कारण वैज्ञानिक गवेषणा को प्रोत्साहन नहीं दिया गया परन्तु वैदिक धर्म ने विज्ञान को मान्यता ही नहीं दी अपितु इस दिशा में सक्रिय पग भी उठाये।

छात्रा—महात्माजी, बीच में टोकने के लिए क्षमा कीजिएगा। वेद या वैदिक धर्म ने विज्ञान को मान्यता दी। यह बात तो आप आज सिद्ध करेंगे ही पर एक बात कल के प्रवचन में सिद्ध करने से रह गई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थी कि वैदिक धर्म कोरा वैराग्यवादी या त्यागवादी नहीं अपितु भौतिक-वादी भी है सो विज्ञान के क्षेत्र में वेद या वैदिक धर्म के क्या विचार हैं ? या उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन काल में क्या खोज व प्रगति की इसे बतलाने से पूर्व इस बात को सिद्ध कीजिए कि वैदिक धर्म भौतिकवादी भी है।

महात्मा—वेटी, वैज्ञानिक उन्नति ही इस बात की प्रवल प्रमाण है कि वैदिक धर्म भौतिकता को भी समान रूप से महत्त्व देता है। वैज्ञानिक उन्नति भौतिकवाद का ही दूसरा नाम है। अतः यदि हम यह सिद्ध करने में सफल हो जायें कि आर्य जाति ने प्राचीन काल में विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की तो वेदादि ग्रंथों के प्रमाण की कोई विशेष आवश्यकता नहीं रह जाती, क्योंकि प्राचीन काल की समस्त प्रगतियों का मूलाधार वेद ही रहा है फिर भी आपकी सन्तुष्टि के लिए अनेकों प्रमाणों में से कुछ दिये देते हैं अर्थात्—

वैदिक धर्म की परिभाषा ही वेशेषिक दर्शन में इस प्रकार की है अर्थात्—

यतोअभ्योदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः ।।

अर्थात् जिससे इस लोक और परलोक दोनों का कल्याण हो सभी प्रकार के सुख, प्रगति, सफलता इस जीवन में प्राप्त हो और मृत्यु के पश्चात् परमानन्द की प्राप्ति हो वही धर्म है। यजुर्वेद ने धर्म की इसी परिभाषा और भावना को इस प्रकार व्यक्त किया है—

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्मूत्या रताः ।।
अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुर सम्भवात।
इति शुश्रुम् धाराणाँ ये नस्तद्विचचाक्षरे।।
सम्भूतिचं विनाशंच यस्तद्वेदोभय सह।
विनासेन मृत्युः तार्त्वा सम्मूतया अमृतमश्नुते ।।

यजुर्वेद ४०।९,१०,११

अर्थ—जो आत्म तत्व की अपेक्षा करके केवल कारण-शरीर अर्थात् प्रकृति की उपासना करते हैं वे अन्धकार में प्रवेश करते हैं या अनेक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कष्टों को प्राप्त होते हैं परन्तु वे व्यक्ति उनसे भी अधिक अंधकार अथवा कष्टों को प्राप्त करते हैं जो कारण शरीर अथवा प्रकृति या भौतिक जगत की उपेक्षा करके केवल आत्म-तत्व की ही उपासना करते हैं। विद्वानों का कहना है कि कारण-शरीर और आत्म-तत्व दोनों के पृथक-पृथक फल होते हैं जो व्यक्ति इन दोनों को लेकर साथ चलता है वह प्रकृति या भौतिक उन्नति द्वारा मृत्यु को पार कर परमान्द को प्राप्त होता है अर्थात् इस जीवन में सभी भौतिक सुखों को प्राप्त करता हुआ मरने के पश्चात् मोक्ष को प्राप्त करता है।

वेद अथवा वैदिक धर्म मानव को किन वस्तुओं की प्राप्ति की प्रेरणा देता है इसका अनुमान नीचे लिखे मंत्र से लगाया जा सकता है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानां। आयुः प्राणं प्रजा पशुं कीर्ति द्रविणं ब्रह्म वर्चिसंमह्यं दत्वा व्रजत् ब्रह्म लोकम्॥

अर्थ—हे वेद माता भगवन् हम तेरी ऋचाओं से प्रेरणा ले पूर्ण आयु, शक्ति, सन्तान, पशु, यश, धन-धान्य ईश्वर भक्ति आदि की प्राप्ति करें। स्पष्टतः ऐसी प्रार्थनाएँ वैदिक धर्म के भौतिकवादी तथा आध्यात्मवादी दोनों अंगों का पोषक प्रबल प्रमाण हैं। इसी प्रकार अनेकों मंत्र वेद में ऐसे हैं जिनमें चक्रवर्ती राज्य करने की प्रेरणा वैदिक धर्म मानव को देता है। यही इसकी पूर्णता का द्योतक है।

छात्रा—महात्माजी, वैदिक धर्म यदि भौतिकवाद को भी महत्त्व देता है तो इसका क्या कारण है कि वेद मंत्रों में गायत्री मंत्र को ही सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है इसमें तो भौतिकवाद की अपेक्षा आध्यात्मवाद की ही अधिक झलक प्रतीत होती है यह क्यों?

महात्मा—यह बात सत्य है कि वैदिक धर्म ने भौतिकवाद की अपेक्षा आध्यात्मवाद को तुलनात्मक दृष्टि में अधिक महत्त्व दिया है। वैदिक धर्म की दृष्टि में संसार के समस्त भौतिक पदार्थ जीवात्मा की प्रगति के लिए साधन हैं साध्य नहीं, जैसे मानव शरीर में शरीर और आत्मा दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं पर शरीर आत्मा के लिए है न कि आत्मा शरीर के लिए। आत्मा के लिए शरीर को छोड़ा जा सकता है पर शरीर के लिए आत्मा को कदापि नहीं छोड़ा जा सकता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक जगत तथा जीवात्मा का सम्बन्ध वैदिक धर्म की दृष्टि में अन्धे तथा लंगड़े के सदृश है। प्रकृति अन्धी है इसे आगे चलने या प्रगति करने के लिए आँखें अर्थात् बुद्धि चाहिए जो इसे जीवात्मा से मिलती है, और जीवात्मा लंगड़ा तथा बिना पैर वाला है। इसके पास कर्म करने का ज्ञान व क्षमता है, परन्तु साधन नहीं है। सो प्रकृति, शरीर आदि साधन के रूप में इसे टांगे देकर संसार में दौड़ लगाने की सामर्थ्य प्रदान करती है। इस प्रकार भौतिक तत्व तथा आध्यात्मिक तत्व दोनों ही मिलकर इस जगत प्रगति कारण बनते हैं।

गायत्री मंत्र वैदिक धर्म की उपर्युक्त भावना के अनुकूल ही महत्त्वपूर्ण है। शरीर रूपी रथ में जहाँ इन्द्रियाँ घोड़ों का काम कर रही हैं मन जहाँ उन घोड़ों में लगाम का काम कर रहा है वहाँ बुद्धि इस रथ में सार्थी का काम कर रहा है। वह इस रथ में बैठे जीवात्मा को परमपिता के घर अर्थात् मोक्ष धाम की ओर ले जा रहा है। अतः इस मंत्र के द्वारा बुद्धि की पवित्रता के लिए प्रार्थना की गई है। इसका अभिप्राय यह है कि शरीर अथवा भौतिक जगत और जीवात्मा दोनों को सही रूप देने तथा भौतिक जगत का नियन्त्रण करने के लिए बुद्धि की पवित्रता परम आवश्यक है। इसके प्राप्त हो जाने पर ही आत्मा तथा भौतिक जगत दोनों की प्रगति होना सम्भव है अन्यथा नहीं।

छात्रा--महात्माजी, अब आप उन प्रमाणों को उपस्थित कीजिए जिनसे यह सिद्ध हो सके कि प्राचीन काल में भारत अर्थात् वैदिक धर्मियों ने विज्ञान की प्रत्येक दिशा में प्रगति की थी? परन्तु हमारी सन्तुष्टि भारतीय विद्वानों के प्रमाणों से नहीं अपितु विदेशी प्रमाणों से होगी?

महात्मा—मैं यह खूब जानता हूँ कि भारत इतना मानसिक दास बन गया है कि उसी बात पर वह श्रद्धा व विश्वास करता है जिस पर विदेशियों की मोहर लग जाती है। इसलिए आप चिन्ता न करें आज मैं विदेशी विद्वानों के ही उद्धरण उपस्थित करने जा रहा हूं जो इस प्रकार हैं......

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणित विज्ञान—

Sir W.W. Hunter says—"To them (Hindus) we owe the invention of the numerical symbols on the decimal scale. The Indian figures 1 to 9 being abbreviated forms of initial lettters of the numerals themselves, and the zero or 0, representing the first letter of the Sanskrit for empty (Sunya). The Arabs borrowed them from the Hindus and transmitted them to Europe."

(Imperial Gazeteer, P. 219 "India")

भावार्थ—भारत के आर्य लोगों ने ही एक से नौ तक के अंक एवं शून्य तथा दशमलव का आविष्कार कर संसार का भारी उपकार किया। अरब लोगों ने इस ज्ञान को लेकर यूरोप वालों को दिया।

Schlegel, the great German critic says—"The influence which the decimal system of reckoning has had not only on mathematics, but also on ihe progress of Civilization in general, can harldly be overestimated. Durlng the eight and ninth centuries A.D. the Indians became the teachers in arithmatic and algebra of the Arabs, and through them, of the mations of the west. Thus, though we call latter science by an Arabic name, it is a gift, we owe to India."

अर्थ—अंकों को गिनने की दशमलव पद्धति ने न केवल गणित में ही क्रान्ति की अपितु इसने संसार की सभ्यता पर भी प्रकाश डाला। आठवीं तथा नवीं शताब्दी में भारतीय लोग अरबों के गुरू बने और उनके द्वारा पाश्चात्य देशों के गुरू बने। हम भले ही इस विज्ञान को अरब के नाम से पुकारते हैं पर वास्तव में यह भारत ही की देन है और इसके लिए हम भारत के ऋणी हैं।

Arithmatic

Professor Weber says—"The same thing i.e. the Arabs borrowed from the Hindus, took place also in regard to Algebra and Arithmatics in particular, in both of which it appears the Hindus attained, quite independently, a high degree of proficency."

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ—अरब लोगों ने हिसाब तथा एलजेबरा दोनों में ही भारत के हिन्दुओं से ज्ञान उधार लिया। इन दोनों क्षेत्रों में हिन्दुओं ने स्वतंत्र रूप में पूर्णता प्राप्त कर ली थी।

Geometry

Dr. Thibant has shown that the Geometrical theorem of the 47th proposition, Book, which tradition as cribes to Pythagoras, was solved by the Hindus atleast two centuries earlier, thus confirming the conclusion of V. Schroeder that the Greek philosopher owed inspiration to India."

(History of Hindu Chemistry Vol. I)

Mr. Elphinstone in his "History of India" says—"Their geometrical skill is shown among other forms by their demonstrations of various properties of triangles, especially ode which expresses the area in the terms of the three sides and was unknown in Europe till published by Clauvius, and by their knowledge of the proportions of the radius to the circumference of a circle which they express in a mode pecueiar to themselves, by applping one measure and one unit to the radius and circumference. This proportion' which is confirmed by the most approved labours of Europeans, was not known out of India until modern times."

अर्थ—त्रिकोण सर्कल रेडियस आदि का क्षेत्रफल निकालने की विधि भारत के लोगों की देन है, और कुछ समय पूर्व तक संसार के लोगों को इसका ज्ञान नहीं था इतने लम्बे संदर्भ का यह अनुवाद अपर्याप्त प्रतीत होता है।

ज्योतिष ज्ञान—

Professor Weber says—"During eight and ninth centuries the Arabs were, us astronomy, the disciples of Hindus, from whom they borrowed the lunar mansions, in their new order and whose 'Siddhants', they frequently worked up and translated in parts. And Astronomy was practised in India as early as 2780 B.C."

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ—भारत के हिन्दू ईसा से २७८० वर्ष पूर्व ही ज्योतिष विज्ञान को जानते थे । अरब लोगों ने भारत से यह ज्ञान आठवीं एव नवीं शताब्दी में प्राप्त किया ।

(अथर्ववेद)

Medicinc

Professsor Wilson says—"The ancient Hindu attained as thorough a proficiency in medicine and surgery as any people whose acquisitions are recorded."

(Wilson's Works Vol. III P. 269)

अर्थ—श्री प्रो० विल्सन कहते हैं कि प्राचीन हिन्दुओं ने दवा तथा चीड़फाड़ में पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था और वह ज्ञान अन्य किसी बैज्ञानिक से कम नहीं था ।

Sir W. Hunter saya—"The Hindu medicine is an independent development Arab medicine was founded on the translations from the Sanskrit treatises made by command of Khalif of Bagdad (950-960 A.D.) And European medicine down to the 17th century was based upon Arabic, and the name of the Indian physicians, Charak. repeatedly occurs in Latin translations of Aviconna (Abusima), Rhazes (Abu Rasi) and Serapion (Abu Sirabi)."

Mrs. Manning says—"Later Greeks at Bagdad are found to have been acquaintid with medical works of the Hindus, and to have availed themselves of their medicaments."

(Ancient and Mediaval India, Vol. P. 359)

सारांश यह है कि शरीर विज्ञान व इतने लम्बे संदर्भ का यह अनुवाद अपर्याप्त है। चिकित्सा भारत में उदित हो अरब और अरब से ग्रीक होती हुई यूरोप पहूँची ।

छात्रा—महात्माजी, हम विद्यार्थीगण आज प्राचीन भारतीयों अथवा वैदिक धर्मियों द्वारा की गई वैज्ञानिक खोजों को जान अति आश्चर्य चकित हो गये हैं । पर हमारी सरकार हमें इस प्रकार की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक बातों से परिचित क्यों नहीं कराती ?

महात्मा—यह प्रश्न आपको सरकार से ही पूछना चाहिए। मेरी दृष्टि में तो इसका उत्तर यही है कि चूंकि यह तथ्य केवल वैदिक धर्मियों की महानता को प्रकट करता है इसलिए धर्म निरपेक्ष सरकार इसे पढ़ाने में संकोच करती है और शायद कुछ डरती भी है।

छात्रा—महात्माजी, अन्य मत-मतान्तर क्या विज्ञान के सम्बन्ध में बिलकुल मौन हैं ?

महात्मा—मौन नहीं अपितु विज्ञान विरोधी हैं। उनका आधार ही कल्पना तथा अन्धविश्वास है, इसीलिए हमारी मान्यता है कि वैदिक धर्म के अतिरिक्त संसार का कोई भी मत-मतान्तर विज्ञान का पक्षपाती नहीं है।

छात्रा—अन्य मत-मतान्तर विज्ञान विरोधी हैं इसके प्रमाण स्वरूप क्या आप एक दो तथ्य बतला सकते हैं ?

महात्मा—एक दो क्या अनेकों तथ्य बतला सकते हैं, परन्तु इससे वर्गीय द्वेष की भावना को बल मिलता है इसलिए उन्हें बतलाना उचित नहीं है पर अपनी मान्यता की सिद्धि के लिए बताना चाहता हूं कि बाइबिल में पृथ्वी को चटाई की भाँति चपटा बतलाया गया है और सृष्टि रचना को ईसाई तथा इस्लाम धर्म दोनों ने ही ईश्वर की आज्ञा या इच्छा से केवल सात दिन में बन जाने की बात कही है। आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि अन्य मत-मतान्तर या तथाकथित धर्म कहाँ तक वैज्ञानिक हैं।

छात्रा—महात्माजी, क्या आप वर्तमान हिन्दू धर्म की धार्मिक परम्पराओं में कुछ ऐसी परम्पराओं की ओर संकेत कर सकते हैं जिनसे इसके भौतिकवादी पक्ष का समर्थन होता हो ?

महात्मा—वैदिक धर्म के पतन काल में भी आज समस्त भारत में दीपावली का पर्व मनाया जाता है, जिसका मुख्य लक्ष्य ही लक्ष्मी पूजन अर्थात् देश में भौतिक निर्धनता को दूर कर इसे धन-धान्य से भरपूर करने की भावना से प्रार्थना की जाती है। इस अवसर पर प्रत्येक परिवार अपने घर को खूब सजाता है। उसका विश्वास है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जहाँ स्वच्छता व पवित्रता होती है वहाँ लक्ष्मी का निवास होता है।

यह बात मनोवैज्ञानिक है कि व्यक्ति अपने आदर्श आराध्य देव या उस व्यक्ति का जिसके प्रति उसकी श्रद्धा व विश्वास है अन्धानुकरण करता है। कहावत है जैसा राजा वैसी प्रजा। यदि हम हिन्दू धर्म के मन्दिरों में इसके देवताओं की काल्पनिक मूर्तियों को ध्यान से देखें तो एक भी देवता ऐसा नहीं मिलेगा कि जिसकी आकृति से वैराग्य या त्याग का भाव टपकता हो। सभी अपनी धर्मपत्नियों के साथ समस्त आभूषणों से युक्त अस्त्र, शस्त्र से सुसज्जित दिखाई देंगे। इससे स्पष्ट प्रकट है कि वैदिक धर्म भोगवाद, त्यागवाद अथवा भौतिकवाद तथा आध्यात्मवाद दोनों में ही विश्वास रखता है और यही इसकी पूर्णता का प्रवल प्रमाण है, महात्माजी की दृष्टि अचानक घड़ी पर चली गई। आज के प्रवचन में वहुत अधिक समय लेने के लिए क्षमा माँगते हुए सत्संग विसर्जित हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७
वैदिक धर्म मानवतावादी है

महात्माजी को आज कहीं अन्यत्र जाना है। अतः उन्होंने पूर्व की भांति वेद मंत्रों के गान के स्थान पर केवल एक मंत्र का पाठ कर अपने प्रवचन को प्रसारित करते हुए कहा—

बन्धुओं अन्य मत-मतान्तरों की तुलना में वैदिक धर्म की सबसे बड़ी विशेषता इसके लक्ष्य में है। संसार के अन्य मत-मतान्तरों के समस्त प्रयत्नों का एक मात्र लक्ष्य है अन्य व्यक्तियों को अपने धर्म का अनुयायी बनाना। उनका विश्वास है कि उनके धर्म का अनुयायी होने से ही मानव का कल्याण सम्भव है अन्यथा वह नरकगामी बन महान कष्टों को झेलेगा। यह बात उनकी कल्पना से बाहर है कि अन्य धर्मावलम्बी भी कभी कल्याण अथवा स्वर्ग की प्राप्ति कर सकता है। इसलिए अन्यों को लोभ, लालच, भय, उपदेश किसी प्रकार अपने धर्म में लाना उनके धर्म का प्रमुख अंग बन गया है। किसी व्यक्ति का कल्याण उनकी दृष्टि में उसी समय हो सकता है जब वह उनके मत को अंगीकार कर लेता है। उसके पश्चात् वह किसी भी रूप में रहकर कुछ भी करे इसकी उन्हें विशेष चिन्ता नहीं है। उनकी चिन्ता, दया, घृणा एवं क्रोध के विषय तो वे लोग हैं जो काफिर हैं अर्थात् जिन्होंने उनके मत को स्वीकार नहीं किया है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि अन्य मत-मतान्तरों का कार्य केवल दूसरों का धर्म परिवर्तन कर उन्हें अपने धर्म में लाना मात्र है। उनके अपने धर्म-ग्रन्थ हैं जो उपदेशों से भरे पड़े हैं। भले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही उन उपदेशों से हम सहमत न हों, परन्तु उनके पास भी अपना एक दर्शन है जिसका वह प्रचार करते हैं पर मेरे कहने का लक्ष्य यह है कि अन्य मत-मतान्तरों के पास धर्मोपदेश व धर्म-ग्रन्थ होते हुए भी उनका मुख्य ध्येय दूसरों को अपने मत में लाना है। उपदेश उनके लिए मुख्य वस्तु नहीं अग्नि तु दूसरे नम्बर की वस्तु है । जैसे यदि उनके अनुयायियों से उनके धर्म के सम्वन्ध में प्रश्न पूछ लिया जाय तो उनमें से अधिकांश इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं बतला सकेंगे कि अमुक पुस्तक तथा पैगम्बर या महापुरुष पर ईमान लाने पर उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हो जायेगी। इसमें उनका दोष नहीं अपितु उनका है जिन्होंने अपने धर्म में लाने के पश्चात् उन्हें अपने धर्म का ज्ञान नहीं कराया। उन्होंने ज्ञान इसीलिए नहीं कराया क्योंकि उनकी दृष्टि में वह गोण कार्य है।

वैदिक धर्म अन्य मत-मतान्तरों के सर्वथा विपरीत इस वात में विश्वास रखता है कि मानव का कल्याण मानव वनने ही में है। वह मुसलमान, हिन्दू ईसाई वने या न वने पर यदि उसने अपने को मानव वना लिया तो फिर उसका कल्याण होने से उसे कोई नहीं रोक सकता है। यही कारण है कि वैदिक धर्मियों ने अपने समूचे इतिहास में कभी किसी को लोभ, लालच, भय से अपने धर्म में जवरदस्ती लाने का प्रयत्न नहीं किया अपितु सदैव मानव को मानव बनाने के निमित्त धर्मोपदेश पर वल दिया है। और आज भी दे रहा है। इसके विपरीत अन्य मत-मतान्तरों द्वारा लोभ, लालच व भय से अन्यों को अपने मत में लाने की अमानवीय घटनाओं से संसार का इतिहास भरा पड़ा है।

आज भी यह कुचक्र चालू है। जैसे भारत के अन्दर विदेशी ईसाई मिशनरी आज भी लोभ, लालच व भय के आधार पर किस प्रकार निर्धन, अनपढ़ व भोले हरिजन तथा वनवासी बन्धुओं का सामूहिक धर्म परिवर्तन कर रहे हैं यह किसी से छिपा नहीं है। इसके विपरीत आज भी वैदिक धर्मियों पर आक्षेप लगाने का कोई साहस नहीं कर सकता है कि इसने अमुक व्यक्ति को लोभ, लालच व भय के वल पर वैदिक धर्म में प्रविष्ट कर लिया। हां ऐसे उदाहरण तो अनेक देश विदेश में देखने को मिल जायेंगे जहां वैदिक धर्म के उपदेश से प्रभावित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो अन्य अनेक धर्मावलम्बियों ने वैदिक धर्म में प्रविष्ट होने की इच्छा व्यक्त की। परन्तु वैदिक धर्म प्रचारक ने यह कहकर ही विदा कर दिया कि अपने धर्म में रहते हुए ही मानवता के धर्म का पालन करने से उनका कल्याण हो जायेगा। कल्याण के लिए वैदिक धर्म में आना अनिवार्य नहीं। लेखक ने स्वयं लन्दन में स्थित रामकृष्ण मिशन के एक आश्रम में इस प्रकार की अनेक घटनाओं को देखा है।

छात्रा—महात्माजी, कोई व्यक्ति वैदिक धर्म से प्रभावित हो यदि वैदिक धर्म में आना चाहे और वैदिक धर्म का उपदेशक उसे अपने धर्म में प्रविष्ट न करे इस बात को क्या आप वैदिक धर्म की विशेषता मानते हैं?

महात्मा—हम इसे विशेषता नहीं अपितु भारी भूल मानते है उक्त उदाहरण को देने का हमारा यह तात्पर्य कदापि नहीं था कि हम उसका समर्थन करते हैं परन्तु उसका उद्देश्य यही था कि वैदिक धर्म अन्यों को बलात् अपने धर्म में लाने कका भी प्रयत्न नहीं करता और इस दिशा में वह उस चरम सीमा तक पहुंच गया कि अन्यों के सहर्ष इच्छा व्यवत करने पर भी उसे अंगीकार नहीं करता। इसका यह आचरण ही इसके पतन का प्रतीक है, यह वैदिक धर्म का शास्त्रयुक्त आचरण कदापि नहीं कि अन्य कोई व्यक्ति वैदिक धर्म में प्रविष्ट होना चाहे तो उसका स्वागत न किया जाये। वैदिक धर्म की दृष्टि में ऐसा करना अमानवीय एवं अधार्मिक कृत्य है, क्योंकि भगवान के उपदेश या द्सके बताये धर्म पर आने से किसी को रोकना ईश्वर विरोधी कार्य होने से अधार्मिक है।

छात्रा—जब वैदिक धर्म भी अन्यों को अपने धर्म में प्रविष्ट करने का पक्षपाती है तो फिर इसमें अन्यों की अपेक्षा क्या व्रिशेषता हुई?

महात्मा—अन्यों की अपेक्षा वैदिक धर्म में यही विशेषता है कि वैदिक धर्म अन्यों को वैदिक धर्मी बनाने की दृष्टि से उपदेश नहीं करता अपितु मानव को मानव बनाने की दृष्टि से उपदेश करता है। इसके अतिरिक्त अन्यों को लोभ, लालच व भय दिखलाकर अपने धर्म में लाने का यह घोर विरोधी हैं, पर यदि कोई इसके सिद्धान्तों से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रभावित हो इसे अंगीकार करना चाहे तो उसका यह सदैव स्वागत करता है।

छात्रा—महात्माजी, आपने वैदिक धर्म की निर्बलता को बड़ी चतुराई से इसकी विशेषता में परिणित कर दिया है आप यह क्यों नहीं स्वीकार करते कि वैदिक धर्म में अन्यों को अपने में मिलाने की कमी है। इसी कारण यह अन्य मत-मतान्तरों की इस विशेषता को दोष बतलाने प्रयत्न करता है। आपका कहना है कि वैदिक धर्म अन्यों को लोभ, लालच व भय द्वारा वैदिक धर्मी नहीं बनाता अपितु उनके दिल दिमाग को प्रभावित कर उनकी इच्छानुसार उन्हें वैदिक धर्म बनाता है। यदि यह सत्य है तो क्या आप इस तथ्य को इतिहास के आधार पर सिद्ध कर सकते हैं ?

महात्मा—ऐसी साक्षियों से इतिहास भरा पड़ा है। संसार के सभी इतिहासकार इस बात को स्वीकार करते हैं कि भारत में बाहर से शक, हूण, मंगोल, तातार, गुर्जर आदि जातियां आक्रमणकारी के रूप में आईं और यहाँ आकर विलीन हो गईं। क्या आप बता सकेंगे कि उन्हें किसने निगल लिया और उनका वर्तमान स्वरूप क्या है। यदि कुछ इतिहासकारों के इस तथ्य को स्वीकार करलें कि आर्य जाति भारत में बाहर से आकर बसे तो फिर यहाँ के पूर्व आदिवासी कहां गये ? क्या आर्य जाति ने उन्हें अपने में समावेश नहीं कर लिया ? जैसा मैंने एक प्रवचन में कहा था कि मुस्लिम राज्यकाल में एक कड़े राज्यादेश के द्वारा इसकी इस विशेषता को कुंठित कर दिया गया था। तभी से अन्यों को अपने में समावेश करने की इसकी विशेषता का लोप हो गया है।

छात्रा—क्या आप अपनी उक्त मान्यता के लिए वेदों से कोई ऐसा प्रमाण दे सकेंगे जिससे यह सिद्ध होता हो कि वैदिक धर्म अन्यों को अपने में प्रवेश करने की अनुमति देता है ?

महात्मा—वेद कहता है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात है वैदिक धर्मियों संसार के सभी लोगों को आर्य बनाना तुम्हारा परम धर्म है ?

छात्रा—महात्माजी, अभी आप कहते थे कि वैदिक मानव को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव बनाने का उपदेश देता है परन्तु अब आप कहते हैं कि वेद अन्य को आर्य बनाने का उपदेश करता है यह दोनों विरोधी बातें हैं। यदि ईसाई, इस्लाम आदि मतों ने भी अपने अनुयाइयों को यही उपदेश दिया है तो फिर वैदिक धर्म और उनमें अन्तर क्या रहा ?

महात्मा—अन्यों को आर्य बनाने का अर्थ वेद की दृष्टि में मानव को मानव ही बनाने से है। अच्छे, भले एवं श्रेष्ठ व्यक्ति को वेद ने आर्य माना है। वैदिक धर्मी ही आर्य होता है सो बात नहीं। कोई भी व्यक्ति जो सत्याचरण करता है वेद अथवा वैदिक धर्म की दृष्टि में वह पक्का आर्य है।

छात्रा—क्या आप वेद का कोई ऐसा प्रमाण दे सकेंगे जहां स्पष्ट रूप से मानव को मानव बनाने का आदेश दिया गया हो ?

महात्मा—ऋग्वेद मंडल १० सूत्र ५३।६ कहता है कि—

तन्तु तन्वन् रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्पतः पथो रक्षधिया कृतान्। अनुल्वणं वयम् जोगु वामयो मनुर्भव जनयादैव्यम् जनम्॥

अर्थात् हे यज्ञ करने वाले अथवा कर्मशील मनुष्यों जीवन रूपी यज्ञ का विस्तार करते हुए तुम सूर्य के प्रकाश का अनुसरण करो। बुद्धि द्वारा बनाये गये मार्गों की रक्षा करो और दिव्य गुण वाली जनता अथवा समाज को उत्पन्न करने की दृष्टि से स्वयं पहले मनुष्य बन अन्यों को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो।

छात्रा—महात्माजी, वर्तमान समय तो सर्वत्र ही यह नारा सुनाई दे रहा है कि इसाई बनो, मुसलमान बनो, सोशिलस्ट बनो, साम्यवादी बनो इत्यादि परन्तु वैदिक धर्म का नारा विचित्र ही है। अन्य नारों का तो कोई अर्थ भी है अथवा उनके पीछे कोई विचारधारा व लक्ष्य भी है परन्तु मानव बनो यह तो ऐसा नारा है कि इसे कोई व्यक्ति क्या समझ सकता है। यह तो एक अंधेरी कोठरी में जाने के समान है जहां कुछ भी दिखाई नहीं देता। सो कृपया बताने का कष्ट करें कि इस नारे के पीछे वेद ने मानव समाज का क्या हित देखा है ?

महात्मा—वेद का यह नारा वह नारा है जिससे मानव समाज की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी समस्याओं का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समाधान हो एक ऐसा समाज बन सकता है जहां अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, राग, द्वेष, शोषण आदि सभी सामाजिक बुराइयों की समाप्ति स्वत: हो स्वस्थ समाज का उदय हो जाएगा। फिर राजनीति में किसी वाद की आवश्यकता न रह किसी भी प्रकार का प्रशासन मानव समाज के लिए कल्याणकारी होगा और इसके विपरीत यदि मानव अपनी मानवता को छोड़ दानव बन जाए तो फिर कोई सामाजिक व्यवस्था तथा राजतंत्र को सुखी नहीं बना सकता है। इसलिए मानव को मानव बनाना ही राष्ट्र की सबसे बड़ी योजना रहनी चाहिए। दुर्भाग्यवश आज कुत्ते बिल्लियों की नस्लों को सुधारने की चिन्ता तो सरकार को है पर मानव को मानव बनाने की चिन्ता उसे नहीं है। अन्य मत-मतान्तर भी जनता को ईसाई, मुसलमान बनाने में जुटे हैं पर मानव को मानव बनाने की ओर उनका भी ध्यान नहीं है। यही कारण है कि आज सर्वत्र राग, द्वेष, अन्याय, अत्याचार, साम्प्रदायिक संघर्ष हो रहे हैं और मानव-मानव का शत्रु बन गया है। स्थिति यहां तक दयनीय बन गई है कि आज जंगली जानवरों के मध्य में रहने में व्यक्ति को आनंद अनुभव होता है पर मनुष्यों के मध्य रहते हुए उसे भय लगता है अत: जब तक राष्ट्र निर्माण में मानव निर्माण की उपेक्षा होगी तब तक समाज की यही अवस्था रहेगी।

छात्रा—मानव को मानव बनाने मात्र से मानव समाज की समस्त समस्याओं का समाधान हो जाएगा इसकी सिद्धि आप कैसे करते हैं ?

महात्मा—जिस प्रकार गणित का समूचा भवन इकाई एक पर खड़ा है। ईकाई के मूल्य की स्थिरता पर ही गणित के सभी ढांचे की सुरक्षा रहती है और इसके मूल्य व स्वरूप में अस्थिरता आते ही गणित के समस्त अंग प्रत्यांगों का लड़खड़ा जाना स्वाभाविक है उसी प्रकार मानव समाज की इकाई मानव है। मानव के उत्थान-पतन के साथ ही समाज का उठना-गिरना जुड़ा हुआ है। इसलिए मानव को मानव बनाने से समाज की समस्त समस्याओं का समाधान होना स्वाभाविक है।

छात्रा—क्या आपकी दृष्टि में अन्य मत-मतान्तर मानव को मानव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने का बिल्कुल प्रयत्न नहीं करते हैं ?

महात्मा—अवश्य करते हैं, परन्तु उनकी मानवता का रूप बड़ा ही संकीर्ण है। उन्होंने मानवता के अच्छे से अच्छे गुणों को भी अपनी सीमा ने ऐसा बांध दिया है कि उसका लाभ एक सीमित क्षेत्र तक ही रह जाता है। पर वैदिक धर्म मानव को मानवता के अतिरिक्त किसी बन्धन में नहीं बांधता है। इसकी मानवता किसी देश, जाति, धर्म के साथ बंधी न होकर समूचे विश्व के साथ जुड़ी होती है। प्राणी मात्र का कल्याण उसका लक्ष्य होता है।

छात्रा—वेद की दृष्टि में एक सच्चे मानव का वह स्वरूप क्या है जो अन्य मतों में नहीं है ?

महात्मा—वेद ने एक आदर्श मानव के गुणों की कल्पना इस प्रकार की है······

१—सत्य के ग्रहण करने और असत्य का त्याग करने के लिए मानव को सदैव उद्यत रहना चाहिए।

२—मानव को अपने सभी कार्य सत्य और असत्य का विचार कर ही करने चाहिए।

३—अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहकर उसको सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

४—संसार के समस्त मनुष्यों की पृथ्वी माता और ईश्वर पिता है। अतः सब भाई हैं। कर्म के आधार पर उनमें अच्छे-बुरे की पहचान होनी चाहिए। मत-मतान्तरों के आधार पर नहीं।

५—अज्ञान, अन्याय एवं अभाव ही मानव समाज के शत्रु हैं ऐसा उसे मानकर चलना चाहिए।

छात्रा—महात्माजी, क्या इन मानव गुणों को अन्य मत स्वीकार नहीं करते हैं ?

महात्मा—कदापि नहीं, यदि वे इन्हें स्वीकार कर लें तो उनका अस्तित्व ही संकट में पड़ जाए। कारण कि वे अपने धर्म की बातों में बुद्धि का दखल स्वीकार नहीं मानते हैं। खुदा की बातों में दखल देना उनके यहां पाप है। जब ऐसा है तो फिर सत्य को ग्रहण और असत्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को त्यागने के लिए सर्वदा उद्यत रहने की बात वहां कैसे स्वीकृत होगी। उनके यहाँ वही बात ग्रहण करने योग्य है जो उनके धर्म-ग्रन्थों में लिखी है अन्य नहीं।

छात्रा—महात्माजी, बौद्ध एवं जैन धर्म वाले भी मानवता का दावा करते हैं इसमें आपका क्या मत है?

महात्मा—बौद्ध एवं जैन मत वैदिक धर्म के ही अंग हैं। कुछ दार्शनिक मतभेद के कारण वे भिन्न हो गये हैं। उनके अधिकांश सिद्धान्त अपने हैं। अतः उन्हें वैदिक धर्मियों के समीपस्थ ही समझना चाहिए। नास्तिक होने के कारण ही दोनों धर्मों के साथ वैदिक धर्म का अलगाव हो गया है अन्यथा धर्म के अन्य तथ्य तो लगभग एक जैसे ही हैं।

छात्रा—साम्यवादी (कम्युनिस्ट) लोग तो पूर्णतः मानवतावादी हैं वह तो आपके मानवता के गुणों को मानते हैं इसमें आपका क्या मत है?

महात्मा—यह बात तो सत्य है कि साम्यवाद कुछ अंशों में मानवता में विश्वास रखता है और मानवता के कल्याण के लिए प्रयत्नशील भी है। पर उनकी मानवता भी अधूरी अथवा लंगड़ी है। उनकी मानवता में सबसे बड़ा दोष यह है कि वह मानव शरीर को ही मानव मानकर चलता है। मानव की आत्मा में उसे विश्वास ही नहीं है। मानव शरीर को ही मानव मानने से मानव का भौतिकवादी व भोगवादी बन जाना स्वाभाविक है। आध्यात्मवाद के अभाव में भौतिकवाद एवं भोगवाद व्यक्ति को मानवता की ओर नहीं बल्कि दानवता की ओर ले जाता है। स्वार्थ, असंतोष, असंयम, अन्याय, अत्याचार, राग-द्वेष आदि दोषों से फिर उसका बचन कठिन ही है।

दूसरा दोष साम्यवादी मानवता में यह है कि वह प्रजातंत्र में विश्वास नहीं रखता, विचारों की स्वतंत्रता तथा अपने विचारों के अनुसार संगठनों की रचना करना उसके यहां वर्जित है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति की स्थिति जेलखाने के कैदियों जैसी बन जाती है। दासता तथा मानवता एक दूसरे की विरोधी होती हैं। अतः साम्यवादी मानवता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंगड़ी है और दानवता की प्रेरक है। इसके अतिरिक्त साम्यवाद शक्ति में नहीं किन्तु बन्दूक की गोली से सब समस्याओं का हल मानता है।

छात्रा—क्या आपकी दृष्टि में रूस, चीन आदि देशों में मानव नहीं दानव रहते हैं ?

महात्मा—अभी वहां दानव नहीं हैं कल अवश्य बन जाऐंगे। आज वहां उनका जीवन पूर्णतः सरकार पर निर्भर है और कड़ा सैनिक प्रशासन है। परन्तु जिस दिन लोगों को स्वतंत्रता पूर्वक आचरण करने का अवसर मिलेगा उसी दिन वे दानवों का रूप धारण कर लेंगे। उनकी अवस्था उस समय पूंजीवादियों से भी निम्नतर हो जाएगी।

छात्रा—आपने मानवता के जिन गुणों का वर्णन किया है उसके अनुसार ईसाई धर्म अधिक मानवीय लगता है। उनके धर्म प्रचारक भारत, अफ्रीका आदि देशों में निर्धन एवं असहाय लोगों की अपने स्कूल, अस्पतालों इत्यादि के द्वारा जो सेवा कर रहे हैं क्या वह उनकी मानवीयता का प्रतीक नहीं है ?

महात्मा—ईसाई मिशनरियों का सेवा कार्य सराहनीय है पर उनका सेवा कार्य मानवता से प्रेरित न होकर स्वार्थ से प्रेरित है। उनकी सेवा का मुख्य लक्ष्य निर्धनों तथा असहायों की निर्धनता तथा पराधीनता का अनुचित लाभ उठा उन्हें अपने मत में लाना है। अतः यह सेवा मानवता की प्रतीक न हो स्वार्थपरता की प्रतीक है जैसे कि एक मछली पकड़ने वाला तालाब में रहने वाली मछलियों को आटे की गोलियां खिलाता है तो उसका यह कार्य सेवा की दृष्टि से नहीं अपितु मछलियों को अपने कांटे में फंसा उन्हें निगल जाने की दृष्टि से है। उसी प्रकार ईसाई मिशनरियों का सेवा कार्य है जिसके द्वारा ईसाई मिशनरियों ने संसार के अनेक लोगों को अपने जाल में फंसा लिया है।

मुख्य शिक्षक के संकेत करने पर महात्माजी को जब पता चला कि वह समय का अतिक्रमण कर गये हैं तो उन्होंने तुरन्त अपने प्रवचन को विराम दे दिया।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८

लक्ष्य की महानता

महात्माजी आज बड़ी ही प्रसन्न मुद्रा में सभा स्थल पर पधारे और बड़े ही मधुर स्वर से वेद पाठ कर वैदिक धर्म की विशेषताओं पर लगातार बहती गंगा को इस प्रकार प्रवाहित किया ......

बच्चों संसार के अन्य तथाकथित धर्मों से वैदिक धर्म की सबसे बड़ी व महती विशेषता यह है कि जहां अन्य धर्मों ने मानव को ईसाई, मुसलमान आदि बनने का उपदेश दिया है वहां वैदिक धर्म ने मानव जाति के कल्याणार्थ उपदेश देते हुए कहा है कि...

तन्त्रू न तन्वन रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मतः पथोरक्षधियाकृतान्।
अनत्वायं वयत जोगवामयो मनुर्भव जयता दैव्यम् जनम्॥

(ऋ० मंडल १० सूक्त ५३, म० ६)

अर्थात् हे कर्मशील मनुष्य जीवन यात्रा रूपी यज्ञ के तन्तुओं को तानते हुए तू आकाश के सूर्य का अनुसरण कर अर्थात् इसको आदर्श मानकर आचरण कर, बुद्धि पूर्वक बनाऐ मार्गों की रक्षा कर, स्वयं मनुष्य बन, और दिव्य गुणवती जनता को उत्पन्न कर।

इस वेदोपदेश से स्पष्ट है कि वैदिक धर्म ने मानव समाज को अन्य मत-मतान्तरों की भांति हिन्दू बनने का उपदेश न देकर केवल उसे मानव बनने और अन्यों को मानव का ही उपदेश दिया है। यही उपदेश इसकी महानता का प्रतीक है। यदि वैदिक धर्म की भांति अन्य मत-मतान्तर वाले भी अपनी संकीर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति को छोड़ मानव को मानव बनने का ही उपदेश दें तो संसार में सर्वत्र एकता,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम, भ्रातृत्व की भावना का उदय हो संसार एक परिवार के रूप में परिणित हो जाये और संसार से साम्प्रदायिक संघर्षों का सदैव के लिए लोप हो जाये, पर दुर्भाग्यवश अन्य मतावलम्बियों को मानव तथा मानव समाज से अधिक प्रिय अपना धर्म है। उनकी दृष्टि में मानव का हित नहीं अपितु अपने मजहब का हित है उसी के प्रचार व प्रसार को वे अपना परम धर्म मानते हैं। उनकी विचार शैली में संसार का कल्याण उसको ईसाई, मुसलमान आदि बनने में ही है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह मानवता को तिलांजलि दे छल, कपट, लोभ, भय आदि का सहारा ले संसार को ईसाई, मुसलमान आदि बनाने पर तुले हुए हैं।

धर्म और ईश्वर पर आक्षेप करने वाले नास्तिक भौतिकवादी व्यक्ति धर्म के नाम पर निरीह भोली जनता के लगातार कत्ले आम, लूट, बलात् धर्म परिवर्तन आदि का उदाहरण देते हुए ही इसे अफीम की संज्ञा दे इसका परित्याग करने को कहते हैं। धर्म के नाम पर उक्त विनाश लीला का एकमात्र कारण यही है कि तथाकथित धर्मों का लक्ष्य ही गलत है, और जब तक इस लक्ष्य में कोई सुधार नहीं होता तब तक धर्म के नाम पर हो रहे अन्याय व अत्याचार का कभी अन्त नहीं हो सकेगा।

वैदिक धर्म ही संसार में ऐसा धर्म है कि जिसके सम्मुख भौतिकवादी, नास्तिक एवं धर्म विरोधी व्यक्ति नत-मस्तक हो जाते हैं। मानव को मानव बनने व अन्यों को मानव बनाने वाले धर्म का विरोध वह किस आधार पर करें यह उनकी समझ से बाहर की वस्तु बन जाती है। यदि सौभाग्य से साम्यवाद के जन्मदाता कार्ल मार्क्स की दृष्टि में वैदिक धर्म का यह उपदेश आ जाता तो निश्चित रूप से वह धर्म के विरुद्ध इतना कठोर दृष्टिकोण न अपनाता। दुर्भाग्यवश उसकी दृष्टि उन्हीं तथाकथित धर्मों पर पड़ी जो अन्यों को येन केन प्राकारेण ईसाई, मुसलमान आदि बनाना ही अपना कर्तव्य मानते थे, और इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त अच्छे बुरे मार्ग अपनाने को सदैव तैयार रहते थे।

छात्रा—महात्माजी, क्या यह सत्य नहीं है कि वैदिक धर्म का यह नारा भी है अर्थात् कृण्वतोविश्वमार्यम् अर्थात संसार को आर्य बनाओ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हां तो फिर अन्य धर्मों की भांति वैदिक धर्म दोषी नहीं है कि वह सबको आर्य बनाने का उपदेश देता है ?

महात्मा—बच्ची, आर्य शब्द गुणवाचक है अर्थात् मानव गुणों को धारण करने वाले व्यक्ति का ही नाम आर्य है । आर्य अच्छे एवं भले व्यक्ति को कहते हैं फिर चाहे वह किसी भी देश, जाति, धर्म का ही क्यों न हो ।

इसलिए वैदिक धर्म के उक्त दोनों उपदेशों में मतभेद न होकर ऐक्य और समानता है, और दोनों एक दूसरे के पूरक हैं ।

छात्रा—ईसाई व मुसलमान शब्द भी इसी प्रकार गुणवाचक हैं आप उन्हें जातिवाचक कैसे समझते हैं ?

महात्मा—ईसाई व मुसलमान शब्द जातिवाचक हैं । उनकी दृष्टि में प्रभु, ईसा, बाईबिल, हजरत मुहम्मद तथा कुरान पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति ही ईसाई या मुसलमान हो सकते हैं अन्य नहीं । परन्तु वैदिक धर्म की दृष्टि में दिव्य मानवीय गुणों को धारण करने वाला प्रत्येक व्यक्ति मानव व आर्य होता है ।

छात्रा—क्या वेद को न मानने वाला व्यक्ति आर्य हो सकता है ?

महात्मा—वेद को कुरान बाईबिल की तुलना में रखकर आपने भूल की है । वैदिक धर्म की दृष्टि में सत्य ज्ञान का दूसरा नाम ही वेद है । सत्य ज्ञान अथवा सत्याचरण के बिना कोई व्यक्ति भला कैसे आर्य या मानव बन सकता है । वास्तव में सत्याचरण करने वाले व्यक्ति को ही आर्य कहते हैं । इसलिए वेद की उपेक्षा करने वाला व्यक्ति आर्य नहीं हो सकता ।

छात्रा—कुरान, बाईबिल, को मानने वाले भी तो उक्त ग्रन्थों को ईश्वरीय उपदेश मानकर सत्य ज्ञान की पुस्तक मानते हैं । यदि वेद की भांति वे लोग भी इन ग्रन्थों की मान्यता पर बल देते हैं तो आपको क्या आपत्ति है या आपमें और उनमें क्या भेद है ?

महात्मा—किसी के कथन मात्र से कोई ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक नहीं हो जाता हैं । बुद्धि, तर्क, अनुभव, विज्ञान आदि की कसौटी पर सत्य सिद्ध होने वाला ज्ञान ही सत्य ज्ञान होता है । इसी कसौटी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सत्य सिद्ध होने के कारण वेद ज्ञान सत्य ज्ञान है। पर बाईबिल, कुरान के मानने वाले अपने ग्रन्थों को पूर्वोक्त कसौटी पर कसने को तैयार नहीं हैं अपितु अंधविश्वास पर आधारित मान्यता के आधार पर उन्हें सत्य मानते हैं।

छात्रा—क्या संसार में वेद ही सत्य ज्ञान की पुस्तक है अन्य नहीं ?

महात्मा—भाई हमारे तात्पर्य को गलत समझने का प्रयत्न मत करो। हमारें कहने का तात्पर्य यह है कि सत्याचरण करने वाला व्यक्ति ही मानव या आर्य होता है। सत्य ज्ञान बाईबिल, कुरान आदि किसी भी पुस्तक में हो सकता है पर उसकी पहचान बुद्धि पूर्वक सत्य सिद्ध होना है। सत्य कहीं या किसी भी पुस्तक में क्यों न हो उसे अपनाने वाला व्यक्ति मानव होता है। इसलिए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दस नियमों में जहां वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना प्रत्येक आर्य के लिए अनिवार्य माना वहां एक नियम यह भी बनाया कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए प्रत्येक मानव को सदैव तत्पर रहना चाहिए। इससे स्पष्ट सिद्ध है कि महर्षि दयानन्द ने सत्याचरण को ही आर्यों का विशेष गुण माना है। सत्याचरण करने वाले सभी व्यक्ति वैदिक धर्म की दृष्टि में आर्य होते हैं, ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना ही वैदिक धर्म की मुख्य लक्ष्य है।

अन्य धर्मावलम्बियों का मुख्य उद्देश्य अन्धविश्वास के आधार पर एक विशेष जाति को जन्म देना है। वैदिक धर्म का लक्ष्य बुद्धिवाद एवं सत्याचरण के आधार पर मानव को मानव बनाना है। मानव बन जाने पर वह फिर चाहे किसी भी देश, वर्ग, जाति में रहे वह संसार के लिए कल्याणकारी मित्र ही बनकर रहेगा, शत्रु नहीं। सत्याचरण करने वाले व्यक्ति स्वतः उत्तम विचारों के कारण एक दूसरे के मित्र बन एकता के सूत्र में बंध जाऐंगे।

छात्रा—महात्माजी, वैदिक धर्म ने मानव को मानव बनाने पर ही क्यों बल दिया है ?

महात्मा—मानव समाज को सुखी, शान्त, उन्नतिशील बनाने के लिए यदि कोई सर्वोत्तम मार्ग है तो मानव को मानव बनाना है इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मार्ग को अपनाने पर ही उन्नति के अन्य मार्ग स्वतः खुलते चले जायेंगे और इस मार्ग को छोड़ अन्य मार्ग अपनाने पर भौतिक उन्नति व समृद्धि सम्भवतः मिल जाएगी, पर मानव समाज को सुख, शान्ति, एकता, भ्रातृत्व की भावना आदि की प्राप्ति न हो अन्याय, अत्याचार, संघर्ष, शोषण, अशान्ति, विनाश आदि की प्राप्ति होगी।

छात्रा—महात्माजी, आपने आज एक विचित्र वात कह दी कि मानव को मानव वना देने पर मानव समाज की समस्त समस्याओं का समाधान हो जायेगा। पर इसके सर्वथा विपरीत संसार के महान विचारक एवं साम्यवाद के जन्मदाता कार्ल मार्क्स की मान्यता यह है कि संसार की अशान्ति व बेचैनी का मूल कारण वर्ग-संघर्ष है। वर्ग संघर्ष का कारण आर्थिक विषमता है अर्थात् अर्थ ही समस्त बीमारियों की जड़ है। उनकी दृष्टि में गरीवी ही मानव को दानव अर्थात् चोर, डाकू आदि बना देती है। मानव को मानव वनाने के लिए आर्थिक निर्धनता दूर करना परमावश्यक है।

कार्ल मार्क्स की उपर्युक्त विचारधारा के सम्मुख आज संसार के सभी विचारक नत-मस्तक हैं। भारत के नेतागण भी आज अपनी नाक, कान, आँख वन्द करके उनका अनुकरण कर रहे हैं। स्थिति यह है कि इस विचारधारा के विपरीत बोलने वाले व्यक्ति को पिछड़ा हुआ संकीर्ण पूँजीवादी आदि कहकर समाज द्वारा उपेक्षित कर दिया जाता है। सन् ७१ में हुए लोक सभा के चुनाव में भी जनता ने अपनी इसी मनोवृत्ति को व्यक्त किया था फिर आपकी बात में क्या सत्यता है, और उसे सत्य सिद्ध करने के लिए आपके पास क्या युक्ति है?

महात्मा—बड़ा ही सुन्दर प्रश्न है यह बात सत्य है कि आज कार्ल मार्क्स की विचारधारा का संसार में बोलबाला है। पर इससे यह निष्कर्ष निकालना कि वही विचारधारा अन्तिम एवं सत्य है, अशुद्ध है। वच्चों, साम्यवादी विचारधारा के प्रभाव का कारण उसकी सत्यता नहीं अपितु पूँजीपतियों के अन्याय, अत्याचार व शोषण से उत्पन्न निर्धनता, आर्थिक विषमता, बेकारी आदि है।

यदि संसार में आर्थिक विषमता तथा निर्धनता ही संसार की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अशान्ति का कारण है। और निर्धनता ही मानव को दानव बना देती है तो इसका अर्थ यह हुआ कि जहां निर्धनता नहीं है या जो व्यक्ति निर्धन नहीं है वहां पर चोर, डाकुओं का निवास न होकर देवताओं का वास होना चाहिए, वहां कभी संघर्ष नहीं होता और धनी व्यक्ति चोर डाकू नहीं होते हैं, पर वस्तु स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। आर्थिक दृष्टि से समृद्धशाली रूस, अमरीका, इग्लैंड आदि देश ही आज संसार में संघर्षों व युद्धों के मूल कारण हैं, और पूंजीपति ही अन्यों की अपेक्षा अधिक शोषक व अन्यायकर्ता हो रहे हैं। स्वयं साम्यवादी लोगों की भी यही मान्यता है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि आर्थिक विषमता या निर्धनता ही संसार के समस्त संघर्षों व भृष्टाचार का कारण नहीं है अपितु इसके अतिरिक्त अन्य कारण भी हैं।

संसार में चल रहे वर्ग-संघर्ष, अन्याय, अत्याचार, भृष्टाचार आदि के मूल में जहां आर्थिक विषमता व निर्धनता आदि भौतिक कारण हैं वहां लोभ, असंतोष, मानसिक निर्धनता, अज्ञानता आदि आध्यात्मिक कारण भी हैं। भौतिक निर्धनता से मानसिक निर्धनता अधिक खतरनाक होती है। भौतिक निर्धनता को किसी प्रकार हटाया भी जा सकता है पर मानसिक निर्धनता की खाई इतनी गहरी होती है कि उसका भौतिक साधनों से पूरा करना सर्वथा असम्भव है।

लोभ, लालच, असन्तोष, एवं मानसिक निर्धनता को दूर करने का एकमात्र उपाय व्यक्ति की अज्ञानता को दूर कर उसमें दैवीय गुणों को उभारकर उसे दानव से मानव बनाना है। मानव बन जाने पर निर्धनता के रहते हुए भी मानव समाज संघर्षहीन एवं सुख-शान्त रह सकता है। जब मानव बन जाने पर व्यक्ति अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति देखने लगेगा तो फिर दूसरों के साथ अन्याय, अत्याचार, शोषण कर उन्हें निर्धन बनाने की भावना का ही लोप हो जाएगा। मानव को मानव बनाने के पीछे यही वैदिक धर्म का एक मात्र लक्ष्य है।

छात्रा—वैदिक धर्म भौतिक उन्नति एवं मानव निर्माण में से किसको अधिक महत्व देता है?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—वैदिक धर्म दोनों को ही मानव समाज की उन्नति के लिए आवश्यक मानता है, परन्तु जहां तक दोनों में से किसी एक को वरीयता देने का प्रश्न है वहाँ वैदिक धर्म मानव को मानव बनाने को अधिक महत्त्व देता है। कारण यह है कि अचेतन भौतिक साधनों की अपेक्षा उनका प्रयोग करने वाले चेतन मानव का अधिक महत्त्व है। भौतिक साधनों का सदुपयोग या दुरुपयोग उसके प्रयोग कर्ता पर ही निर्भर करता है। इसलिए साधन की अपेक्षा उसके प्रयोग कर्ता को ही महत्त्व देना हितकर व सत्य मार्ग है।

छात्रा—आपने अभी कहा है कि मानव को मानव बना देने पर मानव-समाज की सभी समस्याओं का स्वतः समाधान हो जायेगा इसे आप कैसे सिद्ध करेंगे ?

महात्मा—बच्चे, जिस प्रकार गणित के समूचे भवन का आधार इकाई होती है उसी प्रकार मानव समाज की इकाई मानव होता है। इकाई का मूल्य सुरक्षित रहने पर ही जिस प्रकार गणित का ढांचा सुरक्षित रहता है उसके लड़खड़ा जाने पर उसका लड़खड़ा जाना स्वाभाविक है ठीक उसी प्रकार मानव समाज की समस्त गतिविधियों का आधार मानव का मानव बना रहना है। जब तक मानव सत्य मार्ग पर चलता रहेगा तब तक समाज सभी दिशाओं में प्रगति करता रहेगा, और जब मानव सत्याचरण को छोड़ असत्य मार्ग पर चल पड़ेगा उसी क्षण समाज की सभी गतिविधियां लड़खड़ा जायेंगी। इस प्रकार समाज की समस्त गतिविधियां मानव के सत्याचरण अथवा चरित्र पर ही निर्भर करती हैं।

छात्रा—महात्माजी, अन्य धर्मावलम्बी भी व्यक्ति के सत्याचरण को ही मान्यता देते हैं। संसार में एक भी धर्म ऐसा नहीं जो व्यक्ति के सत्याचरण को महत्त्व न देता हो, तो फिर वैदिक धर्म और उनमें अन्तर कहाँ रह जाता है ? देखने में भले ही नारे अलग अलग हों पर लक्ष्य सभी का एक ही प्रतीत होता है ?

महात्मा—बच्चों, यह बात सत्य है कि अन्य धर्मावलम्बी भी व्यक्तियों के सत्याचरण पर बल देते हैं, पर उनके द्वारा मान्य सत्य की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिभाषा व कल्पना वही है जो उनके धर्म ग्रन्थों में लिखी है। उसके विपरीत न वह कह सकते हैं और न ही सोच सकते हैं। यदि वे ऐसा करें तो उन्हें काफिर व अधार्मिक घोषित कर दिया जाता है अर्थात् बुद्धि के प्रयोग की उनके यहाँ अनुमति नहीं है इसके सर्वथा विपरीत वैदिक धर्म ने बुद्धि तथा तर्क को प्रधानता दी है और विचार स्वातंत्र्य की पूर्ण छूट दी है। वैदिक धर्म बुद्धि, तर्क एवं अनुभव की कसौटी पर सत्य सिद्ध होने पर ही किसी बात को सत्य मानकर ग्रहण करता है।

अतः बुद्धि को तिलान्जलि देकर अन्धविश्वास पर आधारित मत-मतान्तर मानव को सत्याचरण पर लाकर उसे सही मानव बना सकेंगे इसमें संदेह है। मानवता की सबसे पहली पहिचान उसकी मानवशीलता ही है। मानवशीलताहीन व्यक्ति मनुष्य नहीं अपितु पशु समान होता है परन्तु अन्धविश्वासी मत-मतान्तर सबसे पहला कार्य यही करते हैं कि व्यक्ति की बुद्धि पर धार्मिक ताला लगाकर उसकी मननशीलता को ही कुंठित कर देते हैं। मननशीलता के समाप्त हो जाने पर मानव के मानव बने रहने की कल्पना करना अपने को धोखा देना है। ऐसे व्यक्ति से तो वह दानव अच्छा है जो अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है, पर असत्याचरण में अपनी बौद्धिक शक्ति लगाता है। बुद्धि का प्रयोग करने वाला व्यक्ति आज नहीं तो कल अवश्य ठोकरें खाकर सत्य मार्ग पर आ सकता है पर बुद्धि पर ताला लगाकर चलने वाला व्यक्ति यदि धर्म के नाम पर एक बार कुमार्ग पर चलना प्रारम्भ कर दे तो उसके पुनः सत्य मार्ग पर आने की आशा नहीं रहती है।

छात्रा—महात्माजी, मानव को मानव बनाने की बात कुछ समझ में नहीं आई। ईश्वर ने पशु, पक्षी, कीट, पतंग, मानव आदि को उत्पन्न किया है। उसने जिसको जैसा बनाया है वैसा ही रहेगा। जब भैंस, गाय, बकरी, तोता, कबूतर आदि को ईश्वर ने जैसा बनाया है उसी स्वरूप में चल रहे हैं, और उनके बनने बनाने का प्रश्न कभी नहीं उठा, फिर मानव को मानव बनाने का प्रश्न आपने कैसे उठा दिया। ईश्वर ने मानव को मानव रूप में उत्पन्न किया ही है। क्या आप उसके बनाए हुए स्वरूप में परिवर्तन कर सकने की सामर्थ्य रखते हैं? आपका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आचरण ईश्वर की रचना पर अविश्वास प्रकट कर उसकी योग्यता व क्षमता पर संदेह करना है। ईश्वर ने जिस प्राणी को जैसा बनाया है क्या उसमें परिवर्तन करने की दलील नास्तिकता का द्योतक नहीं है ?

महात्मा—आपने बड़ा ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया है। मानव को मानव बनाने की बात ईश्वर की रचना पर अविश्वास नहीं अपितु उसकी स्वीकृति मात्र है। भला ईश्वर की योग्यता पर कौन उंगली उठाने की सामर्थ्य रखता है। संसार के बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी उसके बनाये संसार व उसमें व्याप्त नियमों को ध्रुव सत्य मानकर ही उनके आधार पर अपना नया आविष्कार करते हैं। उन नियमों की उपेक्षा कर उनका एक पग भी आगे बढ़ना असम्भव है।

भाई पशु, पक्षी, कीट, पतंग तथा मानव को ईश्वर की समान रचना मानना ही आपकी भारी भूल है। ईश्वर ने समस्त प्राणियों को दो अलग-अलग श्रेणियों में उत्पन्न किया है। एक श्रेणी मानव जाति से इतर पशु-पक्षी आदि समस्त प्राणियों की है, और दूसरी श्रेणी मानव जाति की है। दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। मानव से इतर प्राणी भोग योनियाँ हैं, और उनकी संपूर्ण रचना ईश्वर उनकी माँ के गर्भ में करता है और उनके जीवन के संचालनार्थ जितना ज्ञान आवश्यक है उसे स्वाभाविक ज्ञान के रूप में उन्हें पैदा होने से पूर्व ही देकर भेजता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पशु-पक्षी आदि प्राणी मां के पेट में ही बनकर आते हैं माँ के पेट से बाहर उनके बनने बिगड़ने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

पर मानव प्राणी को ईश्वर ने भोग योनि के अतिरिक्त कर्म योनि प्रदान की है अर्थात् वह माँ के पेट में शरीर एवं कुछ संस्कार धारण कर उत्पन्न होता है। और माँ के पेट से बाहर ही उसका अधिकांश जीवन बनता बिगड़ता है। वह अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। वह कैसे उठे-बैठे, क्या खाये-पीये, क्या करे या न करे यह सब कुछ माँ के पेट से बाहर ही सीखता है। यही कारण है कि ईश्वर ने मानव को अपने जीवन निर्माण के निमित्त बुद्धि अथवा मननशीलता प्रदान की है। मननशीलता की विशेषता इसकी अपनी है। अन्य प्राणियों को ईश्वर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने यह गुण प्रदान नहीं किया है। यही कारण है कि अन्य प्राणियों को बनने बनाने का प्रश्न नहीं उठता है और मानव को मानव बनाने का प्रश्न ही उठाया जा सकता है सो ऐसा प्रश्न उठाना ईश्वरीय रचना के विरुद्ध नहीं अपितु अनुकूल ही है। हाँ ऐसा प्रश्न न उठाना ही ईश्वरीय रचना को स्वीकार न करना या उसके प्रति अपनी अज्ञानता को प्रकट करना है।

सूरत शक्ल में मानवीय रूप को धारण करने वाले प्राणी को मानव कहना व समझना भारी भूल है। मां के पेट से उत्पन्न प्राणी मानव को यदि शिक्षण देकर मानव न बनाया जाये तो उसमें और अन्य प्राणियों में कोई भेद ही नहीं रहे। खाने-पीने, सोने, बच्चे उत्पन्न करने आदि गुणों के अतिरिक्त वह कुछ और जान ही नहीं सकता। इन गुणों के कारण वह पशु समान ही होगा।

छात्रा—क्या आप कोई उदाहरण ऐसा दे सकते हैं जिससे यह समझा जा सके कि मानव जाति से इतर प्राणी माँ के पेट में ही बनकर आते हैं और मानव माँ के पेट से बाहर ही बनता है ?

महात्मा—एक नहीं अनेक प्रमाण हैं। जैसे यदि गाय, भैंस के बच्चे को तालाब में छोड़ दिया जाय तो वह तुरन्त तैरने लगता है, पर मानव को यदि तैरना न सिखाया जाय तो वह तालाब में पड़ते ही डूब जायेगा। अतः भैंस गाय आदि पशुओं को ईश्वर उनकी माँ के गर्भ में ही तैरने का गुण प्रदान करके उत्पन्न करता है, परन्तु मानव को ऐसा नहीं करता। इसके अतिरिक्त संसार का प्रत्येक प्राणी अपना भोजन स्वभाव से जानता है, परन्तु मानव को बुद्धि पूर्वक सोचना पड़ता है कि वह क्या खाये क्या न खाये। बीमार पड़ने पर पशु पक्षी आदि अपना इलाज स्वयं कर लेते हैं परन्तु मानव को अपनी बीमारी से मुक्त होने के लिए वैद्य या डाक्टर की सहायता लेनी पड़ती है। इन प्रमाणों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि अन्य पशु-पक्षी जहां माँ के गर्भ से ही बनकर आते हैं वहां मानव माँ के गर्भ तथा उसके बाहर दोनों जगह बनता है।

छात्रा—क्या आप बतला सकते हैं कि मानव और अन्य पशु-पक्षी प्राणियों में मननशीलता के अतिरिक्त और कोई भेद भी है ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—मानव में पशु-पक्षी आदि प्राणियों से अन्य कई विशेषताऐं हैं जिनके कारण मानव जाति प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ मानी गई है, मानव की यह विशेषताएें इस प्रकार हैं—

1. बुद्धि—मानव को ईश्वर ने अपना भला-बुरा, पाप-पुण्य आदि सोचने की बुद्धि दी है जबकि अन्य प्राणियों को नहीं दी हैं। उनका जीवन स्वाभाविक ज्ञान के सहारे ही चलता है।

२. परोपकार—पशु-पक्षी आदि प्राणियों में स्वार्थ की भावना प्रधान होती है जबकि मानव में स्वार्थ की भावना के अतिरिक्त निःस्वार्थ की भावना भी होती है। पशु-पक्षी केवल अपने तथा अपने परिवार की कुशलता तक सीमित रहते हैं, वहाँ मनुष्य अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति देखता है।

३. ज्ञान लेना और देना—पशु-पक्षी बहुधा स्वाभाविक ज्ञान के सहारे ही चलते हैं, परन्तु विशेष अवस्था में उन्हें विशेष शिक्षण देकर प्रशिक्षित भी किया जा सकता है, परन्तु उनकी क्षमता प्रशिक्षण प्राप्त करने तक ही रहती है। वह प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त अनुभव को अन्य प्राणियों व साथियों को देने में असमर्थ हैं जैसे—घोड़ा, हाथी, बन्दर, शेर आदि प्राणी सरकस में प्रशिक्षण प्राप्त कर बड़े चमत्कारपूर्ण कार्य करने में समर्थ हो जाते हैं, पर यदि उन्हें सरकस से हटाकर स्वतंत्र छोड़ दिया जाये तो वे अपने अन्य साथियों को वही प्रशिक्षण देने में सर्वथा असमर्थ रहते हैं। पर मनुष्य जहाँ शिक्षा प्राप्त करने की क्षमता रखता है वहाँ प्राप्त शिक्षा को अपने साथियों को देने की क्षमता भी रखता है।

४. कर्म स्वतंत्रता—मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है जबकि अन्य प्राणी कर्म करने में स्वतंत्र नहीं हैं।

५. सामाजिक प्राणी—मानव सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना इसकी प्रगति होना असम्भव है, परन्तु इसके विपरीत पशु-पक्षी एकांगी जीवन के आदी हैं। भय के कारण ही वे विवश हो समूह में रहते हैं अकेले रहकर भी वे अपना जीवन चला सकते हैं। पशुओं का बच्चा होते ही अपनी मां का दूध पीकर उसके साथ हो लेता है, और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ समय पश्चात् अपनी माँ का साथ भी छोड़ देता है, परन्तु मनुष्य जब पैदा होता है तो ऐसी दयनीय अवस्था में होता है कि उसकी सम्भाल करने वाले माता-पिता व अन्य कोई व्यक्ति न हो तो उसकी जीवन लीला पैदा होते ही समाप्त हो जाऐ।

छात्रा—महात्माजी, दानव और मानव में क्या अन्तर होता है ?

महात्मा—बेटी, दानव मानव से किसी इतर अन्य प्राणी का नाम नहीं होता है अपितु जिन मनुष्यों में पशुता के गुण प्रधान होते हैं उन्हीं को दानव कहा जा सकता है। मोटे अर्थों में स्वार्थी, भौतिकवादी एवं भोगवादी व्यक्तियों को वैदिक धर्म ने दानव, और परमार्थी अध्यात्मवादी एवं संयमी व्यक्तियों को मानव की संज्ञा दी है।

छात्र—महात्माजी, मानव को मानव बनाने का क्या प्रकार है ?

महात्मा—बस, बेटा आज बहुत समय हो गया इस विषय को कल लिया जाएगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९
मानव-निर्माता

आज सभास्थल पर माताओं का बड़ा भारी जमघट था। मानव निर्माण से सीधा सम्बन्ध होने के हेतु ही वह पुरुषों की अपेक्षा अधिक बेचैनी से महात्माजी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहीं हैं।

नित्य की भांति महात्माजी ने वेद मंत्र ज्ञान के साथ अपने विषय को उपस्थित करते हुए कहा—बच्चों, कल आपने प्रश्न किया था कि मानव को मानव बनाने का क्या प्रकार है ? इस प्रश्न का उत्तर संसार के समस्त धर्मों में यदि कोई देने की क्षमता रखता है तो वह केवल वैदिक धर्म ही है। वैदिक धर्म की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसने कोरा उपदेश ही नहीं दिया या मरने के पश्चात् सुन्दर स्वर्ग का स्वप्न दिखाकर मानव को उसके भाग्य पर सुखी-दुःखी होने को नहीं छोड़ दिया अपितु अपने उपदेशों के अनुसार मानव तथा मानव समाज को इसी जगत में सुखी बनाकर इस जगत को ही स्वर्ग बनाने का प्रयास किया है।

वैदिक धर्म ने मानव को मानव बनने का कोरा उपदेश न दे मानव को मानव बनाने की सम्पूर्ण कला को धर्म का अंग बनाया। इनकी दृष्टि में मानव समाज को सुखी बनाने के लिए उसके मूलभूत मानव को मानव बनाना अनिवार्य और प्रगति की पहली सीढ़ी है। इसीलिए वैदिक धर्म के प्रवर्तकों, ऋषि मुनियों ने मानव को समझाने तथा उसके निर्माण करने की कला को जानने के निमित्त अपने समस्त जीवन को पहाड़ों की कन्दराओं में व्यतीत कर दिया। उनके चिन्तन व मनन का मूलाधार था वेद ज्ञान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव-निर्माण के जिस ज्ञान को वैदिक धर्म ने सृष्टि के आदिकाल से देना आरम्भ किया उसे ही अब डाक्टर जानने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनके जानने व सीखने के निमित्त अभी भी अथाह ज्ञान वैदिक धर्म में भरा पड़ा है, परन्तु दुर्भाग्यवश इस देश का शासन जिन लोगों के हाथों में है उनकी अवस्था अपनी धर्म-संस्कृति में न हो विदेशों की धर्म-संस्कृति में है। दासता में शताब्दियों तक रहने के कारण यहाँ के लोगों की आस्था विदेशी शिक्षा में है।

छात्रा—महात्माजी क्षमा कीजिऐगा क्या संसार के लगभग सभी धर्मों ने मानव को भला मनुष्य बनने का उपदेश नहीं दिया है? यदि ह्यां तो फिर आप यह कैसे दावा करते हैं कि अकेले वैदिक धर्म ने ही संसार को मानव निर्माण के लिए प्रेरित किया?

महात्मा—वच्ची, मेरी वात को धैर्य से समझने का प्रयत्न करो। अन्य धर्मों ने भी मानव को भला वनने का उपदेश दिया हैं। पर उनके भलेपन की भी एक विशेष परिभाषा व परिधि है अर्थात् उनका अच्छापन या भलापन अपने ही वर्ग तक सीमित है और विशेष पुस्तक एव धर्म गुरू को स्वीकार न करने पर उनकी दृष्टि में वह अच्छापन भी समाप्त हो जाता है और वह व्यक्ति उनकी दृष्टि में भला व्यक्ति न रहकर एक काफिर व नास्तिक वन जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य धर्म जहां मानव को भला व्यक्ति वनने के निमित्त उपदेश देने तक ही सीमित रहे हैं। वहां वैदिक धर्म ने अपने उपदेशों के अनुसार संसार में भले व्यक्ति उत्पन्न करने की विशेष योजना व ज्ञान को प्रस्तुत किया है, जिसकी अन्य धर्म कल्पना तक करने में असमर्थ रहे हैं।

छात्रा—मानव-निर्माण की वह कला क्या है जिसपर आपको इतना गर्व है?

महात्मा—वैदिक धर्म ने मानव-निर्माण की उस कला को संस्कारों की संज्ञा दी है। संस्कार सोलह हैं और यही सोलह संस्कार वैदिक धर्मियों के जीवन का मूलाधार हैं। गर्भाधान से मृत्यु-पर्यन्त जीवनका कोई अंग ऐसा नहीं जिसका मार्ग-दर्शन इन संस्कारों द्वारा न होता हो। इन संस्कारों को वैदिक धर्म ने महत्त्व देते हुए कहा है कि संस्कारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
व्यक्ति ही आर्य कहा जा सकता है और संस्कार विहीन मनुष्य शूद्र होता है।

छात्रा—संस्कारी तथा संसार विहीन मनुष्य में क्या अन्तर होता है?

महात्मा—संस्कारी व्यक्ति का जीवन विशेष लक्ष्य (वर्ण) से बंधा, संयमी नियमित द्विजन्मा, नित्य संध्या, वंदन, यज्ञ आदि करने वाला होता है। और संस्कार विहान जीवन लक्ष्यहीन तथा अनियमित होता है। जीवन की लक्ष्यहीनता तथा अनियमितता मानवीय गुणों के सर्वथा विपरीत है।

छात्रा—महात्माजी, संस्कारी जीवन द्विजन्मा होता है इससे आपका क्या तात्पर्य है?

महात्मा—द्विजन्मा होना मानव विशेष गुण है जो पशु का पक्षियों में नहीं होता है। इसका भाव यह है कि पशु पक्षियों का केवल एक जन्म माँ के पेट से होता है परन्तु मनुष्य के दो जन्म होते हैं, एक जन्म माँ के उदर से तथा दूसरा जन्म गुरुओं द्वारा शिक्षा-दीक्षा प्राप्त होने पर। वैदिक धर्म की दृष्टि में जिस व्यक्ति ने केवल मां के पेट से जन्म प्राप्त किया है और विधिवत् गुरुकुल या शिक्षणालय में शिक्षा प्राप्त नहीं की है वह पशु समान ही है। वैदिक धर्म ने मानव की पशुता को दूर कर उसमें मानवीय गुणों को जाग्रत करने की दृष्टि से वेदारम्भ तथा उपनयन संस्कार को बड़ा ही महत्त्व दिया है। वास्तव में बालक गुरु के चरणों में ही मानव बनता है।

छात्रा—वर्तमान समय स्कूलों कालेजों में भी तो यही कार्य होता है फिर इसमें आपके वैदिक धर्म की ही कौन सी विशेषता है?

महात्मा—बच्ची, आपने बड़ा सुन्दर प्रश्न किया है वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा वैदिक शिक्षा प्रणाली में यही महान अन्तर है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानव की बौद्धिक शक्ति का विकास कर उसे अच्छा डाक्टर, इन्जीनियर, प्राध्यापक, एडवोकेट आदि बनाती है परन्तु इसमें मानवीय गुणों के विकास करने का कोई स्थान नहीं है। मानवीय गुण अर्थात् सत्य, सदाचार, दया, क्षमा, परोपकार, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरिग्रह आदि बुद्धि में नहीं अपितु आत्मा में निवास करते हैं। वर्तमान शिक्षा-पद्धति में एक भी विषय ऐसा नहीं उपर्युक्त आत्मिक गुणों का विकास करने वाला हो। इसके विपरीत वैदिक धर्म का विश्वास है कि आत्मिक विकास की उपेक्षा कर यदि अकेले बौद्धिक विकास पर बल दिया जायेगा तो वह व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए खतरे का कारण होगा। कारण यह है कि यदि आत्मिक विकास द्वारा मनुष्य की आसुरी प्रवृतियों को न दबाया गया तो बुद्धि की शक्ति का सहारा पा आसुरी शक्तियां उसे मानव के स्थान पर दानव बना देंगी। वैदिक धर्म ने इसके लिऐ बड़ा सुन्दर उपदेश दिया है—साक्षरी विपरीता राक्षसा भवन्ति ॥

अर्थात् साक्षर व्यक्ति यदि विपरीत दिशा में चल पड़े तो वह राक्षस बन जाता है। भारतीय इतिहास में वेदों का प्रकाण्ड विद्वान रावण इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

वैदिक शिक्षा-पद्धति में व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, व आत्मिक विकास को समान रूप से महत्व दिया गया है। और मनुष्य के चारित्रिक तथा आत्मिक विकास को जीवन की आधार शिला मान इसे शिक्षा का अनिवार्य तथा प्रथम अंग माना है। इसकी दृष्टि में आध्यात्मिक शिक्षा के बिना मानव को मानव बनाना सर्वथा असम्भव है।

छात्रा—महात्माजी, आपने कहा था कि वैदिक धर्म ने मनुष्य को सच्चा मानव बनाने के निमित्त सोलह संस्कारों का निर्माण किया हैं, वह संस्कार कौने से हैं ?

महात्मा—वैदिक धर्म द्वारा मान्य सोलह संस्कार इस प्रकार हैं—

१. गर्भाधानम्

२. प्रसवनम्

३. सामन्तोमयनम्

४. जात कर्म संस्कार

५. नामकरणम्

६. निष्क्रमण संस्कार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. अनाप्राशन संस्कार
८. चूड़ा कर्म संस्कार
९. कर्णवेध संस्कार
१०. उपनयन संस्कार
११. वेदारम्भ संस्कार
१२. समावर्तन संस्कार
१३. विवाह संस्कार
१४. वानप्रस्थायम् संस्कार
१५. सन्यासाश्रम संस्कार
१६. अन्त्येष्टि कर्म विधि

छात्रा—महात्माजी, क्या आप इन संस्कारों पर प्रकाश डालने की कृपा करेंगे ?

महात्मा—वेटी, इस थोड़े से समय में १६ संस्कारों पर प्रकाश डालना संभव नहीं है। दूसरे इन पर प्रकाश डालना हमारे विषय से सीधा सम्बन्धित नहीं है। हमारा उद्देश्य इतना है कि वैदिक धर्म की विशेषता की ओर संकेत कर दें। इन पर प्रकाश डालने का समय तब होगा जब वैदिक धर्म की विस्तृत व्याख्या की जाएगी। अर्थात् वैदिक धर्म क्या है ? इस विषय पर प्रवचन होंगे। हाँ, सार रूप में एक दो संस्कारों का परिचय दिया जा सकता है जो इस प्रकार है......

१. विवाह संस्कार—मानव-निर्माण का मूलाधार माता-पिता होते हैं यदि माता-पिता का मिलन ही अर्थात् विवाह ही दोषपूर्ण हो तो फिर अच्छी सन्तान पैदा होने की आशा करना ही व्यर्थ है। जिस प्रकार प्रत्येक कृषि विशेषज्ञ जानता है कि अमुक खेत में अमुक खेती ही अच्छी हो सकती है उसी प्रकार विशेष गुण, कर्म स्वभाव की महिला के साथ विशेष गुण, कर्म, स्वभाव के व्यक्ति का मिलन होने से ही उत्तम संतान प्राप्त हो सकती है। ऐसी वैदिक धर्म की मान्यता है इसी कारण अन्य धर्मों की भांति वैदिक धर्म ने विवाह के लिए स्त्री पुरुषों के आपसी चुनाव के लिए ऐसे प्रतिबन्ध लगाये हैं। अन्य धर्मों की भांति इसने यह छूट नहीं दी कि अपने सगे भाई बहन को छोड़कर किसी के साथ वैवा-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिक सम्बन्ध जोड़ लो । वैदिक धर्म ने उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए नीचे लिखी बातों को अनिवार्य माना है—

1. अनुकूल गुण, कर्म व स्वभाव के युवक-युवतियों को ही एक दूसरे के साथ विवाह करना चाहिए।

2. कन्या माता के कुल की छः पीढ़ियों की न हो और पिता के गोत्र का न हो।

3. जो कुल सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन से विमुख, शरीर पर वड़े-बड़े लोभ अथवा ववाशीर, क्षय, खांसी, अजीर्ण, मिरगी, श्वेत कुष्ठ गलितकुष्ठयुक्त हों उन कुलों की कन्या व वर के साथ विवाह न होना चाहिए।

4. 16 वर्ष से लेकर चौवीसवें वर्ष तक कन्या और पच्चीस वर्ष से 48 वर्ष तक पुरुष का विवाह हाना चाहिये।

वैदिक धर्म द्वारा विवाह के लिए निर्धारित वातों की सत्यता को आज वैज्ञानिकों ने स्वीकार कर लिया है और इसके सहारे कुत्ता, मुर्गा, वैल, गाय आदि की उत्तम नस्ल तैयार करने में वह सफल भी हो गये हैं परन्तु दुर्भाग्यवश आज मनुष्य की अच्छी नस्ल की प्राप्ति के निमित्त इन्हीं सच्चाइयों को अपने ऊपर लागू करने को उद्यत नहीं हैं और वह पूर्वोक्त परंपराओं को तोड़कर मनमाना वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने में गौरव अनुभव कर रहा है।

विवाह के सम्बन्ध में वैदिक धर्म तथा अन्य मत-मतान्तरों में सवसे बड़ा व महान अन्तर यही है कि जहां अन्य मतावलम्वी स्त्री को शारारिक सुख की वस्तु मान उसके रूप रंग को देख उसके साथ मनमाना सम्वन्ध स्थापित करने के पक्षापाती हैं वहां वैदिक धर्म शारारिक सुख अथवा भोग-विलास की दृष्टि से नहीं अपितु उत्तम संतान प्राप्ति की दृष्टि से ही विवाह करने को मान्यता देता है। यही कारण है कि वैदिक विवाह अटूट होता है जव कि रूप-रंग तथा भोग-विलास पर आधारित विवाह शारीरिक रूप-रंग का अस्थिरता के कारण अस्थिर होते हैं।

छात्रा—यदि वैदिक धर्म द्वारा वतलाये सिद्धान्तों अथवा नियमों को न मानकर विवाह किया जाय तो क्या हानि होगी ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—बच्चा, वैदिक धर्म द्वारा बताये मार्ग की उपेक्षा कर विवाह करने पर उत्तम संतान की आशा नहीं करनी चाहिए। उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए उक्त मार्ग ही उत्तम व वैज्ञानिक है। स्वयं वैज्ञानिक वर्ग इस मार्ग को स्वीकार कर चुकीहै। और पशु-पक्षियों पर इसका प्रयोग कर इसे सत्य सिद्ध कर चुका है।

छात्रा—कन्या और वर की क्रमशः 16 और 25 की आयु ही विवाह के लिए निश्चित करने में क्या रहस्य है, और इसका उत्तम संतान से क्या सम्वन्ध है ?

महात्मा—उत्तम संतान की प्राप्ति की दृष्टि से ही वैदिक धर्म ने विवाह के निमित्त इस न्यूनतम आयु को निर्धारित किया है। वैदिक धर्म ने ऐसा करते हुए इसका यह कारण उपस्थित किया है—

पंचविशे ततो वर्षे पुमान्नारी तु षोडसे ।
सामत्वागतवार्यौं तौ जानीयात् कुशलोभिषक् ॥
(सुश्रुते सूत्रस्थाने अ० ३५)

अनषोडसवर्षायाम् प्राप्तः पंचविंशतिम् ।
यद्याधते पुमान गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥
जातो वा न चिरं जीवेज्जावेन्द्रा दुर्बलेन्द्रियः ।
तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानम् न कारयेत् ॥
(सुश्रुते शारीरस्थाने अ०)

अर्थात् जितनी सामर्थ्य 25 वे वर्ष में पुरुष के शरीर में होती है उतनी ही सामर्थ्य 16 वर्ष में कन्या के शरीर में हो जाता है। इसलिए पूर्वोक्त अवस्था में दोनों को समान सामर्थ्य वाले जानें। सोलह वर्ष से न्यून अवस्था की स्त्री में पच्चीस वर्ष से कम आयु का पुरुष यदि गर्भाधान करता है तो वह गर्भ उदर में ही बिगड़ जाता है और यदि उत्पन्न भी हो तो अधिक दिन नहीं अथवा कदाचित जीवे भी तो उसका शरीर अत्यन्त दुर्बल और इन्द्रियां निर्बल होती हैं। इसलिए 16 वर्ष से कम आयु की स्त्री और 25 वर्ष से कम आयु के पुरुष को कभी गर्भाधान नहीं करना चाहिए, आगे सुश्रुत में लिखा है—

चतसो अवस्था शरीरस्य वृद्धिर्योवनम् संपूर्णतार्किचित्परिहा-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

णिश्चेति ।

आशोडशाद्वृद्धि राचतुर्विशतेयौवनमाचत्वारिंशत: सम्पूर्णता ततः किंचित्परिहाणिश्चेति ।।

अर्थात् सोलहवें वर्ष से आगे मनुष्य के शरीर में सब धातुओं की वृद्धि और पच्चीसवें वर्ष से युवावस्था का आरम्भ, चालीसवें वर्ष में 'युवावस्था की पूर्णता अर्थात् सब धातुओं की पूर्ण पुष्टि और उससे आगे किंचित धातु की क्षति होती है इससे सिद्ध होता है कि शीघ्र विवाह करना चाहें तो कन्या न्यून से न्यून सोलह वर्ष की और पुरुष पच्चीस वर्ष का अवश्य होना चाहिए। मध्यम मय कन्या का 20 वर्ष और पुरुष चालीस वर्ष और उत्तम समय कन्या का 24 वर्ष और पुरुष की 48 वर्ष पर्यन्त का है।

2—।। गर्भाधान ।।

वर्तमान की भांति गर्भाधान को आकस्मिक घटना न मान वैदिक धर्म ने इसे बड़ा ही महत्त्वपूर्ण धार्मिक कृत्य माना है। स्त्री पुरुष दोनों ही पूर्व से इसकी तैयारियाँ करते हैं अर्थात् शारीरिक दृष्टि से अपने को पूर्ण स्वस्थ बनाते हैं, और अपने खान-पान को ऐसा व्यवस्थित करते हैं ताकि इच्छित आदर्श संतान के निमित्त दोनों के स्वस्थ वीर्य रज का निर्माण हो सके।

वैदिक धर्म में अन्य संस्कारों की भाँति इसको भी बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है अर्थात् स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर यज्ञ करते हैं, अपने बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं, और घर में स्त्रियां मिलकर गान करती हैं वृहदरण्यक उपनिषद् में तो गर्भाधान क्रिया महत्व बताते हुए इसे यज्ञ रूप कहा है अर्थात्—

मनुस्मृति अ० 31 श्लोक 45-50 में संतान प्राप्ति के इच्छुक स्त्री पुरुष को अन्य निर्देश देते हुए कहा गया है कि जो दम्पति पुत्र की इच्छा रखते है वह मासिक धर्म की समाप्ति के पश्चात छठी, आठवीं, दशवीं, बारहवीं, चौदहवीं तथा सोलहवीं रात्रि को गर्भाधान करें और जो कन्या रत्न के इच्छुक हों वे पांचवीं, सातवीं, नवीं और पन्द्रहवीं रात्रि को गर्भाधान करें। पुरुष के अधिक वीर्य होने पर पुत्र और स्त्री के आर्तव अधिक होने से कन्या, तुल्य होने से नपुंसक पुरुष व वन्ध्या स्त्री उत्पन्न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है। इससे स्पष्ट प्रकट है कि वैदिक धर्म ने संतानोत्पत्ति का बड़ी गहराई से अध्ययन किया है।

गर्भाधान का वैदिक धर्म की दृष्टि में क्या महत्त्व है इसे यदि किसी को जानना है तो उसे आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित संस्कार विधि का अध्ययन करना योग्य है। यहां तो समयाभाव से संकेत मात्र किया गया है।

3. पुंसवनम्—4. सामन्तोनयनम्

वैदिक धर्म का विश्वास है कि जिस प्रकार पृथ्वी माता अपने गर्भ में लोहा, तांबा, कोयला, हीरा आदि जिस धातु को बना देती है फिर उसमें परिवर्तन करना वैज्ञानिकों के लिए भी कठिन होता है, उसी प्रकार एक माता अपने गर्भ में एक बच्चे को सात्विक, राजसिक, तामसिक, आदि जो भी संस्कार देकर जैसा बना देगी फिर उसके बदलने का कार्य बड़ा दुष्कर बन जाता है।

वैदिक धर्म की मान्यता है कि गर्भावस्था में माता के प्रत्येक आचरण का प्रभाव उसके गर्भस्थ बच्चे पर पड़ता है अर्थात् उसके खाने-पीने, रहने, सोचने, देखने, करने इत्यादि सभी का प्रभाव बच्चे पर होता है। इसीलिए वैदिक धर्म का आदेश है कि गर्भवती माता को बड़े ही सुन्दर एवं सुखद स्थान पर प्रत्येक प्रकार से सुखी रखना चाहिए, वह अपने बच्चे को ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य जैसा बनाना चाहती है उसी के अनुकूल उसका खान-पान, रहन-सहन, लिखना, पढ़ना आदि होना चाहिए। उसके निवास स्थान की दीवारों पर उसी प्रकार के चित्र टंगे रहने चाहिए।

उपरोक्त भावनाओं को ही पूर्त रूप देने के निमित पुंसवनम् व सामान्तोनयनम् आदि संस्कारों को किया जाता है।

शेष संस्कार

बच्चे के उत्पन्न होने से लगाकर उसकी मृत्यु पर्यंन्त वैदिक धर्म ने उसके जीवन के प्रत्येक भाग को सही मानवीय दिशा देने के निमित्त विभिन्न संस्कारों को प्रस्तुत किया है अर्थात् बच्चा क्या खाये, उसका नाम क्या हो, उसका अध्ययन कब और कैसा हो, उसके जीवन का लक्ष्य क्या हो,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयु के विभिन्न भागों में उसका मुख्य कर्तव्य क्या हो, उसको मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो आदि सभी बातों का उत्तर उक्त संस्कारों द्वारा मानव को मिलता है।

छात्र—महात्माजी, बहुधा विधर्मी लोग हमारे अन्त्येष्टि संस्कार की आलोचना करते हैं कि हिन्दू लोग अपने मर्दों को कुत्ता-बिल्लियों की भांति जलाकर बद्री, बेहरमी व जंगलीपन को प्रकट करते हैं सो इसमें क्या रहस्य है ?

महात्मा—बच्चों, वैदिक धर्म अन्त्येष्टि संस्कार भी अपना विचित्र ही महत्व रखता है इसके महत्त्व को आज इंग्लैण्ड, अमरीका तक की सरकारों ने अनुभव कर मुर्दों को गाड़ने के स्थान पर जलाने की व्यवस्था की है और इसके लिए जनता को प्रोत्साहित कर रही है। अनेक इसाइयों ने मरने से पूर्व अपनी वसीयत से अपने शरीर को गाड़ने के स्थान पर जलाने की इच्छा प्रकट की है।

मृत्यु के पश्चात् शरीर को गाड़ने और जलाने का रहस्य यह है कि कुछ मत-मतान्तर यह मानते हैं कयामत के बाद फैसले के दिन सभी मुर्दे सशरीर कब्रों से उठेंगे और ईश्वर के दरबार में अपने कर्मों का फैसला सुनेंगे। इसलिए वे उनके शरीर को जलाना पाप मानते हैं, परन्तु इसके विपरीत वैदिक धर्म मानता है कि मृत्यु के पश्चात् शरीर मिट्टी के समान होता है, और भौतिक पंच तत्वों अर्थात् वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि, आकाश में मिल जाता है और आत्मा दूसरा शरीर पाकर पुनर्जन्म ले लेती है।

मृत्यु के पश्चात् नाशवान् शरीर के लिए तीन गज जमीन घेरना बुद्धिमत्ता नहीं अज्ञानता है, आज संसार में करोड़ों एकड़ भूमि कब्रों में घिरी हुई है। यदि उस पर खेती की जाए तो जनता का बड़ा हित हो, इसी रहस्य को वैदिक धर्म ने अनुभव कर मृत शरीर को जलाने की प्रथा अपनाई।

छात्रा—महात्माजी, क्या अन्य धर्मों में मानव-निर्माण के निमित्त उपर्युक्त उपदेश नहीं दिये गये हैं ?

महात्मा—अन्य मत-मतान्तरों में सभी उपदेश तो नहीं परन्तु कुछ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रा—महात्माजी, क्या अन्य धर्मों में मानव निर्माण के निमित्त उपर्युक्त उपदेश नहीं दिये गये हैं ?

महात्मा—अन्य मत-मतान्तरों में सभी उपदेश तो नहीं परन्तु कुछ उपदेश दिये गए हैं, परन्तु पूर्वोक्त उपदेशों को धार्मिक कृत्य का रूप दे उन्हें धर्म का अनिवार्य अंग नहीं बनाया गया है। उन्होंने इसे जनता की इच्छा पर छोड़ दिया है कि वह उद्देशों को माने या न माने परन्तु वैदिक धर्म ने संस्कारों को जीवन के लिए अनिवार्य माना है। संस्कार विहीन व्यक्ति को वैदिक धर्म ने शूद्रवत माना है उसका समाज में कोई आदर नहीं होता है।

छात्र—महात्माजी,

महात्मा—बच्चे अब समय हो गया।

॥ ओ३म् शम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०
सच्चा मार्ग-प्रदर्शक

आज रविवार स्कूल की छुट्टी का दिन है फिर भी विद्यार्थियों के आग्रह पर महात्मा जी को प्रवचन के लिए आना पड़ा। एक दिन था जब विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में उपस्थित करना कठिन था, और आज सर्वथा विपरीत विद्यार्थीगण प्रार्थना सभा को अपनी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण एवं मनोरंजक अंग मानने हैं। यही कारण है कि अपने अवकाश के दिन भी उन्होंने महात्मा जी को प्रवचन देने के लिए विवश किया। सबसे बड़ी प्रसन्नता की वात तो यह है कि स्कूल का नास्तिक अध्यापक जो महात्मा जी के भाषणों का वड़ा विरोधी था आज सबसे अधिक भक्त बना है उसी की प्रेरणा पर विद्यार्थियों ने महात्मा जी को आज आने को बाध्य किया।

महात्मा जी ने बिना किसी भूमिका के अपनी विचार सारिणी को इस प्रकार गति दी.........

वच्चों, वैदिक धर्म रत्नों की खान है। इसका प्रत्येक अंग अपनी निराली विशेषता रखता है। यों तो सभी धर्म किन्हीं बातों में एक दूसरे से भिन्न होने के कारण अपनी विशेषता रखते हैं, परन्तु उस भिन्नता की विशेषता कहना भारी भूल है। इसलिए किसी धर्म के उसी गुण को विशेषता की संज्ञा दी जा सकती है जो मानव जाति को कल्याण की दिशा में ले जाने के लिए अन्यों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हो। या तर्क संगत होने में अपनी विशेषता रखता हो, और साथ ही वह विशेषता किसी एक देश, जाति व समय की सीमा में न बंधकर समूचे मानव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत के कल्याणार्थ सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक हो। इसी आधार पर वैदिक धर्म अपनी विशेषता रखता है।

मानव-निर्माण की दिशा में वैदिक धर्म अपनी क्या विशेषता रखता है इस पर गत प्रवचन में आंशिक प्रकाश डाला गया था। आज मानव जीवन को वैदिक धर्म की एक विशेष देन "आश्रम व्यवस्था" पर प्रकाश डाला जायेगा।

सभी तथाकथित धर्मों ने मानव को सुखी बनाने के लिए मार्ग-दर्शन करने का प्रयास किया है परन्तु उनका प्रयास अधूरा है। मानव जीवन के कई पड़ाव ऐसे आते हैं जहां अन्य धर्म उसका मार्ग दर्शन करने में असमर्थ रह जाते हैं। जैसे बुढ़ापे में जव शारीरिक दृष्टि से व्यक्ति असमर्थ हो जाता है, मनुष्य क्या करे ताकि वह अपने को सुखी वनाता हुआ समाज के ऊपर वोझ न बनकर उसके लिए हितकर सिद्ध हो सके।

संसार में सर्वत्र ही नौकरी से रिटायर्ड व्यक्तियों के सम्मुख एक ही प्रश्न रहता है कि वह इस अवस्था में क्या करें। बहुधा निराशा व अकर्मण्यता की स्थिति में उनका स्वास्थ्य चौपट हो उनका शेष जीवन नारकीय बन जाता है। अन्य मत-मतान्तरों ने ऐसे व्यक्तियों को केवल एक ही उपदेश किया है कि वे अपने जीवन को ईश्वर भक्ति में लगा दें, परन्तु ईश्वर भक्ति की भी कोई सीमा होती है, और प्रत्येक व्यक्ति का मन ईश्वर भक्ति में लगना कठिन है।

वैदिक धर्म ने केवल वृद्धों के लिए ही नहीं अपितु जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जीवन के प्रत्येक अंग का बड़ी ही पूर्ण और योग्यता से मार्ग दर्शन किया है। इसके मार्ग प्रदर्शन की विशेषता यह है कि इसका अनुसरण करने वाले व्यक्ति को अधिकतम सुख व आनन्द प्राप्त होता है, और व्यक्ति मृत्यु के समीप आने पर घबड़ाता नहीं अपितु हर्षित होता है। वैदिक धर्म ने अपने उस मार्ग प्रदर्शन को आश्रम व्यवस्था का नाम दिया है। आश्रम व्यवस्था के नीचे लिखे चार अंग हैं—

१- ब्रह्मचर्य आश्रम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२- गृहस्थ आश्रम
३- वानप्रस्थ आश्रम
४- सन्यास आश्रम

मानव जीवन को सौ वर्ष का मान कर उसके चार विभाग कर प्रत्येक भाग अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा सन्यासाश्रम के व्यक्तियों को निर्धारित कर दिया गया है।

छात्रा—महात्मा इसमें वैदिक धर्म की क्या विशेषता है जीवन को मनमाना सौ वर्ष मानकर चार काल्पनिक भागों में बांट मनमाने कर्तव्य बेचारे व्यक्ति पर थोप दिये गए हैं आपकी इस आश्रम व्यवस्था के पीछे वैज्ञानिक विशेषता क्या है ?

महात्मा—वैदिक धर्म ने मनमाने नहीं अपितु वैज्ञानिक आधार पर इस व्यवस्था को स्थापित किया है। १०० वर्ष के मानवीय जीवन की कल्पना नहीं अपितु यह भारत की औसत आयु रही है। रूस अमरीका आदि देशों में आज भी आयु का यही औसत है। भारत के ग्रन्थों में चार सौ वर्ष की आयु वाले अनेक मनुष्यों के वर्णन हैं। रूस में १५० वर्ष के व्यक्ति आज भी उपस्थित हैं। परन्तु आयु के कम या अधिक होने से आश्रम व्यवस्था में कोई दोष नहीं आता है आयु कम होने से व्यक्ति को उसी के अनुसार आश्रमों के कर्तव्य समझ लेने चाहिए।

जहां आश्रम व्यवस्था की वैज्ञानिकता का प्रश्न है सो इसे आज के मनोवैज्ञानिक तथा विद्वानों ने तर्क संगत मान इसकी प्रशंसा की है और विभिन्न सरकारों ने इसी के अनुसार अपने नियमों को आयोजित किया है। शरीर-विज्ञान के सभी विशेषज्ञों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि शरीर के प्रथम पच्चीस बर्षों में शरीर के विभिन्न अंग परिपक्व होते हैं और इसी आयु में ज्ञान प्राप्ति की क्षमता मानव में सबसे अधिक होती है। पच्चीस वर्ष का आयु से पचास वर्ष की आयु को सभी ने गृहस्थाश्रम, सन्तानोत्पति, जीवन-संघर्ष के लिए सर्वोत्तम माना है, सभी ने पचास वर्ष की आयु से पिचहत्तर वर्ष की आयु को समाज सेवा के लिए उपयुक्त माना है, और ७५ वर्ष से १०० वर्ष की आयु को सांसारिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोग-विलासों में असमर्थ और सांसारिक काम काज के लिए बेकार माना है। 55 वर्ष की आयु हो जाने पर संसार की सभी सरकारें अपने कर्मचारी को सेवा निवृत्त कर देती है। अन्तर इतना ही है कि सरकारें उन्हें बेकार समझकर नौकरी से हटा देतीं हैं पर वैदिक धर्म उन्हें समाज का महत्वपूर्ण अंग मान उनसे सर्वोत्तम कार्य लेता है और समाज के लिये उन्हें बड़ा ही उपयोगी व्यक्ति बना देता है।

वैदिक धर्म ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्मचारी को अपनी शारीरिक, मानसिक चारित्रिक व बौद्धिक उन्नति करने और अधिक विद्याओं का अध्ययन करने का उपदेश करता है। 25 से 50 वर्ष की आयु में व्यक्ति को वैदिक धर्म गृहस्थ में रहकर उत्तम संतान की उत्पत्ति व ऐश्वर्य की प्राप्ति का निर्देश करता है।

पचास वर्ष की आयु हो जाने, तथा अपने बच्चे के पूर्ण समर्थ हो जाने और उसके द्वारा घर का काम-काज संभाल लेने पर व्यक्ति को अपने घर का भार बच्चे को सोंपकर वानप्रस्थी के रूप, में समाज सेवा में लग जाना चाहिए। वन में रहकर अपने ज्ञान को समाज के बच्चों को देने का प्रयास करना चाहिए। इस आयु में सर्वोत्तम कार्य समाज के व्यक्तियों को अपने प्राप्त ज्ञान का निःशुल्क शिक्षण देना है। साथ ही अपना समय धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय व योगाभ्यास में लगाना चाहिए।

आयु के अन्तिम भाग में अर्थात् ७५ वर्ष के पश्चात मनुष्य को देश देशान्तरों में वैदिक धर्म व संस्कृति के प्रचार में अपना जीवन लगा देना चाहिए। साथ ही अपनी समस्त गतिविधियों को ईश्वर के चरणों में अर्पित कर संसार से अलिप्त रहने का प्रयास करना चाहिए और धर्म प्रचार करते हुए या ईश्वराधना करते हुए ही मृत्यु की गोद में चला जाना चाहिए। इस प्रकार मानव का एक क्षण भी निराशा या बेकारी में व्यतीत न हो समूचा जीवन ही सक्रिय रहता है। साथ ही समाज के लिए उपयोगी रहता है।

छात्र—महात्मा जी, आपकी आश्रम व्यवस्था तो मानव को बेकार बनाने की व्यवस्था है। इसके अनुसार केवल गृहस्थी कमाता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, सन्यासी केवल बैठे-बैठे खाते हैं। मनुष्यों को बेकार करने वाली व्यवस्था को किस प्रकार अच्छा कहा जा सकता है। इससे अन्य धर्म ही अच्छे हैं कि मानव को जीवन के अन्तिम क्षण तक समाज में उत्पादन के कार्यों में यथाशक्ति लगे रहने का उपदेश करते हैं।

महात्मा—बच्चे, आपको वड़ी भारी भ्रान्ति है। इससे अच्छी जीवन व्यवस्था समाज के लिए कोई हो ही नहीं सकती। यदि पचास वर्ष की आयु हो जाने पर लोग वानप्रस्थी वन कर समाज सेवा में लग जायें और अपनी सेवाओं को निःशुल्क दें तो इससे लाभ यह होगा कि उनसे रिक्त हुई नौकरियाँ व धन्धे नये व्यक्तियों को मिलकर वेकारी की समस्या का समाधान होगा और निःशुल्क वानप्रस्थियों द्वारा शिक्षा दिलाई जाय तो वर्तमान समय स्कूलों के अध्यापकों पर हो रहा व्यय वच जायेगा और अपने विषय के तपे तपाये अनुभवी व्यक्ति अध्यापक के रूप में मिल जायेंगे।

वानप्रस्थी केवल शिक्षक ही नहीं अपितु डाक्टरों के रूप में अस्पतालों में निःशुल्क कार्य करेंगे, शिल्प कला का शिक्षण, व्यापार का रहस्य प्रजा को वतलायेंगे।

संन्यासियों द्वारा जनता में धर्म प्रचार द्वारा जनता का चरित्र ऊंचा उठेगा। जनता का सदाचार ही राष्ट्र की सभी उन्नतियों का आधार होता है। आर्य जाति के प्राचीन गौरव का आधार ही जीवन दानी ऋषि, महर्षि, मुनि, संन्यासी आदि वर्ग ही था। राग द्वेष से रहित अनुभवी निःशुल्क धर्म प्रचारक संन्यासी से अच्छा कोई हो ही नहीं सकता है। अन्यथा वृद्धावस्था में इससे अच्छा अन्य क्या कार्य हो सकता है जिसमें व्यक्ति तथा समाज को लाभ पहुँचता हो।

छात्रा—महात्मा जी, प्रत्येक आश्रम के लिए वैदिक धर्म ने क्या कर्त्तव्य वतलाये हैं उनका वर्णन करने की कृपा करेंगे?

महात्मा—आज हम संकेत रूप में तुलनात्मक दृष्टि से वैदिक धर्म की विशेषताओं का वर्णन कर रहे हैं। अतः आश्रम व्यवस्था का विस्तृत वर्णन वैदिक धर्म की व्याख्या के समय ही किया जा सकेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्र—अन्य धर्मों ने भले ही जीवन को आश्रम व्यवस्था में नहीं बाँटा है, परन्तु तत्सम्बन्धी उपदेश तो दिये ही हैं। क्या आप लोग इससे सहमत हैं ?

महात्मा—अन्य धर्मों ने जीवन के सभी उपदेशों को देकर मानव पर छोड़ दिया है। उन उपदेशों से जीवन के विभिन्न अंगों को बाँधा नहीं है। उनके यहां वृद्धावस्था में विवाह करना वर्जित नहीं है जबकि वैदिक धर्म में वर्जित है। यहाँ तक कि बहुत से धर्म संस्थापकों ने स्वयं अपने जीवन के अन्तिम भाग में विवाहों का ताँता लगा दिया था।

छात्रा—महात्मा जी, यदि कोई धर्म मानव की स्वतन्त्रता का सम्मान करता हुआ इसके सम्मुख समस्त उपदेशों को रखकर उन पर आचरण करने या न करने या अपनी रुचि के अनुसार उसे स्वतन्त्र छोड़ दे तो यह उसकी विशेषता ही है क्या मानव को उपदेशों के बन्धन में बाँधना आप उचित व अच्छा समझते हैं ?

महात्मा—बेटी, यदि किसी किसान को समस्त अनाजों के बीज, खेती के साधन, तथा भूमि देकर उसे विभिन्न प्रकार के बीजों को बौने का ज्ञान न देकर उसे खेती करने या मनमाने ढंग पर बीजों को बोने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया जाय तो क्या यह स्वतन्त्रता उसके लिए हित-कर होगी ? क्या वह किसान इस बात का विचार किये बिना कि कब किस अनाज को कैसी भूमि में बोया जाय, मनमाने ढंग से खेत में बीज फेंकता फिरे तो क्या उसे अच्छी खेती प्राप्त हो सकती है ?

प्रकृति के नियम अटल होते हैं उन्हें बदलने या उनमें परिवर्तन करने की क्षमता व्यक्ति में नहीं है। इस लिएयदि व्यक्ति अपना हित चाहता है या अपने जीवन को सुखी बनाना चाहता है तो उसे प्रकृति के नियमों के अनुसार ही अपना जीवन बनाना चाहिए। मनमाना जीवन बनाकर प्रकृति को अपने जीवन के अनुकूल बदलने की आशा व कल्पना करना कोरी मूर्खता है या अपने को धोखा देना मात्र है।

छात्रा—महात्मा जी, जीवन के विभिन्न अंगों का वैदिक धर्म ने बड़ी सुन्दरता से पथ-प्रदर्शन किया, परन्तु क्या समूचे आदर्श मानव जीवन की भी उसने कोई कल्पना या आदर्श उपस्थित किया है। यदि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है तो क्या है ?

महात्मा—मानव को मानव बनाने के लिए अपने अन्दर किन गुणों को धारण करना चाहिए उसका नीचे लिखे श्लोक में बड़ा ही अच्छा वर्णन किया है अर्थात्—

येणां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मृत्यु लोके भुवि भारभूता मनुष्य रूपेण गृणाश्चरन्ति ।।

भतृहरि नीति शतकम्

जिस मनुष्य के अन्दर विद्या ध्येय की प्राप्ति के निमित्त त्याग व पुरुषार्थ असहायों व विद्वानों की सेवा व सहायता करना, ज्ञान, शील तथा धर्माचरण आदि कोई भी गुण नहीं है वह पृथ्वी पर भार रूप ही है और यहाँ मनुष्य के रूप में पशु ही है ।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने मानवीय गुणों को आर्य समाज के दस नियमों में इस प्रकार कहा है—

1—व्यक्ति को सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए ।

2—उसे सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए ।

3—उसे सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए ।

4—उसे सदैव अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।

5—उसे अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिए ।

6—उसे नित्य वेदादि धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिए ।

छात्रा—क्या वैदिक धर्म ने व्यक्ति का ही पथ-प्रदर्शन किया है या समूचे समाज अथवा राष्ट्र का भी पथ-प्रदर्शन किया है ? यदि हाँ तो वह क्या है ?

महात्मा—बेटा, तेरा प्रश्न महत्त्वपूर्ण है परन्तु इस प्रवचन की परिधि से बाहर है । इसके अतिरिक्त अब समय भी हमारे पास नहीं है कि उसका वर्णन किया जा सके किन्तु सार रूप में संकेत मात्र यह है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म न मानव या मानव समाज का ओई अंग ऐसा नहीं जिसका पूर्णरूपेण मार्ग दर्शन न किया हो। वर्ण व्यवस्था उसके मार्ग-दर्शन का स्पष्ट प्रमाण है। वर्ण व्यवस्था द्वारा मानव समाज के धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक सभी पहुलओं का समाधान किया गया है।

पृथ्वी तल पर मानव समाज को इसके कौन गुण इसे सुख शान्ति व प्रगति प्रदान कर सकते हैं इसका विवेचन वेद भगवान ने इस प्रकार किया है—

सत्यं वृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म-यज्ञः प्रथिवींधारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं लोकं प्रथिवी नः कृणोतु॥
(अथर्व वेद १२/१/१)

अर्थात्—वृहद् सत्य, उग्र ऋतं, दीक्षा, तप बृहन् अर्थात् आस्तिक भावना यज्ञः अर्थात् परमार्थ की भावना आदि राष्ट्रीय गुण राष्ट्र को ऊंचा उठाने वाले हैं।

सारांश यह है कि संसार के किसी भी धर्म ने वैदिक धर्म के समान मानव या मानव समाज के प्रत्येक अंग का मार्ग-प्रदर्शन नहीं किया। यही वैदिक धर्म की अपनी विशेषता है।

शान्ति पाठ के पश्चात् सभा विसर्जित कर दी गई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१
कृतज्ञता-प्रदर्शन

महात्माजी आज कुछ साधु-संन्यासियों के साथ कुछ देरी से प्रार्थना स्थल पर पहुँचे और अपनी देरी के लिए क्षमा याचना करते हुए इस प्रकार अपने विषय की ओर अग्रसर हुए—

अध्यापक वर्ग व स्कूल के विद्यार्थियो संसार के समस्त मत-मतान्तरों तथाकथित धर्मों में वैदिक धर्म की बहुत बड़ी महानता अपना उपकार करने वाले के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करना है। कृतघ्नता अर्थात् अपने उपकारक अथवा सहायक के प्रति कृतज्ञता प्रकट न करने को इसने महान पाप माना है, अन्य धर्मों ने कृतज्ञता को माना है, परन्तु इस पर इतना बल नहीं दिया जितना वैदिक धर्म ने इस पर दिया है। वैदिक धर्म ने इसे इतना महत्त्व दिया है कि कृतज्ञता प्रदर्शन धार्मिक जीवन का एक अनिवार्य अंग बना दिया गया है।

अन्य धर्मों ने मानव के प्रति उपकार करने वालों में केवल ईश्वर और मनुष्यों की ही कल्पना की है, परन्तु वैदिक धर्म ने चेतन और जड़ दोनों ही जगत में अपना उपकार करने वालों तथा प्रकाश देने वालों को देवता की संज्ञा दी है, और उनकी भलाइयों के प्रति आभार-प्रदर्शन को पुनीत कार्य माना है। मानव के अतिरिक्त जड़ पदार्थों में सूर्य, चन्द्र, अग्नि वायु, जल आदि को और पशु-पक्षियों में गाय आदि को लाभकारी मान उनके प्रति आदर का भाव प्रकट किया है।

दुर्भाग्यवश पाश्चात्य विद्वानों ने वैदिक धर्म की इस महती विशेषता का उल्टा अर्थ लगाया है और सूर्य, चन्द्र, अग्नि आदि की मान्यता को वैदिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मियों की जगल जीवन की परम्परा माना है। उनके विचार में इनकी मान्यता अज्ञानता के कारण आर्य जाति में उस दिन प्रारम्भ हुई जब आर्य जाति के लोग सूर्य, चन्द्र, अग्नि वायु, वर्षा आदि के रहस्य से सर्वथा अनभिज्ञ थे परन्तु उनकी बुद्धि में यह विचार कभी नहीं आया कि जिन वेद शास्त्रों में पूर्वोक्त जड़ देवताओं का वर्णन है वहाँ संसार भर के ज्ञान-विज्ञान का भी वर्णन है। अर्थात् संसार का कोई ज्ञान ऐसा नहीं जिस पर इन शास्त्रों में चर्चा न हो। ऐसा रहने पर आर्य जाति पर अज्ञानी होने, अनभिज्ञ होने, या जंगली होने का आरोप लगाना यह उनकी स्वयं अनभिज्ञता व अज्ञानता का प्रतीक है।

वैदिक धर्म बुद्धिवादी धर्म है। इसकी प्रत्येक वस्तु के पीछे बुद्धि छिपी होती है। इसकी बातों व रहस्यों को वही समझ पाता है जिसकी बुद्धि पर अन्धविश्वास, व पक्षपात का ताला न लगा हो। पाश्चात्य विद्वानों की यह मान्यता है कि मानव जाति को ज्ञान-विज्ञान की देन पाश्चात्य जगत की ही है। उनको समझ में यह आना ही कठिन है कि ज्ञान-विज्ञान से सृष्टि के आदि में वेदों के रूप में आर्य जाति के विद्वान परिचित हो गये थे।

छात्रा—महात्माजी, चेतन जगत में वैदिक धर्म के अनुसार किसको देवता मानकर पूजनीय माना गया है ?

महात्मा—वैदिक धर्म ने माता-पिता तथा गुरु तीन को देवता की श्रेणी में रखा है। तीनों के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को इनके प्रति उपकारों के लिए ऋणी मानकर इस ऋण से उऋण होने को परम धर्म माना है।

छात्रा—संसार में व्यक्ति का उपकार करने वाले अनेक व्यक्ति होते हैं, पर उनमें से माता-पिता तथा गुरु को ही देवता क्यों माना गया है ?

महात्मा—माता-पिता तथा गुरु को ही देवता मानने का कारण यह है कि इनकी कृपा से ही मानव-मानव बन पाता है। इन तीनों के उपकार मानव के प्रति इतने महान हैं कि उनसे उऋण होना व्यक्ति के लिए असम्भव ही है। जैसे माँ के इस उपकार का क्या कभी बदला चुकाया जा सकता है कि जब बचपन की अवस्था में मां बच्चे के पेशाब व टट्टी में सने बिस्तर पर स्वयं सोकर बच्चे को सूखे बिस्तर पर सुलाती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, और यह भी एक दिन नहीं वर्षों तक। माँ की दया यदि बच्चे पर न हो तो उसकी जीवन यात्रा एक क्षण भी न चले।

छात्रा—इन तीनों के उऋण होने के लिए वैदिक धर्म ने क्या उपाय बतलाये है ?

महात्मा—माता-पिता के ऋण से उऋण होने के लिए वैदिक धर्म ने यह उपदेश दिया है कि—

अनुव्रतः पितुः पुत्रों मात्रा भवतु संमनाः।
जायापत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम्॥

(अथर्व ३-३०८२)

अर्थात् सन्तान पिता के व्रत का पालन करने वाली हो, और माता के मन को किसी भी अवस्था में दुःख पहुंचाने वाली न हो।

माता-पिता की सेवा करना वैदिक धर्म में सबसे महान धर्म माना है। माता-पिता की सेवा न करना इसकी दृष्टि में बड़ा भारी पाप है। माता-पिता की सेवा करना धर्म है यह अन्य धर्मों के लिए विचित्र-सी बात है। यही कारण है कि यूरोप आदि पाश्चात्य जगत में माता-पिता, बृद्धावस्था में दर-दर की ठोकरें खाते फिरते हैं और उनके बच्चे उनकी सहायता तक नहीं करते हैं।

गुरुओं के प्रति आभार प्रदर्शन करने के लिए वैदिक धर्म ने कहा है कि—उनका आदर, सत्कार किया जाय, यथाशक्ति उनकी आर्थिक सहायता की जाये, और उनके द्वारा दिये ज्ञान को अन्यों को दिया जाय। इस प्रकार जीवन के अन्तिम क्षण तक उक्त तीनों देवताओं के प्रति आभार-प्रदर्शन का वैदिक धर्म ने निर्देश दिया है।

छात्रा—पशु-पक्षी जगत में किसे सहायता योग्य माना गया है ?

महात्मा-पशु-पक्षी जगत में वैदिक धर्म ने गाय को माता के रूप में मानकर इसे आदरणीय माना है। इसका मूल कारण यह है कि गाय जहाँ माता के तुल्य दुग्ध पान कराती है, वहाँ खेती के लिये बैल प्रदान करती है। इस प्रकार मानव जाति के लिए गाय को हितकर मानकर इसे देवता तुल्य आदर के योग्य माना है। इसका पालन-पोषण करना वैदिक धर्म ने धर्म माना है घरों में रसोई बनाने के समय प्रथम रोटी गाय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वा किसी पशु के लिए सुरक्षित होती है। उस पुनीत भेट को गाय के स्थान पर केवल ब्राह्मण अर्थात् गुरु को ही दिया जा सकता है।

छात्रा—जड़-पदार्थों में किन पदार्थों को आदरयोग्य माना गया है।

महात्मा—सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश आदि जो मानव जीवन के मूलाधार हैं अर्थात् उसके भौतिक जीवन को चलाने वाले हैं देवता की कोटि में गिने गये हैं।

समय समाप्त होते देख महात्मा जी ने अपने प्रवचन को विराम दे दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२
नारी की महत्ता

आज सभा-स्थल नगर के नर-नारियों से भरा पड़ा है। बसंन्त पंचमी का अवकाश होने से पीत-वस्त्रों ने सभा को एक रमणीक वाटिका का रूप दे दिया है। महात्मा जी भी बड़े प्रसन्न मुद्रा में दिखलाई पड़ रहे हैं । प्रधानाचार्य का संकेत मिलते ही महात्मा जी ने बड़े ही मधुर स्वर में वेद-पाठ कर अपनी वाणी को इस प्रकार गति दी—

नगर के सम्मानित नर-नारियों तथा भारत की भावी आशाओं ! संसार के धर्मों ने नारी को किस रूप में देखा हैं इसका तुलनात्मक विवेचन करते हुए इसको सिद्ध करने का प्रयास आज किया जायगा कि वैदिक धर्म ने मातृशक्ति को जिस रूप में देखा है; और जिस प्रकार उसके प्रति श्रद्धा व सम्मान की भावना प्रकट की है, वह अन्य मत-मतान्तरों में नही पाई जाती है।

कुछ प्रभावशाली तथाकथित धर्मों का विश्वास है कि ईश्वर ने सृष्टि-रचना के आदि में केवल पुरुष अर्थात् बाबा 'आदम' को बनाया। स्त्री की उत्पत्ति का ध्यान उसे बाद में आया; और उसे आदम की पसलियों में से एक हड्डी निकालकर बनाया। इस प्रकार उनकी दृष्टि में पुरुष ही आत्मा रखता है; और ईश्वर-रचना का प्रमुख प्राणी है; ओर स्त्री आत्महीन है; और पुरुष की अपेक्षा उसकी स्थिति भी हीन है।

उक्त धर्मों का यह भी विश्वास है कि अदन के बाग में शैतान के बहकावे में आकर स्त्री ने ही बाबा आदम को ईश्वर-आज्ञा का उलंघन कर वर्जित वृक्ष का फल खाने को विवश कर दिया था। इस लिये स्त्री-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति ईश्वर की दृष्टि में पापी है; और शैतान से प्रभावित होने वाली है।

उपर्युक्त धर्म में विश्वास रखने वाली सरकारों ने इंगलैण्ड, अमरीका, यूरोपीय देशों ने आज भी स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार नहीं दिये हैं। कुछ देशों में तो महिलाओं को चुनावों में मत देने का भी अधिकार नहीं है। इंग्लैण्ड आदि देशों में महिलाओं ने तीव्र आन्दोलन करने के पश्चात् यह अधिकार प्राप्त किया है।

एक धर्म की भावना महिला-वर्ग के प्रति यह है कि वह मनोरंजन की सामग्री हैं। पैर की जूतियों के समान हैं; और खेत की फसल की भांति पुरुष के भोग की सामग्री मात्र हैं। इससे अधिक उनकी दृष्टि में उसका मूल्य यहीं है। यही कारण है कि अरब देशों में स्त्रियों को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त नहीं है; और उन्हें स्वतंत्रता के साथ घूमने का अधिकार नहीं है। पर्दा-प्रथा उन पर वलात् लादी हुई है। उनकी दृष्टि में स्त्री पुरुष की गाय-बैल जैसी सम्पत्ति है। उसे पुरुष की इच्छा के अनुसार ही अपना आचरण करना होगा।

परन्तु वैदिक धर्म ने स्त्री-जाति कों पुरुष की अपेक्षा महान माना है; और माता को ही राष्ट्र का मूलाधार अथवा राष्ट्र की निर्मात्री माना है। ऋग वेद 8/33/19 में माता को इस प्रकार सम्बोधित करते हुये उपदेश दिया गया है—

अधः पशयस्व मो-परि संतरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्माबमूविथ॥

सम्भल कर चल उच्छृखंल होकर मत चल। क्योंकि तू ही 'ब्रह्मा' है अर्थात् तू ही राष्ट्र-निर्माता है और तेरे बनने-बिगड़ने पर ही राष्ट्र का बनना-बिगड़ना निर्भर करता है।

परिवार में नारियों के स्थान व महत्त्व का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि—"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जिस परिवार व राष्ट्र में नारी का सम्मान व पूजा होती है वहीं देवताओं की उत्पत्ति व निवास होता है।

वैदिक साहित्य में नारी का परिवार में महत्त्व वर्णन करते हुये अथर्व वेद 9/3/2, 235/3, 14/1/44 तथा 14/1/61 में इस प्रकार उसके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रति भावना व्यक्त की गई है कि घर में उसे खिली हुई कली का स्थान देकर घर के अन्य सदस्यों से अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाय। वह वधू रूप में पति के घर जाकर रानी बने और वहां प्रकाशित होवें। वह सास, ससुर, ननद और देवर सभी की साम्राज्ञी हैं। अथर्व 14/2/15 में नारी को उपदेश देते हुये कहा गया है कि—हे सरस्वती ! तू इस पति-गृह में विष्णु अर्थात् शासक की तरह रह।

छात्रा—महात्माजी ! क्या यह सत्य नहीं कि नारी के प्रति वैदिक धर्म ने केवल शाब्दिक श्रद्धा व सम्मान प्रकट किया है; और आचरण उसके विपरीत रहा है ? यदि नहीं, तो प्रमाण क्या है ?

महात्मा—बच्ची। सो बात नहीं है। वैदिक धर्मियों ने अपने आचरण को शब्दों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्व दिया है। इसके लिये सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि जब वैदिक धर्मियों ने आलंकारिक रूप में भगवान की कल्पना की तो नारी को उसकी एक महान शक्ति के रूप में उसके साथ रखा। नारी के बिना ईश्वर की कल्पना उसने की नहीं।

धार्मिक कृत्य अर्थात् यज्ञादि के अवसर पर यजमान के रूप में पुरुष को अकेले बैठने का निर्देश न देकर सपत्नीक बैठने का आदेश है।

भले ही इस घटना की सत्यता संदिग्ध हो; परन्तु एक महान् वैदिक धर्म की नारी के प्रति भावना का प्रदर्शन तो है ही ?

छात्र—क्या यह सच नहीं है कि महात्मा श्री तुलसीदास जी ने ढोल, गँवार शुद्र पशु, नारी को ताड़ने का अधिकारी कहा है अर्थात् इन्हें डण्डे से ठीक रखने का उपदेश है ?

महात्मा—बच्चे ! वैदिक धर्म के लिये प्रामाणिक ग्रन्थ वेद है न कि रामायण। तुलसीदास का जन्म मुस्लिम काल में हुआ, और वह आर्य जाति के पतन व संघर्ष का समय था। परिस्थिति से विवश होकर यदि उन्होंने कुछ लिखा हो तो उसे प्रामाणिक नहीं कहा जा सकता। इसके अतिरिक्त महात्मा तुलसीदास ने अपने ग्रन्थ में माता सीता को जितना महान् पद व सम्मान प्रदान किया है उतना राम को भी प्रदान नहीं किया इसलिये वैदिक धर्म के लिये वेद ही प्रथम व अन्तिम प्रमाण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसके अतिरिक्त वेदानुकूल ग्रन्थ व मान्यतायें ही मान्य हो सकते हैं, अन्य नहीं।

छात्रा—महात्मा जी ! यह कहाँ तक सत्य है कि मनु महाराज जी ने भी स्त्री तथा शूद्र को वेद पढ़ने व यज्ञ करने का अधिकार नहीं दिया है ?

महात्मा—मनु महाराज वैदिक धर्म के महान विद्वान थे; और संसार के प्रथम कानून-निर्माता थे अर्थात् मानव समाज को विभिन्न नियमों से बाँधने का कार्य सर्वप्रथम उन्होंने ही किया। वेदों के वह अनन्य भक्त थे। वेद के विरुद्ध कुछ कहने या लिखने का उनमें कभी साहस नहीं हो सकता था, क्योंकि उन्होंने वेद-निन्दक को स्वयं अनार्य माना है। जव वेद ने स्वयं वेद के पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार मनुष्य मात्र को दिया है तो मनु महाराज उसके विरुद्ध इस पर भला प्रतिबन्ध कैसे लगा सकते थे। वेद ने नीचे लिखे शब्दों में वेद पढ़ने का मनुष्य मात्र को अधिकार दिया है अर्थात्—

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय, भार्याय च स्वाय चाणाय च: ।।
(यजुर्वेद २६४२)

अर्थात्—वेद भगवान् कहते हैं कि उनके ज्ञान को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ही नहीं अपितु मानव मात्र अपने-पराये सभी पढ़ें।

इसलिये वेद अपने ज्ञान को पढ़ने-पढ़ाने की आज्ञा सभी को दे रहे हैं तो वेदभक्त मनु महाराज का इतना साहस कहाँ कि वह इसका विरोध कर सकें। वास्तव में उस काल में जब कि कागज व छापे-खाने की खोज नहीं हुई थी, और ग्रन्थ वहुधा ताम्र-पत्र या भोज-पत्र पर ही लिखे जाते थे, तो उनमें सरलता से मिलावट सम्भव थी। सो स्वार्थी लोगों ने मनु महाराज के नाम से अनेकों वेद-विरुद्ध बातें उनके ग्रन्थ में जोड़ दी हैं जो वास्तव में मनु महाराज की नहीं हैं, और नाहीं हो सकती हैं आश्चर्य तो इस बात का है की वैदिक धर्म के विरोधी वेद की ओर न देखकर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये अन्य ग्रन्थों का सहारा लेते फिरते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ तक स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार है सो नीचे लिखे प्रमाणों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि वैदिक धर्म में स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार है।

अथर्व० 11/1/17, 19/58/6, तथा अथर्व० 5/26/4 के अनुसार स्त्री-पुरुष दोनों को ही मिलकर यज्ञ करने का विधान है। जिस व्यक्ति की पत्नी नहीं उसे यज्ञ का यजमान बनने का अधिकार नहीं है क्योंकि पत्नी के न होने से आधा यज्ञ ही समाप्त हो जाता है।

छात्र—अभी आपने कहा था कि अरब आदि देशों में स्त्रियों को अपनी सम्पत्ति मानकर उन्हें पर्दे में बलात् रखा जाता है। तो क्या भारत में वैदिक धर्मों स्त्रियों को पर्दे में नहीं रखते हैं?

महात्मा—भारत के वैदिक धर्मियों में पर्दा की प्रथा मुस्लिम शासन की देन है। मुसलमानों के आगमन से पूर्व भारत की महिलाओं में कोई पर्दा-प्रथा नहीं थी। प्रमाण के किये भारत में ही उत्तर भारत में जहाँ मुसलमानों का अधिक प्रभाव था पर्दा-प्रथा अधिक है; और दक्षिण भारत में जहाँ इनका प्रभाव नगण्य था पर्दा-प्रथा बिल्कुल नहीं है।

छात्रा—क्या यह सच नहीं है कि जहाँ अन्य धर्मों ने नारी को अपने पिता व पति की सम्पत्ति में कानूनन अधिकार दिया है वहाँ वैदिक धर्म ने नहीं दिया? यदि सच है तो वैदिक धर्म ने नारी के प्रति बड़ा अन्याय किया है?

महात्मा—बेटी! अन्य धर्मों में स्त्री को भोग-सामग्री समझ उसे छोड़ देने या उसे तलाक देने, एक से अधिक शादी का अधिकार देने का अधिकार दिया है। सो उन्होंने स्त्री की सुरक्षा की दृष्टि से ऐसा किया है। विवाह पर ही उनके यहाँ तलाक का ध्यान रखते हुए 'महर' अर्थात् कुछ धन-राशि निश्चित कर दी जाती है; जो कि तलाक देने पर पति द्वारा अपनी पत्नि को देनी होती है।

वैदिक धर्म ने विवाह-बन्धन को अटूट माना है। उसमें तलाक का भय ही नहीं है। उसके अतिरिक्त परिवार में पत्नी को सम्पत्ति का पूर्ण अधिकार दिया है। वास्तव में स्त्री ही घर की स्वामिनी होती है। घर के आय-व्यय का हिसाब उसी के हाथ में होता है। इस अधिकार की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वैदिक धर्म में इस प्रकार पुष्टि की गई है—

अथर्व० 3/29/1 के अनुसार परिवार में कुल उपज व आय के 16 भाग करने पर तीन हिस्से किसानों व मजदूरों के हैं, एक भाग कर के रूप में राजा का है, आठ भाग गृह-स्वामी के है तथा शेष चार भाग पत्नी के हैं।

छात्रा—क्या वैदिक धर्म में तलाक का अधिकार बिल्कुल नहीं है ?

महात्मा—नहीं, वैदिक धर्म्म में विवाह अटूट आत्मिक सम्बन्ध है जो सन्यास और मृत्यु की अवस्थाओं के सिवा आजीवन नहीं टूटता। पति-पत्नी को पत्नीव्रत तथा पतिव्रत धर्म का पालन करना होता है। कुछ अवस्थाओं में आ-धर्म्म पद के रूप में पुनर्विवाह तथा नियोग का विधान है जो बड़ी कड़ी शर्तों से आवद्ध है।

छात्र—क्या आप इस्लाम धर्म द्वारा समर्थित बहु विवाह को पुरुषों द्वारा स्त्रियों पर अन्याय मानते हैं। यदि हाँ, तो कारण ?

महात्मा—भाई ! जब संसार का कोई भी पुरुष ऐसा नहीं जो यह चाहता हो कि उसकी पत्नी उसके अतिरिक्त अन्य पुरुषों को भी पति के रूप में स्वीकार करे, तो भला कौन स्त्री ऐसी होगी जो यह चाहेगी कि उसका पति उसके अतिरिक्त अन्य स्त्रियों को अपनी पत्नी बनावे। इसके अतिरिक्त परिवार में सुख-समृद्धि तभी रहना सम्भव है जब स्त्री-पुरुष मध्य अटूट एवं पवित्र प्रेम हो। बहु विवाह इस पुनीत अटूट प्रेम का शत्रु है।

महात्मा ने अपनी घड़ी की ओर देखकर अपने प्रवचनों को विराम देते हुए कहा कि वैदिक धर्म ने नारी को जो महान् पद व सम्मान दिया है वह अन्य किसी धर्म ने नहीं दिया है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३
भिन्नता में एकता देखना

महात्मा जी आज शीघ्रता में हैं। उन्हें अन्यत्र कहीं जाना है। वह आज प्रवचन देने से मुक्ति चाहते थे, परन्तु अध्यापकों व विद्यार्थियों के आग्रह पर कुछ समय के लिये अपने विचार उपस्थित करने को उद्यत हो गये हैं। इसीलिये समय होते ही उन्होंने विचार प्रकट करते हुए कहा—

प्यारे बच्चों! संसार के समस्त मत-मतान्तरों व धर्मों में वैदिक धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसने इस संसार को देखने व समझने का एक विचित्र ही दृष्टिकोण प्रदान किया है। अन्य धर्मों ने जहाँ विश्व को विविधताओं का संग्रह माना है वहाँ वैदिक धर्म ने समूचे जगत में एकता के दर्शन किये हैं। अन्य मत-मतान्तरों की दृष्टि में जहाँ मनुष्यों और पशुओं का सम्वन्ध भोक्ता और भोग की सामग्री जैसा सम्वन्ध है, वहाँ वैदिक धर्म की दृष्टि में प्राणीमात्र में एक ही आत्मा विराजमान है, और प्राणियों के विभिन्न शरीर आत्मा की अलग-अलग सवारियाँ व साधन मात्र हैं।

वैदिक धर्म समस्त जीवित जगत के पीछे एक ही जीवात्मा और समूचे ब्रह्माण्ड के पीछे परमात्मा को देखने का आदी है। उसकी दृष्टि में यह संसार ईश्वर-जीव तथा प्रकृति के अतिरिक्त कुछ नहीं है। प्रकृति ही नानारूप-धारण कर संसार की भिन्नताओं का कारण बन रही है अन्यथा अखिल विश्व एक ही सूत्र में बंधा है। इस सृष्टि की भिन्नता में एकता देखने की विशेषता वैदिक धर्म की अपनी निराली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है जो अन्य धर्मों में नहीं पाई जाती है।

छात्र—महात्मा जी! अन्य धर्म भी यही मानते हैं कि समस्त प्राणियों को भगवान् ने बनाया है इसलिये सब भाई-भाई हैं, और समान हैं?

महात्मा—उनकी मान्यता प्राणिमात्र के लिये नहीं है। उनका कहना है कि संसार के सभी मनुष्य बाबा आदम की औलाद होने या खुदा के बन्दे होने से भाई-भाई हैं, परन्तु उनके विचार में पशु-पक्षी आदि में मनुष्यों के समान जीवात्मा नहीं हैं। वह मनुष्य के लिये साग-सब्जियों की भाँति भोग-सामग्रियाँ हैं। मनुष्य को भी उन्होंने एक आदम की संतान होने से खुदा का बन्दा मान लिया है, परन्तु उन्हें भी धार्मिक दृष्टि से वह विभिन्न रूपों में देखने के आदी हैं।

प्राणियों के विभिन्न शरीरों के पीछे एक ही जीवात्मा, और भौतिक जगत के पीछे एक ही परमात्मा के दर्शन करना यह वैदिक धर्म के अतिरिक्त कोई नहीं करता है। श्री शंकराचार्य का अद्वेतवाद तो समूचे जगत को ही ब्रह्म का दूसरा रूप मानता है। ब्रह्म के अतिरिक्त यहाँ अन्य कुछ है ही नहीं। उसकी दृष्टि में ब्रह्म ही सत्य है जगत मिथ्या है।

छात्र—क्या आप श्री शंकराचार्य जी के मत का समर्थन करते हैं?

महात्मा—श्री शंकराचार्य जी के मत से हमारा मत-भेद है। हम ईश्वर-जीव-प्रकृति की सत्ताओं को अलग-अलग अनादि मानते हैं, परन्तु उनके मत को व्यक्त करने का तात्पर्य यहाँ यह है कि वैदिक धर्म के प्रचारकों ने जगत की भिन्नता में एकता देखने की अपनी प्रवृत्ति को किस सीमा तक पहुँचा दिया है। वास्तव में यह विचारशैली वैदिक धर्म की ही देन है।

छात्र—महात्मा जी! अन्य धर्म भी तो यही मानते हैं कि सृष्टि से पूर्व खुदा के अतिरिक्त संसार में कोई नहीं था, और उसने अपनी शक्ति से समूचे जगत को बना दिया। इसलिये उनकी दृष्टि में भी इस संसार में खुदा के अतिरिक्त कुछ नहीं है फिर आप की मान्यता कहाँ तक सत्य है?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा—यह ठीक है कि ईसाई, इस्लाम आदि मत ऐसा ही मानते हैं, परन्तु दुनिया को बनाने के बाद खुदा और दुनियां को एक नहीं मानते है, अपितु भिन्न-भिन्न मानते हैं। उनके विचार में खुदा स्वयं दुनियां नहीं है। इसलिये श्री शंकराचार्य और उनके मत में पृथ्वी-आकाश जैसा अन्तर है।

छात्र—जब आप ईश्वर-जीव-प्रकृति तीन अनादि सत्तायें मानते हैं तो इससे भिन्नता में एकता कहाँ सिद्ध हुई ?

महात्मा—बच्चे ! भिन्नता में एकता देखने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि संसार की समस्त वस्तुयें एक ही हैं। अपितु इसका अर्थ केवल इतना है कि समस्त प्राणी जगत एक ही जीवात्माओं का परिवार है, और जड़ जगत जिन सिद्धान्तों पर खड़ा है वह इसे एक सूत्र में बाँधे हुये हैं अर्थात् इसे एक दूसरे का सहायक सिद्ध कर रहे हैं। उदाहरणार्थ वनस्पति और प्राणी जगत अलग ही स्वतन्त्र सत्ता प्रतीत होती हैं, परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। दोनों ही एक-दूसरे पर इतने निर्भर करते हैं कि दोनों एक-दूसरे के प्राण-दाता हैं। मनुष्य अपनी प्राण-वायु आक्सीजन के लिये वनस्पति जगत और वनस्पति जगत अपनी प्राण-वायु हाइड्रोजन कार्बनडाइ आक्साइड के लिये प्राणी जगत पर निर्भर करता है ;

छात्रा—क्या आपकी मान्यता का कोई वैज्ञानिक आधार भी है ?

महात्मा—संसार भर के वैज्ञानिक वैदिक धर्म मान्यता का समर्थन कर रहे हैं। विविधताओं से भरे इस संसार को वैज्ञानिक लोग 'मल्टीवर्स' न पुकार कर 'यूनीवर्स' कहते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि विज्ञान भी विविधताओं के पीछे सृष्टि की एकता को देख रहा है। यह स्वीकारोक्ति उनकी अपनी वैज्ञानिक खोजों पर ही आधारित है।

परमाणु के विभाजन हो जाने के पश्चात् तो संसार के वैज्ञानिकों ने भी अब श्री शंकराचार्य की भांति यह कहना प्रारम्भ कर दिया है कि संसार में परमाणु शक्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं है। अन्तर इतना ही है कि श्री शंकराचार्य जी उस महती शक्ति को ब्रह्म कहते हैं; और वैज्ञानिक उसे शक्ति की संज्ञा देते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रा—फिर तो आपका त्रैतवाद का सिद्धान्त गलत सिद्ध हो गया ?

महात्मा—बच्ची ! वैज्ञानिक लोगों की खोज अभी अधूरी है। वे जिस परमाणु शक्ति को जन-पदार्थ की अन्तिम सीमा मानते हैं, वह अन्तिम नहीं है। परमाणु शक्ति वैदिक धर्म के अनुसार सत, रज और तम नामक तीन अति सूक्ष्म परमाणुओं का मेल है। इन्हीं तीन परमाणुओं की साम्यावस्था का नाम प्रलय और इनकी विषमावस्था का नाम सृष्टि-रचना है। इन्हीं की विषमावस्था संसार की विविधता का कारण है ।

छात्र—महात्माजी, जब संसार एकता के सूत्र में बंधता है तो फिर ईश्वर ने इसे विविधता से भरकर हमें भ्रान्ति में क्यों डाला है ?

महात्मा—ईश्वर ने विश्व को विविधताओं से भरकर हमें भ्रम में नहीं डाला अपितु उसने हमारे ऊपर बड़ा उपकार किया है। यदि वह ऐसा नही करता तो यह संसार अपना समस्त आकर्षण खो बैठता; और यह रहने लायक नहीं रह जाता । स्वभाव से व्यक्ति परिवर्तन व विविधता में ही आनन्द अनुभव करता है। लगातार एक ही वातावरण, एक ही रस, एक ही वस्तु उसे कुछ समयपश्चात् अखरने लगती है ।

छात्रा—संसार की विविधता में एकता देखने से संसार का क्या लाभ है ?

महात्मा—जगत् की विविधता में एकता देखने से ही प्राणियों में एकता, भ्रातृत्व, विश्व बन्धुत्व, सहयोग, प्रेम, परोपकार आदि का भाव जाग्रत होता है। उक्त गुण ही मानव-समाज की एकता का आधार है। इसलिये विश्व में शान्ति तथा एकता की स्थापनार्थ वैदिक धर्म के इस दृष्टिकोण अर्थात् विविधता में एकता देखने के सिद्धान्त को मानना ही हितकर है; और मानव समाज इसके लिये वैदिक धर्म का आभारी है।

महात्माजी की दृष्टि अचानक अपनी घड़ी पर पड़ गई। उन्होंने तुरन्त अपने जाने का समय होता देख प्रवचन को समाप्त करने के लिये विद्यार्थियों से क्षमा याचना की; और शान्ति-पाठ के साथ सभा को विर्सजित कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४
वैदिक पर्वों का महत्त्व

महात्मा जी के प्रवचन का अन्तिम सप्ताह होने से सभा में विद्यार्थियों के अतिरिक्त नगर के नर-नारियों की बड़ी भारी भीड़ है। स्कूल की ओर से सभी के बैठने की सुव्यवस्था की गई है। महात्मा जी नियमानुसार ठीक समय पर सभा-स्थल पर पहुँच गये, और मंच पर बैठते ही उन्होंने अपना प्रवचन प्रारम्भ कर दिया अर्थात्—

नागरिक बन्धुओं, बहिनों व विद्यार्थियों! संसार के लगभग सभी मत-मतान्तरों तथा तथाकथित धर्मों ने अपने अनुयायियों को धर्माचरण के निमित्त शक्ति, प्रेरणा व उत्साह देने की दृष्टि से धार्मिक पर्वों की स्थापना की है। वैदिक धर्म के भी अपने पर्व हैं। परन्तु उनकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि वह केवल धार्मिक पर्व मात्र न होकर राष्ट्रीय पर्व भी हैं और राष्ट्रीय एकता, प्रगति व शक्ति के कारण है।

अन्य धर्मों में उनके पर्वों का एक मात्र आधार उनके धर्म-संस्थापक के जीवन की विभिन्न महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। उपर्युक्त पर्वों का लक्ष्य धर्म-गुरुओं के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने का एक उपाय मात्र है। परन्तु वैदिक धर्म ने अपने राष्ट्रीय पर्वों का आधार शुद्ध रूप से राष्ट्रहित रखा है। किन्हीं विशेष घटनाओं के कारण उसने अपने पर्वों को नहीं बनाया अपितु किन्हीं विशेष राष्ट्रीय लक्ष्यों को सम्मुख रखकर उसने अपने राष्ट्रीय पर्वों के रूप व नाम को निर्धारित किया है। यदि वास्तव में राष्ट्रीय पर्वों की परिभाषा में कोई पर्व संसार में आते हैं, तो वह वैदिक राष्ट्रीय पर्व ही हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित जन्मादि घटनाओं को लेकर भी वैदिक धर्म ने रामनवमी, जन्माष्टमी आदि अनेक पर्व अपनाये हैं, उन्हें इसने राष्ट्रीय पर्वों की संज्ञा नहीं दी। स्वर्गीय महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं में भी वैदिक धर्म ने केवल जन्म-दिवस को ही महत्त्व दिया है। मरण-दिन की उसने सर्वथा उपेक्षा की है।

वैदिक धर्म के राष्ट्रीय पर्वों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये राष्ट्र के प्रत्येक वर्ग, मत, धर्म के लोगों के लिये समान रूप से मानने या अपनाने योग्य हैं। इनमें किसी धर्म या मत के लोगों की भावना को ठेस पहुँचाने की कोई गुंजाइश नहीं है। सभी लोग इनके मनाने में आनन्द अनुभव कर सकते हैं। परन्तु यदि संकीर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के लोग इन पर्वों को न मनावे तो यह दोष उनकी अपनी मनोवृत्ति का है वैदिक पर्वों का नहीं है।

वैदिक धर्म ने अपने राष्ट्रीय पर्वों को निर्धारित करते हुए इस बात का भी ध्यान रखा है कि राष्ट्र के प्रत्येक अंग अथवा वर्ग का सम्बन्ध उनसे जोड़ा जाय ताकि कोई वर्ग अपने को उपेक्षित न समझ बैठे।

वैदिक पर्वों में एक विशेषता यह भी है कि यह बहुधा दो ऋतुओं के मिलन पर होता है। एक ऋतु समाप्त होकर जब दूसरी ऋतु प्रारम्भ होती है तो मानव-शरीर में विकार आने का भय रहता है। इसलिये पर्वों के उपलक्ष्य में यज्ञ किए जाते हैं। यज्ञ वायु शुद्धि के लिये अत्यन्त लाभकारी होते हैं।

छात्रा—महात्मा जी! वैदिक धर्म ने अपने राष्ट्रीय पर्वों के निमित्त देश की किन समस्याओं को आधार भूत माना है?

महात्मा—वैदिक धर्म ने केवल भारत ही नहीं अपितु संसार के किसी भी राष्ट्र के मानव समाज की सुख-शान्ति का ध्यान करते हुए अज्ञान, अन्याय तथा अभाव को शत्रु माना है। इन्हीं का दमन कर इसे सुखी बनाने के लिये इसने वर्ण-व्यवस्था की रचना की है अर्थात् वैदिक समाज-व्यवस्था इन्हीं तीन शत्रुओं का ध्यान करके ही की है। इन्हीं तीन शत्रुओं को समूल नष्ट कर देश को सुखी बनाने के लिये जनता को प्रोत्साहन देना इन पर्वों का मुख्य ध्येय है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रा—वैदिक धर्म ने किन पर्वों को राष्ट्रीय पर्व माना है; और उनमें से कौन सा पर्व किस शत्रु का दमन करने वाला है ?

महात्मा—श्रावणी (रक्षा-बन्धन), विजय-दशमी, दीपावली, होली, वसन्तोत्सव आदि पर्व वैदिक राष्ट्रीय पर्वों की सूची में हैं। इनमें कौन पर्व किस शत्रु की समाप्ति के निमित्त आयोजित है उसका वर्णन इस प्रकार है—

श्रावणी-पर्व—इस पर्व को रक्षा-बन्धन के नाम से भी पुकारा जाता है अर्थात् अज्ञानता से राष्ट्र की रक्षा करने की प्रेरणा व शक्ति, संकल्प देने वाले पर्व को रक्षा-बन्धन के नाम से पुकारा जाता है। इस पर्व पर मुख्यत: ईश्वरीय वेद-ज्ञान की कथा यज्ञोपवीत परिवर्तन, ब्रह्म-चारियों द्वारा गुरुकुल-प्रवेश आदि कार्य होते हैं।

यह पर्व अज्ञान से लड़ने वाले ब्राह्मण वर्ग को विशेषता देता है; परन्तु अज्ञान से रक्षा करना या रक्षा प्राप्त करना उद्देश्य होने से राष्ट्र के सभी नागरिकों का यह पर्व वन जाता है। इसीलिये सभी लोग अपनी-अपनी सुविधानुसार वेदों का स्वाध्याय, श्रवण व उपदेश सुनने का प्रयत्न इस अवसर पर करते हैं।

देखने में यह पर्व एक दिन का होता है; परन्तु वास्तव में उस दिन इसका प्रारम्भ होता है; और वर्षा-ऋतु के पूरे समय चलता है। पर-म्परा के अनुसार विद्वान, साधु, सन्त, महात्मा व विद्वान ब्राह्मण भी अपना चातुर्मास एक ही स्थान पर वेद-कथा करते हुए व्यतीत करते हैं।

अज्ञानता मानव तथा राष्ट्र दोनों के सर्व दु:खों का मूल होने के कारण वैदिक धर्म में इस पर्व को वड़ा महत्त्व दिया गया है।

छात्रा—महात्मा जी,! वर्तमान समय तो इस पर्व पर बहिन अपने भाई के राखी बाँधती है; और इसी के लिये यह प्रसिद्ध भी है; परन्तु आपने सर्वथा उल्टी ही वात बतलाई क्या आप इसका स्पष्टीकरण करने का कष्ट करेंगे ?

महात्मा—वेटी। तेरा प्रश्न सत्य है, आज के दिन तो इसका यही स्वरूप है; परन्तु यह असली पर्व का विकृत रूप है। यज्ञोपवीत के स्थान पर राखी कैसे आई यह एक लम्बी कहानी है जिसका यहाँ वर्णन करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का समय नहीं है। हाँ वैदिक धर्म की व्याख्या के समय उस पर प्रकाश डाला जायगा, परन्तु यहाँ इतना ही कह देना यथेष्ट है कि जब ब्राह्मणों ने स्वार्थवश वेद को अपनी बपोती बनाकर दूसरों को इसके पढ़ने, सुनने व उपदेश करने से रोक दिया; और यज्ञोपवीत को भी दूसरों को देने से इंकार कर दिया तो यज्ञोपवीत का स्थान राखी ने ले लिया।

परन्तु आज भी साधु-संन्यासियों द्वारा चातुर्मास में वेद-कथा करना, यज्ञों का होना, यज्ञोपवीता का सामूहिक रूप से परिवर्तन आदि सर्वत्र होते हैं जो मूल पर्व के द्योतक है। शास्त्रों में श्रावणी-पर्व को इसी रूप में माना गया है। राखी-पर्व के रूप में इसका किसी धर्म-ग्रन्थ में उल्लेख नहीं है।

छात्र—वर्षा ऋतु ही को इस पव के लिये क्यों चुना गया है ?

महात्मा—साधु, संन्यासी, महात्माओं के लिये कहा गया है कि उन्हें नदी के पानी की भाँति देश-देशान्तर में वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए सदैव भ्रमण करते रहना चाहिये अन्यथा जैसे बन्द पानी में सड़ान्द पैदा होकर वह पीने के लिए उपयोगी नहीं रहता है वैसे ही एक स्थान पर स्थायी रूप से आश्रम बनाकर रहने या किसी नगर में रहने से साधु-संन्यासियों में भी उस आश्रम, नगर व नगर निवासियों के लिये मोह उत्पन्न होकर उनकी स्थिति एक गृहस्थी जैसी बन जाती है। फिर उनकी वाणी व उपदेश में वह प्रभाव नहीं रहता ; और इससे देश का हित भी नहीं हो पाता है। इसलिये शास्त्रों में संन्यासी को रमते रहने का ही निर्देश है।

परन्तु वर्षा ऋतु ऐसी होती है जिसमें भ्रमण करना कठिन हो जाता है। प्राचीन काल में यातायात की कमी थी। इस कारण वर्षा ऋतु ही एक ऐसी ऋतु थी जिसमें संन्यासियों को विवश होकर एक ही स्थान पर रहना पड़ता था। उनके स्थायी निवास का ध्यान करते हुए ही इस पर्व को वर्षा ऋतु में रखा गया है।

विजय-दशमी—विजय-दशमी अन्याय का विरोध करने वाले क्षत्रियों का विशेष रूप से पर्व है। इस पर्व में क्षत्रिय अपने शस्त्र-अस्त्र एवं घोड़ों का पूजन करते हैं, और संसार से अन्याय को समाप्त करने की प्रतिज्ञा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। प्राचीन काल में वर्षा ऋतु के पश्चात् ही क्षत्रिय दिग्-विजय करने की अभिलाषा से प्रयाण करते थे। वर्षा-ऋतु में बहुधा भारत में युद्ध बन्द रहा करते थे।

विजय-दशमी के पर्व का मुख्य उद्देश्य जनता में अन्याय को सहन न करने और उसका दमन करने की भावना अर्थात् क्षात्र-धर्म को जागृत करना है।

छात्रा—विजय-दमशी का पर्व तो वर्तमान समय केवल रावण-राम युद्ध की स्मृति में मनाया जाता है। परन्तु आप इसके लिये एक नया मत ही प्रकट कर रहे हैं। सो आप के पास अपनी मान्यता के लिये क्या प्रमाण हैं?

महात्मा—वास्तव में विजय-दशमी के पर्व का जन्म प्रसिद्ध राम-रावण युद्ध से बहुत पूर्व हो चुका था। चूँकि यह युद्ध भी कार्तिक मास में लड़ा गया; और क्षात्र-धर्म का इसमें अद्वितीय आदर्श उपस्थित किया गया था। इसलिये इस पर्व में युद्ध की स्मृति को बाद में जोड़ दिया गया। इसका प्रमाण यह है कि यदि इस पर्व का सम्वन्ध राम-रावण युद्ध से ही होता तो इस पर भारत के प्रत्येक परिवार में अश्व व शस्त्रास्त्र पूजन की क्रिया की जाती?

बंगाल में विजय-दशमी पर्व राम-रावण युद्ध की स्मृति में न मनाकर दुर्गा-पूजा के रूप में मनाते हैं। दुर्गा पुराणों के अनुसार आसुरी प्रवृत्ति को मारने वाली एक महान राष्ट्रीय शक्ति का प्रतीक है। अतः दुर्गा-पूजा शुद्ध रूप से आसुरी शक्ति को समाप्त करने के निमित्त अपनी भावना प्रकट करने का ही दूसरा पौराणिक मार्ग है।

दीपावली या लक्ष्मी-पूजन—दीपावली पर्व देश की निर्धनता या अभाव को दूर करने के निमित्त किसानों, व्यापारियों, औद्योगिकों का मुख्यः पर्व है। इस पर्व पर व्यापारी, अपने वही खातों तथा लक्ष्मी का पूजन करते हैं, किसान अपने गो-धन का पूजन करते हैं, और उद्योगपति व कलाकर अपने औजारों व मशीनों का पूजन करते हुए देश में अधिक उत्पादन कर धन-सम्पत्ति को बढ़ाने की प्रतिज्ञा करते हैं।

दीपावली के अवसर पर मुख्यतः एक कार्य और होता है कि सभी लोग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने घरों की नये सिरे से सफाई आदि कर उन्हें सजाते हैं, और दीप-मालिका जलाते हैं, वर्षा-ऋतु के पश्चात् घर की सफाई करना परमावश्यक होता है। दीप-मालिका देश की सम्पन्नता की कामना के प्रतीक के रूप में जलाई जाती है।

छात्रा—कुछ लोगों का कहना है कि दीपावली का पर्व लंका-विजय के पश्चात् अयोध्या में भगवान् राम के आगमन की याद में मनाया जाता है। अर्थात् इस दिन अयोध्यावासियों ने भगवान् राम के आगमन पर नगर में दीपावली मनाई थी। क्या आप इससे सहमत नहीं है ?

महात्मा—जैसा मैंने कहा कि विजय-दशमी का पर्व बाद में राम-रावण युद्ध से सम्बन्धित हो गया वैसे ही दीपावली का पर्व श्री भगवान् राम के अयोध्या आगमन से जुड़ गया, परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि इस पर्व का प्रारम्भ ही उस दिन से हुआ है। यदि ऐसा होता तो फिर इस पर्व पर यज्ञ क्यों होते बही खाते, लक्ष्मी, गो-धन मशीन आदि का पूजन क्यों होता ? इनका उस घटना से क्या सम्बन्ध बैठता है ? दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ। आर्य समाज की ओर से प्रतिवर्ष महर्षि निर्वाणोत्सव मनाता जाता है। इसका कोई वर्णन कहीं नहीं किया गया।

होली पर्व—होली पर्व मुख्यतः राष्ट्रीय एकता का पर्व है। इसे श्रमिक लोगों का भी पर्व कहा जा सकता है। कारण यह है भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ समूचा आर्थिक ढाँचा कृषि पर ही आधारित है। कृषि की सबसे बड़ी व प्रमुख फसल इसी अवसर पर पक कर तैयार होती है। इस फस्ल की सफलता पर ही समूचे राष्ट्र की सफलता निर्भर करती है। अतः इस अवसर पर समूचे राष्ट्र का हर्षित होना स्वाभाविक ही है।

भारत में श्रमिकों को दैनिक या मासिक वेतन पर नौकर के रूप में न रखकर उन्हें खेती में भागीदार ही मानकर उनसे कार्य लिया जाता था। नाई, धोबी, चमार, तेली आदि सभी कर्मों के लोग वर्ष भर कार्य करते रहते थे; और फसल के कटने पर अपना भाग किसान से प्राप्त कर लेते थे। इस प्रकार किसान की फसल पर उनकी भी दृष्टि रहती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। फसल की प्राप्ति पर उन्हें भी किसान के समान हर्षित होना स्वाभाविक था।

नई ऋतु के आगमन पर इस अवसर पर विशाल यज्ञ होते थे; और नये अन्न की उनमें आहुति दी जाती थी; और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र सभी गले से गला लगाकर आपस में मिलते थे; और एक-दूसरे पर टेसू का रंग डालते थे; और आल्हाद प्रकट करते थे।

टेसू के फूल का रंग एक-दूसरे पर डालने का रहस्य यह है कि गर्मियों में चर्म-रोग से शरीर को मुक्त करने के लिये यह रंग दवाई का कार्य भी करता है; और साथ ही सुन्दर भी लगता है।

होली के पर्व पर एकता की भावना को जागृत करना मुख्य लक्ष्य है। लोग इस अवसर पर अपनी शत्रुता को समाप्त कर मित्रता का हाथ अपने शत्रु की तरफ बढ़ाते हुए यह कहते हैं—होली सो होली अर्थात् अब तक एक-दूसरे के प्रति शत्रुता की बात जो हुई उसे समाप्त समझा जाय; और भविष्य में मित्र बनकर रहने की प्रतिज्ञा की जाय। इस लिये भी भारत में इस पर्व की महत्ता है।

वसन्तोत्सव—क्रान्ति व परिवर्तन का प्रतीक है। इस अवसर पर विशेष रूप से सरस्वती पूजन होता है अर्थात् क्रान्ति, परिवर्तन व प्रगति की मूलाधार बौद्धिक शक्ति की उपासना की जाती है। इसी अवसर पर प्रकृति देवी अपने पुराने वस्त्र फेंककर नये वस्त्र धारण करती हैं। अतः प्रकृति के अनुरूप भारतीय लोग भी पीले वस्त्र धारणकर अपनी प्रगतिशीलता की भावना को व्यक्त करते हैं।

छात्रा—महात्मा जी!

महात्मा—बेटी! आज बहुत समय हो गया। मुझे आज गाड़ी से बाहर जाना भी है। अब आप सबलोग छुट्टी दें। कुछ समय पश्चात् आप की सेवा में पुनः उपस्थित हूँगा। तब आप अपनी समस्त शंकाओं का निवारण करलें।

शान्ति पाठ तथा महात्मा जी की जय के नारों के साथ सभा विसर्जित हो गई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५
वैदिक धर्म सभी धर्मों का आदि स्रोत है

महात्मा जी की व्याख्यान-माला का अन्तिम दिन है। इसीलिये सभा में जनता की उपस्थिति अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक है। महात्मा जी भी बड़ी प्रसन्न मुद्रा में हैं। कई साधु-सन्त भी उनके साथ मंच पर विराजमान हैं। परन्तु विद्यार्थियों में कुछ बेचैनी दृष्टि-गोचर हो रही है। उन्हें कल से वैदिक ज्ञान-गंगा में स्नान करने का अवसर नहीं मिलेगा यही बात रुक-रुक कर उन्हें दुःखी कर रही थी। यदि महात्मा जी के स्थान पर कोई गृहस्थी विद्वान होता तो उसे प्रलोभन देकर रोका भी जा सकता था; परन्तु एक आदर्श संन्यासी को एक स्थान पर रोकना बड़ा ही कठिन होता है। वह तो इस बात में विश्वास रखता है कि चलता पानी और रमता संन्यासी ही अच्छा होता है अन्यथा दोनों में गिरावट आ जाती है।

समय होते ही महात्मा जी ने वेद-गान किया; और-छात्र-छात्राओं को सम्बोधन करते हुए बोले—बच्चो! आज सत्संग का अन्तिम दिन है। वैदिक धर्म और इसकी विशेषतायें ऐसा विषय है कि यदि मनुष्य जीवन-पर्यन्त इसकी गाथा गाता रहे तब भी इसका अन्त होने को नही है। अन्त हो भी कैसे? जब परमपिता परमात्मा स्वयं अनन्त है तो उसका ज्ञान भी अनन्त होना स्वाभाविक है। इसलिये हमें कहीं न कहीं अपनी गाथा को विराम देना ही होगा।

वैदिक धर्म की व्याख्यान-माला को कहाँ और कैसे रोका जाय, यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लिये एक बड़ी जटिल समस्या बनी हुई थी। सो आज उसका बड़ा अच्छा समाधान हो गया। आज प्रातः एक विद्वान ने जिज्ञासा की कि संसार में ज्ञान विज्ञान की समस्त शाखायें अपना-अपना उदगम् स्थान रखती हैं अर्थात् उनका जन्म कब कैसे और किस विद्वान के द्वारा हुआ। यह सर्व विदित है, उदाहरणार्थ संसार की अधिकांश भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है। संस्कृत-भाषा ही अपने मूल केन्द्र से ज्यों-ज्यों दूर चलती गई त्यों-त्यों उसने भिन्न-भिन्न भाषाओं का रूप धारण कर लिया। तो क्या संसार के समस्त धर्मों का भी कोई आदि-स्रोत है ? अतः हमने इसी विषय को अपनी व्याख्यान-माला का अन्तिम विषय बनाने का निश्चय कर लिया; क्योंकि इसी एक प्रश्न के उत्तर में वैदिक धर्म की महान् विशेषता दृष्टि गोचर हो जायगी, यह विशेषता ऐसी है जिसके सन्मुख अन्य सब विशेषतायें फीकी पड़ जाती हैं।

संसार के समस्त धर्मों का आदि-स्रोत जान लेने से उनके आपसी सम्बन्ध का भी परिचय मिल जायेगा। यदि समस्त धर्मावलम्बियों को यह ज्ञान हो जाय कि वह सब एक ही माँ की संतान होने से सब आपस में भ्रातृत्व के बन्धन से बंधे हैं तो उनके मध्य व्याप्त वर्तमान घृणा व द्वेष की दीवार भी समाप्त हो जायगी; और साथ ही सब को अपने सही स्वरूप को जानने का भी एक अवसर मिल जायेगा। अपने असली स्वरूप को जानने के पश्चात् वह सरलता से जान सकेंगे कि उनके धर्म में सत्य क्या है, असत्य क्या है। इस आत्म-निरीक्षण व आत्म-शुद्धि करते हुए सभी धर्म पुनः एक ही केन्द्र बिन्दु पर आकर एक हो सकते हैं।

संसार के समस्त धर्मों का आदि-स्रोत क्या है ? इस प्रश्न का सरल और सीधा उत्तर तो यही है कि संसार का सब से प्राचीन धर्म ही समस्त धर्मों का आदि-स्रोत हो सकता है। संसार के प्राचीनतम धर्म का पता लगाना कोई कठिन कार्य नहीं है। संसार के इतिहासकारों ने इसकी खोज कर भी ली है; और वह सर्व सम्मति से इस बात को स्वीकार करते हैं कि संसार के पुस्तकालय का सबसे प्राचीन धर्म-ग्रन्थ 'वेद' है। इसलिये वेद पर आधारित वैदिक धर्म ही समस्त धर्मों का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि-स्रोत सिद्ध होता है। वैदिक धर्म समस्त धर्मों का आदि-स्रोत है यही वास्तव में इसकी सब से महान् विशेषता है।

बच्चो ! आप को यह जानकर आश्चर्य होगा कि अन्य धर्मों के पास सत्य-ज्ञान के रूप में अपना कुछ नहीं है। उनके पास जो कुछ भी अच्छी बातें हैं वह सब वैदिक धर्म की ही देन हैं। यहाँ तक कि उनकी अलंकारिक गाथाओं का मूल रूप भी वैदिक साहित्य में आज भी उपस्थित है।

जिस प्रकार भाषा विशेषज्ञों ने अपनी गवेषणा के आधार पर यह सिद्ध कर दिया है कि संसार की अधिकांश भाषाऐं संस्कृत भाषा से ही निकली हैं उसी प्रकार ऐतिहासिक अन्वेषणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि संसार के समस्त धर्मों का आदि-स्रोत "वैदिक धर्म" ही है। इस प्रकार यदि वैदिक धर्म को संसार के सभी धर्मों का दादा गुरू कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी।

संसार के लगभग सभी धर्मों ने ऐतिहासिक तथ्यों को झूठा सिद्ध करने का भरसक प्रयास किया है। उन्होंने अपने को सर्वथा नया और ईश्वरीय धर्म साबित करने का प्रयत्न किया है। उनका कहना है कि खुदा समय-समय पर पैगम्बरों को पुराने धर्म के स्थान पर नया धर्म स्थापित करने भेजता रहा है। परन्तु दुर्भाग्यवश वह अपने प्रयास में इसलिये सफल न हो सके, क्योंकि वह ऐतिहासिक खोजों को झूठा सिद्ध न कर सके। इसके अतिरिक्त वे अपने अपने धर्म की नवीनता भी सिद्ध करने मे बुरी तरह असफल रहे। उन्होंने अपने धर्म को नवीन व ईश्वरीय सिद्ध करने का केवल एक ही प्रयास किया है कि उनके धर्म का संस्थापक साधारण मनुष्य नहीं अपितु अलौकिक शक्ति थी। किसी ने उसे ईश्वर-पुत्र, किसी ने ईश्वरीय दूत, किसी ने साक्षात् ईश्वर आदि सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। इसके लिये उनके जन्म व जीवन के साथ अनेकों अलौकिक घटनाओं को जोड़ा गया है, जिन्हें अन्धविश्वास के आधार पर ही स्वीकार किया जा सकता है अन्यथा वर्तमान वैज्ञानिक युग में उनका कोई मूल्य नहीं है।

छात्रा—महात्मा जी ! आपने वैदिक धर्म के सम्बन्ध में बहुत ही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वड़ा दावा प्रस्तुत कर दिया है। आप की यह मान्यता सचमुच अन्य धर्म अथवा मत-मतान्तरों के अस्तित्व को ही वड़ा भारी खतरा है। अतः क्या आप यह बतलाने का कष्ट करेंगे कि क्या ईश्वर पर कोई प्रतिबन्ध है कि वह वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य नया धर्म संसार के कल्याणार्थ नहीं भेजेंगे ? जब संसार में लगातार परिवर्तन हो रहा है तो फिर परिवर्तन देश, काल, परिस्थिति में मानव-समाज का मार्ग-प्रदर्शन करना ईश्वर का कर्त्तव्य नहीं है ?

महात्मा—संसार के धर्म इस बात को स्वीकार करते हैं कि संसार के सभी धर्म ईश्वर की देन हैं, और ईश्वर पूर्ण ज्ञानी है, और साथ ही वह त्रिकालदर्शी अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने वाला है। ऐसी अवस्था में यह सोचना कि ईश्वर ने जो ज्ञान या धर्म प्राणियों के कल्याणार्थ संसार को दिया, वह देश, काल, परिस्थिति के बदलने पर पुराना हो गया, उसके पूर्ण ज्ञान तथा त्रिकाल-दर्शिता पर अविश्वास प्रकट करना है। इसका यह अर्थ हुआ कि ईश्वर को यह ज्ञान नहीं था कि अमुक समय व्यतीत होने पर मनुष्यों के सन्मुख क्या समस्यायें उपस्थित होंगी। ऐसा सोचना वास्तव में नास्तिकता का द्योतक है। इसलिये यही मानना होगा कि ईश्वर का ज्ञान पूर्ण तथा सार्वकालिक होता है; और देश, काल, परिस्थिति के बदलने पर वार-वार उसे अपना ज्ञान देने की आवश्यकता कदापि नहीं है।

छात्र—ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, और उसका ज्ञान भी पूर्ण है; परन्तु उसके ज्ञान को लेने वाला मनुष्य तो अल्पज्ञ है। वह ईश्वरीय पूर्ण ज्ञान को लेने की क्षमता कहाँ रखता है ? इसी कारण क्या ईश्वर को समय-समय पर अपना ज्ञान भेजने की आवश्यकता नहीं है ?

महात्मा—बच्चे ! मनुष्य में ईश्वर का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता नहीं यह बात सत्य है, परन्तु ईश्वर ने उसे अपना पूर्ण ज्ञान नहीं अपितु मनुष्यों के कल्याणार्थ जितने ज्ञान की आवश्यकता है उतना ज्ञान प्राप्त करने की उसमें क्षमता है।

छात्र—आप के पास अपनी मान्यता के लिये कोई प्रमाण है ?

महात्मा—प्रमाण यही है कि सृष्टि के आदि में चार ऋषियों ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ईश्वरीय वेद-ज्ञान को उस काल में कण्ठस्थ रखा जब कि संसार में कागज व छापेखाने की व्यवस्था नहीं थी, और वेद-ज्ञान मानव-समाज के कल्याणार्थ अपने में सर्वथा पूर्ण है।

छात्र—आपके पास इस बात का प्रमाण क्या है कि वेद-ज्ञान के पश्चात् ईश्वर ने कोई ज्ञान नहीं दिया।

महात्मा—इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि संसार का कोई धर्म ऐसा सत्य-ज्ञान उपस्थित करने में असमर्थ है, जो पहले वेद में नहीं था। केवल कुछ अलौकिक घटनाओं के जोड़ने या पूर्व सत्य को अपने शब्दों में कह देने मात्र से कोई ज्ञान नहीं कहलाया जा सकता है।

छात्र—आपके पास इस बात का क्या प्रमाण है कि वेद या वैदिक धर्म ही संसार में सबसे प्राचीन है?

महात्मा—संसार के सभी विद्वान् एवं इतिहासकार इस बात पर एक मत हैं कि संसार के पुस्तकालय का सब से प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। इस का स्पष्ट अर्थ है कि वेद पर आधारित वैदिक धर्म भी सब से प्राचीन है।

छात्रा—वैदिक धर्म के प्राचीन सिद्ध हो जाने से यह कहाँ सिद्ध होता है कि अन्य धर्म इसकी उपज हैं या उन्होंने इससे ही प्रेरणा ली है?

महात्मा—बेटी! संसार के लगभग सभी धर्मों का आदि-स्रोत एशिया भू-खण्ड है। पश्चिमी जगत् को यहीं से धर्म का ज्ञान व प्रेरणा मिली है। एशिया में सबसे प्राचीन व्यवस्थित धार्मिक-ग्रन्थ व धर्म वेद व वैदिक धर्म ही है। इसलिये स्वतः सिद्ध है कि वैदिक धर्म ही सब धर्मों का आदि-स्रोत है?

छात्रा—महात्मा जी! क्या आप कोई ऐसा ऐतिहासिक प्रमाण दे सकते हैं जिससे आपकी मान्यता सिद्ध होती हो?

महात्मा—संसार के समस्त धर्मों का इतिहास इस प्रकार है कि सृष्टि के प्रारम्भ में सर्वत्र वैदिक धर्म ही प्रचलित था। परन्तु समय की गति ने जब ईरान में वैदिक धर्म में अनेकों दोष उत्पन्न कर दिये, तो महात्मा जुरदस्त ने उसका सुधार कर जुरदस्त धर्म की स्थापना की और जब समय ने जुरदस्त धर्म में विकार उत्पन्न कर दिया तो यहूदी मत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क उदय हुआ। जब यहूदी मत काल-ग्रस्त हो दूषित हो गया, तो ईसामसीह द्वारा उसका सुधार कर ईसाई मत को जन्म दिया, और जब ईसाई मत मिथ्या विश्वास, मूर्ति-पूजा आदि में धंस गया, तो उन्होंने इस्लाम धर्म को स्थापना की।

यदि ध्यान पूर्वक समस्त धर्मों का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन किया जाय तो सिद्ध होगा कि नया धर्म पहले विकृत धर्म का सुधरा हुआ रूप था। हाँ सुधार का रूप व मात्रा देश, काल, परिस्थिति पर ही आधारित थे। इसलिये वैदिक धर्म के विकृत होने पर ही अन्य धर्मों को जन्म दिया।

धर्मों की पूर्वोक्त ऐतिहासिक शृंखला ने पाश्चात्य जगत् में ही जन्म लिया सो बात नहीं अपितु भारत में भी, जो वेद व वैदिक धर्म का मूल केन्द्र माना जाता है, इसी प्रकार की एक नई शृंखला की उत्पत्ति हुई। भारत में वैदिक धर्म जब विकृत हुआ तो यहाँ बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त, वैष्णव, आदि अनेकों मत-मतान्तरों ने जन्म लिया, जो वैदिक धर्म में व्याप्त दोषों की प्रतिक्रिया स्वरूप सुधारात्मक धार्मिक लहर थी। परन्तु मूलाधार सभी का वैदिक धर्म था।

छात्र—ईरान में वैदिक धर्म प्रचलित था इसका आपके पास क्या प्रमाण है ?

महात्मा—ईरान का समस्त प्राचीन साहित्य, इतिहास, देवता तथा भाषा इस बात के प्रबल प्रमाण हैं। किसी दिन ईरान में आर्य जाति का निवास था, और वहाँ वैदिक धर्म की ही मान्यता थी। इसके समर्थन में ईरान के प्रसिद्ध अनुसंधानकर्त्ता श्री डॉ० एस० एम० आर० जलाली नामी के भारत में भ्रमण के समय 8 अप्रैल 1971 को इण्डियन एक्सप्रेस में श्री अब्दुल रहमान के वक्तव्य को उद्धृत करना उचित होगा, जो इस प्रकार है—

"Indians and Iranians worship different gods to-day, but in ancient times they seemed to have many common gods. The Indian philosophy and religious beliefs against the background of the Aryan Culture, of which Iran was a part, is the subject of research of Dr. S. Mohammad

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Raza Jalali Nami, an Indologist from Iran for the last 35 years.

As Rig-Veda is the oldest Hindu scripture Dr. Jalali has not only made it the subject of his study but translated its selected hymns into Persian.

Ancient History

Talking to this 57 year-old frail but scholarly looking Indologist was something like turning the pages of ancient history of both Countries, Without pausing for a breath, he listed innumerable gods which once were worshipped by the Aryans both in India and in his Country.

Asked about the theory on the origin of Rig-Veda, he said that tablets and inscriptions with the mention of gods like India, Wasatya and Asura had been found in Asia Minor. This indicated that the Compilation of Rig-Veda had begun by the time the Aryans started migrating towards India through Iran. It was possible, however, that the process was completed after the Aryans settled in India, he added.

छात्र—क्या आप कुछ प्रमाण ऐसे दे सकेंगे जो अन्य धर्मों की मौलिक बातों का वैदिक धर्म से नाता सिद्ध करती हों ?

महात्मा—इस थोड़े से समय में सबका वर्णन करना बड़ा कठिन है। यदि आप इसका विस्तृत वर्णन जानना चाहते हैं तो आप स्वर्गीय गंगाप्रसाद जी चीफ जस्टिस द्वारा लिखित 'फाउन्टेन हैड आफ रिलीजन्स' नामक पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ जाइये। फिर भी आप की जानकारी के लिये कुछ बातें यहाँ बताई जा रही हैं—

इस्लाम धर्म ने सृष्टि-रचना, संसार का प्रलय और मृतोत्थान, कयामत के चिह्न, स्वर्ग का मार्ग, स्वर्ग-नरक, ईश्वर और शैतान, विहित कर्म, नमाज, रोजे, खैरात, मक्का-यात्रा, बहु विवाह, तलाक, आदि सभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें कुछ सुधार के साथ सीधे यहूदी मत से ली हैं।

ईसाई मत का आधार विशेषतः यहूदी मत और अंशतः बौद्ध मत है। इसने आध्यात्मिक सिद्धान्त, सदाचारिक उपदेश आदि यहूदी मत से लिया है; और प्रचारशैली बौद्धमत की सीधी नकल है। अहिंसा, आन्तरिक पवित्रता, क्षमा, शीलता, उपकार के बदले उपकार की भावना आदि उपदेश इसे बौद्ध धर्म की देन हैं। विहार साधु-आश्रम, कर्म-काण्ड बपतिस्मा आदि सभी ईसाई धर्म ने बौद्ध धर्म से प्राप्त की हैं। यरुस्लम ईसा के समय बौद्धों का बड़ा भारी प्रचार-केन्द्र था।

यहूदी मत का आधार जरदुस्ती धर्म है। यहूदी मत की जो बातें इस्लाम, ईसाई आदि धर्मों ने ली हैं, उन्हें इसने जरदुस्ती धर्म से ग्रहण किया है।

जरदुस्ती मत का आधार वैदिक धर्म है इसे बड़ी ही सरलता से सिद्ध किया जा सकता है। प्रमाण स्वरूप एशियाटक सोसाइटी के प्रसिद्ध प्रवर्त्तक सर विलियम जोन्स लिखते हैं कि—"जब मैंने जन्द-भाषा के शब्द कोष को देखा तो यह ज्ञात करके कि उसके 10 शब्दों में से 6 या 7 शब्द शुद्ध संस्कृत के हैं अकथनीय आश्चर्य हुआ। यहाँ तक कि उनकी कुछ विभक्तियाँ भी संस्कृत व्याकरण के अनुसार ही बनाई गई हैं। जैसे 'युष्मद' का षष्ठी बहुवचन 'युष्माकम्' है। सर्वनाम तथा संज्ञा सम्बन्धी विभक्तियाँ दोनों भाषाओं में समान हैं। दोनों के शब्दों में इतना ही अन्तर है कि जन्द भाषा में स का उच्चारण ह होता है उदाहरणार्थ—

संस्कृत भाषा	जन्द भाषा
असुर	अहुर
सेना	हेना
अस्मि	अहमि
सान्ति	हेन्ति
सोम	होम
सप्त	हप्त
मास	माह
सप्ताह	हप्ताह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्य इस बात का है कि आर्यों की प्रमुख प्रथा यज्ञोपवीत तथा अग्नि-पूजन आज तक पारसियों में प्रचलित है।

छात्रा—महात्मा जी !

महात्मा—बिटिया ! समय हो गया। अब बस करो।

शान्ति-पाठ के पश्चात् महात्मा जी ने ज्यों ही सभा विसर्जित की कि स्कूल के प्रधानाचार्य भी खड़े हो गये; और उन्होंने सभा के विसर्जित होने से पूर्व सब को सूचना देते हुए कहा कि स्कूल की प्रबन्ध-समिति तथा नगर की जनता ने यह निश्चय किया है कि कल सभा-स्थल पर ही श्रद्धेय महात्मा जी का विदाई समारोह किया जाय, ताकि जनता तथा स्कूल महात्मा जी के उपकार के प्रति अपना आभार प्रदर्शित कर सके। श्रद्धेय महात्मा जी ने पहिले हमारी प्रार्थना को ठुकरा दिया था; परन्तु सब के आग्रह तथा प्रेम के वशीभूत होकर उन्होंने कल यहाँ उपस्थित होने की स्वीकृति दे दी है। अतः जनता को भारी संख्या में पधार कर अपनी श्रद्धाञ्जलि उनके चरणों में अर्पित करनी चाहिये।

महात्मा जी ने वैदिक धर्म की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कृतघ्नता को सबसे बड़ा पाप माना है; और कृतज्ञता-प्रदर्शन को वैदिक धर्म की विशेषता बतलाया है इसलिये महात्मा जी द्वारा प्रवाहित लगभग एक मास से वैदिक ज्ञान-गंगा में स्नान कर अपने को पवित्र करने का जो सुअवसर हम सब ने प्राप्त किया, उसके प्रति आभार प्रदर्शन करना हम सब का परम धर्म हो जाता है।

प्रधानाचार्य जी के सुझाव का विद्यार्थियों व उपस्थित जनता ने करतल ध्वनि के साथ समर्थन किया; और—जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय तथा भारत माता की जय, महात्मा जी की जय के नारों के साथ सभा को विसर्जित कर दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६

विदाई समारोह

आज स्कूल का सभा-स्थल विशेष रूप से सजाया गया है। जनता भी बड़ी भारी संख्या में उपस्थित हुई है। सभी के हाथों में पुष्पहार या पुष्प हैं। महिलाओं की संख्या तो सचमुच ही आश्चर्यजनक है। वास्तव में उनके हृदयों में अपार हर्ष है हर्ष होभी क्यों नहीं, जब कि महात्मा जी ने उनके बच्चों को धर्म-मार्ग पर लाकर उनके घर की वाटिका को लहलहा दिया, तो इससे बढ़कर हर्ष की बात उनके लिये क्या होगी। छात्र-छात्रायें एवं अध्यापक-वर्ग सभी अपनी पूर्ण संख्या व उत्साह में हैं।

ठीक समय पर महात्मा जी की गाड़ी सभा-स्थल पर आई; परन्तु आज उनकी गाड़ी के साथ और बहुत-सी गाड़ियाँ अन्य साधु-सन्त व महात्माओं को लेकर आईं। महात्मा जी के जयकारों से उनका स्वागत किया। देखते-देखते सभा-मंच भगुआ वस्त्रधारी संन्यासियों से भर गया।

सर्वप्रथम महात्मा जी के स्वागत-सम्मान में छात्राओं ने एक गान गाया। तत्पश्चात स्कूल के अध्यापकों, छात्र-छात्राओं महिलाओं तथा पुरुषों ने क्रमशः अपनी पुष्प-मालायें महात्मा जी को अर्पित कीं। इंगलैण्ड से पधारी भारतीय छात्रा ने पुष्प माला के साथ रेशमी वस्त्र तथा एक हजार-एक रुपया भेट स्वरूप महात्मा जी को अर्पित किये।

महात्मा जी ने छात्रा की भेट पर आश्चर्यं प्रकट करते हुये धन-राशि लेने से इन्कार करते हुए कहा—"बेटी! हम साधु-सन्तों को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धन-राशि देना उचित नहीं है। यदि धन-संग्रह ही हमारा लक्ष्य होता तो फिर हम अपने घर का ही परित्याग क्यों करते। ईश्वर ने हमें यहाँ सब कुछ दिया है। घर को छोड़ संन्यासी बनने का अर्थ ही है कि हमने लोकेषणा, पुत्रेषणा, अर्थेषणा छोड़ दिया है। आप इस थैली के द्वारा हमें फिर उसी गर्त में डालना चाहती हो क्या ?

महात्मा जी के वचन सुनकर छात्रा ने क्षमा याचना करते हुए कहा —"भगवन् ! इस तुच्छ धन-राशि के पीछे मेरी भावना आपको अर्थेषण में फंसाने की नहीं है अपितु इसके पीछे मेरी एक हार्दिक श्रद्धा व अभिलाषा छिपी है। आपने मेरे जीवन की रक्षा की है। आपको ज्ञात नहीं है कि मैं किस गर्त में गिरने जा रही थी, और आपने मुझे बचा लिया।

छात्रा ने अपनी आँखों से अश्रुधारा बहाते हुए सिसकती हुई आवाज में अपनी करुण कहानी सुनाते हुए कहा कि यह अभागिन भारतीय ललना इंगलैण्ड में ईसाई धर्म से प्रभावित होकर ईसाई बनने तथा एक ईसाई नवयुवक से विवाह करने का निश्चय कर चुकी थी। मुझे अपने धर्म से घृणा हो चुकी थी। परन्तु धर्म-परिवर्तन करने से पूर्व मैं एक बार अपने धर्म की पुनः परीक्षा करना चाहती थी ताकि मुझ से भूल न हो जाय। आपकी सभा में आने से पूर्व मैं अपने पिता जी के साथ काशी, मथुरा, हरिद्वार बड़े-बड़े धर्म-गुरुओं से मिल चुकी हूँ; परन्तु सर्वत्र ही मुझे निराशा ही हाथ लगी। मेरे पिता जी मेरी मनोवस्था से परिचित थे; और वह इस बात के इच्छुक थे कि किसी प्रकार मेरे मन में अपने धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाय। इसी दृष्टि से वह मुझे उक्त तीर्थ स्थानों पर लेकर गये।

छात्रा ने अपनी कहानी का वर्णन करते हुए कहा कि सौभाग्यवश इस नगरी में एक सम्बन्धी के यहाँ आना हुआ। उनसे आप की विद्वता, वैदिक धर्म सम्बन्धी आपका अगाध ज्ञान, वैज्ञानिक युक्तियों से अपनी मान्यता को प्रस्तुत करने की आपकी शैली आदि की प्रशंसा सुनकर मैंने आपके प्रवचनों को सुनने का निश्चय किया। आपने मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर वैदिक धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। आपके पहले

२५४९
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही प्रवचन ने मेरे मन-मस्तिष्क पर जादू का कार्य किया, धीरे-धीरे आप के प्रवचनों से मेरे मस्तिष्क की सभी भ्रान्तियों का निवारण हो गया; और मेरे मन में वैदिक धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा का उदय हो गया।

महात्मा जी ! आपने मेरे ही जीवन की रक्षा नहीं की अपितु आप के प्रवचनों के आधार पर मैंने अपने प्रेमी को भी ईसाई-धर्म के सम्बन्ध में अपनी शंकाओं को पत्र द्वारा नित्य एक पत्र लिखा; और साथ ही अपने धर्म की विशेषताओं से भी उसे परिचित कराया। परिणाम स्वरूप उसने भी अब अपने ईसाई-धर्म का परित्याग कर वैदिक धर्म स्वीकार करने का निश्चय कर लिया है।

महात्मन् ! आपको भेंट की गई धन-राशि इस उद्देश्य से दी है कि वैदिक धर्म के सम्बन्ध में आपके प्रवचनों का संकलन होकर पुस्तक के रूप में उनका प्रकाशन हो, ताकि देश-विदेश में मेरे जैसे पथ-भ्रष्ट छात्र-छात्रायें उसे पढ़कर अपने जीवन की रक्षा कर सकें।

छात्रा की बातें सुन समस्त जनता में एक विचित्र आश्चर्य एव हर्ष की लहर दौड़ गई। महात्मा जी की आँखों से अश्रु-धारा बह निकली। उन्होंने मंच से नीचे उतरकर छात्रा के सिर पर हाथ रखते हुए आशीर्वाद देते हुए कहा कि अपने बच्चों की रक्षार्थ मुझे विदेशों में भी जाने की आवश्यकता हुई तो निश्चित रूप से जाऊँगा; और अपने विचारों को निश्चित रूप से पुस्तक का रूप दूंगा।

देखते देखते जनता ने महात्मा जी के चरणों पर उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये धन की वर्षा कर दी; और एक लाख की धन-राशि जमा हो गई। महात्मा जी ने साहित्य-प्रकाशन के लिये एक ट्रस्ट बनाकर उस धन-राशि को सौंपने की घोषणा कर दी।

अन्त में स्कूल के प्रधान अध्यापक ने अपना अभिनन्दन-पत्र पढ़कर सुनाया। उसके पश्चात् नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा छात्र-छात्राओं ने अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

महात्मा जी ने अन्त में उक्त अभिनन्दन का उत्तर देते हुये कहा—"मैं लोगों द्वारा किये गये अपने प्रति स्वागत के लिये आभारी हूँ। आज के स्वागत समारोह में मुझे सही अर्थों में श्रद्धाञ्जलि इंगलैण्ड वाली बच्ची

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्राप्त हुई है। उसके शब्दों ने मेरे हृदय को झकझोर दिया है। उसकी कहानी को सुनकर मेरी आत्मा काँप गई है। न जाने आज आर्य जाति के कितने बच्चे अपने धर्म से परिचित न होने के कारण पथ-भ्रष्ट हो रहे हैं। उन्हें बचाना हम सब का कर्त्तव्य है।

महात्मा जी ने अपनी अन्तर्वेदना को व्यक्त करते हुऐ कहा कि एक दिन वह भी था जब वैदिक धर्म के प्रचारक भारत वर्ष की सीमा को लांघ कर विदेशों में जाकर अपने धर्म की विजय-पताका वहाँ फहराते थे और आज यह दिन भी हमारे सन्मुख है कि विदेशों से आये हजारों मिशनरी हमारे देश में हमारे धर्म-संस्कृति की लाश पर अपना झण्डा लहरा रहे हैं। वेदना इस बात की है कि आर्य जाति के कर्णधार इस विनाश लीला को मौन होकर देख रहे हैं। अपना धार्मिक ह्रास उनकी दृष्टि में कोई अर्थ नहीं रखता है। उन्हें केवल रोटी, कपड़ा और मकान की चिन्ता है।

महात्मा जी ने अपने विचारों का उपसंहार करते हुये कहा कि हमें अपने धर्म के प्रसार व प्रचार के लिये सर्व प्रथम अपने धर्म-ग्रन्थों के स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना होगा। वेद का पढ़ना-पढ़ांना और सुनना-सुनाना प्रत्येक को अपना परम धर्म मानना होगा। साथ ही वैदिक धर्म का ज्ञान रखने वाले विद्वान व्यक्तियों को अपना जीवन इसके प्रचार व प्रसार के लिये अर्पित करना होगा।

महात्मा जी ने चेतावनी देते हुये कहा कि भारत में पाश्चात्य धर्म, संस्कृति, नास्तिकता, भोगवाद तथा भौतिकवाद का आक्रमण हो रहा है यदि भारत के वैदिक धर्मियों ने समय रहते इनका सामना नहीं किया तो भारत का स्वरूप ही बदल जायगा और यह रामराज्य के स्थान पर यूरोप या रूस-चीन जैसा देश बनकर रह जायगा।

महात्मा जी ने प्रभु ने प्रार्थना करते हुये अन्त में कहा कि वह भारतीय जनता तथा नेताओं को सदबुद्धि, शक्ति व साहस दे ताकि भारत में वैदिक धर्म व संस्कृति के आधार पर रामराज्य की स्थापना हो सके।

शान्ति पाठ के पश्चात् विदाई समारोह समाप्त हुआ।

●

2449

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेल से
गयी

। राजघाट की ओर से
सतीश, संगील ने एक-
खिलाड़ी रन आउट हुये।
राजघाट की टीम 124 रन
33 व मनीष ने 21 रन
का योगदान 28 रनों का
ओर से पंकज पाण्डेय
यादव व उमेश ने दो-
लिया।

योगिता आज से

जिला वालीबाल संघ,
में स्व. मेवालाल पाल
प्रतियोगिता महिला एवं
12 नवम्बर तक सम्राट
मैदान पर किया गया है।
कारी सचिव के अनुसार
दिन में दो बजे श्री आनंद
वित्त एवं लेखा, दूर

य शतरंज
5 से

विनी कॉन्स्टेन्स स्मृति
तियोगिता का आयोजन
में किया जा रहा है।
गों में होगी तथा फीडे
वस पद्धति के आधार
प्रत्येक सत्र दो घंटे का
2 नवम्बर तक स्मिथ
सम्पर्क करें।

का इंटर

हैदराबाद, 9 नवम्बर (वा.)। आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ तेलुगु देशम पार्टी के विधायक कोल्ला अपल्ला नायडू को आज राज्य विधानसभा के अस्थायी अध्यक्ष के रूप में शपथ दिलायी गयी। श्री नायडू को राज्य पाल डा. सी रंगराजन ने

- राज्य की ग्यारहवीं विधानसभा
- कोल्ला अपल्ला नायडू अस्थायी

राजभवन में आयोजित एक सादे समारोह में शपथ दिलायी। श्री नायडू हाल के विधान सभा चुनाव में सातवीं बार विधायक चुने गये थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू, मंत्रिमंडलीय सहयोगी, कांग्रेस विधायक दल के नेता और प्रदेश पार्टी अध्यक्ष डा. वाई. एस. राजशेखर रेड्डी भी उपस्थित थे। राज्य की ग्यारहवीं विधानसभा का पहला सत्र कल से शुरू होगा जिसमें अस्थायी

तेलुगु देशम पार्टी को 178, ... एमआईएम को 4 माकपा को दो सीटें मिली ... पांच सीटें निर्दलियों ने जीती हैं। ... विधानसभा क्षेत्र का चुनाव वहां के तत्का... विधायक पी. पुरुषोत्तमराव की नक्सलियों ... हत्या कर दिये जाने के कारण स्थगित कर ...

राज्यपाल अंबाला से आज लखनऊ पहुंचेंगे

जागरण ब्यूरो

लखनऊ, 9 नवम्बर। प्रदेश में नये राजनीतिक घटनाक्रम को देखते हुए राज्यपाल सूरजभान अपने प्रवास में कटौती करते हुए कल ही अम्बाला से लखनऊ पहुंच रहे हैं। वैसे पर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार राज्यपाल को यहां आगामी 12 नवम्बर को पहुंचना था। उधर यहां राजभवन में नये मुख्यमंत्री के परसों सम्भावित शपथ ग्रहण समारोह की तैयारियां शुरू हो गई हैं। सूत्रों के अनुसार राज्यपाल कल पूर्वाह्न 11 बजे अम्बाला से यहां पहुंच रहे हैं।

सूरजभान अपने परिवारीजनों और मित्रों के साथ दीपावली मनाने के लिए गृह जिले अम्बाला गये थे। वहां से कल उन्हें सीधे झांसी पहुंचनाथा, जहां उनका बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की समीक्षा का कार्यक्रम था। झांसी से राज्यपाल को इसी काम के वास्ते इलाहाबाद जाना था और वहां से मिर्जापुर में आयोजित एक कार्यक्रम में शामिल होने के बाद वह आगामी 12 नवम्बर को लखनऊ लौटने वाले थे लेकिन राजभवन सूत्रों के अनुसार कल्याण सिंह

अमेरिका की पक्षपात... के परमाणु ऊर्जा के ...

बास्टन, 9 नवम्बर (एजेंसी)। भार... परमाणु प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के मामले ... अमेरिका की पक्षपातपूर्ण नीति की आलोचना ... और कहा कि परमाणु ऊर्जा विकास के ... भारत के लिए यह एक बड़ा अवरोध साबित ... है। योजना आयोग के उपाध्यक्ष के.सी. पंत ने ... का, "दुर्भाग्य है कि अमेरिका लगातार भारत ... परमाणु प्रौद्योगिकी और उससे संबद्ध सं... मुहैया कराने में ना नुकुर करता रहा है जिसके ... देश में परमाणु ऊर्जा क्षमता विकसित करने ... अवरोधों का सामना करना पड़ रहा है।"

श्री पंत यहां हार्वर्ड विश्वविद्यालय में 'भारत ... सहस्त्राब्दि में ऊर्जा, पर्यावरण और वि... विषयक सेमिनार में बोल रहे थे। उन्होंने कहा ... ऐसी भी उदाहरण हैं कि हथियार प्रसार के ... में जिन देशों का रिकार्ड अमेरिका के अनुसार ... से कहीं ज्यादा अविश्वसनीय रहा है। ...

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.